UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186165

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No [illegible] Accession No [illegible]

Author [illegible]

Title [illegible]

This book should be returned on or before the date last marked below

श्रीरामचरितमानस

सोल डिस्ट्रीब्यूटर—श्री गंगा पुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।

श्रीरामचन्द्रायनमः

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीविरचित

श्रीरामचरितमानस

[मूल गुटका]

प्रकाशक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,

भार्गव बुकडिपो, चौक, बनारस

सोल डिस्ट्रीब्यूटर—श्रीगंगा पुस्तकालय,

गायघाट, बनारस

मुद्रक व प्रकाशक
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस

प्रथमावृत्ति ५,०००
मूल्य ३) रुपया

सोल डिस्ट्रीब्यूटर
श्री गंगा पुस्तकाल
गायघाट, बनारस

दो०—लगे होन मंगल सगुन, सुनि गुनि कहत निषादु ।
मिटिहि सोच होइहि हरषु, पुनि परिनाम बिषादु॥२३४॥

सेवक बचन सत्य सब जानें । आस्रमनिकट जाइ नियराने
भरत दीख बन-सैल-समाजू । मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी । त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रहभारी
जाइ सुराज सुदेस सुखारी । होहि भरतगति तेहिअनुहारी
रामबास बनसंपति भ्राजा । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू । बिपिन सुहावन पावन देसू
भट जमनियम सैल रजधानी । सांति सुमति सुचि सुंदर रानी
सकल अंग संपन्न सुराऊ । रामचरनआस्रित चित चाऊ

दो०—जीति मोह-महि-पाल-दल, सहित बिबेक भुआलु ।
करत अकंटक राजु पुर, सुख संपदा सुकालु ॥२३५॥

बनप्रदेस मुनिबास घनेरे । जनु पुर नगर गाउँगन खेरे
बिपुलबिचित्र बिहँगमृगनाना । प्रजासमाज न जाइ बखाना
खगहा करि हरि बाघ बराहा । देखि महिष बृष साजु सराहा
बयरु बिहाय चरहिं एक संगा । जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा
झरना झरहिं मत्तगजगाजहिं । मनहुँ निसानबिबिधबिधिबाजहिं
चकचकोरचातकसुकपिकगन । कूजत मंजु मराल मुदितमन
अलिगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा
बेलि बिटपतृन सफल सफूला । सब समाजु मुद-मंगल-मूला

दो०—रामसैल सोभा निरखि, भरतहृदय अतिपेमु ।
तापस तपफल पाइ जिमि, सुखी सिरानें नेमु ॥२३६॥

मासपारायण, बीसवाँ विश्राम
नवाह्नपारायण, पाँचवाँ विश्राम

केवट ऊँचे चढ़ि धाई । कहेउ भरत सन भुजा उठाई

नाथदेखियहिबिटपबिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला
जिन्हतरुबरन्हमध्यबटुसोहा। मंजु बिसाल देखि मन मोहा
नीलसघन पल्लव फल लाला।अबिचल छाँह सुखदसबकाला
मानहुँतिमिर-अरुन-मयरासी। बिरचीबिधिसकेलिसुखमासी
ए तरु सरितसमीप गोसाईं। रघुबर परनकुटी जहँ छाई
तुलसी तरुबर बिबिध सुहाये।कहुँ कहुँ सिय कहुँ लषन लगाये
बटछाया बेदिका बनाई।सिय निज-पानि-सरोज सुहाई

दो०—जहाँ बैठि मुनि-गन-सहित, नित सिय रामु सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ॥२३७॥

सखा बचन सुनिबिटपनिहारी। उमगे भरत बिलोचन बारी
करत प्रनाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति सारद सकुचाई
हरषहिनिरखिराम-पद-अंका। मानहुँ पारसु पायेऊ रंका
रजसिरधरिहियनयनन्हिलावहिं। रघुबरमिलनसरिससुखपावहिं
देखिभरतगति अकथअतीवा। प्रेम मगन मृग खगजड़जीवा
सखहिं सनेह बिबस मगभूला। कहि सुपंथ सुर बरषहि फूला
निरखि सिद्धसाधक अनुरागे। सहजसनेह सराहन लागे
होत न भूतल भाउ भरत को। अचरसचरचरअचरकरतको

दो०—प्रेम अमिय मंदरु बिरह, भरत पयोधिगँभीर।
मथिप्रगटे सुर-साधु-हित, कृपासिंधु रघुबीर ॥२३८॥

सखा समेत मनोहर जोटा। लखेउनलषन सघनबनओटा
भरतदीख प्रभुआस्रमु पावन। सकल-सुमंगल-सदनसुहावन
करत प्रबेस मिटे दुखदावा। जनु जोगी परमारथ पावा
देखे भरत लषन प्रभु आगें। पूछे बचन कहत अनुरागें
सीस जटा कटि मुनिपट बाँधें। तून कसे कर सर धनु काँधें
बेदी पर मुनि-साधु-समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू

बलकलबसनजटिलतनुस्यामा। जनु मुनिबेष कीन्हरतिकामा
करकमलनिधनुसायकफेरत। जियकीजरनिहरतहँसि फेरत

दो०—लसत मंजु मुनि-मंडली, मध्यसीय रघुचंदु।
ग्यान सभा जनु तनु धरे, भगति सच्चिदानंदु॥२३९॥

सानुज सखा समेत मगन मन। बिसरेहरष-सोकसुखदुखगन
पाहिनाथ कहि पाहि गोसाई। भूतल परे लकुट की नाई
बचन सपेम लषन पहिचाने। करत प्रनामु भरत जिय जाने
बंधु सनेह सरस एहि ओरा। इत साहिबसेवा बरजोरा
मिलिनजाइनहिंगुदरतबनई। सुकबिलषनमन कीगतिभनई
रहे राखि सेवा पर भारू। चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू
कहत सप्रेम नाइ महि माथा। भरतप्रनाम करत रघुनाथा
उठे रामु सुनि प्रेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा

दो०—बरबस लिये उठाइ उर, लाये कृपानिधान।
भरत रामकीमिलनि लखि,बिसरे सबहिं अपान॥२४०॥

मिलनिप्रीतिकिमिजाइबखानी। कबिकुलअगमकरममनबानी
परम-पेम-पूरन दोउ भाई। मनबुधिचित अहमिति बिसराई
कहहु सपेमु प्रगट को करई। केहिछायाकबिमतिअनुसरई
कबिहिंअरथआखरबलसाँचा। अनुहरितालगतिहिनटनाचा
अगम सनेह भरत रघुबरको। जहँनजाइमनुबिधिहरिहरको
सो मैं कुमतिकहउँकेहिभाँती। बाजु सुराग कि गाँडरताँती
मिलनिबिलोकि भरत रघुबरकी। सुरगन सभयधकधकीधरकी
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे। बरसि प्रसून प्रसंसन लागे

दो०—मिलि सपेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटेउ राम।
भूरि भाय भेंटे भरत, लछिमन करत प्रनाम॥२४१॥

भेंटेउ लषन ललकि लघु भाई। बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई

पुनिमुनि गनदुहुँ भाइन्ह बंदे । अभिमत आसिष पाइअनंदे
सानुज भरतउमगि अनुरागा । धरिसिरसियपदपदुमपरागा
पुनिपुनि करत प्रनाम उठाये । सिर करकमल परसिबैठाये
सोयअसीस दीन्हि मन माही । मगन सनेह देह सुधि नाहीं
सबविधिसानुकूललखिसीता । भे निसोच उरअपडर बीता
कोउकिछुकहइ न कोउकिछुपूछा । प्रेम भरा मन निजगति छूछा
तेहिअवसरकेवटु धीरजुधरि । जोरिपानिबिनवतप्रनामुकरि

दो०—नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिव सब, आये बिकल बियोग ॥२४२॥

सीलसिंधु सुनि गुरु आगवनू । सियसमीप राखे रिपुदवनू
चले सबेग राम तेहि काला । धीर-धरम-धुर दीन दयाला
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे । दंड प्रनाम करन प्रभु लागे
मुनिबर धाइ लिये उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंडप्रनामू
रामसखा रिषि बरबस भेंटा । जनु महि लुठत सनेहु समेटा
रघुपति भगति सुमंगलमूला । नभसराहि सुरबरिसहिंफूला
एहिसमनिपटनीचकोउ नाही। बड़ वसिष्ठसम कोजगमाही

दो०—जेहि लखि लषनहुँतें अधिक, मिले मुदित मुनिराउ ।
सो सीता-पति-भजन को, प्रगट प्रतापप्रभाउ ॥२४३॥

आरतलोग राम सबु जाना । करुनाकर सुजान भगवाना
जो जेहिभायरहाअभिलाखी । तेहितेहिकैतसितसिरुखराखी
मानुजमिलिपलमहुँसब काहू । कीन्ह दूरि दुख-दारुन-दाहू
यह बड़ि बात राम कै नाही । जिमिघटकोटिएकरबिछाहीं
मिलिकेवटहिउमगि अनुरागा । पुरजन सकलसराहहिं भागा
देखी राम दुखित महतारीं । जनु सुबेलिअवलीहिममारीं

प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरलसुभाय भगतिमतिभेई
पग परि कीन्हप्रबोधुबहोरी । कालकरमबिधिसिरधरिखोरी

दो०—भेंटी रघुबर मातु सब, करि प्रबोध परितोषु ।
अंब ईसआधीन जगु, काहु न देइय दोषु ॥२४४॥

गुरु-तिय-पद बंदे दुहुँ भाई । सहित बिप्रतिय जेमँग आई
गंग-गौरि-सम सब सनमानी । देहिं असीस मुदित मृदुबानी
गहि पद लगे सुमित्राअंका । जनु भेंटी संपति अति रंका
पुनिजननीचरननिदोउभ्राता। परे पेम ब्याकुल सब गाता
अतिअनुराग अंब उर लाये । नयन सनेह सलिल अन्हवाये
तेहि अवसर करहरषबिषादू ।किमिकबिकहइमूकजिमिस्वादू
मिलिजननिहिसानुज रघुराऊ। गुरुसन कहेउकिधारियपाऊ
पुरजन पाइ मुनीसनियोगू । जलथलतकितकि उतरेलोगू

दो०—महिसुर मंत्री मातु गुरु, गनें लोग लिये साथ ।
पावन आस्रम गवनु किय, भरत लषन रघुनाथ ॥२४५॥

सीयआइमुनि-बर-पगलागी । उचित असीस लही मनमाँगी
गुरुपतिनिहिमुनितियन्हसमेता। मिली पेमुकहि जाइ न जेता
बंदि बंदि पग सिय सबही के । आसिरबचन लहे प्रिय जी के
सासु सकलजबसीय निहारी । मूँदे नैन सहमि सुकुमारी
परी बधिकबसमनहुँ मरालीं । काह कीन्ह करतार कुचाली
तिन्हसियनिरखिनिपटदुखपावा । सोसब सहिय जोदैव सहावा
जनकसुता तब उर धरिधीरा । नील-नलिन-लोयनभरिनीरा
मिलीसकलसासुन्ह सियजाई । तेहि अवसरकरुना महि छाई

दो०—लागि लागि पगसबनि सिय, भेंटति अतिअनुराग ।
हृदय असीसहिं प्रेमबस, रहिहहु भरी सोहाग ॥२४६॥

बिकल सनेह सीय सबरानी । बैठन सबहि कहेउ गुरुग्यानी

कहिजगगतिमायिक मुनिनाथा। कहे कछुक परमारथगाथा
नृपकरसुर-पुर-गवनुसुनावा। सुनि रघुनाथ दुसह दुखपावा
मरनहेतु निजनेहु बिचारी। भे अति बिकलधीर-धुर-धारी
कुलिसकठोरसुनतकटुबानी। बिलपत लषन सीय सबरानी
सोकबिकलअतिसकलसमाजू। मानहुँ राजु अकाजेउ आजू
मुनिबरबहुरि रामुसमुझाये। सहितसमाज सुरसरितन्हाये
ब्रतुनिरंबुतेहिदिनप्रभुकीन्हा। मुनिहुँकहे जल काहु न लीन्हा

दो०—भोर भयें रघुनंदनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह।
स्रद्धा-भगति-समेत प्रभु, सो सबु सादर कीन्ह ॥२४७॥

करिपितुक्रियाबेदजसिबरनी। भे पुनीत पातक-तम-तरनी
जासु नाम पावक अघतूला। सुमिरतसकल-सु-मंगल-मूला
सुद्धसोभयेउ साधुसंमत अस। तीरथआवाहन सुरसरि जस
सुद्ध भये दुइ बासर बीते। बोले गुरु सन राम पिरीते
नाथ लोग सब निपट दुखारी। कंद-मूल-फल-अंबु-अहारी
सानुजभरतुसचिवसबमाता। देखिमोहिपलजिमिजुगजाता
सबसमेत पुर धारिय पाऊ। आपु इहाँ अमरावति राऊ
बहुतकहेउँसबकियेउँ ढिठाई। उचितहोइतस करिय गोसाईं

दो०—धरमसेतु करुनायतन, कस न कहहु अस राम।
लोग दुखित दिन दुइ दरस, देखि लहहुँ बिस्राम ॥२४८॥

रामबचन सुनिसभयसमाजू। जनुजलनिधिमहँमिकलजहाजू
मुनिगुरुगिरा सुमंगल-मूला। भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला
पावन पय तिहुँकाल नहाहीं। जो बिलोकि अघओघ नसाहीं
मंगलमूरतिलोचनभरिभरि। निरखहिंहरषिदंडवतकरिकरि
राम-सैल-बन देखन जाहीं। जहँसुखसकलसकलदुखनाहीं
झरनाझरहिंसुधासम बारी। त्रिबिध-ताप-हर त्रिबिध बयारी

बिटपबेलितृनअगनितजाती। फल प्रसून पल्लव बहु भाँती
सुंदर सिला सुखद तरुछाहीं। जाइ बरनि बनछबिकेहिपाही
दो०—सरनि सरोरुह जल बिहँग, कूजत गुंजत भृंग।
बैरबिगत बिहरत बिपिन, मृग बिहंग बहुरंग ॥२४९॥
कोलकिरातभिल्लबनबासी। मधु सुचि सुंदर स्वादुसुधासी
भरिभरिपरनपुटीरचि रूरीं। कंद मूल फल अंकुर जूरीं
सबहिदेहिंकरिबिनयप्रनामा। कहिकहि स्वादुभेद गुन नामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहो। फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेहमगन मृदुबानी। मानत साधु प्रेम पहिचानी
तुम्हसुकृतीहमनीच निषादा। पावा दरसनु रामप्रसादा
हमहिअगमअतिदरस तुम्हारा। जसमरुधरनि देव-धुनि-धारा
रामकृपाल निषाद नेवाजा। परिजनप्रजउचहियजसराजा
दो०—यह जिय जानि सँकोचु तजि, करिय छोहु लखि नेहु।
हमहिं कृतारथ करन लगि, फल तृन अंकुर लेहु ॥२५०॥
तुम्ह प्रियपाहुनबनपगु धारे। सेवाजोग न भाग हमारे
देबकाह हम तुम्हहिं गोसाईं। ईंधनु पात किरात मिताई
यहहमारिअतिबड़िसेवकाई। लेहिं न बासनबसन चोराई
हमजड़जीवजीव-गन-घाती। कुटिलकुचालीकुमतिकुजाती
पापकरत निसि बासरजाहीं। नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं
सपनेहुँधरमबुद्धि कस काऊ। यह रघु-नंदन-दरस प्रभाऊ
जब तें प्रभु-पद-पदुमनिहारे। मिटे दुसह-दुख-दोष हमारे
बचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे
छंद—लागे सहारन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सिय-राम-चरन-सनेहु लखिसुख पावहीं॥
नरनारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा।

तुलसी कृपा रघु-बंस-मनि की लोह लै नौका तिरा ॥

सो०—बिहरहिं बन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।
जल ज्यों दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥२५१॥

पुरजननारिमगनअतिप्रीती । बासर जाहि पलकसम बीती सीय सासु प्रति बेष बनाई । सादर करइ सरिस सेवकाई लखा न मरमु रामबिनुकाहू । माया सब सियमाया माहू सीय सासु सेवा बस कीन्ही ।तिन्हलहिसुखसिखआसिषदीन्ही लखिसियसहित सरलदोउभाई । कुटिलरानि पछतानि अघाई अवनि जमहिजाँचति कैकेई । महि न बीचुबिधिमीचु न देई लोकहुबेदबिदितकबिकहहीं । रामबिमुखथलुनरक न लहहीं यहससउ सब के मन माही । रामगवँनुबिधिअवधकिनाही

दो०—निसि न नींद नहिं भूख दिन, भरतु बिकल सुचिसोच ।
नीचकीचबिच मगनजस, मीनहिं सलिल सँकोच ॥२५२॥

कीन्हिमातुमिसकालकुचाली । ईतिभीति जस पाकत साली केहिबिधिहोइ राम अभिषेकू । मोहि अवकलत उपाउन एकू अवसिफिरहिगुरुआयसुमानी । मुनिपुनिकहबरामरुचि जानी मातु कहेहु बहुरहि रघुराऊ । रामजननिहठकरबिकिकाऊ मोहि अनुचरकरकेतिक बाता । तेहिमहँकुसमउबामबिधाता जौ हठकरउँ त निपट कुकरमू । हरगिरि तें गुरु सेवकधरमू एकउ जुगुति न मन ठहरानी । सोचत भरतहि रैनबिहानी प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई । बैठत पठये रिषय बोलाई

दो०—गुरु-पद-कमल प्रनामु करि, बैठे आयसु पाइ ।
बिप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ ॥२५३॥

बोले मुनिबरु समय समाना । सुनहु सभासद भरतसुजाना धरमधुरीन भानु-कुल-भानू । राजा राम स्वबस भगवानू

सत्यसंध पालक स्रुतिसेतू। रामजनमु जग मंगलहेतू
गुरु-पितु-मातु-बचनअनुसारी।खल-दल-दलन-देव हितकारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु।कोउ न रामसमजान जथारथु
बिधिहरिहरसमिरबिदिसिपाला। मायाजीव करम कुलिकाला
अहिपमहिपजहँलगि प्रभुताई। जोग सिद्धि निगमागम गाई
करि बिचार जिय देखहुनीकें। रामरजाइ सीस सबही कें

दो०—राखें राम रजाइ रुख, हम सब कर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब, सब मिलि संमत सोइ॥२५४॥

सबकहुँ सुखद राम अभिषेकू। मंगल-मोद-मूल मग एकू।
केहिबिधिअवधचलहिंरघुराऊ।कहहुसमुझिसोइकरिअउपाऊ
सबसादरसुनिमुनि-बर-बानी। नय-परमारथ-स्वारथ-सानी
उतर न आव लोग भये भोरे। तब सिरुनाइ भरत कर जोरे
भानुबंस भये भूप घनेरे। अधिक एक तें एक बड़ेरे
जनम हेतुसबकहँ पितु माता। करम सुभासुभ देइ बिधाता
दलिदुखसजइसकल कल्याना। असअसीसराउरि जगु जाना
सोइगोसाइँबिधिगतिजेहिछेंकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी

दो०—बूझिय मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभागु।
सुनि सनेह-मय-बचनगुरु, उर उमगा अनुरागु॥२५५॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं।रामबिमुखसिधिसपनेहुँनाहीं
सकुचउँ तात कहत एक बाता। अरधतजहिंबुधसरबसजाता
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरियहि लषन सीय रघुराई
सुनि सुबचन हरषेदोउ भ्राता। भे प्रमोद-परि-पूरन गाता
मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा। जनु जिय राउ रामु भये राजा
बहुत लाभलोगन्हलघु हानी। सम दुखसुख सब रोवहिं रानी
कहहिंभरतुमुनिकहासोकीन्हे।फलुजगजीवन्हअभिमत दीन्हे

कानन करउँजनमभरि बासू। एहि तें अधिक न मोर सुपासू

दो०—अंतरजामी रामुसिय, तुम्ह सरबग्य सुजान।
जौं फुर कहहु त नाथनिज,कीजियबचनुप्रवान॥२५६॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू। सभासहित मुनि भये बिदेहू
भरत-महा-महिमा जलरासी। मुनिमतिठाढ़ितीरअबलासी
गा चह पार जतनु हियँहेरा। पावति नाक न बोहितु बेरा
औरु करिहिको भरत बड़ाई। सरसी सीपि कि सिंधु समाई
भरत मुनिहिमनभीतर भाये। सहित समाजरामपहि आये
प्रभुप्रनामकरि दीन्ह सुआसनु। बैठे सब सुनिमुनि अनुसासनु
बोले मुनिबर बचन बिचारी। देस काल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सरबग्य सुजाना। धरम-नीति-गुन-ग्यान-निधाना

दोहा—सब के उर अंतर बसहु, जानहु भाउ कुभाउ।
पुरजन-जननी-भरत-हित, होइ सो कहिअ उपाउ॥२५७॥

आरतकहहिबिचारि न काऊ। सूझ जुआरिहि आपुन दाऊ
सुनि मुनिबचनकहतरघुराऊ। नाथ तुम्हारेंहि हाथ उपाऊ
सबकर हित रुख राउरि राखें। आयसुकिये मुदित फुर भाखें
प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई। माथे मानि करउँ सिख सोई
पुनिजेहिकहँ जसकहबगोसाईं। सो सबभाँति घटिहिसेवकाई
कहमुनि रामसत्यतुम भाखा। भरत-सनेह-बिचारु न राखा
तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी। भरत-भगति-बस भइमतिमोरी
मोरे जान भरत रुचि राखी। जोकीजिअ सोसुभ सिवसाखी

दोहा—भरतबिनय सादर सुनिय, करिय बिचारु बहोरि।
करब साधुमत लोकमत, नृपनय निगम निचोरि॥२५८॥

गुरुअनुरागु भरत पर देखी। रामहृदय आनंद बिसेखी
भरतहि धरम-धुरं-धर जानी। निज सेवकतन-मानस-बानी

बोले गुरु-आयसु-अनुकूला । बचन मंजु मृदु मंगलमूला
नाथ सपथपितु चरन दोहाई । भयउ न भुवन भरतसम भाई
जे गुरु-पद-अंबुज-अनुरागी । ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी
राउर जा पर अस अनुरागू । कोकहि सकइ भरतकर भागू
लखि लघुबंधु बुद्धि सकुचाई । करत बदन पर भरत बड़ाई
भरतु कहहिंसोइकिये भलाई । अस कहि राम रहे अरगाई

दोहा—तब मुनि बोले भरत सन, सब सँकोचु तजि तात ।
कृपासिंधु प्रियबंधु सन, कहहु हृदय कै बात ॥२५९॥

सुनिमुनिबचन रामरुख पाई । गुरु साहिब अनुकूल अघाई
लखिअपनेसिर सबु छरुभारू । कहि न सकहिकछु करहिंबिचारू
पुलकि सरीर सभा भये ठाढ़े । नीरजनयन नेहजल बाढ़े
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । एहितें अधिक कहौं मैं काहा
मैं जानउँ निजनाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोह न काऊ
मो पर कृपा सनेह बिसेखी । खेलत खुनिस न कबहूँ देखी
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू । कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू
मैं प्रभु कृपारीति जिय जोही । हारेउ खेल जितावहिं मोही

दोहा—महूँ सनेह-सकोच-बस, सनमुख कही न बैन ।
दरसन तृपित न आजु लगि, प्रेम पियासे नैन ॥२६०॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीचबीचु जननी मिस पारा
यहउ कहत मोहिंआजु न सोभा। अपनीसमुझि साधु सुचिकोभा
मातु मंद मैं साधु सुचाली । उरअसआनत कोटिकुचाली
फरइकिकोदव बालिसुसाली । मुकताप्रसव कि संबुकताली
सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू । मोर अभाग उदधि अवगाहू
बिनु समुझें निज-अघ-परिपाकू । जारिउँजाय जननिकहिकाकू
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहिभाँतिभलेहिभलमोरा

गुरु गोसाइँ साहिब सियरामू । लागत मोहि नीक परिनामू

दोहा—साधु-सभा-गुरु-प्रभु-निकट, कहउँ सुथल सतिभाउ ।
प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥२६१॥

भूपतिमरन प्रेम पनु राखी । जननी कुमति जगतु सबुसाखी
देखिनजाहि बिकल महतारी । जरहिदुमहजर पुर-नर-नारी
महीसकल अनरथ कर मूला । सोसुनि समुझि सहेउँ सबसूला
सुनिबनगवनुकीन्ह रघुनाथा । करि मुनिबेष लषन-सिय-साथा
बिन पानहिन्ह पयादेहि पायें । संकरु साखि रहेउँ एहि घायें
बहुरि निहारि निषादसनेहू । कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू
अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई । जियत जीव जड़ सबइ सहाई
जिन्हहिनिरखिमगसाँपिनिबीछीं । तजहि बिषम बिषतामस तीछी

दो०—तेइ रघुनंदनु लषनु सिय, अनहित लागे जाहि ।
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावइ काहि ॥२६२॥

सुनिअतिबिकलभरत-बर-बानी । आरति-प्रीति-बिनय-नय सानी
सोकमगन सब सभा खभारू । मनहुँ कमलबन परेउ तुषारू
कहि अनेकबिधि कथा पुरानी । भरतप्रबोधुकीन्हमुनिग्यानी
बोले उचित बचन रघुनंदू । दिन-कर-कुल-कैरव-बन-चंदू
तात जाय जिन करहु गलानी । ईसअधीन जीवगति जानी
तीनि काल तिभुवन मत मोरें । पुन्यसिलोक तात तर तोरें
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई । जाइ लोकु-परलोकु नसाई
दोष देहिं जननिहि जड़ तेई । जिन्ह गुरु-साधु-सभानहि सेई

दो०—मिटिहहिं पाप प्रपंच सब, अखिल अमंगल भार ।
लोकु सुजसु परलोक सुखु, सुमिरत नामु तुम्हार ॥२६३॥

कहउँ सुभाउ सत्य सिवसाखी । भरत भूमि रह राउरि राखी
तात कुतरक करहु जनि जायें । बैर पेमु नहिं दुरइ दुरायें

मुनिगुनिनिकटबिहँगमृगजाही।बाधकबधिकबिलोकि पराहीं
हितअनहितपसुपच्छिउ जाना।मानुषतनु गुन-ग्यान-निधाना
तात तुम्हहि मैं जानउँ नीके। करउँ काह असमंजस जीके
राखेउ राय सत्य मोहि त्यागी। तनुपरिहरेउ पेम पनु लागी
तासु बचन मेटत मन सोचू। तेहितेंअधिकतुम्हार सँकोचू
तापर गुरु मोहि आयसु दीन्हा।अवसिजोकहहुचहउँसोइकीन्हा

दो०—मनु प्रसन्न करिमकुच तजि, कहहु करउँ सोइ आजु
सत्य-संध-रघुबर-बचन, सुनि भा सुखी समाजु ॥२६४॥

सुर-गन-सहितसभयसुरराजु। सोचहिं चाहत होन अकाजु
बनत उपाउ करत कछुनाही। राममरन सब गे मन माहीं
बहुरिबिचारिपरसपरकहहीं। रघुपतिभगत-भगति-बसअहहीं
सुधि करि अंबरीषदुरबासा। भे सुरसुरपतिनिपट निरासा
सहे सुरन्ह बहुकालबिषादा। नरहरि किये प्रगट प्रहलादा
लगिलगिकानकहहिंधुनिमाथा। अब सुरकाज भरत के हाथा
आन उपाउ न देखिय देवा। मानत रामु सु-सेवक-सेवा
हियसपेमसुमिरहुसबभरतहिं। निज-गुन-सीलरामबसकरतहिं

दो०—सुषि सुरमत सुरगुरु कहेउ, भल तुम्हार बड़भागु।
सकल सु-मंगल-मूल जग, भरत-चरन-अनुरागु ॥२६५॥

सीता-पति-सेवक-सेवकाई। काम-धेनु-सय-सरिस सुहाई
भरतभगति तुम्हरेंमनआई। तजहु सोचु बिधि बात बनाई
देखु देवपति भरतप्रभाऊ। सहज-सुभाय-बिबस रघुराऊ
मन थिरकरहु देव डरनाही। भरतहिं जानि रामपरिछाहीं
सुनि सुरगुरु-सुर-संमतसोचू। अंतरजामी प्रभुहिं सँकोचू
निजसिरभारुभरतजियजाना। करतकोटिबिधिउरअनुमाना
करि बिचारु मनदीन्हीठीका। रामरजायसु आपन नीका

निजपनतजिराखेउपनुमोरा। छोहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा

दो०—कीन्ह अनुग्रह अमितअति, सब बिधि सीतानाथ।
करि प्रनामु बोले भरतु, जोरि जलज-जुग-हाथ॥२६६॥

कहउँकहावउँकाअब स्वामी। कृपा-अंबु-निधि अंतरजामी
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला। मिटीमलिनमनकलपितसूला
अपडर डरेउँ न सोच समूलें। रबिहि न दोषु देव दिसिभूलें
मोर अभागु मातुकुटिलाई। बिधिगतिबिषमकालकठिनाई
पाउँरोपिसबमिलिमोहिघाला। प्रनतपाल पन आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई। लोकहु बेद बिदित नहिं गोई
जगअनभल भल एकुगोसाईं। कहिअ होइ भल कामु भलाई
देव देव-तरु-सरिस सुभाऊ। सनमुखबिमुख न काहुहि काऊ

दो०—जाइ निकट पहिचानि तरु, छाँह समनि सब सोच।
माँगत अभिमत पाव जग, राउ रंक भल पोच॥२६७॥

लखि सबबिधि-गुरु-स्वामि-सनेहू। मिटेउ छोभ नहि मन संदेहू
अब करुनाकर कीजिअ सोई। जनहितप्रभुचितछोभु न होई
जो सेवकुसाहिबहि सँकोची। निजहितचहइतासुमतिपोची
सेवकहित साहिबसेवकाई। करइ सकल सुख लोभ बिहाई
स्वारथनाथ फिरें सबही का। किये रजाइ कोटिबिधिनीका
यह स्वारथ-परमारथ-सारू। सकलसुकृतफलसुगतिसिंगारू
देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी
तिलकसमाजुसाजिसबआना। करिअसुफलप्रभुजौं मनुमाना

दो०—सानुज पठइअ मोहिं बन, कीजिअ सबहिं सनाथ।
नतरु फेरियहि बन्धु दोउ, नाथ चलउँ मैं साथ॥२६८॥

न तरु जाहिंबनतीनिउँ भाई। बहुरिय सीयसहित रघुराई
जेहिबिधिप्रभुप्रसन्नमनहोई। करुनासागर कीजिय सोई

देव दीन्हसबुमोहिसिरभारू। मोरे नीति न धरम बिचारू
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू। रहत न आरत के चित चेतू
उतर देइ सुनि स्वामिरजाई। सो सेवक लखि लाज लजाई
असमैंअवगुन-उदधि-अगाधू। स्वामि सनेह सराहत साधू
अबकृपालमोहिसोमतभावा। सकुचस्वामिमनजाइ न पावा
प्रभु-पद-सपथ कहउँसतिभाऊ। जग मंगल-हित एक उपाऊ

दो०—प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देव।
सो सिर धरि धरि करिहि सब, मिटिहि अनट अवरेब॥२६९॥

भरतबचनसुचिसुनिसुरहरषे। साधु सराहि सुमन सुर बरषे
असंजसबस अवधनिवासी। प्रमुदित मन तापस-बन-बासी
चुपहि रहे रघुनाथ सँकोची। प्रभुगति देखि सभा सब सोची
जनक दूत तेहि अवसर आये। मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाये
करिप्रनामतिन्हरामुनिहारे। बेषु देखि भये निपट दुखारे
दूतन्ह मुनिबर बूझी बाता। कहहु बिदेह भूप कुसलाता
सुनिसकुचाइनाइमहिमाथा। बोले चरबर जोरें हाथा
बूझब राउर सादर साईं। कुसलहेतु सो भयउ गोसाईं

दो०—नाहिं त कोसलनाथ के, साथ कुसल गइ नाथ।
मिथिला अवध बिसेष तें, जगु सब भयउ अनाथ॥२७०॥

कोसलपतिगतिसुनिजनकौरा। भे सब लोक सोकबस बौरा
जेहि देखे तेहि समय बिदेहू। नाम सत्य अस लाग न केहू
रानि-कु-चालि सुनतनरपालहि। सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि
भरतराज रघुबर-बन-बासू। भा मिथिलेसहि हृदय हरासू
नृप बूझे बुध-सचिव-समाजू। कहहु बिचारि उचितकाआजू
समुझि अवध असमंजस दोऊ। चलियकिरहियनकहकछुकोऊ
नृपहिं धीरधरि हृदय बिचारी। पठये अवध चतुर चर चारी

बूझि भरत सतिभाउ कुभाऊ। आयहु बेगि न होइ लखाऊ

दो०—गये अवधचर भरतगति, बूझि देखि करतूति।
चले चित्रकूटहि भरतु, चार चले तिरहूति ॥२७१॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी। जनकसमाज जथामति बरनी
मुनिगुरुपरिजनसचिवमहीपति। भे सब सोच सनेहबिकलअति
धरि धीरज करि भरतबड़ाई। लिये सुभट साहनी बोलाई
घर पुर देस राखि रखवारे। हय गय रथ बहु जान सँवारे
दुघरी साधि चले ततकाला। कियबिस्रामु न मगमहिपाला
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा। चले जमुन उतरन सबलागा
खबरि लेन हम पठये नाथा। तिन्हकहिअसमहिनायउमाथा
साथ किरात छसातक दीन्हे। मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे

दो०—सुनत जनक आगवन सब, हरषेउअवधसमाजु।
रघुनंदनहिं सकाचु बड़, सोचबिबससुरराजु ॥ २७२ ॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई। काहि कहइ केहि दूषन देई
असमनआनिमुदितनरनारी। भयेउबहोरि रहब दिनचारी
एहि प्रकार गत बासर सोऊ। प्रात नहान लाग सबु कोऊ
करि मज्जनुपूजहि नरनारी। गनपगौरि तिपुरारितमारी
रमा-रमन-पद बंदि बहोरी। बिनवहिं अंजुलिअंचलजोरी
राजा रामु जानकी रानी। आनँदअवधि अवधरजधानी
सुबसबसउफिरिसहितसमाजा। भरतहि रामु करहुजुबराजा
एहि सुख सुधा सींचिसबकाहू। देव देहु जग-जीवन-लाहू

दो०—गुरुसमाज भाइन्ह सहित, रामराजु पुर होउ।
अछत रामराजा अवध, मरिअ माँग सबु कोउ ॥२७३॥

सुनि सनेहमयपुर-जन-बानी। निंदहिंजोगबिरतिमुनिग्यानी
एहिबिधिनित्यकरमकरिपुरजन। रामहिंकरहिंप्रनामपुलकितन

ऊँच नीच मध्यम नर नारी ।लहहिदरसनिजनिजअनुहारी
सावधान सबही सनमानहि । सकलसराहतकृपानिधानहि
लरिकाइहि ते रघुवर बानी । पालत नीति प्रीतिपहिचानी
सील-सकोच-सिंधु रघुराऊ । सुमुख सुलोचनसरलसुभाऊ
कहत राम-गुन-गन अनुरागे । सब निज भाग सराहन लागे
हम सम पुन्यपुंज जग थोरे । जिन्हहिंरामुजानत करिमोरे

दो०—प्रेममगन तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेसु ।
सहित सभा संभ्रम उठेउ, रबि-कुल-कमल-दिनेसु॥२७४॥

भाइसचिवगुरु-पुरजनसाथा । आगे गवनु कीन्ह रघुनाथा
गिरिबरुदीखजनकपतिजबहीं। करिप्रनामुरथ त्यागेउतबहीं
राम-दरसु-लालसा-उछाहू । पथस्रम लेस कलेस न काहू
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही । बिनुमनतनदुखसुखसुधिकेही
आवत जनकु चले एहिभाँती । सहितसमाज प्रेम मति माँती
आये निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परसपर लागे
लगे जनक मुनि-जनपदबंदन । रिषिन्हप्रनामुकीन्हरघुनंदन
भाइन्हसहितराममिलिराजहिं। चले लेवाइ समेत समाजहिं

दो०—आस्रम सागर सांतरस, पूरन पावन पाथ ।
सेन मनहुँ करुनासरित, लिये जाहिं रघुनाथ ॥२७५॥

बोरति ग्यान बिराग करारें । बचन ससोक मिलतनदनारें
सोच उसास समीर तरंगा । धीरज तट-तरु-बरकरभंगा
बिषमबिषाद तोरावतिधारा । भय भ्रम भँवर अवर्तअपारा
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा । सकहिं न खेइ एकनहिंआवा
बनचर कोल किरात बेचारे । थकेबिलोकिपथिक हियहारे
आश्रमउदधि मिली जबजाई । मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई
सोकबिकलदोउ राजसमाजा । रहा न ग्यानु न धीरजुलाजा

भूप-रूप-गुन-सील सराही । रोवहिं सोकसिंधु अवगाही

छंद—अवगाहि सोकसमुद्र सोचहिं नारिनर ब्याकुल महा ।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा ॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की ।
तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की ॥

सो०—किये अमित उपदेस, जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह ।
धीरजु धरिय नरेस, कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन ॥२७६॥

जासुग्यानुरबिभवनिसि नासा ।बचनकिरनमुनि-कमल-बिकासा
तेहिकि मोह ममता नियराई । यह सिय-राम-सनेह बड़ाई
विषयी साधक सिद्ध सयाने । त्रिबिध जीव जग बेद बखाने
राम-सनेह-सरस मन जासू । साधुसभा बड़ आदर तासू
सोह न रामपेम बिनु ग्यानू । करनधारबिनुजिमिजलजानू
मुनि बहबिधि बिदेह समुझाये । रामघाट सब लोग नहाये
सकल-सोक-संकुल नरनारी । सो बासर बीतेउ बिनु बारी
पसुखगमृगन्ह न कीन्हअहारू । प्रिय परिजनकरकौनबिचारू

दो०—दोउ समाज निमिराजु रघु-राज नहाने प्रात ।
बैठे सब बट-बिटप-तर, मन मलीन कृसगात ॥२७७॥

जेमहिसुर दसरथ-पुर-वासी । जेमिथिला-पति-नगर-निवासी
हंस-बंस-गुरु जनकपुरोधा । जिन्हजगमगुपरमारथुसोधा
लगे कहन उपदेस अनेका ।सहितधरमनयबिरतिबिबेका
कौसिककहिकहिकथापुरानी । समुझाई सब सभा सुबानी
तबरघुनाथ कौसिकहिकहेऊ । नाथ कालि जलबिनु सबु रहेऊ
मुनिकहउचितकहतरघुराई । गयेउ बीति दिन पहर अढ़ाई
रिषिरुखलखि कह तिरहुतिराजू । इहाँउचितनहिं असनअनाजू
कहा भूप भल सबहि सुहाना । पाइ रजायसु चले नहाना

दो०–तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ।
लइ आये बनचर बिपुल, भरि भरि काँवरि भार ॥२७८॥

कामद भे गिरि रामप्रसादा । अवलोकत अपहरत बिषादा
सरसरिता बनभूमिबिभागा । जनु उमगत आनँद अनुरागा
बेलिबिटपसबसफल सफूला । बोलत खग मृगअलि अनुकूला
तेहिअवसरबन अधिकउछाहू । त्रिबिधसमीर सुखदसबकाहू
जाइ न बरनि मनोहरताई । जनुमहिकरति जनकपहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि आयसु पाई
देखि देखि तरुबर अनुरागे । जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे
दलफल मूलकंद बिधिनाना । पावन सुंदर सुधासमाना

दो०–सादर सब कहँ रामगुरु, पठये भरि भरि भार ।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार ॥२७९॥

एहिबिधि बासर बीते चारी । रामुनिरखि नरनारिसुखारी
दुहुँसमाज असि रुचिमनमाहीं । बिनुसियराम फिरब भलनाहीं.
सीताराम संग बनबासू । कोटि अमर-पुर-सरिससुपासू
परिहरि लषन-राम-बैदेही । जेहिघरु भावबामबिधितेही
दाहिन दैव होइ जब सबहीं । रामसमीप बसियबन तबहीं
मंदाकिनिमज्जनु तिहुँकाला । रामदरसु मुद-मंगल-माला
अटनुरामगिरिबनतापसथल । असन अमियसम कंद मूल फल
सुखसमेत संबत दुइ साता । पलसम होहिं न जनियहिंजाता

दो०–एहि सुख जोग न लोग सब, कहहिं कहाँ अस भागु ।
सहज सुभाय समाज दुहुँ, राम-चरन-अनुरागु ॥२८०॥

एहिबिधिसकलमनोरथकरहीं । बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीयमातु तेहि समय पठाई । दासी देखि सुअवसरु आई
सावकास सुनिसब सियसासू । आयउ जनक-राज-रनिवासू

कौसल्या सादर सनमानी। आसन दिये समय समआनी
सील सनेहु सकल दुहुँ ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिसकठोरा
पुलकसिथिलतनु बारिबिलोचन। मनिहनख लिखन लगींसबसोचन
सबसिय-राम-प्रीतिकि सी मूरति। जनु करुना बहुबेष बिसूरति
सीयमातुकहबिधिबुधिबाँकी। जो पयफेनु फोर पबिटाँकी

दो०—सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सकृत मराल॥२८१॥

सुनि ससोचकह देवि सुमित्रा। बिधिगतिबड़िबिपरीतबिचित्रा
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी। बालकेलिसमबिधिमतिभोरी
कौसल्या कह दोसु न काहू। करमबिबसदुखसुखछति लाहू
कठिनकरमगतिजान बिधाता। जोसुभअसुभसकलफलदाता
ईस रजाइ सीस सबही के। उतपतिथितिलयबिषहुअमीके
देबि मोहबस सोचिय बादी। बिधिप्रपचुअसअचलअनादी
भूपति जियबमरुबउर आनी।सोचिअसखिलखिनिजहित हानी
सीयमातु कह सत्य सुबानी। सुकृतीअवधिअवधपतिरानी

दो०—लषनु रामु सिय जाहु बन, भल परिनाम न पोचु।
गहबरि हिय कह कौसिला,मोहि भरतकरसोचु॥२८२॥

ईसप्रसाद असीस तुम्हारी। सुत सुत-बधू देव-सरि-बारी
रामसपथ मैं कीन्हि न काऊ। सोकरिकहउँसखीसति भाऊ
भरत सील गुन विनयबड़ाई। भायप भगतिभरोस भलाई
कहत सारदहुकर मति हीचे। सागर सीपकिजाहि उलीचे
जानउँ सदा भरत कुलदीपा। बारबार मोहि कहेउ महीपा
कसे कनकमनिपारिखि पायें। पुरुषपरिखियहिसमयसुभायें
अनुचितआजुकहबअस मोरा। सोक सनेह सयानप थोरा
सुनि सुरसरिसमपावनिबानी। भईं सनेह बिकल सब रानी

दो०—कौसल्या कह धीर धरि, सुनहु देबि मिथिलेसि ।
को बिबेक-निधि-बल्लभहि, तुम्हहिसकइउपदेसि॥२८३॥

रानि राय सन अवसरु पाई। अपनी भाँति कहब समुझाई
रखिअहिलषनुभरतुगवनहिंबन। जौ यह मत मानइ महीपमन
तौ भलजतन करब सुबिचारी। मोरे सोच भरत कर भारी
गूढ सनेह भरत मन माही। रहें नीक मोहि लागत नाहीं
लखिसुभाउ सुनिसरलसुबानी। सब भइँमगनकरुनरस रानी
नभ प्रसूनझरिधन्यधन्य धुनि। सिथिलसनेहसिद्धजोगी मुनि
सबरनिवासबिथकिलखिरहेऊ। तब धरिधीरसुमित्रा कहेऊ
देबि दंडजुग जामिनि बीती। राममातु सुनि उठी सप्रीती

दो०—बेगि पाउ धारिय थलहिं, कह सनेह सतिभाय ।
हमरें तौ अब ईसगति, कै मिथिलेस सहाय ॥२८४॥

लखिसनेह सुनि बचनबिनीता। जनकप्रियागहि पाय पुनीता
देबिउचितअस बिनय तुम्हारी। दसरथ-घरिनिराम-महतारी
प्रभु अपनें नीचहुँ आदरही। अगिनिधूमगिरिसिरतिनुधरहीं
सेवक राउ करम-मन-बानी। सदा सहाय महेस भवानी
रउरे अंग जोगु जग को है। दीप सहायकिदिनकर सोहै
रामु जाइबनु करि सुरकाजू। अचलअवधपुरकरिहहिराजू
अमर नाग नरु रामबाहु-बल। सुखबसिहहिंअपनेअपने थल
यहसब जागबलिक कहिराखा। देबि न होइ मुधामुनि भाखा

दो०—अस कहि पग परि पेम अति, सियहितबिनयसुनाइ ।
सियसमेत सियमातु तब, चली सुआयसु पाइ ॥२८५॥

प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही। जोजेहिजोगुभाँतितेहि तेही
तापस बेष जानकी देखी। भासबुबिकलबिषाद बिसेखी
जनक रामगुरु आयसु पाई। चले थलहिं सिय देखी आई

लीन्हिलाइउरजनक जानकी। पाहुनि पावन पेम प्रान की
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू। भयउ भूपमन मनहुँ प्रयागू
सियसनेह बटु बाढ़तजोहा। तापर राम-पेम-सिसु सोहा
चिरजीवीमुनिग्यानुबिकलजनु। बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु
मोह मगनमति नहि बिदेहकी। महिमा सिय-रघुबर-सनेहकी

दो०—सिय पितु-मातु-सनेह-बस, बिकल न सकी सँभारि।
धरनिसुता धीरजु धरेउ, समउ सुधरमु बिचारि॥२८६॥

तापसबेष जनक सिय देखी। भयउ पेमपरितोषु बिसेषी
पुत्रि पबित्र किये कुल दोऊ। सुजसधवलजगकहसबकोऊ
जितिसुरसरिकीरतिसरिनोरी। गवनुकीन्हबिधिअंडकरोरी
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे। एहि किय साधु समाजघनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुबानी। सीयसकुचिमहिमनहुँसमानी
पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई। सिखआसिपहितदीन्हिसुहाई
कहति न सीयसकुचिमनमाही। इहां बसब रजनीभल नाहीं
लखि रुख रानि जनायेउ राऊ। हृदय सराहत सील सुभाऊ

दो०—बारबार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्ह सनमानि।
कही समय सिर भरतगति, रानिसुबानिसयानि॥२८७॥

सुनि भूपाल भरत व्यवहारू। सोन सुगंध सुधा ससिसारू
मूँदे सजल नयन पुलके तन। सुजसुसराहनलगेमुदितमन
सावधानसुनुसुमुखिसुलोचनि। भरतकथाभवबंधबिमोचनि
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू। इहाँ जथामति मोर प्रचारू
सोमतिमोरिभरत महिमाहीं। कहइ काहछलिछुअति न छाहीं
बिधिगनपतिअहिपतिसिवसारद। कबिकोबिदबुधबुद्धिबिसारद
भरत चरितकीरति करतूती। धरमसीलगुनबिमलबिभूती
समुझतसुनत सुखद सबकाहू। सुचिसुरसरिरुचिनिदरसुधाहू

दो०—निरवधि गुन निरुपम पुरुष, भरत भरतसम जानि ।
कहिय सुमेरु कि सेरसम, कबि-कुलमतिसकुचानि॥२८८॥

अगमसबहि बरनतबरबरनी । जिमिजलहीनमीनमगुधरनी
भरतअमित महिमासुनुरानी । जानहिरामु न सकहिबखानी
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ । तियजियकीरुचिलखिकहराऊ
बहुरहि लषनु भरतबनजाही । सब करभल सबकेमनमाहीं
देबि परंतु भरत रघुबर की । प्रीतिप्रतीतिजाइनहितरकी
भरतु अवधि सनेह ममता की । जद्यपि रामसीव समता की
परमारथ स्वारथ सुख सारे । भरत न सपनेहुँमनहुँनिहारे
साधन सिद्धि रामपग नेहू । मोहिलखिपरतभरतमतएहू

दो०—भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं, मनसहुँ रामरजाइ ।
करिय न सोच सनेह बस, कहेउ भूप बिलखाइ ॥२८९॥

राम-भरत-गुनगनत सप्रीती ।निसिदंपतिहिपलकसमबीती
राजसमाज प्रात जुग जागे । न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे
गे नहाइ गुरु पहिं रघुराई । बंदि चरन बोले रुख पाई
नाथ भरत पुरजन महतारी । सोकबिकल बनबासदुखारी
सहितसमाज राउ मिथिलेसू । बहुत दिवस भये सहतकलेसू
उचितहोइसोइकीजियनाथा । हित सबही कर रउरे हाथा
असकहिअति सकुचेरघुराऊ । मुनिपुलकेलखि सीलुसुभाऊ
तुम्हबिनुरामसकलसुखसाजा। नरकसरिसदुहुँ राजसमाजा

दो०—प्रान प्रान के जीव के, जिव सुख के सुख राम ।
तुम्हतजितातसुहातगृह, जिन्हहिंतिन्हहिंबिधिबाम॥२९०॥

सोसुखधरमु करमुजरिजाऊ । जहँ न राम-पद-पंकज भाऊ
जोग कुजोग ग्यानु अग्यानू । जहँ नहि रामपेम परधानू
तुम्हबिनुदुखीसुखी तुम्हतेही । तुम्हजानहुजियजोजेहिकेही

राउर आयसु सिर सबही के ।बिदितकृपालहिंगतिसबनीके
आप आस्रमहि धारियपाऊ । भयउसनेहसिथिलमुनिराऊ
करि प्रनामु तब रामु सिधाये ।रिषिधरिधीरजनकपहिआये
राम बचन गुरु नृपहि सुनाये । सील सनेह सुभाय सुहाये
महाराज अब कीजिय सोई । सबकरधरम सहितहितहोई

दो०–ग्यान निधान सुजान सुचि, धरमधीर नरपाल ।
तुम्ह बिनु असमंजससमन, को समरथ एहिकाल ॥२९१॥

सुनिमुनिबचन जनमअनुरागे । लखिगतिग्यानुबिरागुबिरागे
सिथिलसनेह गुनत मन माही । आये इहाँ कीन्ह भल नाहीं
रामहि राय कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेमप्रवाना
हम अब बन तें बनहि पठाई । प्रमुदितफिरब बिबेकबढ़ाई
तापसमुनि महिसुरसुनि देखी । भय प्रेमबस बिकल बिसेखी
समउसमुझि धरिधीरजु राजा । चलेभरतपहिसहितसमाजा
भरत आइ आगे भइ लीन्हे । अवसरसरिस सुआसनदीन्हे
तात भरत कह तिरहुतिराऊ ।तुम्हहिंबिदित रघुबीरसुभाऊ

दो०–राम सत्यब्रत धरमरत, सब कर सीलु सनेहु ।
संकट सहत सँकोचबस, कहिअ जो आयसु देहु ॥२९२॥

सुनि तन पुलकि नयन भरिबारी । बोले भरतु धीर धरि भारी
प्रभु प्रिय पूज्य पितासम आपू ।कुल-गुरु-सम हित मायनबापू
कौसिकादिमुनिसचिवसमाजू । ज्ञान-अंबु-निधि आपुनुआजू
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी । जानिमोहिसिखदेइयम्वामी
एहि समाज थल बूझब राउर । मौन मलिन मैं बोलबबाउर
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता ।छमबतातलखि बामबिधाता
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जग जाना
स्वामिधरमस्वारथहिबिरोधू । बैरुअंध प्रेमहि न प्रबोधू

दो०—राखि राम रुख धरमुब्रतु, पराधीन मोहि जानि ।
सब के संमत सर्बहित, करिय प्रेम पहिचानि ॥२९३॥

भरतबचन सुनिदेखि सुभाऊ । सहितसमाज सराहत राऊ
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । अरथुअमितअतिआखरथोरे
ज्योंमुखु मुकुर मुकुरु निजपानी । गहि न जाइ अस अदभुत बानी
भूपु भरतु मुनि साधु समाजू । गेजहँबिबुध-कुमुद-द्विज-राजू
सुनि सुधि सोच बिकलसबलोगा । मनहुँ मीनगननवजल जोगा
देव प्रथम कुल-गुरु-गति देखी । निरखि बिदेह सनेहबिसेखी
राम-भगति-मय भरतु निहारे । सुर स्वारथीहहरि हियहारे
सब कोउ राम प्रेममय पेखा । भये अलेख सोचबस लेखा

दो०—राम सनेह-सकोच-बस, कह ससोच सुरराज ।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि, नाहिं त भयेउ अकाज ॥२९४॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही । देबि देव सरनागत पाही
फेरिभरतमतिकरि निजमाया । पालु बिबुधकुल करिछलछाया
बिबुधबिनय सुनि देबिसयानी । बोलीसुरस्वारथ जड़जानी
मो सन कहहु भरत मति फेरू । लोचन सहस न सूझ सुमेरू
बिधि-हरि-हरमायाबड़िभारी । सोउ न भरतमतिसकइनिहारी
सो मति मोहिकहत करु भोरी । चाँदिनिकर किचंदकरचोरी
भरतहृदय सिय-रामु-निवासू । तहँ कितिमिर जहँतरनिप्रकासू
असकहि सारदगइबिधिलोका । बिबुधबिकलनिसिमानहुँकोका

दो०—सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाटु ।
रचि प्रपंच माया प्रबल, भय भ्रम अरति उचाटु ॥२९५॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू । भरतहाथ सबु काजु अकाजू
गये जनकु रघुनाथसमीपा । सनमानेसबरबि-कुल-दीपा
समय समाज धरम अबिरोधा । बोले तब रघु-बंस-पुरोधा

जनक-भरत-संबादु सुनाई। भरत कहाउति कही सुहाई
तात राम जस आयसु देहू। सो सब करइ मोर मत एहू
सुनि रघुनाथ जोरि जुगपानी। बोले सत्य सरल मृदु बानी
बिद्यमान आपुनु मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू
राउर राय रजायसु होई। राउरिसपथ सही सिरसोई

दो०—रामसपथ सुनि सुनि जनकु, सकुचे सभा समेत।
सकल बिलोकत भरतमुखु, बनइ न ऊतरु देत ॥२९६॥

सभा सकुचबस भरत निहारी। रामबंधु धरि धीरजु भारी
कुसमउ देखि सनेहु सँभारा। बढ़तबिधिजिमिघटज निवारा
सोककनकलोचनमतिछोनी। हरी बिमल-गुन-गन जगजोनी
भरतबिबेक बराहु बिसाला। अनायास उघरी तेहि काला
करि प्रनामुसबुकहँकरजोरे। राम राउ गुरु साधु निहोरे
छमबआजुअतिअनुचितमोरा। कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा
हिय सुमिरी सारदा सुहाई। मानस तें मुखपंकज आई
बिमलबिबेकधरमनयसाली। भरतभारती मंजु मराली

दो०—निरखि बिबेक बिलोचनन्हि, सिथिल सनेह समाजु।
करि प्रनामु बोले भरतु, सुमिरि सीय रघुराजु ॥२९७॥

प्रभुपितुमातुसुहृदगुरुस्वामी। पूज्य परमहित अंतरजामी
सरल सुसाहिबुसीलनिधानू। प्रनतपाल सर्बग्य सुजानू
समरथसरनागत हितकारी। गुनगाहक अवगुन-अघ-हारी
स्वामिगोसाईंहिसरिसगोसाईं। मोहि समान मैं साइँ दोहाई
प्रभु-पितु-बचनमोहबसपेली। आयेउँ इहाँ समाज सकेली
जग भल पोच ऊँच अरुनीचू। अमिय अमरपद माहुर मीचू
रामरजाइ मेट मन माही। देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं
सोमैंसबबिधि कीन्हिढिठाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई

दो०—कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ।
दूषन भे भूषनसरिस, सुजस चारु चहुँ ओर ॥२९८॥

राउरिरीति सुबानि बड़ाई । जगतबिदितनिगमागम गाई
कूरकुटिलखलकुमतिकलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी
तेउ सुनि सरन सामुहें आये । सुकृत प्रनामु किहें अपनाये
देखि दोषकबहुँ न उर आने । सुनि गुन साधु समाज बखाने
को साहिब सेवकहि नेवाजी । आपु समान साज सब साजी
निजकरतूति नसमुझियसपने । सेवक सकुच सोचु उरअपने
सो गोसाइँ नहि दूपर कोपी । भुजा उठाइ कहे पन रोपी
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीना । गुनगति नट पाठक आधीना

दो०—यों सुधारि सनमानि जन, किये साधु सिरमोर ।
को कृपाल बिनु पालिहै, बिरदावलि बरजोर ॥२९९॥

सोक सनेह कि बालसुभायें । आयेउँ लाइ रजायसु बायें
तबहुँकृपाल हेरि निजओरा । सबहिभाँतिभलमानेउ मोरा
देखेउँ पाय सु-मंगल-मूला । जानेउँस्वामिसहज अनुकूला
बड़े समाज बिलोकेउँ भागू । बड़ी चूक साहिबअनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई । कीन्हिकृपानिधिसबअधिकाई
राखा मोर दुलार गोसाई । अपने सील सुभाय भलाई
नाथ निपट मैं कीन्हिढिठाई । स्वामिसमाज सकोच बिहाई
अबिनयबिनयजथारुचिबानी । छमिहिदेव अतिआरतिजानी

दो०—सुहृद सुजान सुसाहिबहि, बहुत कहब बड़ि खोरि ।
आयसु देइय देव अब, सबइ सुधारी मोरि ॥३००॥

प्रभु-पद-पदुम-पराग दोहाई । सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहाई
सो करिकहउँहिये अपने की । रुचि जागत सोवत सपने की
सहज सनेह स्वामिसेवकाई । स्वारथछलफल चारिबिहाई

अग्यानम न सुसाहिबसेवा । सो प्रसादु जन पावइ देवा
अमकहिप्रेमबिबसभयेभारी । पुलक सरीर बिलोचन बारी
प्रभु-पद-कमल गहेअकुलाई । समउसनेह न सो कहि जाई
कृपासिधु सनमानि सुबानी । बैठाये समीप गहि पानी
भरतबिनयसुनिदेखिसुभाऊ । सिथिल सनेह सभा रघुराऊ

छंद—रघुगउ सिथिल सनेह साधु समाज मुनि मिथिलाधनी ।
मन महुँ सराहत भरत-भायप-भगति की महिमा घनी ॥
भरतहिं प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानसमलिन से ।
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से॥

सो०—देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नरनारि सब ।
मघवा महामलीन, मुये मारि मंगल चहत ॥३०१॥

कपट-कुचालि-सीवँ सुरराजू । पर-अकाज-प्रिय आपन काजू
काकसमान पाक-रिपु-रीती । छली मलीन कतहुँ न प्रतीती
प्रथम कुमतकरिकपटसँकेला । सो उचाटु सब कें सिर मेला
सुरमाया तब लोग बिमोहे । रामप्रेम अतिसय न बिछोहे
भय उचाटबस मन थिर नाहीं । छनबनरुचिछनसदन सुहाहीं
दुबिध मनोगत प्रजा दुखारी । सरितसिधु संगम जनु बारी
दुचितकतहुँपरितोषुनलहहीं । एक एक सन मरमु न कहहीं
लखिहियहँसिकहकृपानिधानू । सरिस स्वान मघवानजुबानू

दो०—भरत जनक मुनिजन सचिव, साधु सचेत बिहाइ ।
लागि देवमाया सबहिं, जथाजोगु जनु पाइ ॥३०२॥

कृपासिधु लखिलोग दुखारे । निजसनेहसुर-पति-छल भारे
सभा राउ गुरु महिसुरमंत्री । भरतभगतिसबकै मति जंत्री
रामहिंचितवत चित्रलिखेसे । सकुचतबोलतबचन सिखे से
भरत-प्रीति-नति-बिनय-बड़ाई । सुनतसुखद बरनत कठिनाई

जासु बिलोकि भगति लवलेसू । प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू
महिमा तासु कहइ किमि तुलसी । भगति सुभाय सुमति हिय हुलसी
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी । कबिकुल कानि मानि सकुचानी
कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई । मति गति बाल बचन की नाई

दो०—भरत-बिमल-जसु बिमल बिधु, सुमति चकोर कुमारि ।
उदित बिमल जन हृदय नभ, एकटक रही निहारि ॥३०३॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ । लघु मति चापलता कबि छमहूँ
कहत सुनत सति भाउ भरत को । सीय-राम-पद होइ न रत को
सुमिरत भरतहि प्रेम राम को । जेहि न सुलभ तेहि सरिस बाम को
देखि दयालु दसा सबही की । राम सुजान जानि जन जी की
धरम धुरीन धीर नय नागर । सत्य सनेह सील सुख सागर
देसु कालु लखि समय समाजू । नीति-प्रीति-पालक रघुराजू
बोले बचन बानि सरबसु से । हित परिनाम सुनत ससि रसु से
तात भरत तुम्ह धरम धुरीना । लोक बेद बिद परम प्रबीना

दो०—करम बचन मानस बिमल, तुम्ह समान तुम्ह तात ।
गुरु समाज लघु-बंधु-गुन, कुसमय किमि कहि जात ॥३०४॥

जानहु तात तरनि-कुल-रीती । सत्यसंध पितु कीरति प्रीती
समउ समाजु लाज गुरुजन की । उदासीन हित अनहित मन की
तुम्हहि बिदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा । तदपि कहउँ अवसर अनुसारा
तात तात बिनु बात हमारी । केवल गुरु-कुल-कृपा सँभारी
न तरु प्रजा पुरजन परिवारू । हमहि सहित सब होत खुआरू
जौं बिनु अवसर अथव दिनेसू । जग केहि कहहु न होइ कलेसू
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा । मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा

दो०—रामकाज सब लाज पति, धरम धरनि धन धाम ।

गुरुप्रभाउ पालिहि सबहिं भल होइहि परिनाम ॥३०५॥

सहितसमाज तुम्हार हमारा । घर बन गुरुप्रसाद रखवारा
मातु-पिता-गुरु-स्वामिनिदेसू । सकलधरम धरनीधर सेसू
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू । तात तरनि-कुल-पालक होहू
साधक एक सकलसिधि देनी । कीरति सुगति भूतिमय बेनी
सो बिचार सहि संकटभारी । करहु प्रजा परिवारु सुखारी
बाँटी बिपतिसबहिमोहिभाई । तुमहिअवधिभरिबड़ि कठिनाई
जानितुम्हहिमृदुकहहुँकठोरा । कुसमयतात नअनुचित मोरा
होहिं कुठायँ सुबंधु सहायें । ओडियहि हाथ असनि के घायें

दो०—सेवक कर पद नयन से, मुख सो साहिबु होइ ।
तुलसी प्रीति की रीतिसुनि,सुकवि सराहहिं सोइ ॥३०६॥

सभासकलसुनि रघुबरबानी । प्रेम-पयोधि-अमिय जनु सानी
सिथिलसमाजसनेह समाधी । देखि दसा चुप सारद साधी
भरतहि भयउ परम संतोषू । सनमुखस्वामिबिमुखदुखदोषू
मुख प्रसन्न मन मिटाबिषादू । भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू
कीन्ह सप्रेम प्रनाम बहोरी । बोले पानिपंकरुह जोरी
नाथ भयेउ सुखु साथ गये को । लहेउँ लाहु जग जनमभये को
अब कृपाल जस आयसु होई । करउँ सीस धरि सादर सोई
सोअवलंब देव मोहि देई । अवधि पारु पावउँ जेहि सेई

दो०—देव देवअभिषेक हित, गुरुअनुसासन पाइ ।
आनेउँ सब तीरथसलिलु,तेहि कहँ काह रजाइ॥३०७॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभुआयसु पाई । बोले बानि सनेह सुहाई
चित्रकूट मुनि थल तीरथबन । खगमृगसरिसरनिर्झर गिरिगन
प्रभु-पद-अंकितअवनिबिसेखी । आयसु होइ त आवउँ देखी

अवसि अत्रि आयसु सिरधरहू। तात बिगत भय कानन चरहू
मुनिप्रसाद बनु मंगलदाता। पावन परम सुहावन भ्राता
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं। राखेहु तीरथजलु थल तेहीं
सुनिप्रभुबचनभरतसुखुपावा। मुनि-पद-कमलमुदित सिर-नावा

दो०—भरत-राम-संबादु सुनि, सकल - सुमंगल - मूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल, बरषत सुर-तरु-फूल॥३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसाईं। कहत देव हरषत बरिआईं
मुनि मिथिलेस सभा सबकाहू। भरतबचनसुनि भयेउ उछाहू
भरत-राम-गुन-ग्राम - सनेहू। पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन। नेमु प्रेमु अति पावन पावन
मतिअनुसार सराहन लागे। सचिव सभासद सब अनुरागे
सुनिसुनिराम-भरत-संबादू। दुहुँ समाज हिय हरष बिषादू
राममातुदुख-सुख-सम आनी। कहि गुन राम प्रबोधी रानी
एक कहहिं रघुबीरबड़ाई। एक सराहत भरतभलाई

दो०—अत्रि कहेउ तब भरत सन, सैलसमीप सुकूप।
राखिय तीरथतोय तहँ, पावन अमिय अनूप॥३०९॥

भरत अत्रिअनुसासन पाई। जलभाजन सब दिये चलाई
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू। सहित गये जहँ कूप अगाधू
पावनुपाथ पुन्य थल राखा। प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा
तात अनादि सिद्ध थल एहू। लोपेउ काल बिदित नहिं केहू
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा। कीन्ह सुजलहित कूप बिसेखा
बिधिबसभयेउबिस्वउपकारू। सुगमअगमअतिधरमबिचारू
भरतकूप अब कहिहहिंलोगा। अतिपावन तीरथ जलजोगा
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी। होइहहिंबिमलकरममनबानी

दो०—कहत कूपमहिमा सकल, गये जहाँ रघुराउ।

अत्रि सुनायेउ रघुबरहि, तीरथ-पुन्य-प्रभाउ ॥३१०॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती ।भयेउभोरु निसि सो सुख बीती नित्यनिबाहि भरतदोउभाई। राम-अत्रि-गुरु-आयसु पाई सहित समाज साज सब सादे। चले राम-बन-अटन पयादें कोमलचरनचलतबिनुपनही । भइमृदुभूमिसकुचिमनमनही कुस कंटक काँकरी कुराई । कटुक कठोर कुबस्तु दुराई महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे ।बहत समीर त्रिबिधसुखलीन्हे सुमनबरषिसुरघनकरिछाहीं। बिटप फूलिफल तृन मृदुताही मृगबिलोकिखगबोलिसुबानी । सेबहिं सकल रामप्रिय जानी

दो०—सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात।
राम-प्रान-प्रिय भरत कहुँ,यह न होइ बड़ि बात ॥३११॥

एहिबिधिभरतफिरतबनमाहीं। नेमप्रेमु लखिमुनि सकुचाहीं पुन्य जलास्रय भूमिबिभागा। खगमृगतरुतृनगिरिबनबागा चारु बिचित्र पवित्र बिसेखी। बूझत भरत दिब्य सब देखी सुनिमनमुदितकहतरिषिराऊ। हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ कतहुँ निमज्जनकतहुँ प्रनामा। कतहुँबिलोकत मनअभिरामा कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई। सुमिरतसीय सहित दोउभाई देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा। देहि असीस मुदित बनदेवा फिरहिं गयेदिन पहर अढ़ाई। प्रभु-पदकमलबिलोकहिंआई

दो०—देखे थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ ।
कहत सुनत हरिहर सुजस,गयेउ दिवसु भइ साँझ॥३१२॥

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तिरहुति राजू भल दिन आजु जानिमनमाहीं। रामकृपालु कहत सकुचाहीं गुरु नृपभरतसभा अवलोकी।सकुचिरामफिरिअवनिबिलोकी सीलसराहि सभा सब सोची। कहुँ न रामसमस्वामिसँकोची

भरत सुजान रामरुख देखी। उठि सप्रेम धरि धीर बिसेखी
करि दंडवत कहत कर जोरी। राखी नाथ सकलरुचि मोरी
मोहि लगि सहेउसबहिसंतापू। बहुत भाँति दुखु पावा आपू
अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई। सेवउँ अवधअवधिभरि जाई

दो०—जेहि उपाय पुनि पाय जनु, देखइ दीनदयाल।
सो सिख देइय अवधि लगि, कोसलपाल कृपाल॥३१३॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाई। सब सुचि सरस सनेह सगाई
राउर बदिभल भव-दुख-दाहू। प्रभुबिनुबादि परम-पद-लाहू
स्वामिसुजानुजानिसबहीकी। रुचिलालसारहनिजन जी की
प्रनत पालु पालहि सब काहू। देव दुहूँ दिसि ओर निबाहू
असमोहिसबबिधिभूरि भरोसो। कियें बिचारु नसोचु खरो सो
आरति मोर नाथ कर छोहू। दुहुँमिलि कीन्ह ढीठहठि मोहू
यह बड़दोषुदूरिकरिस्वामी। तजिसकोचसिखइअनुगामी
भरतबिनयसुनिसबहिप्रसंसी। खीर-नीर-बिबरन-गतिहंसी

दो०—दीनबंधु सुनि बंधु के, बचन दीन छलहीन।
देस-काल-अवसर-सरिस, बोले रामु प्रबीन॥३१४॥

तातुम्हारिमोरिपरिजनकी। चिंतागुरुहि नृपहिघरबन की
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेसू। हमहि तुम्हहिसपनेहुँ न कलेसू
मोर तुम्हार परमपुरुषारथ। स्वारथु सुजसुधरमुपरमारथ
पितुआयसु पालिहि दुहुँ भाई। लोक बेद भल भूप भलाई
गुरु-पितु-मातु-स्वामि-सिखपालें। चलेहु कुमग-पगपरहिं न खालें
असबिचारि सब सोचबिहाई। पालहुअवध अवधि भरिजाई
देसु कोसु परिजन परिवारू। गुरुपद रजहिं लाग छरुभारू
तुम्ह मुनि-मातु-सचिवसिख मानी। पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी

दो०—मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान कहुँ एक।

पालइ पोषइ सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ॥३१५॥

राज-धरम-सरबसु एतनोई। जिमि मन माँह मनोरथ गोई
बंधुप्रबोध कीन्ह बहु भाँती। बिनुअधार मनतोष न साँती
भरत सीलु गुरुसचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू
प्रभु करिकृपा पाँवँरी दीन्ही। सादर भरत सीसधरिलीन्ही
चरनपीठ करुनानिधान के। जनु जुगजामिकप्रजाप्रान के
संपुट भरत सनेह रतन के। आखरजुग जनु जीवजतन के
कुलकपाटकरकुसलकरमके। बिमलनयन सेवा-सु-धरमके
भरत मुदित अवलंब लहे तें। अस सुख जस सिय रामु रहेतें

दो०—माँगेउ बिदा प्रनामु करि, राम लिये उर लाइ।

लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसरु पाइ ॥३१६॥

सोकुचालिसबकहँभइनीकी। अवधिआससमजीवनिजीकी
न तरु लषन-सिय-राम-बियोगा। हहरिमरत सबु लोग कुरोगा
रामकृपा अवरेब सुधारी। बिबुधधारिभइगुनद गोहारी
भेंटतभुजभरिभाइभरत सो। राम-प्रेम-रसुकहि न परतसो
तनमनबचनउमग अनुरागा। धीर-धुरंधर धीरजु त्यागा
बारिजलोचन मोचत बारी। देखि दसा सुरसभा दुखारी
मुनिगनगुरुधुरधीरजनकसे। ग्यानअनल मन कसे कनक से
जे बिरंचि निरलेप उपाये। पदुमपत्र जिमि जग जलजाये

दो०—तेउ बिलोकि रघुबर-भरत, प्रीति अनूप अपार।

भये मगन मन तन बचन, सहित बिराग बिचार॥३१७॥

जहाँजनकगुरुगतिमति भोरी। प्राकृत प्रीतिकहतबड़ि खोरी
बरनतरघुबर-भरत-बियोगू। सुनि कठोरकबिजानिहिलोगू
सोसकोचुरसुअकथ सुबानी। समउसनेहु सुमिरि सकुचानी
भेंटि भरतु रघुबर समुझाये। पुनिरिपुदवनहरषिहियलाये

सेवकसचिव-भरत-रुख पाई । निजनिजकाज लगे सब जाई
सुनि दारुनदुख दुहूँ समाजा । लगे चलनके साजन साजा
प्रभु-पद-पदुमबंदि दोउभाई । चले सीस धरि रामरजाई
मुनि तापस बन देव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी

दो०—लषनहिं भेंटि प्रनाम करि, सिर धरि सिय-पद-धूरि ।
चले सप्रेम असीस सुनि, सकल-सुमंगल-मूरि ॥३१८॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुतबिधिबिनयबड़ाई
देव दयाबस बड़ दुख पायेउ । सहित समाजकाननहिंआयेउ
पुर पगु धारिय देइ असीसा । कीन्ह धीरधरिगवनमहीसा
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किये हरि-हर-समजाने
सासुसमीप गये दोउ भाई । फिरे बंदि पग आसिष पाई
कौसिक बामदेव जाबाली । परिजनपुरजनसचिवसुचाली
जथाजोगुकरिबिनय प्रनामा । बिदा किये सब सानुज रामा
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे

दो०—भरत-मातु-पद-बंदि प्रभु, सुचि सनेह मिलि भेंटि ।
बिदा कीन्हि सजि पालकी, सकुच सोच सब मेंटि ॥३१९॥

परिजनमातुपितहिंमिलिसीता । फिरी प्रान-प्रिय-प्रेम-पुनीता
करि प्रनाम भेंटी सब सासू । प्रीतिकहत कबि हिय न हुलासू
सुनिसिखअभिमतआसिषपाई । रही सीय दुहुँ प्रीति समाई
रघुपति पटु पालकी मँगाई । करिप्रबोधु सब मातु चढ़ाई
बारबारहिलिमिलिदुहुँभाई । सम सनेह जननी पहुँचाई
साजिबाजिगजबाहन नाना । भूप भरतदल कीन्ह पयाना
हृदय रामुसिय लखनसमेता । चले जाहि सब लोग अचेता
बसह बाजि गजपसु हियहारे । चले जाहिं परबस मन मारे

दो०—गुरु-गुरु-तिय-पद बंदि प्रभु, सीता लषन समेत ।

फिरे हरष-बिसमय-सहित, आये परननिकेत ॥३२०॥

बिदाकीन्ह सनमानिनिषादू । चलेउ हृदयबड़ बिरहबिषादू
कोलकिरातभिल्लबनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी
प्रभु सियलषनबैठिबटछाहीं । प्रिय-परिजन-बियोगबिलखाहीं
भरत सनेहु सुभाव सुबानी । प्रियाअनुज सन कहतबखानी
प्रीतिप्रतीतिबचनमनकरनी । श्रीमुख राम प्रेमबस बरनी
तेहिअवसरखगमृगजलमीना। चित्रकूट चर अचर मलीना
बिबुधबिलोकिदसारघुबरकी। बरषिसुमनकहिगतिघरघरकी
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरोसो

दो०—सानुज सीयसमेत प्रभु, राजत परनकुटीर ।
भगति ग्यान बैराग जनु, सोहत धरे सरीर ॥३२१॥

मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू । रामबिरह सबु साजु बिहालू
प्रभु-गुन-ग्राम गुनतमनमाहीं । सब चुपचाप चले मग जाहीं
जमुनाउतरि पार सब भयऊ । सो बासर बिनु भोजन गयऊ
उतरि देवसरि दूसर बासू । राम सखा सब कीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाये । चौथेदिवस अवधपुर आये
जनक रहे पुर बासर चारी । राज-काज सब साज सँभारी
सौंपिसचिव गुरु भरतहिराजू । तिरहुति चलेसाजिसबसाजू
नगर-नारि-नर गुरु सिखमानी । बसे सुखेन राम-रज-धानी

दो०—रामदरस लगि लोग सब, करत नेम उपवास ।
तजि तजि भूषन भोग सुख,जियत अवधि की आस॥३२२॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निज निज काजपाइसिखओधे
पुनि सिख दीन्हि बोलिलघु भाई । सौंपी सकल मातु सेवकाई
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनाम बरबिनय निहोरे
ऊँच नीच कारज भल पोचू । आयसु देब न करब सँकोचू

परिजनपुरजन प्रजाबोलाये । समाधान करि सुबस बसाये
सानुज गे गुरुगेह बहोरी । करि दंडवत कहतकरजोरी
आयसु होइ त रहउँ सनेमा । बोले मुनितन पुलकिसप्रेमा
समुझबकहबकरबतुम्ह जोई । धरमसारु जग होइहि सोई

दो०–सुनि सिख पाइ असीस बड़ि, गनक बोलि दिन साधि ।
सिंहासन प्रभुपादुका, बैठारे निरुपाधि ॥३२३॥

राममातु गुरुपद सिरु नाई । प्रभु-पद-पीठ-रजायसु पाई
नंदिगाँव करि परनकुटीरा । कीन्ह निवास धरम-धुर-धीरा
जटाजूट सिरमुनिपट धारी । महि खनिकुससाथरी सवाँरी
असन बसन बासन ब्रतनेमा । करत कठिन रिषिधरमसपेमा
भूषन बसन भोग सुख भूरी । मनतन बचन तजे तिनतूरी
अवधराज सुरराज सिहाई । दसरथ धनुसुनिधनदलजाई
तेहिपुरबसतभरत बिनुरागा । चंचरीक जिमि चंपक बागा
रमाबिलास रामअनुरागी । तजत बमन जिमिजनबड़भागी

दो०–राम-पेम-भाजन भरत, बड़े न येहि करतूति ।
चातक हंस सराहियत, टेक बिबेक बिभूति ॥३२४॥

देह दिनहुँ दिन दूबरि होई । घटइ तेजु बलु मुखछबिसोई
नितनव राम-पेम-पनुपीना । बढत धरमदलु मन न मलीना
जिमिजलनिघटतसरदप्रकासे । बिलसत बेतस बनजबिकासे
समदमसंजम नियमउपासा । नखत भरत हियबिमलअकासा
ध्रुव बिस्वासु अवधिराकासी । स्वामिसुरति सुरबीथि बिकासी
राम-पेम-बिधुअचलअदोखा । सहित समाज सोहनित चोखा
भरतरहनिसमुझनिकरतूती । भगति बिरति गुन बिमलबिभूती
बरनतसकलसुकबिसकुचाहीं । सेस-गनेस-गिरा-गमु नाहीं

दो०—नित पूजत प्रभुपाँवरी, प्रीति न हृदय समाति ।
माँगि माँगि आयसु करत, राजकाज बहु भाँति ॥३२५॥

पुलकगात हिय सियरघुबीरू । जीहनामु जप लोचन नीरू
लषनरामसिय कानन बसहीं । भरत भवन बसि तपतनु कसहीं
दोउदिसिसमुझिकहत सब लोगू । सब बिधि भरतसराहन जोगू
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाही । देखि दसा मुनिराज लजाहीं
परमपुनीत भरतआचरनू । मधुर-मंजु-मुद-मंगलकरनू
हरन कठिनकलि-कलुष-कलेसू । महा-मोह-निसिदलन दिनेसू
पाप-पुंज-कुंजर-मृग-राजू । समन सकल-संताप-समाजू
जनरंजन भंजन भवभारू । रामसनेह सुधाकरसारू

छंद—सिय-राम-प्रेम-पियूष-पूरन होत जनम न भरत को ।
मुनि-मन-अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को ॥
दुखदाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि रामसनमुख करत को ॥

सो०—भरतचरित करि नेमु, तुलसी जो सादर सुनहिं ।
सीय-राम-पद पेमु, अवसि होइ भव-रस-बिरति ॥३२६॥

मासपारायण, इक्कीसवाँ विश्राम

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनो नाम
अयोध्याकांड समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामचरितमानस

अरण्यकाण्ड

श्लोकौ

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सो०—उमा राम गुन गूढ़, पंडित मुनि पावहिं बिरति ।
पावहिं मोह बिमूढ़, जे हरि बिमुख न धर्मरति ॥

पुर-नर-भरत-प्रीति मैं गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई
अबप्रभुचरितसुनहुअतिपावन। करतजेबनसुरनरमुनिभावन
एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निज कर भूषन राम बनाये
सीतहि पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिकसिला पर सुंदर
सुर-पति-सुतधरिबायस बेखा। सठचाहत रघुपति-बल देखा
जिमि पिपीलिकासागर थाहा। महा-मंद-मति पावन चाहा

सीता चरन चोंच हतिभागा। मूढ़ मंदमति कारन कागा
चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक-धनुष-सायक संधाना

दो०—अतिकृपाल रघुनायक, सदा दीन पर नेह।
ता सनु आइ कीन्ह छलु, मूरख अवगुनगेह ॥ १ ॥

प्रेरितमंत्र ब्रह्म सर धावा। चला भाजि बायस भयपावा
धरिनिजरूपगयेउपितु पाहीं। रामबिमुख राखा तेहि नाहौं
भा निरास उपजी मन त्रासा। जथा चक्रभय रिषि दुर्बासा
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका। फिरास्रमितब्याकुलभयसोक
काहू बैठन कहा न ओही। राखिको सकै रामकर द्रोही
मातु मृत्युपितुसमन समाना। सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना
मित्रकरै सतरिपु कै करनी। ता कहुँ बिबुध नदी बैतरनी
सबजगताहिअनलहु ते ताता। जोरघु-बीर-बिमुखसुनुभ्राता
नारद देखा बिकल जयंता। लागि दया कोमलचित संता
पठवा तुरत राम पहिं ताही। कहेसिपुकारि प्रनतहितपाही
आतुर सभय गहेसि पद जाई। त्राहि त्राहि दयालु रघुराई
अ-तुलित-बलअ-तुलित-प्रभुताई। मैं मतिमंद जानि नहिं पाई
निजकृतकर्मजनितफलपायउँ। अबप्रभुराहिसरनतकिआयउँ
सुनिकृपालअति-आरत-बानी। एक नयनकरि तजाभवानी

सो०—कीन्ह मोह बस द्रोह, जद्यपि तेहि कर बध उचित।
प्रभु छाँड़ेउ करि छोह, को कृपाल रघुबीर-सम ॥२॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना। चरितकियस्रुति सुधासमाना
बहुरि रामअस मनअनुमाना। होइहिभीरसबहिंमोहिजाना
सकल मुनिन्ह सनबिदाकराई। सीतासहित चले दोउ भाई
अत्रि के आस्रमजब प्रभु गयऊ। सुनतमहामुनिहरषितभयऊ
पुलकिगात अत्रि उठि धाये। देखि रामु आतुर चलि आये

करत दंडवत मुनि उर लाये। प्रेमबारि दोउ जन अन्हवाये
देखि रामछबि नयन जुड़ाने। सादर निजआस्रम तब आने
करि पूजा कहि बचन सुहाये। दिये मूल फल प्रभुमन भाये

दो०—प्रभु आसन आसीन,भरि लोचन सोभा निरखि।
मुनिबर परम प्रबीन,जोरि पानि अस्तुति करत॥ ३॥

छंद—नमामि भक्तवत्सलं। कृपालु-शील कोमलम्।
भजामि ते पदाम्बुजं। अकामिनां स्वधामदम्॥
निकाम-श्याम-सुन्दरं। भवाम्बु-नाथ-मन्दरम्।
प्रफुल्ल कञ्ज-लोचनं। मदादि-दोष-मोचनम्॥
प्रलम्ब-बाहु-विक्रमं। प्रभोऽप्रमेयवैभवम्।
निषङ्ग-चाप-सायकं। धरं त्रि-लोक-नायकम्॥
दिनेश-वंश-मंडनं। महेश-चाप-खंडनम्।
मुनीन्द्र-संत-रंजनम्। सुरारि-वृंद-भंजनम्॥
मनोज-वैरि-वंदितं। अजादि-देव-सेवितम्।
विशुद्ध-बोध-विग्रहं। समस्तदूषणापहम्॥
नमामि इन्दिरापतिं। सुखाकरं सतां गतिम्।
भजे सशक्ति सानुजं। शची-पति-प्रियानुजम्॥
त्वदंघ्रिमूल ये नरा। भजंति हीनमत्सराः।
पतंति नो भवार्णवे। वितर्क-वीचि-संकुले॥
विविक्तवासिनस्सदा। भजंति मुक्तये मुदा।
निरस्य इंद्रियादिकं। प्रयांति ते गतिं स्वकम्॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं। निरीहमीश्वरं विभुम्।
जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलम्॥

भजामि भाववल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभम् ।
स्व-भक्त-कल्प- पादपं । समं सुसेव्यमन्वहम् ॥
अनूप-रूप - भूपतिं । नतोऽहमुर्विजापतिम् ।
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठन्ति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदम् ।
व्रजंति नात्र संशयः । त्वदीयभक्तिसंयुताः ॥

दो०—बिनती करि मुनि नाइ सिरु,कह कर जोरि बहोरि ।
चरनसरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥ ४ ॥

अनुसुइया के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुसीलबिनीता रिषि-पतिनी-मनसुखअधिकाई। आसिष देइ निकट बैठाई दिब्य बसन भूषन पहिराये । जे नित नूतन अमल सुहाये कर रिषिबधूसरस मृदुबानी । नारिधरमकछु ब्याजबखानी मातु-पिता-भ्राता-हित-कारी। मितप्रद सब सुनुराजकुमारी अमितदानि भर्ता बैदेही । अधम सो नारि जोसेव न तेही धीरजु धर्म मित्र अरु नारी । आपदकाल परखियहिचारी बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना । अंध बधिर क्रोधी अतिदीना ऐसेहु पति करकिये अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना एकइ धर्म एक ब्रत नेमा । काय बचनमन पतिपद प्रेमा जग पतिब्रता चारिबिधिअहहीं । बेद पुरान संत सब कहहीं उत्तम के अस बस मन माहीं । सपनेहुँ आन पुरुष जगनाहीं मध्यम परपति देखइ कैसें । भ्राता पिता पुत्र निजजैसें धर्म बिचारि समुझिकुलरहई । सोनिकृष्टतियस्रुतिअसकहई बिनु अवसर भय तें रह जोई । जानेहुअधम नारि जगसोई पतिबंचक पर-पति-रति करई। रौरव नरक कलपसतपरई छनसुख लागिजनमसतकोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी

बिनुश्रम नारि परमगतिलहई। पति व्रत-धर्म छाँड़िछलगहई
पति प्रतिकूल जनमजहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई

सो०—सहज अपावनि नारि,पति सेवत सुभ गति लहइ।
जसुगावतश्रुतिचारि,अजहुँतुलसिका हरिहिप्रिय॥
सुनु सीता तव नाम,सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं।
तोहि ग्रानप्रिय राम, कहेउँ कथा संसारहित ॥ ५ ॥

सुनि जानकीपरम सुख पावा। सादर तासु चरन सिरु नावा
तबमुनिसनकहकृपानिधाना। आयसु होइ जाउँ बन आना
संतत मोपर कृपा करेहू। सेवक जानि तजेउजनि नेहू
धर्म-धुरंधर प्रभु कै बानी। सुनि सप्रेम बोले मुनिग्यानी
जासु कृपाअज सिवसनकादी। चहत सकल परमारथबादी
ते तुम्ह राम अ-काम-पियारे। दीनबंधु मृदु बचन उचारे
अब जानी मैं श्रीचतुराई। भजी तुम्हहि सबदेव बिहाई
जेहिसमानअतिसयनहिकोई। ताकर सील कस न अस होई
केहिबिधिकहौंजाहुअबस्वामी। कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी
असकहिप्रभुबिलोकिमुनिधीरा। लोचनजलबह पुलक सरीरा

छंद—तन पुलकनिर्भर प्रेमपूरन नयन मुख - पंकज दिये।
मन-ग्यान-गुन-गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये॥
जप जोग धर्म समूह ते नर भगति अनुपम पावई।
रघु-वीर-चरित पुनीत निसि दिनु दास तुलसी गावई॥

दो०—कलि-मल-समन दमन मम,रामसुजस सुख मूल।
सादर सुनहिं जे तिन्ह पर, राम रहहिं अनुकूल॥

सो०—कठिन काल मल कोस,धर्म न ग्यान न जोग जप।
परिहरि सकल भरोस,रामहिं भजहिं ते चतुर नर ॥ ६ ॥

मुनि-पद-कमलनाइकरिसीसा। चलेबनहिंसुर-नर-मुनि-ईसा
आगे राम अनुज पुनि पाछें। मुनि-बर-वेष बने अति काछे
उभय बीच सिय सोहइ कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
सरिताबनगिरिअवघटघाटा। पति पहिचानिदेहिंबर बाटा
जहँ जहँ जाहि देव रघुराया। करहिं मेघ तहँ तहँ नभछाया
मिलाअसुरबिराधमगजाता। आवतही रघुबीर निपाता
तुरतहिं रुचिररूप तेहिपावा। देखि दुखी निजधाम पठावा
पुनि आये जहँ मुनि सरभंगा। सुंदर अनुज जानकी संगा

दो०—देखि राम-मुख-पंकज, मुनि-बर-लोचन भृंग।
सादर पान करत अति, धन्य जनम सरभंग॥ ७॥

कह मुनिसुनु रघुबीरकृपाला। संकर-मानस-राज-मराला
जात रहेउँ बिरचि के धामा। सुनेउ स्रवनबन ऐहहिं रामा
चितवत पंथ रहेउँदिन राती। अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती
नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्ही कृपा जानि जन दीना
सो कछु देव न मोहि निहोरा। निजपनराखेहुजन-मन-चोरा
तब लगि रहहुदीनहितलागी। जबलगिमिलौंतुम्हहिंतनुत्यागी
जोग जग्य जप तप ब्रतकीन्हा। प्रभु कहँदेइभगतिबर लीन्हा
एहिबिधिसररचिमुनिसरभंगा। बैठे हृदय छाँड़ि सब संगा

दो०—सीता-अनुज-समेत प्रभु, नील जलद तनु स्याम।
मम हिय बसहु निरंतर, सगुनरूप श्रीराम॥ ८॥

असकहिजोगअगिनितनुजारा। रामकृपा बैकुंठ सिधारा
ता तें मुनि हरिलीन न भयऊ। प्रथमहिं भेद भगतिबरलयऊ
रिषिनिकायमुनि-बर-गति देखी। सुखी भये निज हृदयबिसेखी
अस्तुतिकरहिंसकलमुनिबृंदा। जयति प्रनतहित करुनाकंदा
पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनि-बर-बृंद बिपुलसँग लागे

अस्थिसमूह देखि रघुराया। पूछा मुनिन्ह लागि अतिदाया
जानतहू पूछिय कस स्वामी। सबदरसी तुम्ह अंतरजामी
निसिचरनिकरसकलमुनिखाये। सुनि रघुनाथ नयन जलछाये

दो०—निसि-चर-हीन करउँ महि,भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आस्रमन्हि,जाइ जाइ सुख दीन्ह॥ ९॥

मुनिअगस्तिकरसिष्यसुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना
मन-क्रम-बचनरामपदसेवक। सपनेहु आन भरोस न देवक
प्रभुआगवनुस्रवन सुनिपावा। करत मनोरथ आतुर धावा
हे बिधि दीनबंधु रघुराया। मो से सठ पर करिहहिं दाया
सहितअनुजमोहिरामगोसाईं। मिलिहहि निज सेवककीनाईं
मोरे जिय भरोस दृढ़नाहीं। भगतिबिरति न ग्यानमनमाहीं
नहिं सतसंग जोग जपजागा। नहि दृढ़ चरनकमल अनुरागा
एक बानि करुनानिधानकी। सो प्रिय जाके गति न आनकी
होइहहिसुफलआजुममलोचन। देखि बदन पंकज भवमोचन
निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी। कहि न जाइ सो दसा भवानी
दिसिअरुबिदिसि पंथ नहिंसूझा। को मैं चलेऊँ कहाँ नहिं बूझा
कबहुँक फिरि पाछे पुनिजाई। कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई
अबिरलप्रेम भगतिमुनि पाई। प्रभु देखहिं तरुओट लुकाई
अतिसय प्रीतिदेखि रघुबीरा। प्रगटे हृदय हरन भवभीरा
मुनि मग माँझअचलहोईबैसा। पुलकसरीर पनसफल जैसा
तब रघुनाथनिकट चलिआये। देखि दसा निज जनमन भाये
मुनिहिरामबहुभाँतिजगावा। जाग न ध्यानजनितसुखपावा
भूपरूप तब राम दुरावा। हृदय चतुर्भुजरूप देखावा
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसें। बिकलहीनमनि फनिबर जैसें
आगे देखि रामतनु स्यामा। सीता-अनुज-सहित सुखधामा

परेउ लकुटइव चरनन्हिलागी । प्रेममगन मुनिबर बड़भागी
भुजबिसाल गहि लिये उठाई । परमप्रीति राखे उर लाई
मुनिहिंमिलतअससोह कृपाला । कनकतरुहि जनु भेंटतमाला
रामबदनबिलोकि मुनिठाढ़ा । मानहुँ चित्रमाँझलिखि काढ़ा

दो०—तब मुनि हृदय धीर धरि,गहि पद बारहिं बार ।
निजआस्रम प्रभु आनि करि, पूजा बिबिधि प्रकार ॥१०॥

कहमुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी । अस्तुतिकरौकबनबिधितोरी
महिमाअमितमोरिमतिथोरी । रबिसनमुख खद्योत अँजोरी
स्याम-तामरस-दाम - सरीरं । जटा-मुकुट-परिधन-मुनि-चीरं
पानि-चाप-सर-कटि - तूनीरं । नौमि निरंतर श्री-रघु-बीरं
मोह-बिपिन-घन-दहन-कृसानुः । संत-सरोरुह- कानन-भानुः
निसिचर करि बरूथमृगराजः । त्रातुसदा नो भव-खग-बाजः
अरुन-नयन-राजीव - सुवेसं । सीता-नयन - चकोर- निसेसं
हर-हृदि-मानस-राज-मरालं । नौमिराम-उर-बाहु-बिसालं
संसय-सर्प - ग्रसन-उरगादः । समन-सु-कर्कस-तर्क-बिषादः
भव-भंजन-रंजन - सुर-जूथः । त्रातु सदा नो कृपाबरूथः
निर्गुन-सगुन-विषम-समरूपं । ज्ञान - गिरा-गो - तीतमनूपं
अमल-मखिल-मन-वद्यमपारं। नौमि राम भंजन-महि-भारं
भक्त-कल्प-पादप - आरामः । तर्जन-क्रोध-लोभ-मद-कामः
अति-नागर-भव-सागर-सेतुः। त्रातु सदादिन-कर-कुल-केतुः
अतुलितभुजप्रतापबलधामः ।कलि-मल-बिपुल-बिभंजन-नामः
धर्मवर्म नर्मद गुनग्रामः । संतत संतनोतु मम रामः
जदपिबिरजब्यापकअबिनासी। सबके हृदय निरंतर बासी
तदपिअनुजश्रीसहितखरारी । बसतुमनसि मम काननचारी
जे जानहिं ते जानहु स्वामी । सगुन अगुन उर-अंतरजामी

जो कोसलपति राजिवनयना। करौ सो राम हृदय मम अयना
असअभिमान जाइजनिभोरें। मैं सेवक रघुपति पति मोरें
सुनि मुनिबचन राममनभाये। बहुरि हरषिमुनिबर उरलाये
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही। जो बर माँगहु देउँ सो तोही
मुनिकह मैं बरकबहुँ न जाँचा। समुझि न परै झूठ का साँचा
तुम्हहिं नीक लागै रघुराई। सो मोहि देहु दास-सुख-दाई
अबिरलभगतिबिरतिबिग्याना। होहु सकल-गुन-ग्यान-निधाना
प्रभु जो दीन्हसोबर मैं पावा। अब सो देहु मोहिं जो भावा

दो०—अनुज-जानकी-सहित प्रभु, चाप-बान धर राम।
मम हियगगन इंदु इव, बसहु सदा निःकाम ॥११॥

एवमस्तु कहि रमानिवासा। हरषि चले कुंभज रिषि पासा
बहुत दिवस गुरुदरसन पाये। भये मोहिं एहि आश्रम आये
अबप्रभु संग जाउँ गुरु पाहीं। तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं
देखिकृपानिधि मुनि चतुराई। लिये संग बिहँसे दोउ भाई
पंथकहत निज भगति अनूपा। मुनिआस्रम पहुँचे सुरभूपा
तुरतसुतीच्छनगुरुपहिं गयऊ। करि दंडवत कहत अस भयऊ
नाथ कोसलाधीसकुमारा। आये मिलन जगतआधारा
राम अनुज समेत बैदेही। निसि दिनु देव जपत हहुजेही
सुनतअगस्त तुरत उठि धाये। हरि बिलोकि लोचनजल छाये
मुनि-पद-कमलपरेदोउ भाई। रिषि अतिप्रीतिलियेउर लाई
सादरकुसलपूछिमुनि ग्यानी। आसन पर बैठारे आनी
पुनि करि बहुप्रकार प्रभुपूजा। मोहि सम भागवंत नहिं दूजा
जहँ लगि रहेअपर मुनिबृंदा। हरषे सब बिलोकि सुखकंदा

दो०—मुनिसमूह महँ बैठे, सनमुख सब की ओर।
सरदइंदु तन चितवत, मानहुँ निकर चकोर ॥ १२ ॥

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं। तुम्ह सन प्रभुदुराव कछुनाहीं
तुम्हजानहुजेहिकारनआयउँ। ता तें तात न कहि समुझायउँ
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही
मुनि मुसुकानेसुनिप्रभुबानी। पूछेहु नाथ मोहि का जानी
तुम्हरेइ भजनप्रभावअघारी। जानउँ महिमाकछुकनुम्हारी
ऊमरितरु बिसाल तव माया। फल ब्रह्मांड अनेक निकाया
जीव चराचर जंतुसमाना। भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फलभच्छक कठिन कराला। तव भय डरतसदा सोउ काला
ते तुम्हसकललोकपति साईं। पूछेहु मोहि मनुज की नाईं
यह बर माँगौ कृपानिकेता। बसहु हृदय श्री-अनुज-समेता
अबिरलभगतिबिरतिसतसंगा। चरनसरोरुह प्रीति अभंगा
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता। अनुभवगम्यभजहिंजेहि संता
असतव रूप बखानउँ जानउँ। फिरिफिरिसगुनब्रह्मरतिमानउँ
संतत दासन्ह देहु बड़ाई। ता तें मोहि पूछेहु रघुराई
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचबटी तेहि नाऊँ
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र साप मुनिबर कर हरहू
बासकरहुतहँरघु-कुल-राया। कीजियसकलमुनिन्हपरदाया
चले राम मुनिआयसु पाई। तुरतहिं पंचबटी नियराई

दो०—गीधराज सों भेंट भइ, बहु बिधि प्रीति दृढ़ाइ।
गोदावरी निकट प्रभु, रहे परनगृह छाइ॥१३॥

जब ते राम कीन्ह तहँ बासा। सुखी भये मुनि बीती त्रासा
गिरिबन नदीतालछबिछाये। दिनदिनप्रतिअतिहोहिं सुहाये
खग-मृग-बृंद अनंदित रहहीं। मधुप मधुर गुंजतछबिलहहीं
सोबनबरनि न सकअहिराजा। जहाँ प्रगट रघुबीर बिराजा
एक बार प्रभु सुख आसीना। लछिमन बचन कहे छलहीना

सुर नर मुनि सचराचर साई। मैं पूछउँ निज प्रभु की नाई
मोहिसमुझाइकहहुसोइदेवा। सबतजिकरौं चरन-रज-सेवा
कहहु ग्यान विराग अरु माया। कहहुसोभगतिकरहुजेहि दाया

दो०—ईस्वर जीवहि भेद प्रभु, कहहु सकल समुझाइ।
जा तें होइ चरन रति, सोक मोह भ्रम जाइ ॥१४॥

थोरेहि महँ सब कहउँबुझाई। सुनहु तात मतिमनचितलाई
मैं अरु मोर तोर तें माया। जेहिं बसकीन्हेजीव निकाया
गो गोचरजहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई
तेहिकर भेदसुनहु तुम्ह सोऊ। बिद्या अपर अबिद्या दोऊ
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा। जा बस जीव परा भवकूपा
एक रचइ जग गुनबस जाकें। प्रभुप्रेरितनहिं निजबल ताकें
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं
कहिय तातसो परम बिरागी। तृनसमसिद्धितीनिगुन त्यागी

दो०—माया ईस न आपु कहँ, जान कहिय सो जीव।
बंध मोच्छप्रद सर्ब पर, माया प्रेरक सीव ॥१५॥

धर्मतेंबिरतिजोग तें ग्याना। ग्यान-मोच्छ-प्रद बेद बखाना
जा तें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सोमम भगति भगत-सुखदाई
सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना
भगतितातअनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होहिंअनुकूला
भगतिकेसाधनकहउँबखानी। सुगम पंथमोहि पावहिं प्रानी
प्रथमहिं बिप्रचरनअतिप्रीती। निजनिजकर्मनिरतस्रुतिरीती
यहिकरफलपुनिबिषयबिरागा। तबममधरमउपज अनुरागा
स्रवनादिकनवभगतिदृढ़ाहीं। मम लीलारति अतिमनमाहीं
संत-चरन-पंकज अति प्रेमा। मनक्रमबचनभजन दृढ़ नेमा
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँजानै दृढ़ सेवा

मम गुनगावतपुलक सरीरा । गदगद गिरा नयन बह नीरा
काम आदि मद दंभ न जा के । तात निरंतर बस मैं ताके

दो०—बचन करम मन मोरि गति, भजन करहिं निःकाम ।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ, करउँ सदा बिस्राम ॥१६॥

भगतिजोगसुनिअतिसुखपावा । लछिमनप्रभुचरनन्हिसिरुनावा
एहिबिधिगयेकछुकदिनबीती। कहतबिराग ग्यान गुननीती
सूपनखा रावन कै बहिनी । दुष्टहृदयदारुन जसिअहिनी
पंचबटी सो गइ एक बारा । देखिबिकलभइजुगलकुमारा
भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखतनारी
होइबिकलसकमनहिं न रोकी। जिमिरबिमनिद्रवरबिहिंबिलोकी
रुचिररूपधरि प्रभुपहिंजाई । बोली बचन बहुत मुसुकाई
तुमसमपुरुष न मो सम नारी । यहसँजोग-बिधिरचाबिचारी
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं । देखेउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीं
तातें अब लगि रहिउँकुमारी । मनमानाकछुतुम्हहिंनिहारी
सीतहि चितइकहीप्रभुबाता । अहइकुँआर मोर लघु भ्राता
गइलछिमनरिपुभगिनीजानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदुबानी
सुंदरिसुनु मैं उन्ह कर दासा । पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभुसमर्थ कोसल-पुर-राजा ।जोकछुकरहिउन्हहिंसब छाजा
सेवक सुख चह मान भिखारी। ब्यसनीधनसुभगतिबिभिचारी
लोभी जसु चह चार गुमानी । नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी
पुनिफिरिरामनिकटसो आई । प्रभु लछिमनपहिं बहुरिपठाई
लछिमन कहा तोहि सो बरई । जो तृन तोरि लाज परिहरई
तब खिसिआनि रामपहिंगई । रूप भयंकर प्रगटत भई
सीतहि सभय देखि रघुराई । कहा अनुज सन सैन बुझाई

दो०—लछिमन अतिलाघव सो, नाक कान बिनु कीन्हि ।

ता के कर रावन कहँ, मनहुँ चुनौती दीन्हि ॥१७॥

नाककानबिनुभइ बिकरारा । जनु स्रव सैल गेरु कै धारा
खरदूषन पहिं गइ बिलपाता । धिगधिगतव पौरुषबलभ्राता
तेहि पूछा सब कहेसि बुझाई । जातुधान सुनि सेन बनाई
धाए निसिचर निकरबरूथा । जनु सपच्छकज्जल-गिरि-जूथा
नानाबाहन नानाकारा । नानायुधधर घोर अपारा
सूपनखा आगे करि लीन्ही । असुभरूप स्रुति-नासा-हीनी
असगुनअमितहोहिभयकारी । गनहिं न मृत्युबिबससबभ्कारी
गर्जहि तर्जहिं गगन उड़ाहीं । देखिबिकट भट अतिहरषाहीं
कोउकहजियतधरहुदोउभाई। धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई
धूरि पूरि नभमंडल रहा । राम बोलाइ अनुज सन कहा
लै जानकिहिजाहुगिरिकंदर । आवानिसिचरकटकु भयंकर
रहेहु सजग सुनि प्रभूकैबानी । चले सहित श्रीसर-धनु-पानी
देखिरामरिपुदल चलिआवा । बिहँसि कठिन कोदंडचढ़ावा

छंद–कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बाँधत सोह क्यों ।
मरकत सयल पर लरत दामिनिकोटि सों जुगभुजग ज्यों ॥
कटि कसि निषंगबिसाल भुजगहि चापबिसिखसुधारिकै ।
चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गज-राज-घटा निहारि कै ॥

सो०–आइ गये बग मेल, धरहु धरहु धावत सुभट ।
जथा बिलोकि अकेल, बालरबिहिं घेरत दनुज ॥१८॥

प्रभुबिलोकिसरसकहिंनडारी। थकित भई रजनी-चर-धारी
सचिव बोलि बोले खरदूषन । यहकोउनृपबालक नरभूषन
नाग असुर सुर नर मुनि जेते । देखे जिते हते हम केते
हम भरि जनमसुनहुसबभाई । देखी नहिं असि सुन्दरताई
जद्यपि भगिनी कीन्हिकुरूपा । बध लायक नहिं पुरुष अनूपा

देहु तुरत निजनारि दुराई। जीअत भवन जाहुदोउ भाई
मोरकहा तुम्हताहि सुनावहु। तासुबचनसुनि आतुरआवहु
दूतन्ह कहा राम सन जाई। सुनत राम बोले मुसुकाई
हम क्षत्री मृगया बनकरही। तुम्हसेखलमृगखोजतफिरहीं
रिपु बलवंत देखि नहिंडरहीं। एक बार कालहु सन लरहीं
जद्यपिमनुजदनुजकुलघालक। मुनिपालकखलसालक बालक
जौं न होइबलघर फिरिजाहू। समर बिमुखमैंहतउँ न काहू
रनचढ़ि करिय कपटचतुराई। रिपु पर कृपा परम कदराई
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ। सुनि खरदूषन उर अति दहेऊ

छंद—उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाये बिकट भट रजनीचरा।
सर - चाप - तोमर-सक्ति-सूल-कृपान-परिघ-परसु-धरा॥
प्रभु कीन्हि धनुषटंकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा।
भये बधिर ब्याकुल जातुधान न ग्यान तेहि अवसर रहा॥

दोहा—सावधान होइ धाये, जानि सबल आराति।
लागे बरषन राम पर, अस्त्र सस्त्र बहु भाँति॥
तिन्हके आयुध तिल सम, करि काटे रघुबीर।
तानि सरासन स्रवन लगि, पुनि छाँड़े निज तीर॥१९॥

तोमर छंद—तब चले बान कराल। फुंकरत जनु बहु ब्याल॥
कोपेउ समर श्रीराम। चले बिसिखनिसित निकाम॥
अवलोकि खरतर तीर। मुरि चले निसिचर बीर॥
भये क्रुद्ध तीनिउ भाइ। जो भागि रन तें जाइ॥
तेहि बधब हम निजपानि। फिरे मरन मन महुँ ठानि॥
आयुध अनेक प्रकार। सनमुख तें करहिं प्रहार॥
रिपु परम कोपे जानि। प्रभु धनुष सर संधानि॥

छाँड़े बिपुल नाराच । लगे कटन बिकट पिसाच ॥
उर सीस भुज कर चरन । जहँ तहँ लगे महि परन ॥
चिक्करत लागत बान । धर परत कु-धर-समान ॥
भट कटत तन सतखंड । पुनि उठत करि पाखंड ॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड । बिनु मौलि धावत रुंड ॥
खग कंक काक सृगाल । कटकटहिं कठिन कराल ॥

छंद—कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खप्पर संचहीं ।
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं ॥
रघु-बीर-बान प्रचंड खंडहिं भटन्ह के उर भुज सिरा ।
जहँतहँपरहिंउठिलरहिंधरुधरुधरुकरहिंभयकरगिरा ॥
अंतावरी गहि उड़तगीधपिसाच कर गहि धावहीं ।
संग्राम-पुर-बासी मनहुँ बहुबाल गुड़ी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट कहँरत परे ।
अवलोकिनिजदलबिकटभटतिसिरादिखरदूषनफिरे ॥
सर सक्ति तोमर परसु सूल कृपान एकहिं बारहीं ।
करि कोप श्रीरघुबीरपरअगनित निसाचर डारहीं ॥
प्रभु निमिषमहुँरिपुसरनिवारि प्रचारिडारे सायका ।
दसदसबिसिखउरमाँझमारेसकलनिसि-चर-नायका ॥
महिपरतउठिभटभिरतमरतनकरत माया अतिघनी ।
सुर डरतचौदहसहसप्रेत बिलोकि एक अवधधनी ॥
सुर मुनि सभयप्रभुदेखिमायानाथअतिकौतुक करयौ ।
देखहिं परस्पर रामकरिसंग्राम रिपु दल लरि मरयौ ॥

दो०—राम राम कहि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्बान ।
करि उपाय रिपु मारे, छन महुँ कृपानिधान ॥

हरषित बरषहिं सुमन सुर, बाजहिं गगन निसान।
अस्तुतिकरिकरिसबचले, सोभित बिबिध बिमान ॥२०॥

जबरघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सब के भय बीते तब लछिमनु सीतहिं लै आये। प्रभु पद परत हरषि उर लाये सीता चितवस्याममृदु गाता। परम प्रेम लोचन न अघाता पंचबटीबसि श्री-रघु-नायक। करतचरितसुरमुनिसुख-दायक धुआँ देखि खरदूषन केरा। जाइ सुपनखा रावनु प्रेरा बोली बचन क्रोधकरि भारी। देस कोस कै सुरति बिसारी करसिपानसोवसिदिनुराती। सुधि नहिंतवसिर पर आराती राजुनीतिबिनुधन बिनु धर्मा। हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा बिद्या बिनु बिबेक उपजाये। स्रम फल पढे किये अरु पाये संग तें जतीकुमंत्र तें राजा। मान तें ज्ञान पान तें लाजा प्रीति प्रनयबिनुमद तें गुनी। नासहिं बेगि नीति असि सुनी

सो०—रिपु रुज पावक पाप, प्रभु अहि गनियन छोट करि।
अस कहि बिबिध बिलाप, करि लागी रोदन करन ॥

दो०—सभा माँझ परि ब्याकुल, बहु प्रकार कह रोइ।
तोहि जियत दसकंधर, मोरि कि असिगति होइ ॥२१॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई। समुझाई गहि बाहँ उठाई कह लंकेसकहसि किन बाता। केइ तव नासा कान निपाता अवध नृपति दसरथ के जाये। पुरुषसिंह बन खेलन आये समुझिपरीमोहिउन्हकैकरनी। रहितनिसाचरकरिहहिं धरनी जिन्हकरभुजबलपाइदसानन। अभयभयेबिचरत मुनिकानन देखत बालक कालसमाना। परमधीर धन्वी गुन नाना अतुलितबलप्रतापदोउभ्राता। खल-बध-रत-सुर-मुनि-सुख-दाता

सोभाधाम राम अस नामा । तिन्हकेसंग नारि एक स्यामा
रूपरासि बिधिनारिसंवारी । रतिसतकोटि तासु बलिहारी
तासु अनुज काटे स्रुति नासा । सुनितवभगिनिकरहिंपरिहासा
खरदूषन सुनि लगे पुकारा । छनमहँसकलकटकउन्हमारा
खरदूषनतिसिरा कर घाता । सुनि दससीस जरे सब गाता

दोहा–सूपनखहि समुझाइ करि, बल बोलेसि बहु भाँति ।
गयेउ भवनअति-सोच-बस, नींद परइ नहिं राति॥२४॥

सुरनर असुर नाग खगमाहीं । मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं
खरदूषन मोहिसम बलवंता । तिन्हहि कोमारइबिनु भगवंता
सुररंजन भंजन महिभारा । जौं भगवंत लीन्ह अवतारा
तौ मैं जाइ बयरु हठि करऊँ । प्रभुसर प्रान तजे भवतरऊँ
होइहि भजनु न तामस देहा । मनक्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा
जौं नररूप भूपसुत कोऊ । हरिहउँ नारि जीति रनदोऊ
चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ। बस मारीच सिंधु तट जहवाँ
इहाँराम जसि जुगुतिबनाई । सुनहु उमासो कथा सुहाई

दोहा–लछिमन गये बनहिं जब, लेन मूल फल कंद ।
जनकसुता सन बोले, बिहँसि कृपा-सुख-बृंद ॥ २३ ॥

सुनहुप्रियाब्रत रुचिरसुसीला । मैं कछुकरबललितनरलीला
तुम्हपावकमहँ करहुनिवासा । जौंलगिकरउँनिसाचरनासा
जबहिं रामसबु कहाबखानी । प्रभुपदधरिहियअनलसमानी
निजप्रतिबिंबराखितहँसीता । तैसइ सील रूप सुबिनीता
लछिमनहूँयहमरम न जाना । जोकछुचरितरचेउभगवाना
दसमुख गयउ जहाँ मारीचा । नाइ माथ स्वारथरत नीचा
नवनि नीच कै अतिदुखदाई । जिमिअंकुसधनुउरगबिलाई
भयदायक खल कै प्रियबानी । जिमिअकालकेकुसुमभवानी

दोहा–करि पूजा मारीच तब, सादर पूछी बात।
कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयहु तात ॥२६॥

दसमुखसकल कथातेहिआगे । कहीसहित अभिमान अभागे
होहु कपटमृग तुम्हछलकारी । जेहिबिधिहरिआनउँनृपनारी
तेहिपुनि कहासुनहुदससीसा । ते नररूप चरा-चर-ईसा
ता सों तात बयरु नहि कीजै । मारे मरिय जिआये जीजै
मुनिमखराखनगयउकुमारा । बिनुफरसररघुपतिमोहिमारा
सत जोजन आयउँ छन माहीं । तिन्हसन बयरुकियेभलनाही
भइ मम कीट भृंग की नाईं । जहँ तहँ मैं देखउँ दोउ भाई
जौं नर तात तदपि अतिसूरा । तिन्हहि बिरोधि न आइहि पूरा

दो०–जेहि ताड़का सुबाहु हति, खंडेउ हरकोदंड ।
खर दूषन तिसिरा बधेउ, मनुज कि अस बरिबंड ॥२५॥

जाहुभवनकुलकुसलबिचारी । सुनत जरादीन्हेसिबहु गारी
गुरुजिमिमूढ़करसिममबोधा । कहु जगमोहिसमानको जोधा
तब मारीच हृदय अनुमाना । नवहि बिरोधे नहि कल्याना
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी । बैद्य बंदि कबि भानसगुनी
उभय भाँति देखा निजमरना । तबताकेसिरघु-नायक-सरना
उतरुदेतमोहि बधब अभागे । कस न मरउँरघु-पति-सरलागे
अस जिय जानि दसाननसगा । चला राम-पद-प्रेम अभंगा
मन अतिहरष जनाव न तेही । आजु देखिहउँ परमसनेही

छंद–निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहउँ ।
श्रीसहित अनुजसमेत कृपा-निकेत-पद मन लाइहउँ ॥
निर्बानदायक क्रोध जा कर भगति अबसहिं बस करी ।
निजपानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुखसागर हरी ॥

दो०—मम पाछे धर धावत, धरे सरासन बान ।
फिरि फिरि प्रभुहिं बिलोकिहउँ,धन्य न मो सम आन ॥२६॥

तेहिबननिकट दसाननगयऊ । तब मारीच कपटमृग भयऊ
अतिबिचित्रकछु बरनि न जाई । कनकदेह मनि रचित बनाई
सीता परमरुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर बेखा
सुनहु देव रघुबीर कृपाला । एहि मृगकर अतिसुंदरछाला
सत्यसंध प्रभु बध कर एही । आनहु चर्म कहति बैदेही
तबरघुपतिजानतसबकारन । उठे हरषि सुरकाज सँवारन
मृगबिलोकिकटिपरिकरबाँधा । करतल चाप रुचिरसरसाँधा
प्रभुलछिमनहिंकहासमुझाई । फिरत विपिननिसिचरबहुभाई
सीता केरि करेहु रखवारी । बुधिबिबेकबलसमय बिचारी
प्रभुहिबिलोकिचलामृगभाजी । धाये राम सरासन साजी
निगमनेतिसिवध्यान न पावा । मायामृग पाछे सो धावा
कबहुँनिकटपुनिपुनिदूरिपराई । कबहुँक प्रगटइ कबहुँ छपाई
प्रगटत दुरतकरतछल भूरी । एहिबिधिप्रभुहिगयउलेइदूरी
तबतकिरामकठिनसर मारा । धरनिपरेउकरि घोर पुकारा
लछिमनकैप्रथमहि लै नामा । पाछे सुमिरेसि मन महँ रामा
प्रान तजत प्रगटेसि निजदेहा । सुमिरेसि राम समेत सनेहा
अंतरप्रेमु तासु पहिचाना । मुनि-दुर्लभ-गतिदीन्हिसुजाना

दो०—बिपुल सुमन सुर बरषहिं, गावहिं प्रभु-गुन-गाथ ।
निजपद दीन्ह असुर कहुँ, दीनबंधु रघुनाथ ॥ २७ ॥

खलबधितुरतफिरे रघुबीरा । सोह चाप कर कटि तूनीरा
आरतगिरा सुनी जब सीता । कहलछिमन सनपरमसभीता
जाहु बेगि संकट अति भ्राता । लछिमनबिहँसिकहासुनुमाता
भृकुटिबिलाससृष्टिलयहोई । सपनेहु संकट परइ कि सोई

मरमबचन जब सीताबोला। हरिप्रेरित लछिमन मन डोला
बन-दिसि-देवसौंपिसबकाहू। चले जहाँ रावन-ससि-राहू
सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती के भेखा
जा के डर सुरअसुरडेराहीं। निसि न नींददिनअन्न न खाहीं
सो दससीस स्वानकी नाईं। इतउत चितइ चला भडिहाईं
इमि कुपंथ पग देत खगेसा। रह न तेज तन बुधिलव-लेसा
नाना विधिकहिकथा सुहाई। राजनीति भय प्रीति देखाई
कह सीता सुनु जती गोसाईं। बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं
तब रावन निज रूप देखावा। भई सभय जब नाम सुनावा
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा। आइ गयउप्रभु खल रहु ठाढ़ा
जिमिहरिबधुहिछुद्रससचाहा। भयसिकालबसनिसिचरनाहा
सुनत बचन दससीस लजाना। मन महुँ चरन बंदिसुखमाना

दो०—क्रोधवंत तब रावन, लीन्हेसि रथ बैठाइ।
चला गगनपथ आतुर, भय रथ हाँकि न जाइ ॥२८॥

हा जगदैकवीर रघुराया। केहि अपराध बिसारेहु दाया
आरतिहरन सरनसुखदायक। हारघु-कुल-सरोज-दिननायक
हालछिमनतुम्हारनहिं दोसा। सो फल पायेउँ कीन्हेउँ रोसा
बिबिधिबिलापकरति बैदेही। भूरिकृपा प्रभु दूरि सनेही
बिपतिमोरिकोप्रभुहिंसुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा
सीता कै बिलाप सुनिभारी। भये चराचर जीव दुखारी
गीधराज सुनि आरत बानी। रघु-कुलतिलकनारिपहिचानी
अधम निसाचर लीन्हे जाई। जिमिमलेछबस कपिला गाई
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहउँ जातुधान कै नासा
धावा क्रोधवंत खग कैसे। छूटइ पबि पर्बत कहुँ जैसे
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही। निर्भय चलेसि न जानेसि मोही

आवत देखि कृतांतसमाना । फिरि दसकंधरकर अनुमाना
की मैनाक कि खगपति होई । ममबलजानसहित पति सोई
जाना जरठ जटायू एहा । मम करतीरथ छाडिहि देहा
सुनत गीध क्रोधातुर धावा । कह सुनु रावनमोरसिखावा
तजिजानकिहिकुसलगृहजाहू। नाहि त अस होइहि बहुबाहू
राम-रोष-पावक अतिघोरा । होइहिसलभसकलकुल तोरा
उतरु न देत दसानन जोधा । तबहिं गीध धावा करिक्रोधा
धरिकचबिरथकीन्हमहिगिरा। सीतहि राखि गीधपुनिफिरा
चोचन मारि बिदारेसि देही । दंड एक भइ मुरुछा तेही
तबसक्रोधनिसिचरखिसियाना । काढेसि परमकराल कृपाना
काटेसि पंख परा खग धरनी । सुमिरिरामकरिअद्भुत करनी
सीतहि जान चढाइ बहोरी । चला उताइल त्रास न थोरी
करतिबिलापजातनभसीता । ब्याध बिबसजनुमृगीसभीता
गिरिपरबैठेकपिन्ह निहारी । कहि हरिनामु दीन्ह पटडारी
एहिबिधिसीतहिसोलेइगयऊ। बनअसोक महुँ राखत भयऊ

दो०—हारि परा खल बहुबिधि, भय अरु प्रीति देखाइ ।
नव असोकपादप तर, राखेसि जतनु कराइ ॥

नवाह्पारायण, नवाँ विश्राम

जेहि बिधि कपटकुरंग सँग, धाइ चले श्रीराम ।
सो छबि सीता राखि उर, रटति रहति हरिनाम ॥२९॥

रघुपतिअनुजहिआवतदेखी । बाहिज चिंता कीन्हिबिसेखी
जनकसुता परिहरेउ अकेली । आयहु तात बचन मम पेली
निसि-चरनिकरफिरहिंबनमाहीं । मम मन सीता आस्रम नाहीं
गहिपदकमलअनुजकरजोरी। कहेउनाथकछु मोहि न खोरी
अनुजसमेत गये प्रभु तहवाँ । गोदावरितट आस्रम जहवाँ

आस्रम देखि जानकीहीना । भये बिकल जस प्राकृतदीना
हा गुनखानि जानकीसीता । रूप–सील–ब्रत–नेम-पुनीता
लछिमन समुझाये बहु भाँती । पूछत चले लता तरु पाती
हे खग मृग हे मधुकरस्रेनी । तुम्ह देखी सीता मृगनैनी
खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुपनिकर कोकिलाप्रबीना
कुंद कली दाडिम दामिनी । कमलसरदससिअहिभामिनी
बरुनपास मनोजधनु हंसा । गज केहरिनिज सुनतप्रसंसा
श्रीफलकनककदलिहरषाही । नेकु न संक सकुच मनमाहीं
सुनुजानकी तोहिबिनुआजू । हरषे सकल पाइ जनु राजू
किमिसहिजातअनखतोहिपाहीं । प्रिया बेगि प्रगटसि कसनाहीं
एहिबिधिखोजतबिलपतस्वामी । मनहुँ महा बिरही अतिकामी
पूरनकाम राम सुखरासी । मनुजचरितकरअजअबिनासी
आगे परा गीधपति देखा । सुमिरतरामचरन जिन्हरेखा

दोहा–करसरोज सिरु परसेउ, कृपासिंधु रघुबीर ।
निरखि राम-छबि-धाम-मुख, बिगत भई सब पीर ॥३०॥

तबकहगीध बचन धरिधीरा । सुनहु राम भंजन भवभीरा
नाथदसानन यहगति कीन्ही । तेहिखलजनकसुता हरिलीन्ही
लेइदच्छिनदिसिगयउगोसाईं । बिलपति अति कुररीकीनाईं
दरसलागिप्रभु राखेउँप्राना । चलनचहतअब कृपानिधाना
राम कहा तनु राखहु ताता । मुखमुसुकाइ कही तेहि बाता
जाकरनाम मरत मुखआवा । अधमहुमुकुतहोइस्रुति गावा
सो मम लोचन गोचर आगे । राखउँ देह नाथ केहि लागे
जलभरिनयनकहहिंरघुराई । तात कर्म निज तें गति पाई
परहितबसजिन्हकेमनमाहीं । तिन्हकहँजग दुर्लभकछुनाहीं
तनुतजितातजाहु ममधामा । देउँ काह तुम्ह पूरनकामा

दोहा–सीताहरन तात जनि, कहेउ पिता सन जाइ।
जौं मैं राम त कुल सहित, कहिहि दसानन आइ ॥३१॥

गीध देहतजि धरिहरिरूपा। भूषन बहु पट पीत अनूपा
स्यामगात बिसालभुजचारी। अस्तुतिकरत नयनभरिबारी

छंद–जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुनप्रेरक सही।
दस–सीस–बाहु–प्रचंड–खंडन चंडसर मंडन महीं॥
पाथोदगात सरोजमुख राजीव–आयत–लोचनं।
नित नौमि राम कृपाल बाहुबिसाल भव-भय-मोचनं।
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं।
गोविंद गोपद द्वंदहर बिज्ञानघन धरनीधरं॥
जे राममंत्र जपंत संत अनंत जन-मन-रंजनं।
नित नौमि राम अकामप्रिय कामादि-खल-दल-गंजनं॥
जेहि स्रुति निरंजन ब्रह्मव्यापक बिरज अजकहिगावहीं।
करि ध्यान ज्ञान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सो प्रगट करुणाकंद सोभावृंद अग जग मोहई।
मम हृदय–पंकज–भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई॥
जो अगम सुगम सुभावनिर्मल असम सम सीतल सदा।
पस्यंति जे जोगी जतनु करि करत मन गो बस जदा॥
सो राम रमानिवास संतत दासबस त्रि–भुवन–धनी।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी॥

दो०–अबिरल भगति माँगि बर, गीध गयेउ हरिधाम।
तेहि की क्रिया जथोचित, निज कर कीन्ही राम॥३२॥

कोमलचितअतिदीनदयाला। कारन बिनु रघुनाथ कृपाला
गीधअधमखग आमिषभोगी। गति दीन्ही जो जाँचतजोगी

सुनहु उमा ते लोग अभागी । हरितजिहोहिंबिषयअनुरागी
पुनिसीतहि खोजत दोउभाई। चले बिलोकत बन बहुताई
संकुललता बिटप घनकानन । बहु खगमृग तहँ गजपंचानन
आवत पंथ कबंध निपाता । तेहि सब कही साप कै बाता
दुर्बासा मोहि दीन्ही सापा । प्रभुपद देखि मिटा सो पापा
सुनु गंधर्ब कहउँ मैं तोही । मोहि न सुहाइब्रह्म-कुल-द्रोही

दो०—मन क्रम बचन कपट तजि, जो कर भू-सुर-सेव ।
मोहि समेत बिरंचि सिव, बस ताके सब देव ॥३३॥

सापत ताडत परुष कहंता । बिप्रपूज्य अस गावहिं संता
पूजिय बिप्र सील-गुन-हीना । सूद्र न गुन-गन-ज्ञान-प्रबीना
कहिनिज धर्मताहिसमुझावा ।निज-पद-प्रीतिदेखिमनभावा
रघु-पतिचरन-कमलसिरुनाई। गयउ गगनआपनि गतिपाई
ताहि देइ गति रामु उदारा । सबरी के आस्रम पगु धारा
सबरी देखि रामु गृह आये । मुनि केबचनसमुझिजियभाये
सरसि-ज-लोचन बाहुबिसाला। जटामुकुट सिर उर बनमाला
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । सबरी परी चरन लपटाई
प्रेममगन मुखबचन न आवा । पुनिपुनिपदसरोजसिरु नावा
सादर जल लेइ चरन पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे

दोहा—कंद मूल फल सुरस अति, दिये राम कहुँ आनि ।
प्रेमसहित प्रभु खाये, बारंबार बखानि ॥ ३४ ॥

पानि जोरिआगे भइ ठाढ़ी । प्रभुहिंबिलोकिप्रीतिउरबाढ़ी
केहिबिधिअस्तुति करउँतुम्हारी। अधम जातिमैंजडमति भारी
अधमतेंअधमअधमअतिनारी। तिन्हमहँ मैं मति मंद अघारी
कहरघुपतिसुनुभामिनिबाता। मानउँ एक भगति कर नाता
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई

भगतिहीन नर सोहइ कैसा । बिनु जल बारिद देखिय जैसा
नवधाभगतिकहउँतोहिपाही। सावधान सुनु धरु मन माही
प्रथम भगति संतन्ह करसगा । दूसरि रति मम कथा प्रसंगा

दो०—गुरु-पद-पंकज-सेवा, तीसरि भगति अमान ।
चौथि भगति मम गुनगन, करइ कपट तजि गान ॥३५॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा । पंचम भजन सो बेद प्रकासा
छठ दम सीलबिरतिबहुकर्मा। निरत निरंतर सज्जन धर्मा
सातव सममोहिमयजगदेखा । मो तें संत अधिक करि लेखा
आठव जथालाभ संतोषा । सपनेहु नहिं देखइ परदोषा
नवम सरलसबसनछलहीना। मम भरोसहियहरष न दीना
नव महुँ एकउ जिन्ह के होई । नारि पुरुष सचराचर कोई
सोइअतिसयप्रियभामिनिमोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे
जोगि-बृंद-दुर्लभ-गति जोई । तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई
मम दरसनफलुपरम अनूपा । जीव पाव निज सहज सरूपा
जनकसुताकैसुधिकहुभामिनिं । जानहिकहुजोकरि-बर-गामिनि
पंपासरहि जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई
सो सब कहिहि देव रघुबीरा । जानतहू पूछहु मतिधीरा
बार बार प्रभुपद सिरु नाई । प्रेमसहित सब कथा सुनाई

छंद—कहि कथा सकल बिलोकि हरिमुख हृदयपदपंकज धरे ।
तजि जोगपावक देह हरिपद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू ।
बिस्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू ॥

दो०—जातिहीन अघ जनम महि, मुकुति कीन्हि असि नारि ।
महा-मंद-मन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥३६॥

चले राम त्यागा बन सोऊ । अतुलित-बल नरकेहरि दोऊ
बिरहीइवप्रभुकरत बिषादा । कहत कथा अनेक संबादा
लछिमनदेखुबिपिनकै सोभा । देखतकेहिकरमननहिं छोभा
नारिसहितसबखग-मृग-बृंदा । मानहुँमोरि करत हहि निंदा
हमहिंदेखिमृगनिकर पराहीं । मृगीकहहिंतुम्हकहँभयनाहीं
तुम्ह आनंद करहु मृगजाये । कंचन मृग खोजन ये आये
संग लाइ करिनी करि लेहीं । मानहुँ मोहि सिखावन देहीं
सास्त्रसुचिंतितपुनिपुनि देखिय । भूप सुसेबित बस नहिंलेखिय
राखियनारिजदपिउर माहीं । जुबतीसास्त्रनृपति बसनाही
देखहु तात बसंत सुहावा । प्रियाहीनमोहिभय उपजावा

दो०—बिरहबिकल बलहीन मोहि, जानेसि निपट अकेल ।
सहित बिपिन मधुकर खग, मदन कीन्ह बगमेल ॥
देखि गयउ भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात ।
डेरा कीन्हेउ मनहुँ तब, कटकु हटकि मनजात ॥३७॥

बिटपबिसाललताअरुझानी । बिबिधबितानदियेजनु तानी
कदलितालबरध्वजापताका । देखि न मोह धीर मन जाका
बिबिध भाँति फूले तरु नाना । जनु बानैत बने बहु बाना
कहुँकहुँ सुन्दर बिटप सुहाये । जनुभटबिलगबिलगहोइ छाये
कूजत पिक मानहुँ गज माते । ढेक महोख ऊँट बिसराते
मोर चकोर कीर बर बाजी । पारावत मराल सब ताजी
तीतर लावक पद-चर-जूथा । बरनि न जाइ मनोज बरूथा
रथगिरिसिलादुंदुभी झरना । चातक बंदी गुनगन बरना
मधु-कर-मुखर भेरि सहनाई । त्रिबिध बयारि बसीठी आई
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हें । बिचरत सबहि चुनौतीदीन्हें
लछिमन देखत कामअनीका । रहहिंधीर तिन्हकै जग लीका

एहि के एक परमबल नारी । तेहितें उबर सुभट सोइ भारी

दो०—तात तीनि अतिप्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि विज्ञानधाम मन, करहिं निमिष महुँ छोभ ॥
लोभ के इच्छा दंभ बल, काम के केवल नारि ।
क्रोध के परुषबचन बल, मुनिवर कहहिं बिचारि ॥३८॥

गुनातीत सचराचर-स्वामी । राम उमा सब अंतरजामी
कामिन्ह कै दीनता देखाई । धीरन्ह के मन बिरति दृढ़ाई
क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहि सकल राम की दाया
सो नर इंद्रजाल नहिं भूला । जा पर होइ सो नट अनुकूला
उमा कहउँ मैं अनुभवअपना । सतहरिभजनजगत सब सपना
पुनि प्रभु गये सरोबर तीरा । पंपा नाम सुभग गंभीरा
संतहृदय जस निर्मल बारी । बाँधे घाट मनोहर चारी
जहँतहँपियहिबिबिध मृगनीरा । जनु उदारगृह जाचक भीरा

दो०—पुरइनि सघन ओट जल, बेगि न पाइय मर्म ।
मायाछन्न न देखिये, जैसे निर्गुन ब्रह्म ॥
सुखी मीन सब एकरस, अति अगाध जल माहिं ।
जथा धर्मसीलन्ह के, दिन सुखसंजुत जाहिं ॥३९॥

बिकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा । प्रभुबिलोकिजनुकरत प्रसंसा
चक्रबाक-बक-खग-समुदाई । देखत बनै बरनि नहिं जाई
सुंदर खग-गन-गिरा सुहाई । जात पथिक जनु लेत बोलाई
ताल समीप मुनिन्ह गृहछाये । चहुँदिसिकानन बिटपसुहाये
चंपक बकुल कदंब तमाला । पाटल पनस परास रसाला
नवपल्लवकुसुमित तरु नाना। चंचरीक पटली कर गाना

सीतल मंद सुगंध सुभाऊ। सतत बहै मनोहर बाऊ
कुहू कुहू कोकिल धुनि करही। सुनि रवसरसध्यानमुनिटरही

दो०—फल भारन नमि बिटप सब, रहे भूमि नियराइ।
परउपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ ॥४०॥

देखि रामअतिरुचिर तलावा। मज्जनु कीन्हपरम सुख पावा
देखी सुदर तरु बर छाया। बैठे अनुज सहित रघुराया
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये। अस्तुतिकरिनिजधामसिधाये
बैठे परमप्रसन्न कृपाला। कहतअनुजसनकथा रसाला
बिरहवंत भगवतहि देखी। नारदमन भा सोच बिसेखी
मोर साप करि अंगीकारा। सहत राम नाना दुखभारा
ऐसे प्रभुहि बिलोकउँ जाइ। पुनिनबनिहिअसअवसरुआई
यह बिचारि नारद करबीना। गये जहाँ प्रभु सुखआसीना
गावत राम चरित मृदुबानी। प्रेमसहित बहुभाँति बखानी
करत दडवत लिये उठाई। राखे बहुत बार उर लाई
स्वागत पूछि निकट बैठारे। लछिमन सादर चरन पखारे

दो०—नाना बिधि बिनती करि, प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले बचन तब, जोरि सरोरुहपानि ॥ ४१ ॥

सुनहु उदार परम रघुनायक। सुदर अगम सुगम बरदायक
देहु एक बरु मागौ स्वामी। जद्यपि जानत अंतरजामी
जानहु मुनि तुम्हमोरसुभाऊ। जनसनकबहुँकिकरौ दुराऊ
कवन बस्तुअसिप्रियमोहिलागी। जोमुनिबरनसकहुतुम्हमाँगी
जन कहुँ कछु अदेय नहिमोरे। असबिस्वासतजहु जनिभोरे
तब नारद बोले हरषाई। अमबर मागौ करौं ढिठाई
जद्यपि प्रभु के नाम अनेका। स्रुतिकहअधिक एक तें एका
रामसकल नामन्ह तें अधिका। होउन।थअघ-खग-गन-बधिका

दो०—राका रजनी भगति तव, रामनाम सोइ सोम।
अपर नाम उडुगन बिमल,बसहु भगति-उर-ब्योम ॥
एवमस्तु मुनि सन कहेउ, कृपासिंधु रघुनाथ।
तब नारद मन हरष अति,प्रभुपद नायेउ माथ ॥४२॥

अतिप्रसन्नरघुनाथहि जानी। पुनि नारद बोले मृदुबानी रामजबहि प्रेरेहु निजमाया। मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया तब बिबाह मैं चाहउँ कीन्हा। प्रभुकेहि कारन करै न दीन्हा सुनुमुनितोहिकहउँ सहरोसा। भजहिजेमोहितजिसकलभरोसा करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमिबालकहिराखमहतारी गह सिसुबच्छअनलअहिधाई। तहँ राखइ जननी अरु गाई प्रौढ भयें तेहि सुत पर माता। प्रीतिकरइ नहिंपाछिलबाता मोरे प्रौढ-तनय-सम ज्ञानी। बालक सुतसमदास अमानी जनहिमोरबलनिजबलताही। दुहुँकहँकामक्रोध रिपु आही यहबिचारिपंडितमोहिभजही।पायेहुज्ञानभगति नहि तजहीं

दो०—काम-क्रोध-लोभादि-मद, प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह मह अतिदारुन दुखद, माया रूपी नारि ॥४३॥

सुनुमुनिकहपुरानस्रुति संता। मोहबिपिन कहुँनारि बसंता जप तप नेम जलास्रय झारी। होइ ग्रीसम सोखइ सब नारी कामक्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरषप्रद बरषा एका दुर्बासना कुमुद समुदाई। तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई धर्म सकल सरसीरुहबृंदा। होइहिमतिन्हहिंदहइसुखमंदा पुनि ममता जवासबहुताई। पलुहइनारि सिसिरऋतु पाई पापउलूकनिकर सुखकारी। नारिनिबिडरजनीअँधियारी बुधिबलसीलसत्यसबमीना। बंसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना

दो०–अवगुनमूल सूलप्रद, प्रमदा सब दुखखानि ।
ता तें कीन्ह निवारन, मुनि मैं यह जिय जानि ॥४४॥

सुनिरघुपतिकेबचन सुहाये । मुनितनपुलकनयनभरि आये
कहहुकवनप्रभुकै असिरीती । सेवक पर ममता अरु प्रीती
जेनभजहिंअसप्रभुभ्रमत्यागी । ग्यानरंक नर मंद अभागी
पुनि सादर बोले मुनिनारद । सुनहु राम बिग्यान बिसारद
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा । कहहु नाथ भंजन भवभीरा
सुनुमुनिसंतन्हके गुन कहऊँ । जिन्ह ते मैं उन्हके बस रहऊँ
षटबिकारजितअनघअकामा । अचलअकिंचनसुचिसुख धामा
अमितबोधअनीहमितभोगी । सत्यसंध कवि कोबिद जोगी
सावधान मानद मदहीना । धीर धर्मगति परम प्रबीना

दो०–गुनागार संसार-दुख-रहित बिगत संदेह ।
तजि मम चरनसरोज प्रिय, जिन्ह कहुँ देह न गेह ॥४५॥

निजगुनस्रवनसुनतसकुचाहीं । परगुन सुनत अधिक हरषाहीं
समसीतलनहित्यागहिनीती । सरल सुभाउ सबहिंसनप्रीती
जप तप ब्रत दम संजम नेमा । गुरु-गोबिद-बिप्र-पद प्रेमा
स्रद्धा छमा मइत्री दाया । मुदिता मम पदप्रीतिअमाया
बिरतिबिबेकबिनयबिग्याना । बोध जथारथ बेदपुराना
दंभ मान मद करहि न काऊ । भूलि न देहि कुमारग पाऊ
गावहिंसुनहिं सदाममलीला । हेतुरहितपर-हित-रत-सीला
सुनु मुनि साधुन के गुन जेते । कहि न सकहिं सारदस्रुतितेते

छन्द–कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पदपंकज गहे ।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगतगुन निज मुख कहे ॥
सिरु नाहिं बारहिं बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गये ।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरिरँग रये ॥

दो०—रावनारि जसु पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ।
रामभगति दृढ़ पावहिं, बिनु बिराग जप जोग ॥
दीप-सिखा-सम जुवतिजन, मन जनि होसि पतंग ।
भजहिं राम तजि काम मद, करहिं सदा सतसंग ॥४६॥

मासपारायण, बाईसवाँ विश्राम

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुप-
विध्वंसने विमलवैराग्यसम्पादनो नाम
तृतीय सोपानः समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामचरितमानस

(किष्किन्धाकाण्ड)

श्लोक ।

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्म्मवर्म्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथि गतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥१॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरं संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥२॥

सोरठा—मुक्तिजनम महि जानि, ग्यानखानि अघहानिकर ।
जहँ बस संभुभवानि, सो कासी सेइय कस न ॥
जरत सकलसुरबृंद, विषमगरल जेहि पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद, को कृपाल संकरसरिस ॥

आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत नियराया
तहँ रहसचिवसहित सुग्रीवाँ । आवतदेखि अतुल-बल-सीवाँ
अतिसभीतकह सुनुहनुमाना । पुरुष-जुगलबल-रूप-निधाना

धरि बटुरूप देखु तैं जाई । कहेसु जानिजियं सैन बुझाई
पठये बालि होहिं मन मैला । भागौं तुरत तजौं यह सैला
बिप्ररूप धरि कपितहँ गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ
कोतुम्हस्यामल-गौर-सरीरा । छत्रीरूप फिरहु बन बीरा
कठिनभूमिकोमल-पद-गामी । कवनहेतुबिचरहुबन स्वामी
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता । सहत दुसह बन आतपबाता
की तुम्ह तीनिदेव महँ कोऊ । नरनारायन की तुम्ह दोऊ

दो०—जगकारन तारन भव, भंजन धरनीभार ।
की तुम्ह अखिल-भुवन-पति, लीन्ह मनुजअवतार ॥१॥

कोसलेसदसरथ के जाये । हमपितुबचन मानिबन आये
नामरामलछिमन दोउभाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई
इहाँ हरी निसिचर बैदेही । बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निजकथा बुझाई
प्रभुपहिचानिपरेउगहिचरना । सोसुख उमा जाइनहिं बरना
पुलकिततनमुखआवनबचना। देखत रुचिरबेष के रचना
पुनिधीरजुधरिअस्तुतिकीन्ही । हरषहृदयनिजनाथहिंचीन्ही
मोर न्याउ मैं पूछा साई । तुम्ह पूछहु कस नर की नाई
तव मायाबस फिरौं भुलाना । ता तें मैं नहिं प्रभु पहिचाना

दो० —एकु मंद मैं मोहबस, कुटिलहृदय अग्यान ।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेउ, दीनबंधु भगवान ॥२॥

जदपि नाथ बहुअवगुन मोरे । सेवक प्रभुहि परै जनि भोरे
नाथ जीव तव माया मोहा । सो निस्तरइ तुम्हारेहि छोहा
ता पर मैं रघुबीर दोहाई । जानउँ नहिंकछुभजन उपाई
सेवक-सुत पति-मातु भरोसे । रहइ असोच बनइ प्रभु पोसे
अस कहि परेउचरनअंकुलाई । निजतनुप्रगटिप्रीति उर छाई

तब रघुपति उठाइ उर लावा।निज-लोचन-जलसींचिजुड़ावा
सुनुकपिजियमानसिजनिऊना। तैं ममप्रिय लछिमन तें दूना
समदरसीमोहि कह सबकोऊ। सेवकप्रिय अनन्यगति सोऊ

दो०—सो अनन्य जाकें असि, मति न टरै हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर, रूप स्वामि भगवंत ॥३॥

देखि पवनसुतपति अनुकूला। हृदय हरष बीती सब सूला
नाथ सैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई
तेहि सन नाथ मयत्री कीजै। दीनजानि तेहिअभयकरीजै
सो सीता कर खोज कराइहि। जहँतहँमरकट कोटिपठाइहि
एहिबिधिसकलकथासमुझाई। लिये दुऔ जन पीठि चढ़ाई
जब सुग्रीव राम कहुँ देखा। अतिसयजनमधन्यकरिलेखा
कपिकरमनबिचारएहि रीती। करिहहिबिधिमोसनयेप्रीती

दो०—तब हनुमंत उभय दिसि, कहि सब कथा सुनाइ।
पावक साखी देइ करि, जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥४॥

कीन्हिप्रीतिकछुबीचनराखा। लछिमनरामचरितसबभाखा
कह सुग्रीव नयन भरि बारी। मिलिहिनाथ मिथिलेसकुमारी
मंत्रिन्ह सहित इहाँएकबारा। बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा
गगनपंथ देखी मै जाता। परबस परी बहुत बिलपाता
राम राम हा राम पुकारी। हमहि देखि दीन्हेउपटडारी
माँगा राम तुरत तेहि दीन्हा। पटउरलाइसोचअति कीन्हा
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा। तजहु सोच मन आनहु धीरा
सब प्रकार करिहौं सेवकाई। जेहिबिधिमिलिहि जानकीआई

दो०—सखाबचन सुनि हरषे, कृपासिंधु बलसींवँ।
कारन कवन बसहु बन, मोहि कहहु सुग्रीवँ ॥५॥

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई। प्रीति रही कछु बरनि न जाई

मयसुत मायाबी तेहि नाऊँ । आवा सो प्रभु हमारे गाऊँ
अर्धराति पुरद्वार पुकारा । बाली रिपुबल सहै न पारा
धावा बालि देखि सो भागा । मैं पुनि गयउँ बंधु सँग लागा
गिरि-बर-गुहा पैठ सो जाई । तब बाली मोहि कहा बुझाई
परिखेसुमोहिएक पखवारा । नहिं आवौं तब जानेसु मारा
मासदिवस तहँ रहेउँखरारी । निसरी रुधिरधार तहँ भारी
बालिहतेसिमोहिमारिहिआई । सिला देइ तहँ चलेउँ पराई
मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साईं । दीन्हेउँ मोहि राज बरिआई
बाली ताहि मारिगृहआवा । देखि मोहि जिय भेद बढावा
रिपुसममोहिमारेसिअति भारी । हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी
ता के भय रघुबीर कृपाला । सकलभुवनमैंफिरेउँ बिहाला
इहाँ सापबस आवत नाहीं । तदपि सभीत रहौं मन माहीं
सुनि सेवकदुख दीनदयाला । फरकिउठींदोउ भुजाबिसाला

दो०—सुनु सुग्रीव मैं मारिहउँ, बालिहि एकहि बान ।
ब्रह्म रुद्र-सरनागत, गये न उबरिहि प्रान ॥ ६ ॥

ज न मित्र दुख होहिं दुखारी ।तिन्हहिंबिलोकत पातकभारी
निज-दुख-गिरि-सम रज करि जाना । मित्र क दुखरज मेरुसमाना
जिन्हकेअसिमति सहज न आई।ते सठ कत हठि करत मिताई
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा । गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा
देत लेत मन संक न धरई । बल अनुमान सदा हित करई
बिपतिकाल कर सतगुन नेहा । स्रुति कह संत मित्र गुन एहा
आगे कह मृदुबचन बनाई । पाछे अनहित मन कुटिलाई
जाकरचितअहि-गति-समभाई । अस कुमित्रपरिहरेहिभलाई
सेवक सठ नृप कृपिन कुनारी । कपटी मित्र सूलसम चारी
सखा सोच त्यागहु बल मोरें । सबबिधि घटब काज मैं तोरें

कह सुग्रीवँ सुनहु रघुबीरा । बालिमहाबलअति-रन-धीरा
दुंदुभि अस्थि ताल देखराये । बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये
देखि अमितबल बाढ़ी प्रीती । बालिबधब इन्ह भइ परतीती
बार बार नावइ पद सीसा । प्रभुहिजानिमन हरषकपीसा
उपजा ग्यान बचनतब बोला । नाथ कृपा मन भयउ अडोला
सुख संपति परिवार बड़ाई । सबपरिहरि करिहौं सेवकाई
ए सब रामभगति के बाधक । कहहिं संत तव पद अवराधक
सत्रु मित्र सुखदुख जगमाहीं । मायाकृत परमारथ नाहीं
बालिपरमहित जासु प्रसादा । मिलेहुरामतुम्हसमनबिषादा
सपने जेहि सन होइ लराई । जागे समुझत मन सकुचाई
अबप्रभुकृपाकरहु येहिभाँती । सबतजिभजन करौं दिनुराती
सुनि बिरागसंयुत कपिबानी । बोले बिहँसि रामु धनुपानी
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । सखाबचन मम मृषा न होई
नट मरकटइव सबहिनचावत । राम खगेस बेद अस गावत
लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चापसायक गहि हाथा
तब रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बलपावा
सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहिकरचरननारिसमुझावा
सुनुपतिजिन्हहिमिलेउसुग्रीवाँ । ते दोउ बंधु तेजबलसीवाँ
कोसलेसमुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहिं संग्रामा

दो०—कहा बालि सुनु भीरुप्रिय, समदरसी रघुनाथ ।
जौं कदाचि मोहि मारहिं, तौ पुनि होउँ सनाथ ॥ ७ ॥

असकहिचलामहाअभिमानी । तृनसमान सुग्रीवहि जानी
भिरे उभौ बाली अति तरजा । मुठिकामारि महाधुनिगरजा
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा । मुष्टिप्रहार बज्रसम लागा
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । बधु न होइ मोर यह काला

एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ। तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ
कर परसा सुग्रीव-सरीरा। तनु भा कुलिस गई सब पीरा
मेली कंठ सुमन कै माला। पठवा पुनि बल देइ बिसाला
पुनि नानाबिधि भई लराई। बिटपओट देखहिं रघुराई

दो०—बहु छलबल सुग्रीव करि, हिय हारा भय मानि।
मारा बाली राम तब, हृदय माँझ सर तानि॥ ८॥

परा बिकल महि सरके लागे। पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे
स्यामगात सिर जटा बनाये। अरुननयन सर चाप चढाये
पुनिपुनि चितइ चरनचितदीन्हा। सुफलजनममाना प्रभु चीन्हा
हृदय प्रीतिमुखबचन कठोरा। बोला चितइ राम की ओरा
धर्महेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहि ब्याध की नाईं
मैं बैरी सुग्रीव पियारा। कारनकवननाथ मोहि मारा
अनुजबधू भगिनी सुतनारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकै जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई
मूढ़तोहिअतिसयअभिमाना। नारि सिखावनकरेसिनकाना
ममभुज-बल-आश्रिततेहिजानी। मारा चहसिअधम अभिमानी

दो०—सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि।
प्रभु अजहूँ मैं पातकी, अंतकाल गति तोरि॥ ९॥

सुनतरामअतिकोमल बानी। बालिसीस परसेउ निजपानी
अचल करौतनुराखहु प्राना। बालि कहा सुनु कृपानिधाना
जन्मजन्ममुनिजतन कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं
जासु नामबल सकर कासी। देतसबहिसमगति अबिनासी
मम लोचनगोचरसोइआवा। बहुरिकिप्रभुअसबनिहि बनावा

छंद—सो नयनगोचर जासु गुन नित नेति कहि स्रुति गावहीं।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं॥

मोहि जानि अति-अभिमान-बस प्रभु कहेहु राखु सरीरही ।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ॥
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर माँगऊँ ।
जेहि जोनि जनमउँ कर्मबस तहँ रामपद अनुरागऊँ ॥
यह तनय मम सम बिनयबल कल्यानप्रद प्रभु लीजिये ।
गहि बाँह सुर-नर-नाह आपन दास अंगद कीजिये ॥
दो०—रामचरन दृढ़प्रीति करि, बालि कीन्ह तनुत्याग ।
सुमनमाल जिमि कंठ तें, गिरत न जानै नाग ॥१०॥

रामबालिनिजधाम पठावा । नगरलोग सब ब्याकुलधावा
नानाबिधिबिलापकरताता । छूटे केस न देह सँभारा
तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया
छितिजलपावकगगनसमीरा। पंच रचित अतिअधमसरीरा
प्रगट सो तनु तवआगेसोवा । जीवनित्यकेहिलगितुम्हरोवा
उपजा ग्यान चरन तबलागी । लीन्हेसिपरमभगतिबरमाँगी
उमा दारुजोषित की नाईं । सबहि नचावत रामु गोसाईं
तब सुग्रीवहि आयसुदीन्हा । मृतककर्मबिधिवतसबकीन्हा
रामुकहाअनुजहि समुझाई । राजु देहु सुग्रीवहि जाई
रघुपति-चरननाइकरिमाथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा

दो०—लछिमन तुरत बोलाये, पुरजन बिप्रसमाज ।
राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ जुबराज ॥११॥

उमारामसमहितजग माहीं । गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं
सुरनरमुनिसबकै यहरीती । स्वारथलागिकरहिं सब प्रीती
बालि-त्रास-ब्याकुलदिनराती । तन बहु ब्रन चिंता जर छाती
सोइ सुग्रीव कीन्हकपिराऊ । अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ

जानतहूँअस प्रभु परिहरहीं । काहे न बिपतिजाल नरपरहीं
पुनिसुग्रीवहिलीन्ह बोलाई । बहु प्रकार नृपनीति सिखाई
कह प्रभु सुनु सुग्रीवहरीसा । पुर न जाउँ दस चारि बरीसा
गत ग्रीषम बरषा रितुआई । रहिहौं निकट सैल पर छाई
अंगदसहितकरहुतुम्ह राजू । संतत हृदय धरेहु मम काजू
जबसुग्रीवभवनफिरि आये । रामु प्रबरषन गिरि पर छाये

दो०—प्रथमहि देवन्ह गिरि गुहा, राखेउ रुचिर बनाइ ।
रामु कृपानिधि कछुक दिन, बास करहिंगे आइ॥१२॥

सुदरबन कुसुमितअतिसोभा । गुंजत मधुपनिकर मधुलोभा
कंद मूल फल पत्र सुहाये । भये बहुत जब तें प्रभु आये
देखि मनोहर सैल अनूपा । रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा
मधुकर-खग-मृग-तनुधरिदेवा । करहिंसिद्धमुनिप्रभु कै सेवा
मगलरूप भयउ बन तब तें । कीन्हनिवास रमापतिजब तें
फटिकसिला अतिसुभ्रसुहाई । सुख आसीन तहाँ दोउ भाई
कहत अनुज सन कथाअनेका ।भगतिबिरतिनृपनीतिबिबेका
बरषाकाल मेघ नभ छाये । गर्जत लागत परम सुहाये

दो०—लछिमन देखहु मोरगन, नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरतिरत हरष जस, बिष्णुभगत कहुँ देखि ॥१३॥

घनघमंडनभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा
दामिनिदमकिरहनघनमाही । खलकैप्रीतिजथा थिर नाहीं
बरसहिं जलद भूमि नियराये । जथा नवहिं बुध बिद्या पाये
बुंद अघात सहहि गिरि कैसे । खल के बचन संत सह जैसे
छुद्र नदी भरि चली तोराई । जसथोरेहु धन खल इतराई
भूमि परत भा ढाबर पानी । जनुजीवहि माया लपटानी
सिमिटिसिमिटिजलभरहितलावा। जिमिसदगुन सज्जनपहिं आवा

सरिताजलजलनिधिमहुँजाई । होहिअचलजिमिजिवहरिपाई

दो०–हरित भूमि तृनसंकुल, समुझि परहि नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड बाद तें, गुप्त होहि सदग्रंथ ॥ १४ ॥

दादुरधुनि चहुँ दिसा सुहाई । बेद पढ़हि जनु बटुसमुदाई
नव पल्लव भये बिटप अनेका। साधक मन जसमिले बिबेका
अर्क जवास पात बिनु भयऊ । जसमुराज खल उद्यम गयऊ
खोजत कतहुँमिलइनहिंधूरी । करै क्रोध जिमिधर्महि दूरी
ससिसंपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी
निसितमघनखद्योतबिराजा । जनुदंभिनकरमिला समाजा
महाबृष्टिचलिफूटिकियारी । जिमिसुतत्र भयेबिगरहिनारी
कृषीनिरावहिचतुरकिसाना । जिमिबुधतजहिंमोह मद माना
देखियत चक्रबाक खगनाही । कलिहिपाइजिमिधर्म पराही
ऊसर बरषइ तृन नहि जामा । जिमि हरि-जन-हियउपजनकामा
बिबिध जंतुसंकुल महिभ्राजा।प्रजा बाढ जिमि पाइ सुराजा
जहँतहँरहेपथिक थकिनाना । जिमि इंद्रियगन उपजेग्याना

दो०–कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहि ॥
कबहुँ दिवस महुँ निबिड़तम, कबहुँक प्रगट पतंग ।
बिनसै उपजै ग्यान जिमि, पाइ कुसंग सुसंग ॥१५॥

बरषाबिगत सरद रितु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई
फूले कास सकल महि छाई । जनु बरषाकृत प्रगट बुढाई
उदित अगस्त पंथजल सोखा । जिमि लोभहिसोखइ संतोषा
सरितासर निर्मलजल सोहा । संतहृदय जस गत-मद-मोहा
रस रससूख सरित-सर-पानी । ममतात्याग करहिं जिमि ग्यानी
जानि सरद रितु खंजन आये । पाइ समय जिमि सुकृतसुहाये

पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति-निपुन-नृपकै जसि करनी
जलसंकोचबिमलभइ मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना
बिनुघननिर्मल सोहअकासा । हरिजनइवपरिहरिसबआसा
कहुँकहुँ बृष्टि सारदो थोरी । कोउएकपावभगतिजसिमोरी

दो०—चले हरषि तजि नगर नृप, तापस बनिक भिखारि ।
जिमि हरिभगति पाइ स्रम, तजहिं आस्रमी चारि ॥१६॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरिसरननएकउबाधा
फूले कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भये जैसा
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खगरव नानारूपा
चक्रवाकमन दुख निसि पेखी । जिमिदुरजनपरसंपति देखी

२२ किष्किन्धाकाण्ड ३३७

पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति-निपुन-नृपकै जसि करनी
जलसंकोचबिमलभइ मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना
बिनुघननिर्मल सोहअकासा । हरिजनइवपरिहरिसबआसा
कहुँकहुँ बृष्टि सारदो थोरी । कोउएकपावभगतिजसिमोरी

दो०—चले हरषि तजि नगर नृप, तापस बनिक भिखारि ।
जिमि हरिभगति पाइ स्रम, तजहिं आस्रमी चारि ॥१६॥

दो०—तब अनुजहिं समुझावा, रघुपति करुनासींवँ ।
भय देखाइ लै आवहु, तात सखासुग्रीवँ ॥ १८ ॥

इहाँपवनसुत हृदय बिचारा । रामकाज सुग्रीव बिसारा
निकटजाइचरनन्हिसिरुनावा। चारिहुबिधितेहिकहिसमुझावा
सुनि सुग्रीव परमभय माना । बिषयमोरहरिलीन्हेउ ग्याना
अब मारुतसुत दूतसमूहा । पठवहु जहँ तहँ बानरजूहा
कहेहु पाख महुँ आव न जोई । मोरे कर ता कर बध होई
तब हनुमंत बोलाये दूता । सब कर करि सनमान बहूता
भय अरु प्रीति नीति देखराई । चलेसकलचरनन्हि सिरुनाई
एहिअवसर लछिमनपुरआये । क्रोध देखि जहँ तहँ कपिधाये

दो०—धनुष चढ़ाइ कहा तब, जारि करउँ पुर छार ।
व्याकुल नगर देखि तब, आयउ बालिकुमार ॥१९॥

चरन नाइसिरुबिनतीकीन्ही । लछिमन अभयबाँहतेहिदीन्ही
क्रोधवंत लछिमनसुनिकाना । कहकपीस अतिभयअकुलाना
सुनु हनुमंत संग लै तारा । करि बिनतीममुझाउकुमारा
तारासहित जाइ हनुमाना । चरन बंदिप्रभु सुजसु बखाना
करि बिनती मंदिर लै आये । चरन पखारि पलँग बैठाये
तबकपीसचरनन्हिसिरुनावा । गहिभुजलछिमनकंठलगावा
नाथबिसयसममदकछुनाही । मुनिमनमोह करै छन माही
सुनत बिनीतबचनसुखपावा । लछिमन तेहि बहुबिधि समुझावा
पवनतनय सब कथा सुनाई । जेहि बिधि गये दूतसमुदाई

दो०—हरषि चले सुग्रीव तब, अंगदादिकपि साथ ।
रामानुज आगे करि, आये जहँ रघुनाथ ॥२०॥

नाइ चरनसिरुकह करजोरी । नाथ मोहिकछुनाहिंन खोरी
अतिसयप्रबल देव तव माया । छूटइ राम करहु जौं दाया

बिषयबस्य सुर नर मुनिस्वामी। मैं पामर पसुकपि अतिकामी
नारि-नयन-सरजाहिनलागा। घोर-क्रोध-तम-निसि जोजागा
लोभपास जेहि गर न बँधाया। सो नर तुम्ह समानरघुराया
यह गुन साधन तें नहि होई। तुम्हरीकृपा पाव कोइकोई
तब रघुपति बोले मुसुकाई। तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई
अबसोइजतनकरहुमन लाई। जेहिबिधिसीताकै सुधि पाई

दो०—एहि बिधि होत बतकही, आये बानरजूथ।
नानाबरन सकल दिसि, देखिय कीसबरूथ ॥२१॥

बानरकटक उमा मैं देखा। सो मूरख जो करन चह लेखा
आइ रामपद नावहि माथा। निरखिवदनुसबहोहिसनाथा
अस कपि एक न सेना माही। राम कुसल जेहि पूछी नाहीं
यहकछुनहिप्रभुकै अधिकाई। बिस्वरूप ब्यापक रघुराई
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई। कहसुग्रीव सबहिं समुझाई
रामकाजु अरु मोर निहोरा। बानरजूथ जाहु चहुँओरा
जनकसुता कहँ खोजहु जाई। मासदिवस महुँ आयहु भाई
अवधिमेटिजोबिनु सुधिपाये। आवइबनिहिसो मोहि मराये

दो०—बचन सुनत सब बानर, जहँ तहँ चले तुरंत।
तब सुग्रीव बोलाये, अंगद नल हनुमंत ॥२२॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवंत मतिधीर सुजाना
सकलसुभटमिलिदच्छिनजाहू। सीतासुधि पूछेहु सब काहू
मनक्रमबचनसोजतनबिचारेहु। रामचंद्र कर काज सँवारेहु
भानुपीठि सेइय उर आगी। स्वामिहि सर्वभावछलत्यागी
तजि माया सेइय परलोका। मिटहि सकलभवसंभवसोका
देह धरे कर यह फलु भाई। भजियरामसब काम बिहाई
सोइ गुनग्य सोई बड़भागी। जो रघुबीर-चरन-अनुरागी

आयसु माँगिचरन सिरु नाई। चले हरषि सुमिरत रघुराई
पाछे पवनतनय सिरु नावा। जानिकाजुप्रभुनिकटबोलावा
परसा सीस सरोरुहपानी। करमुद्रिका दीन्हि जन जानी
बहुप्रकारसीतहि समुझायेहु। कहिबलबिरहबेगितुम्हआयेहु
हनुमतजनमसुफलकरिमाना। चलेउ हृदय धरिकृपानिधाना
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता। राजनीति राखत सुरत्राता

दो०—चले सकल बन खोजत, सरिता सर गिरि खोह।
राम-काज-लय-लीन मन, बिसरा तन कर छोह ॥२३॥

कतहुँ होइनिसिचर सो भेटा। प्रान लेहि एक एक चपेटा
बहुप्रकार गिरि कानन हेरहि। कोउमुनिमिलइताहिसबघेरहिं
लागि तृषाअतिसय अकुलाने। मिलइ नजलघनगहनभुलाने
मन हनुमानकीन्ह अनुमाना। मरनचहतसबबिनु जलपाना
चढ़िगिरिसिखरचहूँदिसिदेखा। भूमिबिबरएक कौतुक पेखा
चक्रबाक बक हंस उड़ाहीं। बहुतेकखगप्रबिसहितेहिमाहीं
गिरितैउतरिपवनसुत आवा। सबकहुँ लै सोइबिबर देखावा
आगे करि हनुमंतहि लीन्हा। पैठे बिबर बिलंबु न कीन्हा

दो०—दीख जाइ उपबन बर, सर बिकसित बहुकंज।
मंदिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तपपुंज ॥२४॥

दूरितेंताहिसबन्हिसिरुनावा। पूछे निजबृत्तांत सुनावा
तेहि तब कहाकरहु जलपाना। खाहु सुरस-सुंदर-फल नाना
मज्जन कीन्हमधुरफलखाये। तासुनिकटपुनिसब चलिआये
तेहि सब आपनि कथासुनाई। मैं अब जाब जहाँ रघुराई
मूँदहु नयन बिबर तजिजाहू। पैहहु सीतहि जनि पछिताहू
नयन मूँदि पुनि देखहि बीरा। ठाढे सकल सिंधु के तीरा
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा। जाइ कमलपद नायेसि माथा
नानाभाँतिबिनयतेहिकीन्ही। अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही

दो०—बदरीबन कहुँ सो गई, प्रभुअग्या धरि सीस।
उर धरि राम-चरन-जुग, जे बंदत अज ईस ॥२५॥

इहाँबिचारिहकपिमन माही। बीतीअवधि काज कछु नाहीं
सबमिलिकहहिपरसपरबाता। बिनुसुधिलएँकरबका भ्राता
कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी
इहाँ न सुधि सीता कै पाई। उहाँ गये मारिहि कपिराई
पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोर न ओही
पुनि पुनिअंगदकहसबपाही। मरन भयेउ कछु संसय नाहीं
अगदबचन सुनत कपिबीरा। बोलिनसकहिनयन बह नीरा
छनएकसोचमगनहोइगयऊ। पुनिअसबचनकहतसब भयऊ
हमसीताकैसुधिलीन्हे बिना। नहि जैहहिं जुबराज प्रबीना
असकहिलवन-सिंधु-तटजाई। बैठे कपि सब दर्भ डसाई
जामवंत अंगददुख देखी। कही कथा उपदेस बिसेखी
तातरामकहुँनरजनिमानहु। निर्गुन ब्रह्म अजित अजजानहु
हम सबसेवकअति-बड़-भागी। संतत सगुन-ब्रह्म-अनुरागी

दो०—निजइच्छा प्रभु अवतरइ, सुर-महि-गो-द्विजलागि।
सगुनउपासक संग तहँ, रहहिं मोच्छसब त्यागि ॥२६॥

एहिबिधिकथाकहहिबहुभाँती। गिरिकंदरा सुनी सपाती
बाहेर होइ देखे बहु कीसा। मोहि अहार दीन्ह जगदीसा
आजुसबहिकहँभच्छनकरऊँ। दिनबहुचले अहार बिनु मरऊँ
कबहुँ न मिलभरिउदरअहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहिबारा
डरपे गीधबचन सुनि काना। अब भा मरन सत्य हम जाना
कपि सब उठेगीध कहँ देखी। जामवंत मन सोच बिसेखी
कह्यअंगदबिचारि मनमाही। धन्य जटायू सम कोउ नाहीं
राम-काज-कारनतनुत्यागी। हरिपुर गयउपरम-बड़भागी
सुनिखगहरष-सोक-जुतबानी। आवानिकटकपिन्हभय मानी

तिन्हहिअभयकरिपूछेसिजाई। कथासकलतिन्ह ताहि सुनाई
सुनि संपाति बंधु कै करनी । रघुपति-महिमा बहुबिधि बरनी

दो०—मोहि लै जाहु सिंधुतट, देउँ तिलांजलि ताहि।
बचनसहाय करबि मैं, पैहहु खोजहु जाहि ॥२७॥

अनुजक्रियाकरिसागरतीरा। कहनिजकथासुनहु कपिबीरा
हम दोउ बंधुप्रथम तरुनाई । गगन गये रबि निकट उड़ाई
तेजनसहिसकसोफिरि आवा । मैं अभिमानी रबि नियरावा
जरे पंख अति तेज अपारा । परेउँ भूमि करि घोरचिकारा
मुनि एक नाम चंद्रमाओही । लागी दया देखि करि मोही
बहुप्रकारतेहि ग्यान सुनावा । देह जनित अभिमान छड़ावा
त्रेता ब्रह्म मनुजतनु धरहीं । तासु नारिनिसिचर-पतिहरहीं
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता । तिन्हहि मिले तैं होब पुनीता
जमिहहिपंखकरसिजनिचिंता । तिन्हहि देखाइदिहेसु तैं सीता
मुनि कै गिरासत्यभइआजू । सुनिममबचनकरहु प्रभुकाजू
गिरि त्रिकूट ऊपरबसलंका । तहँ रह रावन सहज असंका
तहँअसोकउपबन जहँ रहई । सीता बैठि सोचरत अहई

दो०—मैं देखौं तुम्ह नाहीं, गीधहि दृष्टि अपार।
बूढ़ भयउँ न त करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥२८॥

जो नाँघइ सतजोजनसागर । करै सोरामकाज मतिआगर
मोहिबिलोकिधरहुमनधीरा। राम कृपा कस भयउ सरीरा
पापिउजाकरनामसुमिरहीं । अति अपार भव सागर तरहीं
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई । राम हृदय धरि करहु उपाई
अस कहिउमागीधजबगयऊ । तिन्हकेमनअतिबिसमयभयऊ
निजनिजबलमबकाहूभाखा । पार जाइ कर संसय राखा
जरठ भयउँअबकहइरिछेसा । नहिं तनुरहाप्रथम-बल-लेसा
जबहिंत्रिबिक्रमभयउखरारी। तब मैं तरुन रहेउँ बलभारी

दो०—बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ, सो तनु बरनि न जाइ।
उभय घरी महँ दीन्ही, सात प्रदच्छिन धाइ ॥२९॥

अंगद कहै जाउँ मै पारा। जिय संसयकछुफिरती बारा
जामवंतकह तुम्ह सबलायक। पठइयकिमिसबहीकरनायक
कहै रिच्छपति सुनुहनुमाना। का चुप साधि रहेउ बलवाना
पवन-तनय-बलपवनसमाना। बुधि-बिबेक-बिग्यान-निधाना
कौनसोकाजकठिनजगमाहीं। जो नहि तात होइ तुम्ह पाहीं
रामकाज लगि तव अवतारा। सुनतहि भयउ पर्बताकारा
कनक-बरन-तन तेजबिराजा। मानहुँअपरगिरिन्हकरराजा
सिंहनाद करि बारहि बारा। लीलहिनाँघउँजलधि अपारा
सहित सहाय रावनहि मारी। आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी
जामवंत मैं पूछउँ तोही। उचितसिखावनदीजेहु मोही
एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधिआई
तबनिज-भुज-बलराजिवनैना। कौतुक लागि संग कपिसैना

छंद—कपि-सेन-संग सँघारि निसिचर रामु सीतहिं आनिहैं।
त्रैलोक-पावन-सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावई।
रघुबीर-पद-पाथोज-मधुकर दास तुलसी गावई॥

दो०—भवभेषज रघुनाथजसु, सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकलमनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥

सो०—नीलोत्पल-तन-स्याम, कामकोटि सोभा अधिक।
सुनिय तासु गुनग्राम, जासु नाम अघ-खग-बधिक॥३०॥

मासपारायण, तेईसवाँ विश्राम

इति श्रीरामचारतमानसे सकलकलिकलुपविध्वंसने विशुद्ध-
सन्तोप-सम्पादनो नाम चतुर्थः सोपानः समाप्तः।

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामचरितमानस

सुन्दरकाण्ड

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये,
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे,
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जामवन्त के बचन सुहाये । सुनि हनुमंत हृदय अति भाये
तबलगि मोहि परिखेहु भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई
जबलगि आवौं सीतहि देखी । होइकाज 'मोहिहरष बिसेखी

असकहिनाइसबन्हिकहुँमाथा।चलेउहरषिहियधरिरघुनाथा
सिंधुतीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर
बार बार रघुबीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बलभारी
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता
जिमिअमोघरघुपतिकरबाना । एही भाँति चला हनुमाना
जलनिधिरघुपति-दूतविचारी । तैं मैनाक होहि स्रमहारी

दो०—हनूमान तेहि परसा, कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
रामकाजु कीन्हे बिनु, मोहि कहाँ बिस्राम ॥१॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा । जानइकहुँबल-बुद्धि-बिसेखा
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता । पठइन्हिआइ कही तेहिबाता
आजु सुरन्हमोहिदीन्हअहारा । सुनतबचन कह पवनकुमारा
रामकाजु करिफिरिमै आवौं । सीताकै सुधि प्रभुहिसुनावौं
तब तुव बदन पैठिहउँ आई । सत्यकहउँ मोहि जानदेमाई
कवनेहु जतन देइ नहि जाना । ग्रससिनमोहि कहेउहनुमाना
जोजनभरि तेहि बदनु पसारा । कपितनु कीन्ह दुगुन-बिस्तारा
सोरह जोजन मुखतेहि ठयेऊ । तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ
जसजस सुरसा बदनु बढ़ावा । तासु दून कपि रूप देखावा
सतजोजन तेहिआननकीन्हा । अति-लघु-रूपपवनसुतलीन्हा
बदन पैठिपुनि बाहेरआवा । माँगा बिदाताहि सिरुनावा
मोहिसुरन्हजेहिलागिपठावा । बुधि-बल-मरमुतोरमैं पावा

दो०—राम काजु सब करिहहु, तुम्ह बल-बुद्धि-निधान ।
आसिष देइ गई सो, हरषि चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निसिचरि एकसिंधु महँरहई । करि माया नभ के खग गहई
जीव जंतु जे गगनं उड़ाहीं । जलबिलोकितिन्हकै परिछाहीं

गहइ छाँह सक सो न उड़ाई । एहिविधिसदागगनचरखाई सोइ छल हनूमानकहँकीन्हा । तासकपटकपितुरतहिंचिन्हा ताहिमारि मारुत-सुत-बीरा । बारिधिपारगयउमतिधीरा तहाँ जाइ देखी बनसोभा । गुंजत चंचरीक मधुलोभा नाना तरु फल फूल सुहाये । खग-मृग-बृंद देखिमनभाये सैल बिसाल देखि एक आगे । तापर धाइ चढ़ेउ भय त्यागे उमा न कछु कपिकै अधिकाई । प्रभुप्रताप जो कालहि खाई गिरि परचढ़िलंकातेहि देखी । कहिनजाइअतिदुर्गबिसेखी अतिउतंगजलनिधि चहुँ पासा । कनककोटकरपरमप्रकासा

छंद—कनक कोट बिचित्र-मनि-कृत सुंदरायतना घना ।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहुबिधि बना ॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै ।
बहुरूप निसिचर-जूथ अतिबल सेन बरनत नहि बनै ॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं ।
नर-नाग-सुर-गंधर्ब-कन्या-रूप मुनिमन मोहहीं ॥
कहुँ माल देहबिसाल सैलसमान अति बल गर्जहीं ।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥
करि जतन भट कोटिन्ह बिकटतन नगर चहुँदिसि रच्छहीं ।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछुयक है कही ।
रघुबीर-सर-तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पइहहिं सही ॥

दो०—पुररखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह बिचार ।
अतिलघु रूप धरौं निसि, नगर करौं पइसार ॥३॥

मसकसमान रूप कपि धरी । लंकहिचलेउसुमिरि नरहरी

नाम लंकिनी एक निसिचरी । सोकह चलेसि मोहि निदरी
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लगिचोरा
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर बमतधरनी ढनमनी
पुनि संभार उठी सो लंका । जोरिपानिकर बिनयससंका
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा । चलतबिरंचिकहामोहिचीन्हा
बिकल होसि तैं कपि के मारे । तबजानेसु निसिचर संहारे
तात मोर अतिपुन्य बहूता । देखेउँ नयन राम कर दूता

दो०—तात स्वर्ग-अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग ॥४॥

प्रबिसिनगरकीजै सब काजा । हृदयराखिकोसल-पुर-राजा
गरल सुधा रिपुकरइ मिताई । गोपद सिन्धुअनल सितलाई
गरुअ सुमेरु रेनुसम ताही । रामकृपाकरिचितवा जाही
अति-लघु-रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगरसुमिरिभगवाना
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । देखेजहँ तहँ अगनित जोधा
गयउ दसानन मंदिर माँहीं । अतिबिचित्रकहिजातसोनाहीं
सयन किये देखा कपि तेही । मंदिर महुँ न दीख बैदेही
भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा

दो०—रामायुध अंकित गृह, सोभा बरनि न जाइ ।
नव तुलसिका बृंद तहँ, देखि हरष कपिराइ ॥५॥

लंकानिसिचर-निकर-निवासा । इहाँ कहाँ सज्जनकर बासा
मनमहुँतरककरइकपिलागा । तेहीं समय बिभीषनु जागा
रामरामतेहि सुमिरनकीन्हा ।हृदयहरष कपि सज्जन चीन्हा
एहिसनु हठि करिहउँपहिचानी। साधु तें होइ न कारज हानी
बिप्ररूप धरि बचन सुनाये । सुनत बिभीषनउठि तहँ आये
करि प्रनाम पूछी कुसलाई । बिप्र कहहु निज कथा बुझाई

कीतुम्हहरिदासन्ह महुँ कोई। मोरे हृदय प्रीति अति होई
की तुम्ह राम-दीन-अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी

दो०—तब हनुमंत कही सब, रामकथा निजनाम।
सुनत जुगलतन पुलक मन,मगन सुमिरि गुनग्राम ॥६॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी।जिमिदसनन्हिमहुँ जीभबिचारी
तातकबहुँमोहिजानि अनाथा। करिहहिं कृपाभानुकुल-नाथा
तामसतनु कछु साधन नाही। प्रीति न पद सरोज मन माहीं
अब मोहि भा भरोस हनुमंता।बिनुहरिकृपामिलहिनहिंसंता
जौ रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्हमोहि दरसुहठदीन्हा
सुनहु बिभीषन प्रभुकै रीती। करहि सदा सेवक पर प्रीती
कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपिचंचल सबहीबिधिहीना
प्रात लेइ जो नाम हमारा।तेहिदिनताहिनमिलइअहारा

दो०—अस मैं अधम सखा सुनु, मोहूँ पर रघुबीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन, भरे बिलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी। फिरहिते काहेनहोहिं दुखारी
एहिबिधि कहत राम-गुन-ग्रामा। पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा
पुनि सब कथा बिभीषन कही। जेहिबिधिजनकसुतातहँरही
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखा चहउँ जानकी माता
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई
करिसोइरूप गयउपुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा। बैठेहि बीतिजातनिसिजामा
कृस तन सीस जटा एक बेनी। जपतिहृदय रघुपति-गुन-स्रेनी

दो०—निजपद नयन दिये मन, रामचरन महँ लीन।
परमदुखी भा पवनसुत, देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥

तरुपल्लव महुँ रहा लुकाई। करै बिचार करौं का भाई

तेहिअवसर रावनु तहँ आवा। संग नारि बहु किये बनावा
बहुबिधिखलसीतहिसमुझावा। साम दाम भय भेद देखावा
कहरावनु सुनुसुमुखि सयानी। मदोदरी आदि सब रानी
तव अनुचरी करउँ पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा
तृन धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरिअवधपति परमसनेही
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा।कबहुँकिनलिनीकरइबिकासा
असमनसमुझुकहति जानकी। खलसुधिनहिंरघुबीर-बानकी
सठ सूने हरि आनेहि मोही। अधमनिलज्जलाजनहिं तोही

दो०—आपुहि सुनि खद्योतसम, रामहिं भानुसमान।
परुषबचन सुनि काढ़ि असि, बोला अतिखिसियान॥९॥

सीता तैं मम कृत अपमाना।कटिहौंतवसिरकठिन कृपाना
नाहित सपदिमानु ममबानी।सुमुखिहोति न त जीवन हानी
स्याम-सरोज-दाम-सम सुंदर।प्रभुभुजकरि-कर-सम दसकंधर
सोभुज कंठकि तवअसिघोरा। सुनुसठ अस प्रमान पन मोरा
चंद्रहास हर मम परितापं। रघुपति-बिरह-अनल-संजातं
सीतलनिसितबहमि-बर-धारा। कह सीता हरु मम दुख भारा
सुनत बचन पुनि मारन धावा। मयतनयाकहिनीतिबुझावा
कहेसिसकलनिसिचरिन्हबोलाई।सीतहिबहुबिधि त्रासहु जाई
मासदिवस महुँ कहा न माना। तौ मैं मारब काढ़ि कृपाना

दो०—भवन गयउ दसकंधर, इहाँ पिसाचिनिबृंद।
सीतहिं त्रास देखावहि, धरहिं रूप बहुमंद॥१०॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका। रामचरन-रतिनिपुन बिबेका
सबन्हौंबोलि सुनायेसिसपना। सीतहि सेइ करहुहित अपना
सपने बानर लंका जारी। जातुधानसेना सब मारी
खरआरूढ़ नगन दससीसा। मुंडितसिरखंडित-भुज-बीसा

एहिबिधिमोदच्छिनदिसिजाई। लंका मनहुँ बिभीषन पाई
नगर फिरी रघुबीर-दोहाई। तब प्रभु सीता बोलि पठाई
यह सपना मैं कहउँ पुकारी। होइहि सत्य गये दिन चारी
तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनकसुता के चरनन्हि परीं

दो०—जहँ तहँ गईं सकल तब, सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीते मोहि, मारिहि निसिचर पोच ॥११॥

त्रिजटा सन बोली कर जोरी। मातु बिपतिसंगिनि तैं मोरी
तजउँ देह करु बेगि उपाई। दुसहबिरहअब नहिसहिजाई
आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई
सत्यकरहिमम प्रीतिसयानी। सुनइको स्रवन सूलसम बानी
सुनतबचन पदगहिसमुझायेसि। प्रभु-प्रताप-बल-सुजस सुनायेसि
निसिनअनलमिलसुनुसुकुमारी। असकहि सो निजभवन सिधारी
कहसीता बिधिभाप्रतिकूला। मिलहिनपावक मिटहिनसूला
देखियत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकउ तारा
पावकमयससि स्रवतन आगी। मानहुँमोहि जानि हतभागी
सुनहिबिनयममबिटप असोका। सत्यनाम करुहरु मम सोका
नूतनकिसलय अनलसमाना। देहिअगिनिजनिकरहिनिदाना
देखि परमबिरहाकुल सीता। सोछनकपिहि कलपसमबीता

सो०—कपि करि हृदय बिचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार, दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥१२॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर। रामनाम-अंकित अतिसुन्दर
चकितचितवमुदरीपहिचानी। हरष बिषादहृदय अकुलानी
जीतिको सकै अजयरघुराई। माया तें असिरचि नहिं जाई
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना
रामचंद्र-गुन बरनै लागा। सुनतहिसीता कर दुखभागा

लागी सुनइ स्रवन मन लाई। आदिहुँ तें सब कथा सुनाई
स्रवनामृत जेहि कथा सुहाई। कहिसा प्रगट होत किन भाई
तबहनुमत निकटचलिगयऊ। फिरिबैठी मन बिसमयभयऊ
रामदूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की
यह मुद्रिका मातु मै आनी। दीन्हिरामतुम्हकहँसहिदानी
नर बानरहि संग कहु कैसे। कही कथा भइ संगति जैसे

दो०—कपि के बचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह, कृपासिंधु कर दास ॥१३॥

हरिजनजानिप्रीतिअतिगाढ़ी।सजलनयन पुलकावलि ठाढी
बूड़त बिरहजलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहँ जलयाना
अबकहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुजसहितसुखभवनखरारी
कोमलचित कृपालु रघुराई। कपि केहिहेतु धरी निठुराई
सहज बानिसेवक-सुखदायक। कबहुँकसुरतिकरतरघुनायक
कबहुँनयन ममसीतल ताता। होइहहिंनिरखिस्यामम्रदु-गाता
बचन न आव नयन भरि बारी। अहहनाथ हौं निपट बिसारी
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदुबचनबिनीता
मातुकुसल प्रभु अनुजसमेता। तव दुख दुखी सुकृपानिकेता
जनि जननी मानहुजियऊना। तुम्ह तें प्रेम राम के दूना

दो०—रघुपति कर संदेस अब, सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ, भरे बिलोचन नीर ॥१४॥

कहेउराम बियोग तव सीता। मो कहँ सकल भये बिपरीता
नव-तरु-किसलयमनहुँ कृसानू। काल-निसा-सम निसि ससि भानू
कुबलयबिपिनकुंत-बन-सरिसा। बारिदतपततेल जनु बरिसा
जेहि तरु रहे करत तेइ पीरा। उरग-स्वास-समत्रिबिधसमीरा
कहेहू ते कछु दुख घटि होई। काहि कहउँ यह जान न कोई

तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एक मन मोरा
सो मनसदा रहत तोहि पाही । जानु प्रीतिरस एतनहिमाहीं
प्रभुसंदेस सुनत बैदेही । मगन प्रेमतन सुधिनहि तेही
कहकपि हृदयधीरधरुमाता । सुमिरु राम सेवक-सुखदाता
उर आनहु रघुपति-प्रभुताई । सुनिमम बचन तजहु कदराई

दो०—निसिचर-निकर पतंगसम, रघुपति-बान कृसानु ।
जननी हृदय धीर धरु, जरे निसाचर जानु ॥१५॥

जो रघुबीर होति सुधि पाई । करते नहिं बिलंबु रघुराई
रामबान रबि उये जानकी । तमबरूथ कहँ जातुधान की
अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई । प्रभुआयसु नहिं रामदोहाई
कछुकदिवसजननीधरुधीरा । कपिनसहितअइहहिंरघुबीरा
निसिचरमारितोहिलै जैहहिं । तिहुँपुर नारदादि जस गैहहिं
हैसुतकपिसबतुम्हहिसमाना । जातुधानभट अतिबलवाना
मोरे हृदय परम संदेहा । सुनिकपिप्रगटकीन्हनिजदेहा
कनक-भूधराकार - सरीरा । समरभयंकर अति बल-बीरा
सीतामन भरोस तब भयऊ । पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ

दो०—सुनु माता साखामृग, नहिं बल-बुद्धि-बिसाल ।
प्रभुप्रताप तें गरुड़हिं, खाइ परमलघु ब्याल ॥१६॥

मन संतोष सुनत कपिबानी । भगति-प्रताप-तेज-बल सानी
आसिषदीन्हिरामप्रियजाना । होहु तात बल-सील-निधाना
अजरअमरगुननिधिसुतहोहू । करहिं बहुत रघुनायक छोहू
करहि कृपाप्रभुअससुनिकाना । निर्भर प्रेममगन हनुमाना
बार बार नायेसि पद सीसा । बोला बचन जोरि कर कीसा
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिष तव अमोघ बिख्याता
सुनहुमातुमोहिअतिसयभूखा । लागि देखि सुंदरफल रूखा

सुनु सुत करहिं बिपिनरखवारी । परमसुभट रजनीचर भारी
तिन्हकरभयमातामोहिनाहीं । जौं तुम्हमुखमानहु मन माहीं

दो०—देखि बुद्धि-बल-निपुन कपि, कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति-चरन हृदय धरि, तात मधुरफल खाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाइसिरुबैठेउ बागा । फल खायेसि तरु तोरइलागा
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे
नाथ एक आवा कपि भारी । तेहि असोकवाटिका उजारी
खायेसि फलअरु बिटपउपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे
सुनि रावन पठये भट नाना । तिन्हहिं देखि गर्जेउ हनुमाना
सब रजनीचर कपि संघारे । गये पुकारत कछु अधमारे
पुनिपठयेउतेहिअच्छयकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा
आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा

दो०—कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछु मिलयेसि धरि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बलभूरि ॥१८॥

सुनि सुत बध लंकेसरिसाना । पठयेसि मेघनाद बलवाना
मारेसि जनिसुतबाँधेसुताही । देखिय कपिहि कहाँ करआही
चलाइंद्रजित अतुलित-योधा । बंधुनिधन सुनि उपजाक्रोधा
कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा
अतिबिसाल तरु एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेसकुमारा
रहे महाभट ता के संगा । गहिगहिकपि मर्दइ निजअंगा
तिन्हहिनिपातिताहिसनबाजा । भिरे जुगल मानहुँ गजराजा
मुठिका मारि चढा तरुजाई । ताहि एक छन मुरुछा आई
उठिबहोरिकीन्हेसिबहुमाया । जीति न जाय प्रभंजन-जाया

दो०—ब्रह्म अस्त्र तेहि साधा, कपि मन कीन्ह बिचार ।
जौं न ब्रह्म सर मानउँ, महिमा मिटै अपार ॥१९॥

ब्रह्मबानकपिकहँतेहि मारा । परतिहुँ बार कटकु संघारा
तेहिदेखाकपिमुरुछितभयऊ । नागपास बाँधेसि लै गयऊ
जासुनामजपिसुनहु भवानी । भवबंधन काटहिं नर ग्यानी
तासु दूत की बँध तर आवा । प्रभुकारजलगि कपिहि बँधावा
कपिबंधनसुनिनिसिचरधाये । कौतुक लागि सभा सब आये
दसमुख सभादीखिकपिजाई । कहि न जाइकछुअतिप्रभुताई
करजोरेसुर दिसिप बिनीता । भृकुटिबिलोकतसकल सभीता
देखिप्रतापनकपि मन सका । जिमिअहिगनमहुँगरुड़असंका

दो०—कपिहि बिलोकि दसानन, बिहँसा कहि दुर्बाद ।
सुत-बध-सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदयबिषाद ॥२०॥

कह लंकेस कौन तैं कीसा । केहिकेबलघालेहि बन खीसा
कीधौंस्रवन सुने नहि मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही
मारेनिसिचरकेहि अपराधा । कहुसठतोहि न प्रान कै बाधा
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बलबिरचतिमाया
जा के बल बिरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा
जा बल सीसधरतसहमानन । अंडकोस समेत गिरि कानन
धरे जो बिबिधदेह सुरत्राता । तुम्ह से सठन्हसिखावनदाता
हरकोदंडकठिन जेहि भंजा । तोहि समेत नृप-दल-मदगंजा
खर दूषन त्रिसिराअरुबाली । बधे सकल अतुलित-बलसाली

दो०—जाके बललवलेस तें, जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जा करि, हरि आनेहु प्रियनारि ॥२१॥

जानउँ मै तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई
समरबालिसनकरिजसपावा । सुनि कपिबचनबिहँसि बहरावा
खायेउँफलप्रभुलागी भूखा । कपि सुभाउ ते तोरेउँ रूखा
सबके देह परमप्रिय स्वामी । मारहिंमोहि कुमारग-गामी

जिन्ह मोहिमारा ते मैं मारे । तेहि पर बाँधेउ तनय तुम्हारे
मोहि न कछु बाँधेकै लाजा । कीन्हचहौं निजप्रभुकर काजा
बिनतीकरौं जोरिकररावन । सुनहुमानतजिमोर सिखावन
देखहुतुमनिजकुलहिविचारी । भ्रमतजिभजहुभगत-भय-हारी
जा के डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई
ता सों बैरु कबहुँ नहिं कीजै । मोरे कहे जानकी दीजै

दो०—प्रनतपाल रघुनायक, करुनासिंधु खरारि ।
गये सरन प्रभु राखिहहिं, तव अपराध बिसारि ॥२२॥

राम-चरन-पंकज उर धरहू । लंका अचल-राज तुम्ह करहू
रिषि-पुलस्ति-जसबिमलमयंका । तेहिसमिमहँजनिहोहु कलंका
रामनामबिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागिमदमोहा
बसनहीन नहिं सोह सुरारी । सब-भूषन-भूषित बरनारी
रामबिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई
सजलमूलजिन्हसरितन्हनाहीं । बरषि गये पुनि तबहि सुखाहीं
सुनु दसकंठ कहौं पन रोपी । बिमुखराम त्राता नहि कोपी
संकरसहसबिष्णु अजतोही । सकहिंनराखि राम कर द्रोही

दो०—मोहमूल बहु सूल प्रद, त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक, कृपासिंधु भगवान ॥२३॥

जदपिकहीकपिअतिहितबानी । भगति-बिबेकबिरति-नय सानी
बोलाबिहँसि महाअभिमानी । मिलाहमहिकपिगुरुबड़ग्यानी
मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावनमोही
उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रमतोहि प्रगट मैं जाना
सुनिकपिबचनबहुतखिसिआना । बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना
सुनत निसाचरमारन धाये । सचिवन्ह सहितबिभीषनआये
नाइसीस करि बिनयबहूता । नीतिबिरोध न मारिय दूता

आनदडकछुकरिय गोसाई। सबही कहा मंत्र भल भाई
सुनत बिहँसि बोलादसकधर। अगभग करि पठइय बदर

दो०—कपि कै ममता पूँछ पर, सबहिं कहेउ समुझाय।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि, पावक देहु लगाय ॥२४॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि। तबसठनिजनाथहिं लै आइहि
जिन्हकैकीन्हेसि बहुत बड़ाई। देखौं मैं तिन्ह कै प्रभुताई
बचनसुनतकपिमनमुसुकाना। भइ सहाय सारद मैं जाना
जातुधान सुनिरावन बचना। लागे रचइ मूढ़ सोइ रचना
रहा न नगर बसन घृततेला। बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला
कौतुक कहँ आये पुरबासी। मारहि चरनकरहिं बहु हाँसी
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी
पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघुरूप तुरंता
निबुकि चढ़ेउकपि कनकअटारी। भई सभीत निसाचर-नारी

दो०—हरिप्रेरित तेहि अवसर, चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास ॥२५॥

देह बिसाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ि धाई
जरै नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहुकोटिकराला
तात मातु हा सुनिय पुकारा। एहि अवसरकोहमहिउबारा
हमजोकहायहकपिनहिं होई। बानररूप धरे सुर कोई
साधुअवग्या कर फल ऐसा। जरइ नगरुअनाथ कर जैसा
जारानगरु निमिष एक माही। एक बिभीषनकर गृह नाही
ताकर दूत अनलजेहिसिरिजा। जरा न सो तेहि कारन गिरिजा
उलटि पलटिलंका सब जारी। कूदिपरा पुनि सिंधु मँझारी

दो०—पूँछ बुझाइ खोइ स्रम, धरि लघुरूप बहोरि।
जनकसुता के आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातु मोहि दीजै कछु चीन्हा। जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हरषसमेत पवनसुत लयऊ
कहेउ तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा
दीनदयालु-बिरुद संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी
तात सक्र-सुत-कथा सुनायहु। बानप्रताप प्रभुहि समुझायहु
मासदिवस महँ नाथ न आवा। तौ पुनिमोहिजियतनहिपावा
कहुकपिकेहिबिधि राखउँप्राना। तुम्हहूँ तात कहत अब जाना
तोहि देखि सीतल भइछाती। पुनिमोकहँसोइदिनुसोइराती

दो०—जनकसुतहिं समुझाइ करि, बहुबिध धीरजु दीन्ह।
चरनकमल सिरुनाइ कपि, गवँनु राम पहिं कीन्ह ॥२७॥

चलतमहाधुनि गर्जेसि भारी। गर्भस्रवहि सुनि निसिचर-नारी
नाँघि सिंधु एहि पारहिआवा। सबदकिलकिलाकपिन्हसुनावा
हरषे सब बिलोकि हनुमाना। नूतनजनमकपिन्ह तब जाना
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा
मिलेसकलअति भयेसुखारी। तलफत मीन पाव जनु बारी
चले हरषि रघुनायक पासा। पूछत कहत नवल इतिहासा
तब मधुबन भीतर सब आये। अंगदसमेत मधुफल खाये
रखवारे जब बरजन लागे। मुष्टिप्रहार हनत सब भागे

दो०—जाइ पुकारे ते सब, बन उजार जुबराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि, करि आये प्रभुकाज ॥ २८ ॥

जौं न होति सीता सुधि पाई। मधुबनकेफलसकहिं कि खाई
एहिबिधिमनबिचारकरराजा। आइ गये कपि सहित समाजा
आइ सबन्हि नावा पद सीसा। मिलेसबन्हिअतिप्रेमकपीसा
पूछी कुसल कुसलपद देखी। रामकृपा भा काजु बिसेखी
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना

सुनि सुग्रीव बहुरितेहि मिलेऊ।कपिन्हसहितरघुपतिपहँचलेऊ
राम कपिन्ह जब आवत देखा।किये काजु मनहरष बिसेखा
फटिकसिला बैठे दोउ भाई ।परेसकलकपि चरनन्हि जाई

दो०—प्रीतिसहित सब भेंटे, रघुपति करुनापुंज।
पूछी कुसल नाथ अब, कुसल देखि पदकंज ॥ २९ ॥

जामवत कह सुनु रघुराया ।जापर नाथ करहु तुम्ह दाया
ताहिसदासुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर
सोइ बिजई बिनई गुनसागर। तासुसुजसुत्रयलोक उजागर
प्रभुकी कृपा भयेउ सबु काजू। जनमहमार सुफल भा आजू
नाथपवनसुतकीन्हिजो करनी। सहसहुँ मुख न जाइसो बरनी
पवन तनय के चरित सुहाये । जामवत रघुपतिहि सुनाये
सुनतकृपानिधिमनअतिभाये । पुनिहनुमान हरषिहिय लाये
कहहु तात केहिभाँति जानकी। रहतिकरतिरच्छास्वप्रानकी

दो०—नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज-पद-जंत्रित, जाहिं प्रान केहि बाट ॥३०॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही ।रघुपतिहृदयलाइसोइ लीन्ही
नाथ जुगललोचन भरि बारी ।बचन कहे कछु जनककुमारी
अनुजसमेत गहेहु प्रभुचरना । दीनबंधु प्रनतारतिहरना
मनक्रमबचन चरन अनुरागी । केहि अपराध नाथहौं त्यागी
अवगुन एक मोर मैं जाना । बिछुरतप्रान न कीन्हपयाना
नाथसोनयननन्हिकरअपराधा । निसरतप्रानकरहिहठिबाधा
बिरह अगिनितनुतूलसमीरा । स्वासजरइछिनमाँहिसरीरा
नयनस्रवहिजलनिजहितलागी। जरइ न पाव देह बिरहागी
सीताकैअतिबिपति बिसाला । बिनहि कहे भजि दीनदयाला

दो०—निमिष निमिष करुनानिधि, जाहिं कलपअस बीति।
बेगि चलिय प्रभु आनिय, भुजबल खलदल जीति ॥३१॥

सुनिसीतादुखप्रभुमुखअयना। भरि आये जल राजिवनयना
बचनकाय मन मम गतिजाही। सपनेहुँ बूझियबिपतिकि ताही
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जबतवसुमिरन भजनु न होई
केतिक बात प्रभु जातुधान की। रिपुहिजीति आनिबी जानकी
सुनुकपि तोहि समान उपकारी। नहिंकोउ सुरनर मुनि तनुधारी
प्रतिउपकार करौं का तोरा। सनमुखहोइनसकतमन मोरा
सुनुसुतउोहिउरिन मैं नाही। देखेउँकरिबिचार मन माहीं
पुनिपुनिकपिहिचितवसुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता

दो०—सुनि प्रभुबचन बिलोकि मुख, गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवंत ॥३२॥

बारबार प्रभु चहहि उठावा। प्रेममगन तेहि उठब न भावा
प्रभु-कर-पंकज कपि कै सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा
सावधानमनकरिपुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर
कपि उठाइप्रभु हृदयलगावा। करगहि परमनिकट बैठावा
कहु कपि रावनपालितलंका। केहि बिधिदहेहुदुर्ग अतिबंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत-अभिमाना
साखामृग कै बड़ि मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई
नाँघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर-गन बधि बिपिनउजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछु मोरी प्रभुताई

दो०—ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं, जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभाव बड़वानलहि, जारि सकै खलु तूल ॥३३॥

नाथभगति अति-सुखदायनी। देहु कृपा करि अनपायनी
सुनिप्रभुपरमसरलकपिबानी। एवमस्तु तव कहेउ भवानी
उमा रामसुभाउ जेहि जाना। ताहिभजनुतजिभावनआना
यह संबाद जासु उर आवा। रघुपति-चरन-भगति सोइ पावा

सुनिप्रभुबचनकहहिकपि बृंदा। जयजयजय कृपालसुखकंदा
तबरघुपतिकपिपतिहि बोलावा। कहा चलै कर करहु बनावा
अब बिलंबु केहि कारनकीजै। तुरतकपिन्ह कहँआयसुदीजै
कौतुक देखिसुमन बहु बरषी। नभ ते भवन चले सुरहरषी

दो०—कपिपति बेगि बोलाये, आये जूथप जूथ।
नानाबरन अतुल-बल, बानर-भालु-बरूथ ॥३४॥

प्रभु-पद-पकजनावहि सीसा। गर्जहि भालु महाबलकीसा
देखी राम सकल कपिसेना। चितइकृपा करिराजिवनैना
राम-कृपाबल पाइ कपिदा। भये पच्छजुत मनहुँ गिरिदा
हरषि राम तब कीन्ह पयाना। सगुन भये सुदर सुभ नाना
जासु सकल मंगलमय कीती। तासु पयानसगुनयहनीती
प्रभुपयान जाना बैदेही। फरकिबामअँगजनुकहिदेही
जोइजोइसगुनजानकिहि होई। असगुन भयउरावनहि सोई
चला कटकु को बरनै पारा। गर्जहि बानर भालु अपारा
नखआयुधगिरि-पादपधारी। चले गगन महि इच्छाचारी
केहरिनाद भालु कपिकरही। डगमगाहि दिग्गज चिक्करही

छंद—चिक्करहि दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागरखरभरे।
मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबलप्रताप कोसलनाथ गुनगन गावहीं ॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई।
गहि दसन पुनि पुनि कमठपृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर-रुचिर-पयान-प्रस्थिति जानि परम सुहावनी।
जनु कमठखर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥

दो०—एहि बिधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागरतीर।
जहँ तहँ लागे खान फल, भालु बिपुल कपिबीर ॥३५॥

उमानिसाचररहहिं ससंका। जब तें जारि गयउ कपिलंका
निजनिजगृहसबकरहिंबिचारा। नहिं निसिचर-कुल केर उबारा
जासु दूतबल बरनि न जाई। तेहि आये पुर कवन भलाई
दूतिन्हसनसुनि पुरजन-बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी
रहसिजोरिकरपतिपदलागी। बोली बचन नीति-रस-पागी
कंत करष हरिसनपरिहरहू। मोरकहाअतिहित हिय धरहू
समुझत जासु दूतकै करनी। स्रवहिंगर्भ रजनीचर-घरनी
तासुनारिनिजसचिवबोलाई। पठवहु कंत जौं चहहु भलाई
तव कुल-कमल-बिपिन-दुखदाई। सीता सीत-निसा-सम आई
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे। हित न तुम्हार संभु अजकीन्हे

दो०—रामबान अहिगन-सरिस, निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि, जतनु करहु तजि टेक॥३६॥

स्रवनसुनीसठताकर बानी। बिहँसाजगत बिदित अभिमानी
सभयसुभाउनारिकरसाँचा। मंगल महुँ भय मनअति काँचा
जौं आवै मर्कट कटकाई। जियहिं बिचारेनिसिचरखाई
कंपहिं लोकप जा की त्रासा। तासु नारि सभीत बड़िहाँसा
असकहिबिहँसिताहिउरलाई। चलेउ सभा ममता अधिकाई
मंदोदरी हृदय कर चिंता। भयउ कंत पर बिधिबिपरीता
बैठेउ सभा खबरिअसि पाई। सिंधुपार सेना सब आई
बूझेसिसचिवउचितमतकहहू। ते सब हँसे मष्ट करि रहहू
जितेहु सुरासुरतबस्रमनाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं

दो०—सचिव बैद गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर, होइ बेगिही नास ॥३७॥

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहि सुनाइ सुनाई
अवसर जानिबिभीषनुआवा। भ्राताचरन सीसु तेहि नावा
पुनिसिरुनाइबैठि निजआसन। बोला बचन पाइ अनुसासन
जौ कृपाल पूछेहु मोहि बाता। मति-अनुरूप कहौं हिततातो
जौ आपन चाहइ कल्याना। सुजसुसुमतिसुभगति सुखनाना
सो परनारि-लिलारु गोसाई। तजै चौथिके चंद कि नाई
चौदहभुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्ठै नहि सोई
गुनसागर नागर नर जोऊ। अलपलोभ भल कहै नकोऊ

दो०—काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरही, भजहु भजहिं जेहि संत ॥३८॥

तात रामु नहि नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहुँ कर काला
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादिअनंता
गो-द्विज-धेनु-देव-हितकारी। कृपासिंधु मानुष-तनुधारी
जनरजन भंजन खलब्राता। बेद-धर्म-रच्छक सुनु भ्राता
ताहि बयरु तजि नाइयमाथा। प्रनतारति-भंजन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही
सरन गये प्रभु ताहु न त्यागा। बिस्व-द्रोह-कृतअघजेहिलागा
जासु नामत्रय-ताप-नसावन। सोइप्रभुप्रगटसमुझि जियरावन

दो०—बार बार पद लागउँ, बिनय करौं दससीस।
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोसलाधीस ॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन, कहि पठई यह बात।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही, पाइ सुअवसरु तात ॥३९॥

माल्यवंतअतिसचिवसयाना। तासुबचनसुनिअतिसुखमाना
तातअनुजतवनीतिबिभूषन। सोउरधरहुजोकहतबिभीषन
रिपु-उत-करषकहतसठदोऊ। दूरि न करहु इहाँ है कोऊ

माल्यवंत गृह गयेउ बहोरी । कहै बिभीषनु पुनि करजोरी
सुमति कुमति सबके उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना
तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता
कालराति निसिचर-कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी

दो०—तात चरन गहि माँगेउँ, राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहुँ, अहित न होइ तुम्हार ॥४०॥

बुध-पुरान-स्रुति-संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी
सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ तोहि भावा
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जेहि जीता मैं नाहीं
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती
अस कहि कीन्ह चरन प्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा
उमा संत कै इहै बड़ाई । मंद करत जो करै भलाई
तुम्ह पितु सरिस भलेहि मोहि मारा । राम भजे हित नाथ तुम्हारा
सचिव संग लै नभपथ गयऊ । सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ

दो०—रामु सत्यसंकल्प प्रभु, सभा काल बस तोरि ।
मैं रघुबीर-सरन अब, जाउँ देहु जनि खोरि ॥४१॥

अस कहि चला बिभीषन जबहीं । आयुहीन भये सब तबहीं
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहि अभागा
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं
देखिहौं जाइ चरन-जल-जाता । अरुन मृदुल सेवक-सुखदाता
जे पद परसि तरी रिषिनारी । दंडक-कानन-पावन-कारी
जे पद जनकसुता उर लाये । कपट-कुरंग-संग धर धाये

हर-उर-सर-सरोज पद जेई । अहोभाग्य मैं देखिहौं तेई

दो०—जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि, भरत रहे मन लाइ ।
ते पद आज बिलोकिहौं, इन्ह नयनन्हि अब जाइ ।।४२।।

एहिबिधिकरतसप्रेमबिचारा। आयउ सपदिसिंधु येहि पारा
कपिन्हबिभीषनुआवत देखा । जाना कोउ रिपुदूत बिसेखा
ताहि राखि कपीस पहिंआये । समाचार सब ताहि सुनाये
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसाननभाई
कह प्रभु सखा बूझिये काहा । कहै कपीस सुनहु नरनाहा
जानि न जाइनिसाचरमाया । कामरूप केहि कारन आया
भेद हमार लेन सठ आवा । राखिय बाँधिमोहिअसभावा
सखानीतितुम्हनीकिबिचारी। मम पन सरनागत-भयहारी
सुनिप्रभुबचनहरष हनुमाना । सरनागतबच्छल भगवाना

दो०—सरनागत कहुँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पाँवर पापमय, तिन्हहिं बिलोकत हानि ।।४३।।

कोटि बिप्रबध लागहि जाहु । आये सरन तजौ नहि ताहू
सनमुखहोइजीवमोहिजबहीं । जनमकोटिअघनासहिंतबही
पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजनु मोरतेहिभाव न काऊ
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई । मोरे सनमुख आव कि सोई
निर्मलमनजनसोमोहिपावा । मोहिकपटछलछिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दससीसा । तबहुँनकछुभयहानि कपीसा
जगमहुँ सखा निसाचरजेते । लछिमनु हनै निमिषमहुँतेते
जौं सभीत आवा सरनाई । रखिहौं ताहि प्रान की नाईं

दो०—उभय भाँति तेहि आनहु, हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपालु कहि कपि चले, अंगद-हनू-समेत ।।४४।।

सादरतेहि आगे करि बानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर

दूरिहि तें देखे दोउभ्राता । नयनानंद दान के दाता
बहुरिरामछबिधामबिलोकी । रहेउठिठुकिएकटकपलरोकी
भुज प्रलम्ब कंजारुनलोचन । स्यामलगातप्रनत-भय-मोचन
सिहकंध आयत उर सोहा । आननअमित-मदन-मन-मोहा
नयननीरपुलकितअतिगाता । मन धरि धीरकहीमृदु बाता
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर-बंस-जनम-सुरत्राता
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलूकहि तम पर नेहा

दो०—स्रवन सुजसु सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भवभीर ।
त्राहि त्राहि आरतिहरन, सरनसुखद रघुबीर ॥४५॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेखा
दीनबचनसुनिप्रभुमन भावा । भुजबिसालगहिहृदयलगावा
अनुजसहितमिलिढिगबैठारी । बोले बचन भगत-भय-हारी
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बासतुम्हारा
खलमंडली बसहु दिनु राती । सखा धर्म निबहै केहि भाँती
मैं जानौं तुम्हारिसब रीती । अतिनयनिपुननभावअनीती
बरुभल बासनरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ बिधाता
अब पद देखिकुसल रघुराया । जौंतुम्हकीन्हिजानिजनदाया

दो०—तब लगि कुसल न जीव कहुँ, सपनेहुँ मन बिस्राम ।
जब लगि भजतनराम कहुँ,सोक धाम तजि काम ॥४६॥

तबलगिहृदयबसतखल नाना। लोभ मोह मत्सर मद माना
जबलगिउरनबसतरघुनाथा । धरे चापसायक कटि भाथा
ममता तरुन तमीअँधियारी । राग द्वेष उलूक सुखकारी
तबलगिबसतजीव मनमाहीं । जबलगि प्रभु-प्रताप-रविनाही
अब मै कुशल मिटे भय भारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे
तुम्हकृपाल जापरअनुकूला ।ताहिन ब्याप त्रिबिध भवसूला

मैंनिसिचरअति-अधम-सुभाऊ। सुभआचरनु कीन्हनहिं काऊ
जासु रूपमुनि ध्यान नआवा ।तेहिप्रभुहरषिहृदयमोहिलावा

दो०—अहोभाग्य मम अमित अति, राम कृपा-सुख-पुंज ।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव-सेव्य जुगल-पद-कंज ॥४७॥

सुनहुसखानिजकहौं सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ
जौं नर होइ चराचरद्रोही। आवै सभय सरन तकि मोही
तजिमदमोहकपटछलनाना। करौं सद्य तेहि साधु समाना
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धन भवन सुहृद परिवारा
सब कर ममतातागबटोरी। मम पद मनहि बाध बरि डोरी
समदरसी इच्छा कछुनाही। हरषसोक भय नहिं मन माहीं
अस सज्जनममउर बसकैसे। लोभी हृदय बसै धन जैसे
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें। धरौं देह नहि आन निहोरें

दो०—सगुनउपासक पर-हित-निरत नीति-दृढ़-नेम ।
ते नर प्रानसमान मम, जिन्ह के द्विज-पद-प्रेम ॥४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें। ता ते तुम्ह अतिसय प्रियमोरें
राम बचन सुनि बानरजूथा। सकल कहहिं जय कृपाबरूथा
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी। नहि अघात स्रवनामृतजानी
पदअंबुज गहि बारहिबारा। हृदय समात न प्रेमु अपारा
सुनहुदेव सचराचर-स्वामी। प्रनतपाल उर-अंतरजामी
उर कछु प्रथम बासना रही। प्रभु-पद-प्रीति-सरित सो बही
अबकृपालनिजभगतिपावनी। देहु सदा सिव-मन-भावनी
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा। माँगा तुरत सिन्धु कर नीरा
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मोर दरसु अमोघ जग माहीं
असकहिरामतिलकतेहिसारा। सुमनबृष्टि नभ भई अपारा

दो०—रावनक्रोध अनल निजस्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषन राखेउ, दीन्हेउ राजु अखंड ॥

जो संपति सिव रावनहिं, दीन्हि दिये दस माथ ।।
सोइ संपदा बिभीषनहिं, सकुचि दीन्हि रघुनाथ ।।४९।।

असप्रभुछाड़िभजहिंजेआना । ते नर पसुबिनु पूछ बिषाना निजजनजानिताहिअपनावा। प्रभुसुभाउकपि-कुल-मनभावा पुनि सर्बग्य सर्ब-उर-बासी । सर्बरूप सबरहित उदासी । बोले बचननीति-प्रतिपालक ।कारनमनुजदनुज-कुलघालक सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहिबिधि तरियजलधिगंभीरा सकुल मकरउरग झष जाती । अतिअगाध दुस्तर सब भाँती कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि-सिंधु-सोषकतवसायक जद्यपि तदपि नीति अस गाई । बिनय करियसागरसन जाई

दो०—प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि,सकल-भालु-कपि-धारि।।५०।।

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिय दैव जौं होइ सहाई मंत्र न यह लछिमनमनभावा । रामबचनसुनिअतिदुख पावा नाथ दैव कर कौन भरोसा । सोखिय सिंधु करियमनरोसा कादर मन कहुँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा । ऐसेहि करब धरहु मनधीरा असकहिप्रभुअनुजहिसमुझाई। सिंधु समीप गये रघुराई प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरुनाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई जबहिंबिभीषनप्रभुपहिं आये । पाछे रावन दूत पठाये

दो०—सकल चरित तिन्ह देखे, धरे कपट कपिदेह ।
प्रभुगुन हृदय सराहहिं, सरनागत पर नेह ।। ५१ ।।

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । अतिसप्रेम गा बिसरिदुराऊ रिपु के दूत कपिन्हतबजाने । सकलबाँधि कपीस पहिं आने कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । अगभग करिपठवहुनिसिचर

सुनि सुग्रीवबचन कपि धाये। बाँधि कटक चहुँ पास फिराये
बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे
जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना
सुनिलछिमनसबनिकट बोलाये। दया लागि हँसितुरत छोड़ाये
रावन कर दीजेहु यह पाती। लछिमनबचनबाँचु कुलघाती

दो०—कहेहु मुखागर मूढ़ सन, मम संदेस उदार।
सीता देइ मिलहु न त, आवा काल तुम्हार ॥५२॥

तुरतनाइलछिमनपद माथा। चले दूत बरनत गुनगाथा
कहत रामजसु लंका आये। रावन चरन सीस तिन्ह नाये
बिहँसि दसानन पूछी बाता। कहसिनसुकआपनि कुसलाता
पुनिकहुखबरिबिभीषनकेरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी
करत राजु लंका सठ त्यागी। होइहि जब कर कीट अभागी
पुनि कहु भालु कीसकटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई
जिन्हकेजीवन्हकर रखवारा। भयउमृदुलचित सिंधु बेचारा
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी। जिन्ह के हृदयत्रासअति मोरी

दो०—की भइ भेंट कि फिरि गये, स्रवन सुजसु सुनि मोर।
कहसि न रिपु-दल-तेज-बल, बहुत चकित चित चोर॥५३॥

नाथ कृपा करि पूछेहु जैसे। मानहु कहा क्रोध तजि तैसे
मिलाजाइजबअनुजतुम्हारा। जातहि राम तिलकतेहिसारा
रावनदूत हमहिं सुनि काना। कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना
स्रवन नासिका काटन लागे। रामसपथ दीन्हे हम त्यागे
पूछेहु नाथ रामकटकाई। बदन कोटिसत बरनि न जाई
नानाबरन भालु-कपि-धारी। बिकटानन बिसाल भयकारी
जेहि पुर दहेउहतेउसुततोरा। सकलकपिन्हमहुँतेहिबल थोरा
अमितनामभट कठिन कराला। अमित-नाग-बलबिपुल बिसाला

दो०–द्विबिद मयंद नील नल, अंगदादि बिकटासि ।
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जामवंत बलरासि ॥५४॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन्हसमकोटिन्हगनै को नाना
रामकृपा अतुलित-बल तिन्हहीं । तृनसमान त्रैलोकहि गनहीं
अस मैं स्रवन सुना दसकंधर । पदुम अठारह जूथप बंदर
नाथ कटक महँसोकपिनाही । जो न तुम्हहि जीतै रन माही
परमक्रोधमीजहि सब हाथा । आयसु पै न देहि रघुनाथा
सोषहिंसिंधु सहित झषब्याला । पूरहि न त भरिकुधरबिसाला
मर्दि गर्द मिलवहि दससीसा । ऐसेइ बचन कहहि सब कीसा
गर्जहिं तर्जहि सहज असंका । मानहु ग्रसन चहत हहिं लंका

दो०–सहज सूर कपि भालु सब, पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहुँ, जीति सकहिं संग्राम ॥५५॥

राम-तेज-बल-बुधिबिपुलाई । सेष सहससत सकहि न गाई
सकसरएक सोखिसत सागर । तव भ्रातहि पूछेउ नय नागर
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । माँगत पंथ कृपा मन माहीं
सुनत बचन बिहँसादससीसा । जौं असिमतिसहायकृतकीसा
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु-बल-बुद्धि-थाह मैं पाई
सचिवसभीतबिभीषनजाके । बिजयबिभूतिकहाँलगि ताके
सुनिखलबचनदूतरिसिबाढ़ी । समय बिचारि पत्रिका काढ़ी
रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती
बिहँसिबामकरलीन्हीरावन । सचिवबोलिसठ लाग बचावन

दो०–बातन्ह मनहिं रिझाइ सठ, जनि घालेसि कुल खीस ।
रामबिरोध न उबरसि, सरन बिष्णु अज ईस ॥

की तजि मान अनुज इव, प्रभु-पद-पंकज-भृंग ।
होहि कि राम सरानल, खल कुलसहित पतंग ॥ ५६ ॥

सुनत सभयमनमुख मुसुकाई । कहत दसानन सबहि सुनाई
भूमि परा कर गहत अकासा । लघुतापस कर बागबिलासा
कह सुक नाथ सत्यसब बानी । समुझहु छाड़ि प्रकृतअभिमानी
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु बिरोधा
अतिकोमल रघुबीर-सुभाऊ । जद्यपिअखिललोक कर राऊ
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिहीं । उर अपराध न एकउ धरिही
जनकसुता रघुनाथहि दीजै । एतना कहा मोर प्रभु कीजै
जब तेहि कहा देन बैदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जहाँ
करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपा आपनि गति पाई
रिषि अगस्ति कै साप भवानी । राच्छस भयेउ रहा मुनि ग्यानी
बंदि रामपद बारहिं बारा । मुनि निजआस्रम कहुँ पगु धारा

दो०—बिनय न मानत जलधि जड़, गये तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लछिमन बान सरासन आनू । सोखउँ बारिधि बिसिख कृसानू
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपिन सन सुन्दर नीती
ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बये फल जथा
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला
मकर-उरग-झष-गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने
कनक थार भरि मनि गन नाना । बिप्र रूप आयउ तजि माना

दो०—काटेहि पइ कदली फरइ, कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु, डाँटेहि पै नव नीच ॥५८॥

सभयसिंधु गहिपद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे
गगनसमीरअनलजलधरनी । इन्हकीनाथ सहजजड़करनी
तव प्रेरित माया उपजाये । सृष्टि हेतु सब ग्रंथहि गाये
प्रभुआयसुजेहिकहँजसअहई । सो तेहि भाँति रहे सुख लहई
प्रभुभलकीन्हमोहिसिखदीन्ही । मरजादापुनि तुम्हरिय कीन्ही
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी
प्रभुप्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहिकटकु न मोरिबड़ाई
प्रभु अग्याअपेल स्रुति गाई । करौसोबेगि जो तुम्हहिं सुहाइ

दो०—सुनत बिनीत बचन अति, कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरइ कपिकटकु, तात सो कहहु उपाइ॥५९॥

नाथनीलनलकपिदोउ भाई । लरिकाई रिषिआसिष पाई
तिन्हके परस किएँगिरिभारे । तरिहहिजलधिप्रतापतुम्हारे
मैं पुनि उर धरिप्रभुप्रभुताई । करिहउँ बलअनुमान सहाई
एहिबिधिनाथपयोधिबँधाइय । जेहि यहसुजसुलोक तिहुँ गाइय
एहिसरममउत्तर-तट-बासी । हतहुनाथ खल नर अघरासी
सुनिकृपालसागर-मन-पीरा । तुरतहि हरी राम रनधीरा
देखि राम-बल-पौरुष भारी । हरषिपयोनिधिभयउसुखारी
सकलचरितकहिप्रभुहिंसुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा

छंद—निज भवन गवँनेउ सिंधुश्री-रघुपतिहियहमतभायऊ ।
यहचरितकलि-मल-हर जथामतिदासतुलसीगायऊ॥
सुखभवन संसयसमन दमनबिषाद रघुपति-गुन-गना ।
तजि सकल आसभरोस गावहिसुनहि संतत सठ मना ॥

दो०—सकल-सुमंगल-दायक, रघुनायक-गुन-गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिंधु बिना जलजान ॥६०॥

मासपारायण, चौबीसवाँ विश्राम

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
ज्ञानसम्पादनो नाम
पञ्चमः सोपानः समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामचरितमानस

लङ्काकाण्ड

श्लोकाः

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥१॥
शङ्खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्म्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥ २ ॥
यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु मे ॥ ३ ॥

दो०—लव निमेष परमानु जुग, बरष कलप सर चंड ।
भजसि न मन तेहि राम कहँ, कालु जासु कोदंड ॥

सो०—सिंधुबचन सुनि राम, सचिव बोलिप्रभुअसकहेउ ।
अब बिलंबु केहि काम, करहु सेतु उतरै कटकु ॥
सुनहु भानु-कुल-केतु, जामवंत कर जोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥

यहलघुजलधितरतकतिबारा । अस मुनि पुनिकह पवनकुमारा
प्रभुप्रताप बड़वानल भारी । सोखेउ प्रथमपयो निधि-बारी
तव रिपु-नारि-रुदन-जल-धारा । भरेउ बहोरिभयउतेहिखारा
सुनिअतिउक्तिपवनसुतकेरी । हरषेकपि रघुपति-तन हेरी
जामवंत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सब कथा सुनाई
रामप्रतापसुमिरिमन माही । करहु सेतु प्रयास कछु नाही
बोलिलियेकपिनिकरबहोरी । सकलसुनहुबिनतीकछु मोरी
राम-चरन-पंकज उरधरहू । कौतुक एक भालु कपि करहू
धावहु मरकट बिकटबरूथा । आनहु बिटपगिरिन्ह के जूथा
सुनिकपिभालुचलेकरि हूहा । जय रघुबीर प्रतापसमूहा

दो०—अतिउतंग गिरिपादप, लीलहिं लेहिं उठाइ ।
आनि देहि नल नीलहि, रचहि ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

सैलबिसाल आनि कपि देहीं । कंदुक इव नल नील ते लेहीं
देखि सेतुअति-सुन्दर-रचना । बिहँसिकृपानिधि बोले बचना
परम रम्य उत्तम कह धरनी । महिमाअमितजाइनहिबरनी
करिहउँ इहाँ संभुथापना । मोरे हृदय परम कलपना
सुनि कपीस बहु दूत पठाये । मुनिबर सकल बोलि लै आये
लिंगथापिबिधिवतकरिपूजा । सिवसमान प्रिय मोहि न दूजा
सिवद्रोही मम भगत कहावा । सो नर सपनेहु मोहि न पावा
संकरबिमुखभगति चहमोरी । सो नारकी मूढ़ मति थोरी

दो०—संकरप्रिय मम द्रोही, सिवद्रोही मम दास ।
ते नर करहिं कलप भरि, घोर नरक महुँ बास ॥२॥

जोरामेस्वर दरसन करिहहि । तेतनुतजिहरिलोक सिधरिहहिं
जे गंगाजल आनि चढ़ाइहि । सो साजुज्य मुक्तिनरपाइहि
होइअकामजोछलतजिसेइहि । भगतिमोरि तेहि संकरदेइहि

नमकृतसेतुजोदरसनु करिही। सोबिनुस्रमभवसागर तरिही
राम बचन सब के जिय भाये। मुनिबरनिजनिजआस्रमआये
गिरिजा रघुपति कै यह रीती। संतत करहिं प्रनत पर प्रीती
बाँधा सेतु नील नल नागर। रामकृपा जसुभयउ उजागर
बूड़हि आनहि बोरहिं जेई। भये उपल बोहित सम तेई
महिमायहनजलधिकै बरनी। पाहन गुन न कपिन्हकै करनी

दो०–श्रीरघुबीरप्रताप तें, सिंधु तरे पाषान।
ते मतिमंद जे राम तजि, भजहिं जाइ प्रभु आन ॥३॥

बाँधिसेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा
चली सेनकछु बरनि न जाई। गरजहि मरकट-भट-समदाई
सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई। चितव कृपाल सिंधुबहुताई
देखन कहुँ प्रभु करुनाकंदा। प्रगट भये सब जल-चर-बृंदा
मकर नक्र झखनानाब्याला। सत-जोजन-तन परमबिसाला
एसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं। एकन के डर तेपि डेराहीं
प्रभुहिबिलोकहिटरहिनटारे। मन हरषित सब भये सुखारे
तिन्हकीओट न देखियबारी। मगन भये हरिरूप निहारी
चलाकटकुप्रभु आयसु पाई। को कहि सक कपि-दल बिपुलाई

दो०–सेतुबंध भइ भीर अति, कपि नभपंथ उड़ाहिं।
अपर जलचरन्हि ऊपर, चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहिं ॥४॥

अस कौतुकबिलोकि दोउभाई। बिहँसि चले कृपाल रघुराई
सेनसहित उतरे रघुबीरा। कहि न जाइ कपि-जूथपभीरा
सिंधुपार प्रभु डेरा कीन्हा। सकलकपिन्हकहँ आयसुदीन्हा
खाहु जाइ फल मूल सुहाये। सुनतभालुकपि जहँ तहँ धाये
सब तरु फरे राम हितलागी। रितु अरुकुरितुकालगतित्यागी
खाहिमधुरफलबिटपहलावहि। लंकासनमुख सिखर चलावहिं

जहँकहुँफिरतनिसाचरषावहिं । घेरि सकल बहु नाच नचावहिं
दसनन्हिकाटि नासिकाकाना । कहिप्रभु सुजसुदेहितबजाना
जिन्हकरनासाकान निपाता । तिन्हरावनहिंकही सब बाता
सुनतस्रवनबारिधि बधाना । दसमुखबोलिउठा अकुलाना

दो०—बाँधे बननिधि नीरनिधि,जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपती, उदधि पयोधि नदीस ॥५॥

ब्याकुलतानिजसमुझिबहोरी। बिहसिचलागृहकरिभयभोरी
मंदोदरी सुनेउ प्रभु आयो । कौतुकही पाथोधि बँधायो
करगहिपतिहिभवननिजआनी । बोली परम मनोहर बानी
चरन नाइ सिरु अचलु रोगा । सुनहुबचनपियपरिहरि कोपा
नाथ बयरु कीजै ताही सों । बुधि बलमकियजीतिजाहीसों
तुम्हहिंरघुपतिहिअंतरकैसा । खल खद्योत दिनकरहि जैसा
अतिबलमधुकैटभजेहिमारे । महाबीर दितिसुत संहारे
जेहिबलिबाँधिसहसभुजमारा । सोइअवतरेउहरनमहि भारा
तासु बिरोध न कीजियनाथा । कालकरमजिव जाके हाथा

दो०—रामहिं सौंपिय जानकी, नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहुँ राजु समर्पि बन, जाइ भजिय रघुनाथ ॥६॥

नाथ दीनदयाल रघुराई । बाघउ सनमुख गयें न खाई
चहियकरनसोसबकरि बीते । तुम्ह सुर असुरचराचरजीते
संतकहहिंअसिनीतिदसानन । चौथेंपन जाइहि नृप कानन
तासुभजनु कीजियतहँभरता । जो करता पालक संहरता
सोइ रघुबीरप्रनतअनुरागी । भजहुनाथ ममता सबत्यागी
मुनिबरजतनुकरहि जेहिलागी। भूपराजु तजि होहि बिरागी
सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया
जौ पिय मानहुमोरसिखावन । सुजसुहोइ तिहुँपुरअतिपावन

दो०—अस कहि लोचन नीर भरि, गहि पद कंपितगात।
नाथ भजहु रघुबीर-पद, अचल होइ अहिवात ॥७॥

तब रावन मय सुता उठाई। कहइ लागखलनिज प्रभुताई
सुनु तैं प्रिया बृथाभय माना। जग जोधाको मोहि समाना
बरुन कुबेर पवन जमकाला। भुजबलजितेउँ सकलदिगपाला
देव दनुज नर सब बस मोरें। कवन हेतु उपजा भय तोरें
नानाबिधितेहिकहेसिबुझाई। सभा बहोरि बैठ सो जाई
मंदोदरी हृदय अस जाना। कालबिबसउपजाअभिमाना
सभा आइ मंत्रिन्हतेहिबूझा। करबकवनिबिधिरिपुसैं जूझा
कहहिसचिवसुनुनिसिचरनाहा। बार बार प्रभु पूछहु काहा
कहहुकवनभयकरियबिचारा। नर कपि भालुअहार हमारा

दो०—बचन सबहिं के स्रवनसुनि, कह प्रहस्त कर जोरि।
नीतिबिरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन्ह मति अतिथोरि ॥८॥

कहहिंसचिवसब ठकुरसोहाती। नाथ न पूर आव एहि भाँती
बारिधिनाँघिएककपिआवा। तासु चरितमनमहुँ सबु गावा
छुधानरही तुम्हहितब काहू। जारतनगरुकस न धरि खाहू
सुनत नीक आगे दुखपावा। सचिवन्हअसमतप्रभुहिसुनावा
जेहि बारीस बँधायउहेला। उतरेउ सेन समेत सुबेला
सोभनु मनुज खाबहमभाई। बचन कहहि सब गालफुलाई
तातबचनममसुनुअतिआदर। जनिमनगुनहुमोहि करिकादर
प्रियबानीजेसुनहि जे कहही। ऐसे नर निकाय जग अहहीं
बचनपरमहित सुनतकठोरे। सुनहि जेकहहितेनरप्रभुथोरे
प्रथमबसीठपठव सुनु नीती। सीता देइ करहु पुनि प्रीती

दो०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं, तौ न बढ़ाइय रारि।
नाहिं त सनमुख समर महि, तात करिय हठि मारि ॥९॥

यहमतजौ मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसुजगतोरा
सुत सन कह दसकठरिसाई । असिमतिसठकेहितोहिसिखाई
अबही तें उर संसय होई । बेनुमूल सुत भयउ घमोई
मुनिपितुगिरापरुषअतिघोरा। चलाभवनकहि बचनकठोरा
हितमततोहि न लागत कैसें । कालबिबस कहुँ भेषज जैसें
मध्यासमय जानि दससीसा । भवन चलेउनिरखत भुजबीसा
लंका सिखर उपर आगारा । अतिबिचित्र तहँहोइ अखारा
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन । लागे किन्नर गुनगन गावन
बाजहि तालपखाउज बीना । नृत्यकरहि अपछरा प्रबीना

दो०–सु-नासीर-सत-सरिस सो, संतत करइ बिलास ।
परम-प्रबल-रिपु-सीस पर,तदपि न कछु मन त्रास॥१०॥

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा । उतरे सेनसहित अतिभीरा
सिखर एक उतंग अति देखी । परम रम्य सम सुभ्र बिसेखी
तहँतरु-किसलय-सुमन सुहाये । लछिमनरचिनिजहाथ डसाये
तापर रुचिर मृदुलमृग छाला । तेहि आसन आसीन कृपाला
प्रभु कृतसीस कपीस उछंगा । बामदहिन दिसिचाप निषगा
दुहुँ करकमल सुधारत बाना । कहलकेस मंत्र लगिकाना
बड़भागी अंगद हनुमाना । चरनकमलचाँपतबिधिनाना
प्रभुपाछे लछिमन बीरासन । कटिनिषग करबानसरासन

दो०–एहि बिधि कृपारूप गुन, धाम रामु आसीन ।
धन्य ते नर एहि ध्यान जे, रहत सदा लयलीन ॥
पूरब दिसा बिलोकि प्रभु, देखा उदित मयंक ।
कहत सबहि देखहु ससिहि,मृग पति-सरिस-असंक॥११॥

पूरबदिसि गिरि-गुहा-निवासी । परम प्रताप तेज बलरासी
मत्त-नाग-तम- कुंभ-बिदारी । ससिकेसरीगगन - बन-चारी

बिथुरे नभ मुकुताहल तारा। निसि सुन्दरी केर सिंगारा
कहप्रभु ससि महँ मेचकताई। कहहुकाहनिजनिज मतिभाई
कह सुग्रीब सुनहु रघुराई। ससि महुँ प्रगट भूमिकैझाँई
मारेहु राहु ससिहि कह कोई। उर महँ परी स्यामता सोई
कोउकहजबबिधिरतिमुखकीन्हा।मारभाग ससिकर हरिलीन्हा
छिद्र सो प्रगट इंदुउर माहीं। तेहिमगदेखिय नभपरिछाहीं
प्रभु कह गरल बंधुससिकेरा। अतिप्रियनिजउरदीन्ह बसेरा
बिषसंजुत करनिकरपसारी। जारत बिरहवंत नरनारी

दो०—कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससि तुम्हार प्रियदास।
तव मूरति बिधुउर बसति, सोइ श्यामता अभास॥

नवाह्नपरायण, सातवाँ विश्राम

पवनतनय के बचन सुनि, बिहँसे रामु सुजान।
दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु, बोले कृपानिधान॥१२॥

देखबिभीषन दच्छिन आसा। घन घमंड दामिनी बिलासा
मधुर मधुर गरजइ घनघोरा। होइ बृष्टि जनुउपल कठोरा
कहत बिभीषन सुनहु कृपाला।होइ न तड़ित न बारिदमाला
लंका सिखर उपर आगारा। तहँ दसकंधर देख अखारा
छत्र मेघडंबर सिर धारी। सोइजनु जलदघटाअतिकारी
मंदोदरी - स्रवन - ताटंका। सोइ प्रभु जनु दामिनीदमका
बाजहि ताल मृदंग अनूपा। सोइरव मधुर सुनहु सुरभूपा
प्रभुमुसुकानसमुझिअभिमाना। चाप चढ़ाइ बान संधाना

दो०—छत्र मुकुट ताटंक तब, हते एकही बान।
सब कें देखत महि परे, मरम न कोऊ जान॥
अस कौतुक करि रामसर, प्रबिसेउ आइ निषंक।
रावन सभा ससंक सब, देखि महा-रस-भंग॥१३॥

कंप न भूमि न मरुत बिसेखा। अस्त्र सस्त्रकछु नयन न देखा
सोचहिसबनिजहृदयमँझारी। असगुन भयउ भयंकर भारी
दसमुख देखि सभा भय पाई। बिहँसिबचनकह जुगुति बनाई
सिरउ गिरे संतत सुभ जाही। मुकुट परे कस असगुन ताही
सयन करहुनिजनिजगृहजाई। गवने भवन सकल सिरनाई
मंदोदरी सोच उर बसेऊ। जबतें स्रवनपूर महि खसेऊ
सजलनयनकहजुग करजोरी। सुनहुप्रानपति बिनती मोरी
कंत रामबिरोध परिहरहू। जानिमनुजजनिमनहठ धरहू

दो०—बिस्वरूप रघुबंस-मनि, करहु बचनबिस्वासु।
लोककल्पना बेद कर, अंग अंग प्रति जासु ॥१४॥

पद पाताल सीस अजधामा। अपरलोकअँगअँग बिस्रामा
भृकुटि बिलासभयंकरकाला। नयनदिवाकरकच घनमाला
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा। निसिअरुदिवसनिमेषअपारा
स्रवन दिसा दस बेद बखानी। मारुतस्वासनिगमनिजबानी
अधरलोभजमदसन कराला। माया हास बाहु दिगपाला
आननअनलअंबुपति जीहा। उतपति पालन प्रलय समीहा
रोमराजि अष्टादस भारा। अस्थि सैल सरितानसजारा
उदर उदधि अधगो जातना। जगमय प्रभु का बहु कलपना

दो०- अहंकार सिव बुद्धि अज, मन ससि चित्त महान।
मनुज बास चर-अचर-मय, रूप राम भगवान ॥
अस बिचारि सुनु प्रानपति,प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर-पद, मम अहिवात न जाइ ॥१५॥

बिहँसानारिबचनसुनिकाना। अहो मोहमहिमा बलवाना
नारिसुभाउसत्यकबि कहहीं। अवगुन आठ सदा उररहहीं
साहस अनृत चपलतामाया। भयअबिबेक असौच अदाया

रिपु कर रूपसकलतै गावा । अतिबिसालभय मोहिसुनावा
सोसबप्रिया सहज बस मोरें । समुझि परा प्रसादअब तोरें
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई । एहिविधिकहहु मोरिप्रभुताई
तव बतकही गूढ़मृगलोचनि । समुझतसुखदसुनतभयमोचनि
मंदोदरि मन महुँअस ठयऊ । पियहिकालवसमतिभ्रम भयऊ

दो०—एहि बिधि करत बिनोद बहु, प्रात प्रगट दसकंध।
सहज असंक सु-लंक-पति, सभा गयउ मदअंध ॥

सो०—फूलइ फरइ न बेत, जदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरखहृदय न चेत, जौं गुरुमिलहिं बिरंचिसम ॥१६॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सबसचिव बोलाई
कहहु बेगि का करिय उपाई । जामवंत कह पद सिरु नाई
सुनुसर्बग्य सकल-उर-बासी । बुधि बल तेज धर्म गुनरासी
मंत्रकहउँनिज-मति-अनुसारा । दूत पठाइय बालि कुमारा
नीकमंत्र सब के मन माना । अंगद सन कह कृपानिधाना
बालितनयबुधि-बल-गुन-धामा । लंका जाहु तात मम कामा
बहुतबुझाइतुम्हहिका कहऊँ । परम चतुर मैं जानत अहऊँ
काजु हमार तासु हित होई । रिपुसन करेहु बतकही सोई

सो०—प्रभुअग्या धरि सीस, चरन बंदि अंगद उठेउ ।
सोइ गुनसागर ईस, राम कृपा जापर करहु ॥
स्वयंसिद्ध सब काज, नाथ मोहि आदर दियेउ ।
अस बिचारि जुबराज, तनु पुलकित हरषित हिये ॥१७॥

बदि चरन उर धरिप्रभुताई । अंगदचलेउसबहि सिरु नाई
प्रभुप्रताप उर सहज असका । रनबाँकुरा बालिसुत बंका
पुर पैठत रावन कर बेटा । खेलतरहासो होइ गइ भेटा
बातहिंबात करष बढ़ि आई । जुगल अतुलबलपुनि तरुनाई

तेहि अंगद कहँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई
निसिचर-निकर देखिभटभारी । जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी
एक एक सन मरम न कहहीं । समुझिंतासुबधचुप करि रहहीं
भयउकोलाहलनगरमँझारी । आवाकपि लंका जेहि जारी
अबधौकाहकरिहि करतारा । अतिसभीतसबकरहिंबिचारा
बिनु पूछे मग देहि देखाई । जेहि बिलोकिसोइजाइ सुखाई

दो०—गयउ सभादरबार तब, सुमिरि राम-पद-कंज ।
सिंहठवनि इत उत चितव, धीर-बीर-बलपुंज ॥१८॥

तुरितनिसाचरएक पठावा । समाचार रावनहिं जनावा
सुनतबिहँसिबोला दससीसा । आनहुबोलि कहाँ कर कीसा
आयसु पाइ दूत बहु धाये । कपिकुंजरहि बोलि लै आये
अंगद दीख दसानन बैसे । सहित प्रानकज्जलगिरि जैसें
भुजाबिटपसिरसृङ्गसमाना । रोमावली लता जनु नाना
मुखनासिकानयनअरुकाना । गिरिकंदरा खोह अनुमाना
गयउ सभा मन नेकु न मुरा । बालितनय अतिबल बाँकुरा
उठे सभासद कपि कहुँ देखी । रावनउर भा क्रोध बिसेखी

दो०—जथा मत्तगज जूथ महुँ, पंचानन चलि जाइ ।
रामप्रताप सुमिरि उर, बैठ सभा सिरु नाइ ॥१९॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर । मैं रघुबीर-दूत दसकंधर
मम जनकहितोहिरहीमिताई । तव हितकारन आयउँ भाई
उत्तमकुलपुलस्तिकरनाती । सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती
बर पायहु कीन्हेहुसबकाजा । जीतेहु लोकपाल सबराजा
नृपअभिमानमोहबस किंबा । हरि आनेहु सीता जगदंबा
अबसुभकहामुनहुतुम्हमोरा । सबअपराधछमिहिप्रभु तोरा
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी । परिजनसहितसंग निजनारी

सादर जनकसुता करिआगे । एहिबिधिचलहुसकलभयत्यागे
दो०—प्रनतपाल रघुबंस-मनि, त्राहि त्राहि अब मोहि ।
आरत गिरा सुनत प्रभु, अभय करहिँगे तोहि ॥२०॥
रे कपिपोत बोलु संभारी । मूढ़ न जानेहि मोहि मुरारी
कहुनिजनामजनककरभाई । केहि नातें मानिये मिताई
अंगद नाम बालि कर बेटा । ता सों कबहुँ भई होइ भेंटा
अंगद बचनसुनतसकुचाना । रहा बालि बानर मैं जाना
अंगदतही बालिकरबालक । उपजेहु बंस अनलकुलघालक
गर्भनगयउव्यर्थतुम्ह जायहु । निजमुख तापसदूत कहायहु
अबकहुकुसलबालिकहँअहई । बिहँसि बचन तब अंगद कहई
दिनदसगये बालि पहँ जाई । बूझेउ कुसल सखा उर लाई
रामबिरोध कुसल जसिहोई । सो सब तोहि सुनाइहि सोई
सुनु सठ भेद होइ मन ताकें । श्री रघुबीर हृदय नहिंजाकें
दो०—हम कुलघालक सत्य तुम्ह, कुलपालक दससीस ।
अंधउ बधिर न अस कहहिं, नयन कान तव बीस ॥२१॥
सिव-बिरंचि-सुर-मुनि-समुदाई। चाहत जासु चरन सेवकाई
तासु दूत होइ हम कुलबोरा । ऐसिहु मति उरबिहरुनतोरा
सुनि कठोर बानी कपि केरी । कहत दसानन नयन तरेरी
खलतवकठिनबचनसब सहऊँ । नीति धर्म मैं जानत अहऊँ
कह कपि धर्मसीलता तोरी । हमहुसुनीकृतपर-त्रिय-चोरी
देखी नयन दूत रखवारी । बूड़ि न मरहु धर्म-ब्रत-धारी
काननाकबिनुभगनिनिहारी। छमाकीन्हतुम्ह धर्म बिचारी
धर्मसीलता तव जग जागी । पावा दरस हमहुँ बड़भागी
दो०—जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि,सठ बिलोकु मम बाहु।
लोक-पाल-बल-बिपुल-ससि-ग्रसन हेतु सब राहु ॥

पुनि नभसर ममकर-निकर-कमलन्हिपरकरिबास।
सोभत भयउ मराल इव, संभुसहित कैलास ॥२२॥

तुम्हरेकटकमाँझ सुनु अंगद। मोसनभिरिहिकवनजोधाबद
तवप्रभुनारिबिरहबलहीना। अनुज तासु दुख दुखी मलीना
तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ। अनुज हमार भीरु अति सोऊ
जामवंत मंत्री अतिबूढ़ा। सो कि होइ अब समर अरूढ़ा
सिल्पिकर्मजानहिनलनीला। है कपि एक महा-बल-सीला
आवाप्रथमनगरु जेहिजारा। सुनिहँसिबोलेउबालिकुमारा
सत्य बचनकहु निसिचर-नाहा। साँचेहु कीस कीन्ह पुरदाहा
रावननगर अलपकपि दहई। सुनिअब बचन सत्यको कहई
जोअतिसुभटसराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघुधावन
चलइ बहुत सो बीर न होई। पठवा खबरि लेन हम सोई

दो०—सत्य नगर कपि जारे, बिनु प्रभुआयसु पाइ।
फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं, तेहि भय रहा लुकाइ॥
सत्य कहेहु दसकंठ सब, मोहि न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमारें कटक अस, तो सन लरतजो सोह॥
प्रीति बिरोध समान सन, करिय नीति असि आहि।
जौंमृगपति बध मेडुकन्हि, भलकिकहइ कोउताहि॥
जद्यपि लघुता राम कहँ, तोहि बधे बड़ दोष।
तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्रिजाति कर रोष॥
बक्रउक्ति धनु बचन सर, हृदय दहेउ रिपु कीस।
प्रति उत्तर सड़सिन्ह मनहुँ, काढ़त भट दससीस॥
हँसि बोलेउ दसमौलि तब, कपि कर बड़गुन एक।
जो प्रतिपालइ तासु हित, करइ उपाय अनेक। २३॥

धन्यकीसजोनिज-प्रभु-काजा। जहँतहँनाचइ परिहरि लाजा

नाँचिकूदि करि लोग रिझाई। पतिहित करइ धर्म निपुनाई
अंगद स्वामिभक्त तव जाती। प्रभुगुन कस न कहसि एहिभाँती
मै गुनगाहक परम-सु-जाना। तवकटुरटनिकरउँ नहिकाना
कह कपि तव गुनगाहकताई। सत्य पवनसुत मोहि सुनाई
वनबिधंसि सुतबधिपुरजारा। तदपिनतेहिकछुकृत अपकारा
सोइ बिचारितवप्रकृतिसुहाई। दसकंधर मै कीन्हि ढिठाई
देखेउँ आइ जो कछुकपिभाषा। तुम्हरें लाज न रोष न माषा
जौंअसिमतिपितुखायेहुकीसा। कहिअस वचन हँसादससीसा
पितहिखाइखातेउँपुनि तोही। अवहीं समुझि परा कछुमोही
बालि-बिमल-जस-भाजनजानी। हतउँनतोहिअधमअभिमानी
कहु रावन रावन जग केते। मैं निजस्रवन सुने सुनु जेते
बलिहिजितनएकुगयउपताला। राखा बाँधि सिसुन्ह हयसाला
खेलहिं बालक मारहि जाई। दया लागि बलिदीन्ह छोड़ाई
एक बहोरि सहसभुज देखा। धाइ धरा जिमि जंतुबिसेखा
कौतुक लागि भवन लै आवा। सो पुलस्त्यमुनिजाइछोड़ावा

दो०—एक कहत मोहि सकुच अति, रहा बालिकी काँख।
तिन्ह महुँ रावन तैं कवन, सत्य बदहि तजि माख॥२४॥

सुनुसठसोइ रावन बलसीला। हरगिरि जानजासुभुजलीला
जान उमापति जासु सुराई। पूजेउँ जेहि सिरु सुमनचढ़ाई
सिरसरोज निजकरन्हिउतारी। पूजेउँ अमित वार त्रिपुरारी
भुजबिक्रमजानहि दिगपाला। सठ अजहूँ जिन्ह कें उरसाला
जानहिं दिग्गज उरकठिनाई। जबजब भिरेउँ जाइबरिआई
जिन्ह के दसन करालन फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे
जासुचलतडोलतिइमिधरनी। चढत मत्तगज जिमिलघुतरनी
सोइ रावनजगबिदितप्रतापी। सुनेहिनस्रवन अलीकप्रलापी

दो०—तेहि रावन कहँ लघु कहसि, नर कर करसि बखान।
रे कपि बर्बर खर्ब खल, अब जाना तव ग्यान ॥२५॥

सुनि अगद सकोप कह बानी। बोलुसँभारिअधम अभिमानी
सहस-बाहु-भुज-गहनअपारा। दहन अनलसमजासु कुठारा
जासु परसु-सागर-खर-धारा। बूड़े नृप अगनित बहु बारा
तासुगर्व जेहि देखत भागा। सो नर क्यों दससीसअभागा
राममनुज कस रे सठ बंगा। धन्वी कामु नदी पुनि गंगा
पसु सुरधेनु कलपतरु रूखा। अन्न दान अरु रस पीयूखा
बैनतेय खग अहिसहसानन। चितामनिपुनि उपलदसानन
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा। लाभुकि रघुपति-भगतिअकुंठा

दो०—सेनसहित तव मानमथि, बन उजारि पुर जारि।
कस रे सठ हनुमान कपि, गयउ जो तव सुतमारि॥२६॥

सुनुरावन परिहरि चतुराई। भजसि न कृपासिंधु रघुराई
जौखलभयेसिरामकरद्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही
मूढ़ बृथाजनि मारसिगाला। राम बयर होइहि अस हाला
तवसिरनिकरकपिन्हकेआगें। परिहहिंधरनि रामसर लागें
ते तव सिर कंदुक इव नाना। खेलिहहि भालु कीस चौगाना
जबहिंसमरकोपिहिरघुनायक। छुटिहहिअतिकराल बहु सायक
तबकिचलिहिअमगालतुम्हारा। अस बिचारिभजुराम उदारा
सुनत बचन रावनु परजरा। जरत महानल जनु घृत परा

दो०—कुंभकरन अस बंधु मम, सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि, जितेउँ चराचर झारि ॥२७॥

सठ साखामृग जोरि सहाई। बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई
नाघहि खग अनेक बारीसा। सूर न होहिं ते सुनु जड़ कीसा
ममभुज-सागर-बल-जल-पूरा। जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा

बीस पयोधि अगाध अपारा । को अस बीर जो पाइहिपारा
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा । भूप सुजसु खल मोहिसुनावा
जौं पै समरसुभट तव नाथा । पुनिपुनिकहसि जासु गुनगाथा
तौ बसीठपठवत केहि काजा । रिपुसनप्रीतिकरतनहिंलाजा
हर-गिरि-मथननिरखुममबाहू। पुनिसठकपिनिजप्रभुहि सराहू

दो०—सूर कवन रावन सरिस, स्वकर काटि जेहि सीस ।
हुने अनल महुँ बार बहु, हरषि साखि गौरीस ॥२८॥

जरतविलोकेउँजबहिकृपाला । बिधिकेलिखे अंक निजभाला
नर के कर आपन बधबाँची । हँसेउँजानिबिधिगिरा असाँची
सोउमनसमुझित्रासनहिं मोरें । लिखा बिरंचि जरठमतिभोरें
आन बीरबल सठ मम आगे । पुनिपुनिकहसिलाजपतित्यागे
कहअंगदसलज्ज जग माहीं । रावन तोहिसमानकोउनाहीं
लाजवंत तव सहज सुभाऊ । निजमुखनिजगुनकहसिन काऊ
सिरअरुसैलकथा चित रही । ता तें बार बीस तैं कही
सो भुजबल राखेहु उरघाली । जीतेहु सहसबाहु बलि बाली
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा । काटे सीस कि होइय सूरा
इन्द्रजालिकहुँकहिय न बीरा । काटइ निजकर सकलसरीरा

दो०—जरहिं पतंग बिमोहबस, भार बहहिं खरबृंद ।
ते नहिं सूर कहावहिं, समुझि देखु मतिमंद ॥२९॥

अबजनिबतबढ़ावखलकरही । सुनुममबचन मान परिहरही
दसमुख मैं न बसीठी आयेउँ । असबिचारि रघुबीर पठायेउँ
बारबार असिकहइ कृपाला । नहिं गजारि जस बधेसृगाला
मन महुँसमुझिबचनप्रभुकेरे । सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे
नाहितकरि मुखभंजनतोरा । लै जातेउँ सीतहिं बरजोरा
जानेउँ तवबलअधमसुरारी । सूने हरि आनेहि परनारी

नै निसिचर-पति गर्बबहूता । मै रघुपति-सेवक कर दूता
जौ न रामअपमानहिं डरऊँ । तोहिदेखतअस कौतुक करऊँ

दो०—तोहि पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गाउँ ।
तव जुवतीन्ह समेत सठ, जनकसुतहि लै जाउँ ॥३०॥

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई । मुयेहि बधे कछु नहिं मनुसाई
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा । अतिदरिद्र अजसी अतिबूढ़ा
सदा रोगबस संततक्रोधी । बिष्णुविमुखस्रुति संत-बिरोधी
तनुपोषक निदकअघखानी । जीवत सवसम चौदह प्रानी
असबिचारिखलबधउँ न तोही। अबजनिरिसउपजावसिमोही
सुनिसकोपकहनिसि-चर-नाथा। अधरदसनदसि मीजत हाथा
रेकपिअधममरनअब चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी
कटुजल्पसिजड़कपिबलजाके । बलप्रताप बुधि तेज न ताकें

दो०—अगुन अमान बिचारि तेहि, दीन्ह पिता बनवास ।
सो दुख अरुजुबतीबिरह,पुनिनिसिदिनममत्रास ॥
जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि, ऐसे मनुज अनेक ।
खाहिं निसाचर दिवसनिसि,मूढ़ समुझु तजि टेक॥३१॥

जबतेहिकीन्हराम कै निदा । क्रोधवंत अति भयउ कपिदा
हरि-हर-निदा सुनइजोकाना । होइ पाप गो-घात-समाना
कटकटान कपिकुंजर भारी । दुहुँभुजदंडतमकि महि मारी
डोलत धरनि सभासद खसे । चले भागि भय मारुत ग्रसे
गिरतसँभारि उठा दसकंधर । भूतलपरे मुकुट अति सुदर
कछुतेहिलैनिजसिरन्हिसँवारे। कछु अगद प्रभुपास पबारे
आवतमुकुट देखिकपिभागे । दिनहीं लूक परनबिधि लागे
की रावन करिकोपचलाये । कुलिसचारिआवतअतिधाये
कहप्रभुहँसिजनि हृदयडेराहू । लूक न असनि केतु नहिं राहू

ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनय के प्रेरे

दो०—तरकि पवनसुत कर गहे, आनि धरे प्रभुपास ।
कौतुक देखहिं भालु कपि, दिन-कर-सरिस प्रकास॥
उहाँ सकोप दसानन, सब सन कहत रिसाइ ।
धरहु कपिहि धरि मारहु, सुनि अंगद मुसुकाइ ॥३२॥

एहि बधि बेगिसुभटसबधावहु । खाहुभालुकपिजहँ तहँ पावहु
मरकटहीन करहु महि जाई । जिअतधरहु तापस दोउभाई
पुनिसकोपबोलेउ जुबराजा । गालबजावत तोहि न लाजा
मरुगरकाटिनिलजकुलघाती। बलबिलोकिबिहरतिनहिंछाती
रे त्रियचोर कुमारग-गामी । खलमलरासि मंदमति कामी
सन्निपात जल्पसि दुर्बादा । भयेसिकालबसखलमनुजादा
या को फलुपावहिगो आगे । बानर-भालु-चपेटन्हि लागें
रामुमनुज बोलतअसिबानी । गिरहिनतवरसनाअभिमानी
गिरिहहिंरसनासंमय नाहीं । सिरन्हिसमेतममरमहि माहीं

सो०—सो नर क्यों दसकंध, बालि बधेउ जेहि एक सर ।
बीसहु लोचन अंध, धिग तव जनम कुजाति जड़ ॥
तव सोनित की प्यास, तृषित राम-सायक-निकर ।
तजउँ तोहि तेहि त्रास, कटुजल्पक निसिचर अधम॥३३॥

मैं तवदसनतोरिबे लायक । आयसुमोहिनदीन्हरघुनायक
असरिसिहोतिदसउँमुखतोरौ। लंका गहि समुद्रमहँ बोरौं
गूलर-फल-समान तव लका । बसहुमध्य तुम्ह जंतु असंका
मैं बानर फल खात न बारा । आयसु दीन्ह न राम उदारा
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई । मूढ़ सोख कहँ बहुत भुठाई
बालिनकबहुगालअस मारा । मिलितपसिन्हतेंभयसिलबारा
साँचेहुँ मैं लबार भुजबीहा । जौं न उपारिउँ तव दस जीहा

समुझि रामप्रतापकपिकोपा। सभामाँझपनकरि पद रोपा
जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं राम सीता मै हारी
सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा
इंद्रजीत आदिक बलवाना। हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई। पद न टरइ बैठहि सिरु नाई
पुनि उठि झपटहिं सुरआराती। टरइ न कीस चरन एहि भाँती
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी। मोह बिटप नहिं सकहि उपारी

दो०—कोटिन्ह मेघ-नाद-सम, सुभट उठे हरखाइ।
झपटहिं टरै न कपि चरन, पुनि बैठहिं सिर नाइ॥
भूमि न छाँड़त कपि चरन, देखत रिपु मद भाग।
कोटि बिघ्न तें संत कर, मन जिमि नीति न त्याग॥३४॥

कपि बल देखि सकल हियँ हारे। उठा आपु कपि कें परचारे
गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहे न तोर उबारा
गहसि न रामचरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भयउ तेजहत श्री सब गई। मध्यदिवस जिमि ससि सोहई
सिंहासन बैठेउ सिर नाई। मानहुँ संपति सकल गवाँई
जगदातमा प्रानपति रामा। तासु बिमुख किमि लह बिस्रामा
उमा रामकी भृकुटि बिलासा। होइ बिस्व पुनि पावइ नासा
तृन तें कुलिस कुलिस तृन करई। तासु दूत पन कहु किमि टरई
पुनि कपि कही नीति बिधि नाना। मान न तासु काल नियराना
रिपु मद मथि प्रभु-सुजस सुनायो। यह कहि चले उबालि नृप-जायो
हनूमान न खेत खेलाइ खेलाई। तोहि अबहिं का करौं बड़ाई
प्रथमहिं तासुतनय कपि मारा। सो सुनि रावन भयउ दुखारा
जातुधान अंगदपन देखी। भय ब्याकुल सब भयेबिसेखी

दो०—रिपुबल धरषि हरषि कपि, बालितनय बलपुंज।
पुलक सरीर नयनजल, गहे राम-पद-कंज॥

साँझ जानि दसमौलि तब, भवन गयउ बिलखाइ।
मंदोदरी रावनहि, बहुरि कहा समुझाइ ॥३५॥

कंतसमुझिमनतजहुकुमतिही । सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही
रामानुज लघुरेख खँचाई । सोउ नहिनाँघेहुअसिमनुसाई
पियतुम्हताहिजितबसंग्रामा । जा के दूत केर अस कामा
कौतुकसिंधु नाँघि तव लंका । आयउ कपिकेहरी असंका
रखवारे हति बिपिनउजारा । देखत तोहि अच्छ तेहि मारा
जारिनगरसबुकीन्हेसिछारा । कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा
अबपतिमृषागालजनि मारहु । मोर कहा कछुहृदय बिचारहु
पतिरघुपतिहिनृपतिजनिमानहु। अगजगनाथ अतुल-बलजानहु
बानप्रताप जान मारीचा । तासुकहानहिं मानेहि नीचा
जनकसभाअगनितमहिपाला। रहेतुम्हहुँबलबिपुल बिसाला
भंजिधनुष जानकी बिआही । तबसंग्राम जितेहु किन ताही
सुरपति-सुत जानइ बलथोरा । राखा जियतआँखि गहि फोरा
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी । तदपिहृदयनहि लाजबिसेखी

दो०—बधि बिराध खरदूषनहि, लीला हतेउ कबंध ।
बालि एक सर मारेउ, तेहि जानहु दसकंध ॥३६॥

जेहि जल नाथ बँधायेउ हेला । उतरे प्रभु दल सहित सुबेला
कारुनीक दिन-कर-कुल-केतु । दूत पठायउ तव हित हेतू
सभामाँझजेहितव बल मथा । करिबरूथ महँ मृगपति जथा
अंगद हनुमत अनुचर जा के । रनबाँकुरे बीर अतिबाँके
तेहिकहँपियपुनिपुनिननरकहहू । मुधा मान ममता मद बहहू
अहह कंत कृत राम बिरोधा । कालबिबस मनउपजनबोधा
कालु दंड गहि काहु न मारा । हरइ धर्म बल बुद्धिबिचारा
निकट कालजेहि आवइ साई । तेहिभ्रमहोहितुम्हारिहिनाई

दो०—दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर, अजहुँ पूर पिय देहु ।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि,नाथ बिमल जस लेहु ॥३७॥

नारिबचनसुनिबिसिखसमाना। सभा गयउ उठि होत बिहाना
बैठ जाइ सिंहासन फूली। अतिअभिमानत्रास सबभूली
इहाँ राम अंगदहि बोलावा। आइ चरन-पंकज सिरु नावा
अतिआदर समीप बैठारी। बोले बिहँसि कृपाल खरारी
बालितनयकौतुकअति मोही। तात सत्य कहु पूछउँ तोही
रावनु जातुधान-कुल-टीका। भुजबलअतुलजासुजग लीका
तासुमुकुटतुम्ह चारि चलाये। कहहु तातकवनी बिधि पाये
सुनु सर्बग्य प्रनत-सुख-कारी। मुकुट न होहिं भूपगुन चारी
साम दान अरु दंड बिभेदा। नृपउर बसहि नाथ कहबेदा
नीतिधर्म के चरन सुहाये। असजियजानिनाथपहि आये

दो०—धर्महीन प्रभु-पद-बिमुख, कालबिबस दससीस ।
तेहि परिहरि गुन आये, सुनहु कोसलाधीस ॥
परमचतुरता स्रवन सुनि, बिहँसे रामु उदार ।
समाचार पुनि सब कहे, गढ़ के बालिकुमार ॥३८॥

रिपु के समाचार जब पाये। रामसचिवसबनिकटबोलाये
लंका बाँके चारि दुआरा। केहिबिधिलागिय करहु बिचारा
तब कपीसरिच्छेस बिभीषन। सुमिरि हृदयदिनकर-कुलभूषन
करिबिचारतिन्ह मंत्र दृढ़ावा। चारि अनी कपिकटकबनावा
जथाजोग सेनापति कीन्हे। जूथप सकल बोलि तब लीन्हे
प्रभुप्रताप कहि सबसमुझाये। सुनिकपि सिंहनाद करि धाये
हरषितरामचरनसिरनावहिं।गहिगिरिसिखरबीरसबधावहिं
गर्जहिं तर्जहि भालु कपीसा। जय रघुबीर कोसलाधीसा
जा नत परमदुर्ग अति लंका। प्रभुप्रताप कपि चले असंका

घटाटोपकरि चहुँदिसि घेरी। मुखहिनिसानबजावहिं भेरी

दो०–जयति राम जय लछिमन, जय कपीस सुग्रीवँ।
गर्जहिं केहरिनाद कपि, भालु महा-बल-सीवँ ॥३९॥

लंका भयउ कोलाहल भारी। सुना दसानन अतिअहँकारी
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई। बिहँसि निसाचर सेन बोलाई
आये कीस काल के प्रेरे। छुधावंत सब निसिचर मेरे
असकहिअट्टहास सठ कीन्हा। गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा
सुभटसकलचारिहुदिसिजाहू। धरिधरि भालुकीसमब खाहू
उमा रावनहि असअभिमाना। जिमिटिट्टिभखग सूतउताना
चले निसाचर आयसु माँगी। गहि कर भिंडिपालबर साँगी
तोमर मुद्गर परिघ प्रचंडा। सूल कृपान परसु गिरिखंडा
जिमिअरुनोपल निकर निहारी। धावहिं सठ खग मांसअहारी
चोंच-भंग-दुखतिन्हहिनसूझा। तिमि धाये मनुजाद अबूझा

दो०–नानायुध सर-चाप-धर, जातुधान बलबीर।
कोटकँगूरनि चढ़ि गये, कोटि कोटि रनधीर ॥४०॥

कोट कँगूरन्हि सोहहिं कैसे। मेरु के सृंगनि जनु घन बैसे
बाजहिं ढोलनिसान जुझाऊ। सुनिधुनिहोहिभटन्हमनचाऊ
बाजहिं भेरिनफीरि अपारा। सुनि कादरउरजाहिं दरारा
देखि न जाइ कपिन्ह के ठट्टा। अति बिसाल तनुभालुसुभट्टा
धावहिंगनहिनअवघट घाटा। पर्बतफोरि करहिं गहि बाटा
कटकटाहिंकोटिन्हभटगर्जहिं। दसन ओठकाटहिंअतितर्जहिं
उत रावन इत रामदोहाई। जयतिजयतिजय परी लराई
निसिचरसिखरसमूहढहावहिं। कूदिधरहिंकपिफेरिचलावहिं

छंद–धरि कुधर-खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं।
झपटहिं चरन गहि पटकि महिभजि चलतबहुरिप्रचारहीं॥

अतितरल तरुन प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गये।
कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ रामजसु गावत भये॥

दो०—एकु एकु गहि निसिचर, पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपुन हेठ भट, गिरहिं धरनि पर आइ॥४१॥

राम-प्रताप-प्रबल कपिजूथा। मर्दहि निसिचर-निकर-बरूथा चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर। जय रघुबीर-प्रतापदिवाकर चले निसाचर-निकर पराई। प्रबल पवनजिमिघनसमुदाई हाहाकार भयउ पुर भारी। रोवहिं बालक आतुर नारी सब मिलिदेहिरावनहिंगारी। राज करत एहि मृत्युहँकारी निजदलबिचलसुनातेहि काना। फेरि सुभट लंकेस रिसाना जो रन बिमुख सुना मैं काना। सो मैं हतब करालकृपाना सरबसु खाइ भोगकरिनाना। समरभूमि भये दुर्लभ प्राना उग्र बचन सुनि सकल डेराने। फिरे क्रोध करि सुभटलजाने सनमुख मरन बीर कै सोभा। तब तिन्ह तजाप्रानकरलोभा

दो०—बहु-आयुध-धर सुभट सब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि।
कीन्हे ब्याकुल भालु कपि, परिघ त्रिसूलन्हि मारि॥४२॥

भयआतुर कपि भागन लागे। जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता। कहँ नल नील दुबिद बलवंता निजदलबिचलसुनाहनुमाना। पच्छिम द्वार रहा बलवाना मेघनाद तहँ करइ लराई। टूट न द्वार परम कठिनाई पवन-तनय-मनभाअतिक्रोधा। गर्जेउप्रबल-काल-समजोधा कूदि लंकगढ़ ऊपर आवा। गहि गिरि मेघनादकहुँ धावा भंजेउ रथ सारथी निपाता। ताहि हृदयमहुँ मारेसिलाता दुसरे सूत बिकल तेहि जाना। स्यंदन घालि तुरत गृहआना

दो०—अंगद सुना पवनसुत, गढ़ पर गयउ अकेल ।
रनबाँकुरा बालिसुत, तरकि चढ़ेउ कपिखेल ॥ ४३ ॥

जुद्धविरुद्ध क्रुद्ध दोउ बानर। रामप्रताप सुमिरि उरअंतर
रावन भवन चढ़े दोउ धाई। करहिं कोसलाधीसदोहाई
कलससहितगहिभवनढहावा। देखि निसाचर-पतिभयपावा
नारिबृंद कर पीटहिं छाती। अब दुइ कपि आये उतपाती
कपिलीलाकरितिन्हहिडेरावहिं। रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं
पुनि कर गहि कंचन के खभा। कहेन्हिकरियउतपात अरंभा
गर्जि परे रिपुकटक मँझारी। लागे मर्दइ भुजबल भारी
काहुहि लात चपेटन्हि केहू। भजहु न रामहि सो फल लेहू

दो०—एक एक सों मर्दहिं, तोरि चलावहिं मुंड ।
रावन आगे परहिं ते, जनु फूटहिं दधिकुंड ॥४४॥

महा-महा-मुखिया जे पावहिं। ते पद गहिप्रभुपासचलावहिं
कहहिबिभीषन तिन्हकेनामा। देहिं रामु तिन्हहूँ निजधामा
खल मनुजादद्विजामिषभोगी। पावहिं गति जो जाँचत जोगी
उमा राम मृदुचित करुनाकर। बयरभावसुमिरतमोहिनिमिचर
देहिं परम गतिसो जियजानी। असकृपालु को कहहु भवानी
असप्रभुसुनिनभजहिभ्रमत्यागी। नर मतिमंद ते परमअभागी
अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा। कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा
लंका दोउ कपि सोहहिं कैसें। मथहिं सिंधु दुइ मंदिर जैसें

दो०—भुजबल रिपुदल दलमलि, देखि दिवस कर अंत ।
कूदे जुगल बिगत स्रम, आये जहँ भगवंत ॥४५॥

प्रभु-पदकमलसीसतिन्ह नाये। देखि सुभटरघुपति-मनभाये
रामकृपाकरि जुगल निहारे। भये बिगतस्रम परम सुखारे
गये जानि अंगद हनुमाना। फिरे भालु मर्कट भट नाना

जातुधान प्रदोषबल पाई। धाये करि दससीस-दोहाई
निसिचर-अनीदेखिकपि फिरे। जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे
दोउ दल प्रबलप्रचारिप्रचारी। लरतसुभटनहिमानहिं हारी
महावीर निसिचर सब कारे। नानाबरन बलीमुख भारे
सबलजुगलदलसमबलजोधा। कौतुककरतलरत करि क्रोधा
प्राविट-सरद-पयोद घनेरे। लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे
अनिपअकंपनअरु अतिकाया। बिचलतसेनकीन्हिइन्ह माया
भयउनिमिषमहँअतिअँधियारा। बृष्टि होइ रुधिरोपलछारा

दो०—देखि निबिड़तम दसहुँ दिसि,कपिदल भयउ खभार।
एकहिं एक न देखहिं, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥४६॥

सकलमरमुरघुनायक जाना। लिये बोलि अगद हनुमाना
समाचार सबकहि समुझाये। सुनत कोपि कपिकुंजर धाये
पुनि कृपालहँसिचापचढ़ावा। पावक सायक सपदि चलावा
भयउप्रकासकतहुँ तम नाही। ग्यानउदयजिमि संसय जाही
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा। धायेहरषि बिगत-स्रम-त्रासा
हनूमान अगद रन गाजे। हाँक सुनत रजनीचर भाजे
भागतभटपटकहिधरिधरनी। करहिभालुकपिअदभुतकरनी
गहिपदडारहिं सागर माही। मकरउरगझषधरिधरिखाहीं

दो०—कछु मारे कछु घायल, कछु गढ़ चले पराइ।
गर्जहिं भालु बलीमुख,रिपु-दल-बल बिचलाइ ॥४७॥

निसाजानिकपि-चारिउ-अनी। आये जहाँ कोसलाधनी
राम कृपाकरिचितवाजबही। भये बिगतस्रम बानर तबहीं
उहाँ दसानन सचिव हँकारे। सब सन कहेसिसुभट जे मारे
आधा कटक कपिन्ह संहारा। कहहु बेगि का करियबिचारा
माल्यवतअतिजरठनिसाचर। रावनु-मातु-पिता-मत्री-बर

बोलाबचन नीति अतिपावन। सुनहुतातकछु मोरसिखावन
जब तें तुम्हसीताहरि आनी। असगुनहोहिं न जाहि बखानी
बेद पुरान जासु जस गायो। रामबिमुख काहु न सुख पायो

दो०—हिरन्याक्ष भ्रातासहित, मधुकैटभ बलवान।
जेहि मारे सोइ अवतरेउ, कृपासिंधु भगवान॥

मासपारायण, पच्चीसवाँ विश्राम

कालरूप खल-बन-दहन, गुनागार घनबोध।
सिव बिरंचि जेहि सेवहिं, तासों कवन बिरोध॥४८॥

परिहरि बयरु देहु बैदेही। भजहु कृपानिधि परमसनेही
ता के बचन बानसम लागे। करियामुखकरि जाहिअभागे
बूढ़ भयसि न त मरतेउँ तोही। अबजनिनयनदेखावसि मोही
तेहि अपनेमन अस अनुमाना। बध्यौचहतएहिकृपानिधिना
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा। तब सकोप बोलेउ घननादा
कौतुक प्रात देखियहु मोरा। करिहउँबहुत कहौं का थोरा
सुनिसुतबचन भरोसा आवा। प्रीतिसमेत अंक बैठावा
करतबिचारभयउभिनुसारा। लागे कपि पुनि चहूँदुआरा
कोपि कपिन्हदुरघट गढ़घेरा। नगर कोलाहल भयउ घनेरा
बिबिधायुधधरनिसिचरधाये। गढ़ ते पर्वतसिखर ढहाये

छंद—ढाहे महीधर-सिखरकोटिन्हबिबिधबिधिगोलाचले।
घहरात जिमि पबिपात गर्जत जनु प्रलय के बादले॥
मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जरभये।
गहि सैलतेइ गढ़पर चलावहिं जहँसो तहँनिसिचरहये॥

दो०—मेघनाद सुनि स्रवन अस, गढ़ पुनि छेंका आइ।
उतरि दुर्ग तें बीरबर, सनमुख चलेउ बजाइ॥४९॥

कहँकोसलाधीस दोउ भ्राता। धन्वी सकल-लोक-बिख्यात

कहँ नल नील द्विबिदसुग्रीवाँ। अंगद हनूमंत बलसीवाँ
कहाँ बिभीषनु भ्राताद्रोही। आजुसठहि हठि मारउँ ओही
अस कहि कठिन बान संधाने। अतिसयक्रोध स्रवनलगिताने
सरसमूह सो छाँड़ै लागा। जनु सपच्छ धावहिंबहु नागा
जहँ तहँ परतदेखियहि बानर। सनमुखहोइ न सकेतेहिअवसर
जहँ तहँभागिचलेकपिरिच्छा। बिसरी सबहि युद्ध कै इच्छा
सो कपिभालु न रनमहँ देखा। कीन्हेसिजेहि न प्रानअवसेखा

दो०–दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि बीर।
सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बलधीर ॥५०॥

देखि पवनसुतकटकुबिहाला। क्रोधवंत जनु धायउ काला
महासैल एक तुरत उपारा। अतिरिसि मेघनादपर डारा
आवत देखि गयउ नभ सोई। रथ सारथी तुरग सब खोई
बार बार प्रचार हनुमाना। निकटनआवमरमु सो जाना
रघुपति-निकटगयउ घननादा। नानाभाँति कहेसि दुर्बादा
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे। कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे
देखि प्रताप मूढ़ खिसियाना। करै लाग माया बिधि नाना
जिमिकोउकरै गरुड़ से खेला। डरपावै गहि स्वल्प सपेला

दो०–जासु प्रबल-माया-बिबस, सिव बिरंचि बड़ छोट।
ताहि देखावइ निसिचर, निज माया मतिखोट ॥५१॥

नभचढ़िबरषइ बिपुलअँगारा। महि तें प्रगट होहि जलधारा
नाना भाँति पिसाचपिसाची। मारुकाटुधुनि बोलहिं नाँची
बिष्ठा पूय रुधिर कच हाड़ा। बरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा
बरषिधूरिकीन्हेसिअँधियारा। सूझ न आपन हाथ पसारा
कपि अकुलाने माया देखे। सब कर मरन बना यहि लेखे
कौतुक देखि राम मुसुकाने। भये सभीत सकल कपि जाने

एक बान काटी सब माया। जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके। भये प्रबल रन रहहिं न रोके
दो०—आयसु माँगि राम पहिं, अंगदादि कपि साथ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ, बान सरासन हाथ ॥५२॥

छत-ज-नयनउरबाहू बिसाला। हिमगिरि-निभतनुकछुएकलाला
इहाँ दसानन सुभट पठाये। नाना सस्त्र अस्त्र गहि धाये
भूधर--नख-बिटपायुधधारी। धाये कपि जय राम पुकारी
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी। इतउत जय इच्छानहिं थोरी
मुठिकन्हलातन्हदातन्हकाटहिं। कपिजयसीलमारिपुनि डाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरु मारू। सीसतोरि गहि भुजा उपारू
असि रव पूरि रही नव खंडा। धावहि जहँ तहँ रुंड प्रचंडा
देखहिं कौतुक नभ सुरबृंदा। कबहुँक बिसमय कबहुँ अनंदा
दो—रुधिर गाड़ भरि भरि जमेउ, ऊपर धूरि उड़ाइ।
जनु अँगाररासीन्ह पर, मृतकधूम रह छाइ ॥५३॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे। कुसुमित किंसुक के तरु जैसे
लछिमनमेघनाद दोउजोधा। भिरहिपरसपरकरिअतिक्रोधा
एकहिएक सकहि नहिंजीती। निसिचरछलबलकरइअनीती
क्रोधवन्त तब भयउ अनंता। मंजेउ रथ सारथी तुरंता
नाना बिधि प्रहार कर सेषा। राच्छस भयउ प्रानअवसेषा
रावनसुतनिजमनअनुमाना। संकठ भयउहरिहि ममप्राना
बीरघातिनी छाड़ेसि साँगी। तेजपुंज लछिमन उर लागी
मुरछा भई सक्ति के लागें। तबचलिगयउनिकटभयत्यागें
दो०—मेघनाद-सम कोटिसत, जोधा रहे उठाइ।
जगदाधार सेष किमि, उठै चले खिसिआइ ॥५४॥

सुनु गिरिजा क्रोधानलजासू। जारइ भुवन चारि दस आसू

सक संग्राम जीति को ताही । सेवहि सुरनर अग जगजाही
यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई
संध्याभइ फिरीदोउवाहिनी । लगे सँभारन निजनिज अनी
व्यापकब्रह्मअजितभुवनेश्वर । लछिमनुकहा बूझकरुनाकर
तब लगि लै आयउ हनुमाना । अनुजदेखि प्रभु अतिदुखमाना
जामवंत कह बैद सुषेना । लंका रहइ को पठइय लेना
धरि लघुरूप गयउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता

दो०—रघुपति-चरन-सरोज सिरु, नायउ आय सुषेन ।
कहा नाम गिरि औषधी, जाहु पवन सुत लेन ॥५५॥

रामचरनसरसिजउररराखी । चलेउ प्रभजनसुत बलभाखी
उहाँ दूत एकमरमु जनावा । रावन कालनेमि गृह आवा
दसमुखकहा मरमु तेहि सुना । पुनि पुनिकालनेमि सिरुधुना
देखततुम्हहिनगरजेहिजारा । तासु पंथ को रोकनिहारा
भजिरघुपतिकरुहितआपना । छाँड़हु नाथ मृषा जलपना
नील-कंज-तनु सुंदरस्यामा । हृदयराखु लोचन अभिरामा
मैं तै मोर मूढ़ता त्यागू । महामोहनिसि सूतत जागू
कालब्यालकरभच्छक जोई । सपनेहु समरकिजीतियसोई

दो०सुनि दसकंध रिसान अति, तेहि मन कीन्ह बिचार।
राम-दूत-कर मरउँ बरु, यह खल रत मलभार ॥५६॥

असकहिचलारचेसिमगमाया । सर मंदिर बर बाग बनाया
मारुतसुत देखा सुभ आस्रम । मुनिहिबूझिजलुपियउँजाइस्रम
राच्छस-कपट-बेषतहँ सोहा । माया-पति-दूतहि चह मोहा
जाइ पवनसुत नायेउ माथा । लाग सो कहइराम-गुनगाथा
होत महा रन रावनरामहि । जितिहहिराम न संसययामहि
इहाँ भये मैं देखउँ भाई । ग्यानदृष्टि-बलुमोहि अधिकाई

माँगाजलतेहि दीन्ह कमंडल। कहकपिनहिंअघाउँ थोरे जल
सरमज्जनुकरिआतुरआवहु। दिच्छादेउँ ग्यान जेहि पावहु

दो०—सर पैठत काँप-पद-गहा, मकरी तब अकुलान।
मारी सो धरि दिब्यतनु,चली गगन चढ़ि जान।।५७

कपितवदरसभइउँनिःपापा। मिटातात मुनिबर कर सापा
मुनिनहांइयहनिसिचरघोरा। मानह सत्य बचन प्रभु मोरा
असकहि गई अपछरा जबहीं। निसिचर-निकट गयउ सो तबहीं
कहकपिमुनि गुरुदछिना लेहू। पाछें हमहिं मत्र तुम्ह देहू
सिर लंगूर लपेटि पछारा। निज तनु प्रगटेसिमरती बारा
राम राम कहि छाड़ेसिप्राना। सुनिमनहरषि चलेउ हनुमाना
देखा सैल न औषध चीन्हा। सहसाकपिउपारि गिरि लीन्हा
गहिगिरिनिसिनभधावतभयऊ। अवधपुरी-ऊपर कपि गयऊ

दो०—देखा भरत बिसाल अति, निसिचर मन अनुमान।
बिनु फर सायक मारेउ, चाप स्रवन लगि तानि।।५८।।

परेउमुरुछिमहिलागतसायक। सुमिरत राम राम रघुनायक
सुनिप्रियबचनभरततब धाये। कपि समीप अतिआतुर आये
बिकल बिलोकिकीस उरलावा। जागत नहि बहु भाँतिजगावा
मुख मलीन मन भये दुखारी। कहत बचन लोचनभरिबारी
जेहिबिधिरामबिमुख मोहिकीन्हा। तेहिपुनियहदारुन दुख दीन्हा
जौं मोरे मन बच अरु काया। प्रीतिराम-पद-कमल अमाया
तौकपिहोउबिगत-स्रम-सूल्ला। जौ मो पर रघुपति अनुकूला
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा। कहि जयजयतिकोसलाधीस

सो०—लीन्ह कपिहि उर लाइ,पुलकित तनलोचन सजल।
प्रीति न हृदय समाइ, सुमिरि राम रघुकुल-तिलक।।५९।।

तातकुसलकहुसुखनिधानकी। सहितअनुजअरु मातु जानकी

कपिमबचरितसमास बखाने। भये दुखी मन महँ पछिताने
अहह दैव मै कत जग जायउँ। प्रभु के एकहु काज न आयउँ
जानि कुअवसरुमन धरि धीरा। पुनि कपि सन बोले बलबीरा
नातगहरुहोइहि तोहि जाता। काज नसाइहि होत प्रभाता
चहु मम सायक सैलसमेता। पठवौं तोहि जहँ कृपानिकेता
सुनिकपिमन उपजा अभिमाना। मोरे भार चलिहिकिमिबाना
राम प्रभाव बिचारि बहोरी। बंदि चरन कपि कहकरजोरी

दो०—तव प्रताप डर राखि प्रभु, जैहउँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाइ पद, बंदि चलेउ हनुमंत॥
भरत-बाहु-बल-सील-गुन, प्रभु-पद-प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराहत, पुनि पुनि पवनकुमार॥६०॥

उहाँरामलछिमनहिनिहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी
अर्धरातिगइकपिनहिआयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ
सकहुनदुखितदेखिमोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ
ममहितलागितजेहुपितु माता। सहेउबिपिनहिमआतप बाता
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहुनसुनिमम बचबिकलाई
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू
सुतबितनारिभवनपरिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा
असबिचारिजियजागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदरभ्राता
जथापंखबिनुखग अतिदीना। मनिबिनुफनिकरिबर करहीना
असममजिवनबंधुबिनु तोही। जौं जड़ दैव जियावै मोही
जैहउँ अवध कवन मुँह लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गवाँई
बरुअपजसुसहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छतिनाहीं
अबअपलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुरकठोरउरमोरा
निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रानअधारा

सौंपेसिमोहितुम्हहिगहि पानी। सबबिधिसुखदपरमहित जानी
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किनमोहिसिखावहुभाई
बहुबिधिसोचतसोच बिमोचन। स्रवत सलिल राजिव-दल-लोचन
उमा एक अखंड रघुराई। नरगति भगत कृपालु देखाई

सो०—प्रभुप्रलाप सुनि कान, बिकल भये बानरनिकर।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस ॥६१॥

हरषि राम भेंटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभुपरमसुजाना
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई
हृदय लाइ भेंटेउ प्रभु भ्राता। हरषे सकल भालु-कपि-ब्राता
पुनि कपि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहिबिधितबहिंताहि लै आवा
यह बृत्तांत दसासन सुनेऊ। अतिबिषादपुनिपुनि सिरधुनेऊ
ब्याकुल कुंभकरन पहिआवा। बिबिधजतनकरिताहिजगावा
जागा निसिचर देखिय कैसा। मानहुँ काल देह धरि बैसा
कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई
कथाकही सब तेहि अभिमानी। जेहि प्रकार सीता हरिआनी
तात कपिन्हसब निसिचरमारे। महा-महा-जोधा संघारे
दुर्मुख सुररिपु मनुजअहारी। भट अतिकाय अकंपनभारी
अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि सब रनधीरा

दो०—सुनि दस-कंधर-बचन तब, कुंभकरन बिलखान।
जगदंबा हरि आनि अब, सठ चाहत कल्यान ॥६२॥

भल न कीन्हतैंनिसिचर-नाहा। अबमोहिआइ जगायेहिकाहा
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना। भजहु राम होइहिकल्याना
हैं दससीस मनुज रघुनायक। जा के हनूमान से पायक
अहह बंधु तैं कीन्ह खोटाई। प्रथमहिमोहिनसुनायेहिआई
कीन्हेहु प्रभुबिरोध तेहिदेवक। सिवबिरंचि सुर जाके सेवक

नारद मुनिमोहिग्यानजोकहा । कहतेउँतोहिसमय निरबहा
अब भरिअक भेटु मोहि भाई । लोचन सुफल करौ मैं जाई
स्यामगात सरसीरुह-लोचन । देखौं जाइ ताप-त्रय-मोचन

दो०—राम-रूप-गुन सुमिरत, मगन भयउ छन एक ।
रावन माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिष अनेक ॥६३॥

महिष खाइकरिमदिरापाना । गर्जा बज्राघातसमाना
कुंभकरन दुर्मद रनरंगा । चला दुर्ग तजिसेन न संगा
देखि बिभीषनु आगे आयउ । परेउचरननिजनाम सुनायउ
अनुज उठाइ हृदय तेहि लावा । रघुपति-भगत जानि मनभावा
तात लात रावन मोहि मारा । कहत परमहित मंत्र बिचारा
तेहिगलानिरघुपतिपहिआयउँ । देखि दीन प्रभु के मन भायउँ
सुनुसुत भयउकालबस रावन । सो कि मानअबपरम सिखावन
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन । भयउ तात निसिचर-कुलभूषन
बंधुबंस तैं कीन्ह उजागर । भजेहु राम सोभा-सुख-सागर

दो०—बचन कर्म मन कपट तजि, भजेहु राम रनधीर ।
जाहु न निज पर सूझ मोहि, भयउँ कालबस बीर ॥६४॥

बंधुबचनसुनि फिरा बिभीषन । आयउ जहँ त्रैलोक-बिभूषन
नाथ भूधराकार सरीरा । कुंभकरन आवत रनधीरा
एतनाकपिन्ह सुना जब काना । किलकिलाइ धाये बलवाना
लिये उपारि बिटप अरु भूपर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर
कोटिकोटि गिरि-सिखर-प्रहारा । करहि भालु कपि एकहि बारा
मुरेउ न मन तन टरेउ न टारे । जिमि गज अर्कफलन्हिके मारे
तब मारुतसुत मुठिका हनेऊ । परेउ धरनि ब्याकुलसिरधुनेऊ
पुनि उठि तेहिमारेउ हनुमंता । घुर्मित भूतल परेउ तुरंता
पुनिनलनीलहिअवनिपछारेसि । जहँ तहँ पटकिपटकि भट डारेसि

चली बली - मुख - सेन पराई। अति-भय-त्रसित न कोउसमुहाई
दो०—अंगदादि कपि मुर्च्छित, करि समेत सुग्रीवँ।
काँख दाबि कपिराज कहँ, चला अमित-बल-सींवँ ॥६५॥
उमा करत रघुपति नरलीला। खेल गरुड़ जिमि अहिगन मीला
भृकुटि-भंग कालहि जो खाई। ताहि कि सोहइ ऐसि लराई
जगपावनि कीरति बिस्तरिहहिं। गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं
मुरुछा गइ मारुतसुत जागा। सुग्रीवहिं तब खोजन लागा
सुग्रीवहुँ कै मुरुछा बीती। निबुकि गयउ तेहि मृतकप्रतीती
काटेसि दसन नासिका काना। गरजि अकास चलेउतेहिजाना
गहेउचरनधरिधरनिपछारा। अतिलाघवउठि पुनि तेहिमारा
पुनिआयउ प्रभुपहिबलवाना। जयति जयति जय कृपानिधाना
नाक कान काटे जिय जानी। फिरा क्रोध करि भइ मनग्लानी
सहजभीमपुनिबिनु स्रुति नासा। देखत कपिदल उपजी त्रासा
दो०—जय जय जय रघुबंस-मनि, धाये कपि दै हूह।
एकहि बार तासुपर, छाड़ेन्हि गिरि-तरु-जूह ॥६६॥
कुंभकरन रनरंग बिरुद्धा। सनमुख चला काल जनु क्रुद्धा
कोटिकोटि कपिधरिधरिखाई। जनु टीडी गिरिगुहा समाई
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा। कोटिन्ह मीजि मिलवमहिमर्दा
मुख नासा स्रवनन्हिकी बाटा। निसरि पराहिं भालु-कपि-ठाटा
रन-मद-मत्त निसाचर दर्पा। बिस्व ग्रसिहिजनुएहि बिधिअर्पा
मुरे सुभटसब फिरहिन फेरे। सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे
कुंभकरन कपिफौज बिडारी। सुनि धाई रजनीचर-धारी
देखि राम बिकल कटकाई। रिपुअनीक नानाबिधि आई
दो०—सुनु सुग्रीव बिभीषन, अनुज सँभारेहु सैन।
मैं देखउँ खल-बल-दलहि, बोले राजिवनैन ॥६७॥

कर सारंग साजि कटि भाथा। अरि-दल-दलन चले रघुनाथा
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुषटकोरा। रिपुदल बधिरभयउ सुनिसोरा
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा। कालसर्प जनु चले सपच्छा
जहँ तहँ चले बिपुल नाराचा। लगे कटन भट बिकटपिसाचा
कटहिचरनउरसिर भुजदंडा। बहुतक बीर होहिं सतखंडा
घूमि घूमि घायल महि परहीं। उठि संभारि सुभटपुनि लरहीं
लागतबानजलदजिमि गाजहिं। बहुतकदेखि कठिनसरभाजहिं
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहि। धरु धरु मारु मारु धुनिगावहिं

दो०—छन महँ प्रभु के सायकन्हि, काटे बिकट पिचास।
पुनि रघुबीर निषंग महुँ, प्रबिसे सब नाराच ॥६८॥

कुंभकरन मन दीख बिचारी। हति छन माँझ निसाचर धारी
भा अति क्रुद्ध महा बलबीरा। कियो मृग-नायक-नाद गँभीरा
कोपि महीधर लेइ उपारी। डारइ जहँ मर्कटभट भारी
आवत देखि सैल प्रभु भारे। सरन्हि काटि रजसमकरिडारे
पुनिधनु तानि कोपि रघुनायक। छाँड़े अति कराल बहु सायक
तनमहुँप्रबिसिनिसरिसरजाहीं। जनुदामिनिघनमाँझ समाहीं
सोनित स्रवत सोह तन कारे। जनु कज्जलगिरि गेरुपनारे
बिकलबिलोकिभालुकपिधाये। बिहँसा जबहि निकटकपिआये

दो०—महानाद करि गर्जा, कोटि कोटि गहि कीस।
महि पटकइ गजराज इव, सपथ करइ दससीस ॥६९॥

भागे भालु-बलीमुख-जूथा। बृक बिलोकि जिमि मेषबरूथा
चलेभागि कपि भालुभवानी। बिकल पुकारत आरतबानी
यहनिसिचर दुकाल समअहई। कपिकुल देस परन अब चहई
कृपा-बारिधर राम खरारी। पाहि पाहि प्रनतारतिहारी
सकरुनबचन सुनतभगवाना। चले सुधारि सरासनबाना

राम सेन निज पाछे घाली । चले सकोप महा-बल-साली
खैंचि धनुष सरसत संधाने । छूटे तीर सरीर समाने
लागत सर धावा रिसभरा । कुधर डगमगत डोलति धरा
लीन्ह एक तेहि सैल उपाटी । रघुकुल-तिलक भुजा सोइ काटी
धावा बामबाहु गिरि धारी । प्रभु सोउ भुजा काटि महिपारी
काटें भुजा सोह खल कैसा । पच्छहीन मंदरगिरि जैसा
उग्रबिलोकनिप्रभुहिबिलोका। ग्रसन चहत मानहुँ त्रैलोका

दो०—करि चिक्कार घोर अति, धावा बदन पसारि ।
गगन सिद्ध सुर त्रासित, हा हा होति पुकारि ॥७०॥

सभयदेवकरुनानिधिजानेउ । स्रवन प्रजंत सरासनु तानेउ
बिसिखनिकरनिसिचरमुखभरेऊ। तदपि महाबलभूमि न परेऊ
सरन्हिभरामुखसनमुखधावा। कालत्रोन सजीव जनु आवा
तबप्रभु कोपितीब्रसरलीन्हा । धरतें भिन्न तासु सिर कीन्हा
सो सिरु परेउ दसानन आगें । बिकलभयउजिमि फनिमनित्यागें
धरनि धसइ धरधावप्रचंडा । तब प्रभु काटि कीन्हदुइखंडा
परेभूमि जिमि नभतें भूधर । हेठदाबि कपि भालुनिसाचर
तासु तेज प्रभु बदन समाना । सुर मुनि सबहिं अचंभौमाना
सुर दुंदुभी बजावहिंहरषहि । अस्तुतिकरहिंसुमन बहुबरषहिं
करिबिनतीसुरसकलसिधाये। तेही समय देवरिषि आये
गगनोपरिहरि-गुन-गनगाये । रुचिर बीररस प्रभुमन भाये
बेगिहतहुखल कहिमुनि गये । राम समर महि सोहत भये

छंद—संग्रामभूमि बिराज रघुपति अतुलबल कोसलधनी ।
स्रमबिंदु मुख राजीवलोचन अरुन तन सोनितकनी ॥
भुजजुगल फेरत सरसरासन भालु कपि चहुँ दिसिबने ।
कह दास तुलसी कहिन सकछबि सेषजेहि आनन घने॥

दो०–निसिचर अधम मलाकर, ताहि दीन्ह निज धाम ।
गिरिजा ते नर मंदमति, जे न भजहिं श्रीराम ॥७१॥

दिनके अंत फिरीदोउ अनी । समर भई सुभटन्ह स्रमघनी
रामकृपा कपिदल बलबाढा । जिमितृनपाइलागअति डाढ़ा
छीजहिनिसिचर दिनअरुराती । निजमुखकहेसुकृत जेहि भाँती
बहु बिलाप दसकधर करई । बधुसीस पुनि पुनि उरधरई
रोवहि नारिहृदयहतिपानी । तासु तेजबल बिपुल बखानी
मेघनाद तेहि अवसर आवा । कहिबहुकथा पितासमुझावा
देखेहु कालि मोरि मनुसाई । अबहिं बहुत का करौं बड़ाई
इष्टदेव सों बलरथ पायउँ । सोबलतात न तोहिदेखायऊँ
एहिबिधिजलपतभयउबिहाना । चहुँ दुआर लागे कपि नाना
इतकपिभालु कालसमबीरा । उतरजनीचर अति-रनधीरा
लरहिंसुभटनिजनिजजयहेतू । बरनि न जाइ समर खगकेतू

दो०–मेघनाद मायामय, रथ चढ़ि गयउ अकास ।
गर्जेउ अट्टहास करि, भइ कपिकटकहि त्रास ॥७२॥

सक्तिसूल तरवारि कृपाना । अस्त्रसस्त्र कलिसायुधनाना
डारइ परसुपरिघ पाषाना । लागेउ बृष्टि करै बहु बाना
दस दिसि रहे बान नभछाई । मानहुँ मघा मेघ झरि लाई
धरु धरुमारुसुनियधुनिकाना । जो मारइ तेहिकोउ न जाना
गहिगिरितरुअकासकपिधावहिं। देखहिंतेहिनदुखितफिरि आवहिं
अवघट घाट बाट गिरिकंदर । मायाबल कीन्हेसि सरपंजर
जाहिकहाँभये व्याकुलबंदर । सुरपति बंदि परे जनु मंदर
मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हेसिबिकलसकल बलसीला
पुनिलछिमनसुग्रीवबिभीषन ।सरन्हिमारिकीन्हेसिजर्जरतन
पुनिरघुपतिसनजूझइ लागा । सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा

ब्याल-पास-बसभयउखरारी। स्ववस अनंत एक अबिकारी
नटइवकपटचरितकर नाना। सदा स्वतंत्र एक भगवाना
रनसोभालगिप्रभुहि बँधावा। देखि दसा देवन्ह भय पावा

दो०—गिरिजा जासु नाम जपि, मुनि काटहिं भवपास।
सो कि बंध तर आवइ, ब्यापक बिस्वनिवास ॥७३॥

चरितराम के सगुन भवानी। तरकिनजाहिबुद्धि बल बानी
असबिचारि जे तग्यबिरागी। रामहिं भजहिं तर्कसब त्यागी
ब्याकुलकटककीन्हघननादा। पुनि भा प्रगट कहइ दुर्बादा
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा। सुनिकरिताहिक्रोधअतिबाढा
बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउँ तोही। लागेसि अधम पचारै मोही
असकहितरलत्रिसूलचलावा। जामवंत सो कर गहि धावा
मारेसि मेघनाद कैं छाती। पराधरनि घुर्मित सुरघाती
पुनिरिसान गहि चरनफिरावा। महि पछारि निज बलदेखरावा
बरप्रसादसो मरइ न मारा। तब गहि पद लंका पर डारा
इहाँ देवरिपि गरुड़ पठावा। रामसमीप सपदि सो आवा

दो०—खगपति सब धरि खाये, माया-नाग-बरूथ।
माया बिगत भये सब, हरषे बानरजूथ ॥
गहि गिरि पादप उपल नख, धाये कीस रिसाइ।
चले तमीचर बिकलतर, गढ़ पर चढ़े पराइ ॥७४॥

मेघमाद कै मुरछा जागी। पितहिबिलोकिलाजअति लागी
तुरत गयेउगिरि-बर-कंदरा। करौअजयमख अस मन धरा
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा। सुनहु नाथ बल अतुल उदारा
मेघनाद मख करइ अपावन। खल मायावी देवसतावन
जौं प्रभुसिद्ध होइ सो पाइहि। नाथबेगिपुनि जीति न जाइहि
सुनिरघुपतिअतिसयसुखमाना। बोले अंगदादि कपि नाना

लछिमन सग जाहुसब भाई। करहु बिधंस जग्य कर जाई
तुम्हलछिमनमारेहु रन ओही। देखिसभयसुर दुख अति मोही
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहिछीजै निसिचर मुनु भाई
जामवंत सुग्रीव बिभीषन। सेन समेत रहेउ तीनिउँ जन
जबरघुबीरदीन्हिअनुसासन। कटिनिषंगकसिसाजिसरासन
प्रभुप्रतापउर धरि रनधीरा। बोले घन इव गिरा गँभीरा
जौतेहिआजु बधे बिनु आवौं। तौ रघुपति-सेवक न कहावौं
जौ सत संकर करहि सहाई। तदपि हतउँ रघुबीर-दोहाई

दो०—रघुपति-चरन नाइ सिरु, चलेउ तुरंत अनंत।
अंगद नील मयंद नल, संग सुभट हनुमंत ॥७५॥

जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा
कीन्हकपिन्हसबजग्यबिधंसा। जब न उठइतब करहिं प्रसंसा
तदपिनउठइधरेन्हिकचजाई। लातन्हि हति हतिचले पराई
लै त्रिसूल धावा कपि भागे। आये जहँ रामानुज आगे
आवा परम क्रोध कर मारा। गर्ज घोररव बारहि बारा
कोपि मरुतसुत अंगद धाये। हतित्रिसूलउर धरनि गिराये
प्रभु कहँ छाँड़ेसि सूल प्रचडा। सर हति कृत अनंत जुग खंडा
उठिबहोरिमारुतिजुबराजा। हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा
फिरेबीररिपु मरइ न मारा। तब धावा करि घोर चिकारा
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला। लछिमन छाड़ेबिसिख कराला
देखेसि आवत पबिसमबाना। तुरत भयउ खल अंतरधाना
बिबिधबेषधरिकरइ लराई। कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई
देखि अजय रिपु डरपे कीसा। परम क्रुद्ध तब भयउ अहीसा
एहिपापिहिमै बहुतखेलावा। लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा
सुमिरि कोसलाधीस-प्रतापा। सरसंधान कीन्ह करि दापा

छाँड़ेउ बान माँझ उरलागा। मरती बार कपट सब त्यागा

दो०—रामानुज कहँ रामु कहँ, अस कहि छाँड़ेसि प्रान।
धन्य धन्य तव जननी, कह अंगद हनुमान ॥७६॥

बिनु प्रयास हनुमंत उठावा। लंका द्वार राखि तेहि आवा
तासु मरन सुनि सुर गंधर्बा। चढ़ि बिमान आय नभ सर्बा
बरषिसुमनदुंदुभीबजावहिं। श्री-रघुबीर-बिमल-जसुगावहिं
जय अनंत जय जगदाधारा। तुम्ह प्रभु सब देवन्ह निस्तारा
अस्तुतिकरिसुरसिद्धसिधाये। लछिमन कृपासिंधु पहि आये
सुतबधसुना दसानन जबहीं। मुरुछितभयउपरेउमहि तबही
मंदोदरी रुदन करि भारी। उर ताड़त बहु भाँति पुकारी
नगरलोगसबब्याकुलसोचा। सकल कहहिं दसकंधर पोचा

दो०—तब दसकंठ बिबिध बिधि, समुझाई सब नारि।
नस्वररूप जगत सब, देखहु हृदय बिचारि ॥७७॥

तिन्हहिग्यान उपदेसा रावन। आपुन मंद कथा सुभ पावन
परउपदेस कुसल बहुतेरे। जे आचरहि ते नर न घनेरे
निसासिरानिभयउ भिनुसारा। लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा
सुभट बोलाइ दसाननबोला। रनसनमुख जा कर मन डोला
सो अबहीं बरु जाउ पराई। संजुगबिमुख भये न भलाई
निज-भुज-बलमैंबयर बढ़ावा। देइहउँउतरुजोरिपुचढ़ि आवा
असकहिमरुतबेग रथ साजा। बाजे सकल जुझाऊ बाजा
चले बीर सब अतुलित बली। जनु कज्जल कै आँधी चली
असगुनअमितहोहिंतेहि काला। गनइ न भुजबल गर्ब बिसाला

छंद—अतिगर्ब गनइ न सगुनअसगुन स्रवहिं आयुधहाथ तें।
भटगिरत रथतें बाजिगज चिक्करत भागहिं साथतें॥

गोमायु गीध कराल खरस्व स्वान बोलहिं अति घने ।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने ॥
दो०—ताहि कि संपति सगुन सुभ, सपनेहु मन बिस्राम ।
भूत-द्रोह-रत मोहबस, रामबिमुख रतकाम ॥७८॥

चलेउनिमाचर-कटक अपारा । चतुरंगिनी अनी बहुधारा बिबिधभाँतिबाहन रथ जाना । बिपुल बरनपताकध्वज नाना चले मत्त गजजूथ घनेरे । प्राबिट-जलद मरुत जनु प्रेरे बरन बरन बिरदैत निकाया । समरसूर जानहि बहु माया अतिबिचित्रबाहिनीबिराजी । बीर बसंत सेन जनु साजी चलतकटकुदिगसिधुरडगही । छुभितपयोधिकुधर डगमगहीं उठी रेनु रबि गयउ छपाई । पवन थकित बसुधा अकुलाई पवननिसानघोररव बाजहि । प्रलयसमयकेघन जनु गाजहि भेरि नफीर बाज सहनाई । मारू राग सुभट सुखदाई केहरिनाद बीर सब करही । निजनिजबल पौरुष उच्चरहीं कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा हौ मारिहउँ भूप दोउ भाई । अस कहि सनमुख फौज रेंगाई यहसुधिसकलकपिन्हजबपाई । धाये करि रघुबीर-दोहाई

छंद—धाये बिसाल कराल मरकट भालु काल समान ते ।
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधरबृंद नाना बान ते ॥
नख-दसन-सैल-महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।
जय राम रावन-मत्त-गज-मृग-राज सुजस बखानहीं ॥
दो०—दुहुँदिसि जयजयकार करि, निजनिज जोरीजानि ।
भिरे बीर इत रघुपतिहिं, उत रावनहिं बखानि ॥७९॥

रावन रथी बिरथ रघुबीरा । देखि बिभीषन भयउ अधीरा अधिकप्रीति मन भा संदेहा । बदि चरन कह सहित सनेहा

नाथनरथनहि तनु पदत्राना। केहिविधिजितबबीर बलवाना
सुनहुसखा कह कृपानिधाना। जेहिजयहोइ सो स्यंदनआना
सौरजधीरजतेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका
बलविबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे
ईसभजन सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना
दानपरसुबुधि सक्तिप्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा
अमलअचलमन त्रोनसमाना। समजमनियमसिलीमुख नाना
कवच अभेद बिप्र-गुरु-पूजा। यहि समबिजयउपाय न दूजा
सखाधर्ममयअस रथ जा कें। जीतनकहँनकतहुँ रिपु ता कें

दो०—महा अजय संसाररिपु, जीति सकइ सो बीर।
जा कें अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर॥
सुनि प्रभु बचन बिभीषन, हरषि गहे पदकंज।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु, रामकृपा सुखपुज॥
उत प्रचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान।
लरतनिसाचर भालुकपि, करि निजनिज प्रभुआन॥८०॥

सुरब्रह्मादिसिद्ध मुनि नाना। देखत रन नभ चढ़े बिमाना
हमहूँ उमा रहे तेहि संगा। देखत राम-चरित-रन-रंगा
सुभटसमररसदुहुँदिसि माते। कपि जयसीलराम बल ताते
एकएकसनभिरहि प्रचारहिं। एकन्ह एक मर्दिमहि पारहिं
मारहिकाटहिधरहिपछारहि। सीसतोरिसीसन्ह सन मारहि
उदरबिदारहिभुजा उपारहिं। गहिपदअवनिपटकि भट डारहिं
निसिचरभटमहिगाड़हिभालू। ऊपर डारि देहि बहु बालू
बीर बलीमुख जुद्ध बिरुद्धे। देखिअतबिपुल काल जनुक्रुद्धे

छंद—क्रुद्धे कृतांत समान कपि तनु स्रवत सोनित राजहीं।
मर्दहिं निसाचर कटक भट बलवंत घनजिमि गाजहीं॥

मारहिं चपेटन्हि डाँटि दाँतन्ह काटि लातन्ह मीजहीं।
चिक्करहिं मरकटभालु छलबलकरहिं जेहिखलछीजहीं॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं।
प्रहलादपति जनु बिबिध तनु धरि समरअंगन खेलहीं॥
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही।
जय राम जो तृन तें कुलिस कर कुलिस तें तृन कर सही॥

दो०—निज दल बिचलत देखेसि, बीस भुजा दस चाप।
रथ चढ़ि चलेउ दसानन, फिरहु फिरहु करि दाप॥८१॥

धायेउ परम क्रुद्ध दसकंधर। सनमुख चले हूह दै बंदर गहिकरपादप उपल पहारा। डारेहि तापर एकहिं बारा लागहिं सैल बज्रतनु तासू। खंड खंड होइ फूटहिं आसू चला न अचल रहा रथ रोपी। रनदुर्मद रावन अति कोपी इतउत झपटि दपटिकपिजोधा। मर्दै लाग भयेउ अतिक्रोधा चले पराइ भालु कपि नाना। त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना पाहि पाहि रघुबीर गोसाई। यह खल खाइ काल की नाई तेहि देखे कपि सकल पराने। दसहुँ चाप सायक संधाने

छंद—संधानि धनु सरनिकर छाड़ेसि उरगजिमिउड़िलागहीं।
रहे पूरि सर धरनीगगनदिसिबिदिसिकहँकपिभागहीं।
भयो अतिकोलाहलबिकलकपिदलभालुबोलहिंआतुरे।
रघुबीर करुनासिंधु आरतबंधु जनरच्छक हरे॥

दो०—निजदल बिकल देखि कटि, कसि निषंग धनु हाथ।
लछिमनु चले सक्रुद्ध होइ, नाइ रामपद माथ॥८२॥

रे खलका मारसिकपिभालू। मोहि बिलोकु तोरमै कालू खोजत रहेउँ तोहिसुतघाती। आजु निपाति जुड़ावउँ छाती असकहिछाड़ेसि बानप्रचंडा। लछिमनकिये सकलसतखंडा

कोटिन्ह आयुध रावन डारे । तिलप्रवानकरिकाटि निवारे
पुनिनिजबानन्हकीन्हप्रहारा । स्यंदन भंजि सारथी मारा
सत सत सरमारे दसभाला । गिरिस्त्रिगन्हजनुप्रबिसहिं व्याला
सत सर पुनि माराउरमाहीं । परेउअवनितलसुधिकछुनाहीं
उठा प्रबल पुनिमुरुछाजागी । छाँड़ेसि ब्रह्म दीन्हि जोसाँगी

छंद—सो ब्रह्मदत्त प्रचंडसक्ति अनंतउर लागी सही ।
परचौबीरबिकलउठावदसमुखअतुलबलमहिमारही ॥
ब्रह्मांड भुवनबिराज जाके एक सिर जिमिरजकनी ।
तेहि चहउठावन मूढ़रावनजान नहिं त्रिभुवन-धनी ॥

दो०—देखि पवनसुत धायहु, बोलत बचन कठोर ।
आवत कपिहि हनेउ तेहि, मुष्टिप्रहार प्रघोर ॥७३॥

जानु टेकिकपि भूमिन गिरा । उठा सँभारि बहुत रिस भरा
मुठिकाएक ताहिकपिमारा । परेउ सैल जनु वज्र प्रहारा
मुरुछा गइ बहोरि सो जागा । कपिबलबिपुल सराहनलागा
धिगधिगममपौरुषधिगमोही । जौ तैं जियत उठेसिसुरद्रोही
असकहिलछिमनकहँकपिल्यायो । देखि दसानन बिस्मय पायो
कहरघुबीरसमुझुजियभ्राता । तुम्ह कृतांतभच्छकसुरत्राता
सुनतबचन उठिबैठ कृपाला । गई गगन सो सक्ति कराला
पुनि कोदंडबान गहि धाये । रिपुसनमुख अतिआतुरआये

छंद—आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन सूत हति ब्याकुल कियो ।
गिरचौ धरनि दसकंधर बिकलतर बानसत बेध्यौ हियो ॥
सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।
रघुबीर-बंधु प्रतापपुंज बहोरि प्रभुचरनन्हि नयो ॥

दो०—उहाँ दसानन जागि करि, करै लाग कछु जग्य ।
राम बिरोध बिजय चहत, सठ हठबस अतिअग्य ॥८४॥

इहाँ बिभीषन सबसुधि पाई । सपदिजाइ रघुपतिहि सुनाई
नाथ करइ रावनु एक जागा । सिद्धभयेनहि मरिहिअभागा
पठवहु देव बेगि भट बंदर । करहिं बिधंस आव दसकंधर
प्रात होत प्रभु सुभटपठाये । हनुमदादि अंगद सब धाये
कौतुक कूदि चढ़े कपिलंका । पैठे रावनभवन असंका
जग्य करत जबहीं सो देखा । सकलकपिन्हभाक्रोधबिसेखा
रनते निलजभाजि गृहआवा । इहाँ आइ बकध्यानु लगावा
असकहि अंगद मारेउलाता । चितवन सठस्वारथमनराता

छंद--नहिं चितव जब कपि कोपितबगहिदमनलातन्हमारहीं ।
धरि केस नारि किनारि बाहेर तेऽतिदीन पुकारहीं ॥
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांतसम गहि चरन बानर डारई ।
एहि बीच कपिन्ह बिधंसकृत मख देखि मन महुँ हारई ॥

दो०--मख बिधंसि कपि कुसल सब, आये रघुपति पास ।
चलेउ लंकपति क्रुद्ध होइ, त्यागि जिवन कै आस ॥८५॥

चलतहोहिअतिअसुभभयकर । बैठहि गीध उड़ाहिंसिरन्हपर
भयउकालबस काहु न माना । कहेसि बजावहु जुद्धनिसाना
चली तमीचर-अनी अपारा । बहु गज रथपदातिअसवारा
प्रभु सनमुख धाये खल कैसें । सलभसमूह अनल कहँ जैसें
इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही । दारुनबिपतिहमहिंएहि दीन्ही
अब जनि राम खेलावहु एही । अतिसय दुखित होति बैदेही
देववचन सुनि प्रभु मुसुकाना । उठि रघुबीर सुधारे बाना
जटाजूट दृढ बाँधे माथे । सोहहि सुमन बीचबिच गाँथे
अरुननयनबारिद-तनु-स्यामा । अखिल-लोक-लोचन-अभिराम
कटितटपरिकरकसेउ निषंगा । कर कोदंड कठिन सारंगा

छंद—सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि कस्यौ ।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरा-सुर-पद लस्यौ ॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सरचाप कर फेरन लगे ।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे ॥

दो०—हरषे देव बिलोकि छबि, बरषहिं सुमन अपार ।
जय जय प्रभु गुन-ग्यान-बल-धाम हरन महिभार ॥८६॥

एही बीच निसाचर-अनी। कसमसाति आई अतिघनी देखि चले सनमुख कपि भट्टा। प्रलय काल के जनु घनघट्टा बहुकृपान तरवारि चमंकहिं। जनुदसदिसिदामिनी दमंकहिं गज रथ तुरग चिकारकठोरा। गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा कपिलंगूर बिपुल नभ छाये। मनहुँ इंद्रधनु उये सुहाये उठइ धूरि मानहुँ जलधारा। बान बुंद भइ वृष्टि अपारा दुहुँदिसि पर्बत करहिं प्रहारा। बज्रपात जनु बारहिं बारा रघुपतिकोपि बानझरि लाई। घायलभे निसिचर-समुदाई लागत बान बीर चिक्करही। घुर्मि घुर्मि जहँतहँमहिपरही स्रवहिं सैल जनु निर्झरबारी। सोनित सरि कादर भयकारी

छंद—कादर भयंकर रुधिरसरिता चली परम अपावनी ।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त बहति भयावनी ॥
जलजंतु गज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन को गने ।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दो०—बीर परहिं जनु तीरतरु, मज्जा बहु बह फेन ।
कादर देखि डराहिं तेहि, सुभटन के मन चेन ॥८७॥

मज्जहिं भूत पिसाच बेताला। प्रथम महा झोटिंग कराला काक कंक लै भुजा उड़ाहीं। एक ते छीनि एक लै खाही एक कहहि ऐसिउ सौघाई। सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई

कहँरत भट घायल तट गिरे। जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे खैचहि गीध आँत तट भये। जनु बंसी खेलहि चित दये बहु भट बहहिं चढ़े खग जाही। जनुनावरि खेलहिसरिमाहीं जोगिनिभरिभरिखप्परसंचहिं। भूत-पिसाच-बधूनभ नंचहिं भट कपाल करताल बजावहिं। चामुंडा नानाबिधि गावहिं जंबुकनिकर कटक्कट कट्टहिं। खाहि हुआहि अघाहिं दपट्टहिं कोटिन्ह रुंड मुंडबिनुडोल्लहिं। सीसपरेमहिजयजयबोल्लहिं

छंद—बोलहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर बिनु धावहीं।
खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं॥
निसिचर-बरूथ बिमर्दि गरजहिं भालु कपि दर्पित भये।
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम-सर-निकरन्हि हये॥

दो०—रावन हृदय बिचारा, भा निसिचर संहार।
मैं अकेल कपि भालु बहु, माया करौं अपार॥८८॥

देवन्ह प्रभुहि पयादे देखा। उपजा उर अतिछोभ बिसेखा सुरपतिनिजरथ तुरतपठावा। हरषसहित मातलि लै आवा तेजपुंज रथ दिब्य अनूपा। हरषि चढ़े कोमल-पुर-भूपा चंचल तुरग मनोहर चारी। अजर-अमरमन-सम-गति-कारी रथारूढ़ रघुनाथहि देखी। धाये कपि बल पाइ बिसेखी सही न जाइ कपिन्ह कै मारी। तब रावन माया बिस्तारी सो माया रघुवीरहि बाँची। सब काहू मानी करि साँची देखीकपिन्ह निसाचर-अनी। अनुजसहित बहु कोसलधनी

छंद—बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे।
जनुचित्रलिखितसमेतलछिमनजहँसोतहँचितवहिं खरे॥
निजसेन चकित बिलोकि हँसि सर चापसजिकोसलधनी।
माया हरी हरि निमिष महँ हरषी सकल मरकटअनी॥

दो०—बहुरि राम सब तन चितइ, बोले बचन गँभीर ।
द्वंदजुद्ध देखहु सकल, स्रमित भये अति बीर ॥८९॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। बिप्र-चरन-पकज सिरु नावा तब लंकेस क्रोध उर छावा। गर्जत तर्जत सनमुख धावा जीतेहु जे भट संजुग माही। सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं रावन नाम जगत जस जाना। लोकप जाकें बंदीखाना खर-दूषन-कबंध तुम्ह मारा। बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा निसिचर-निकरसुभटसंहारेहु। कुंभकरन घननादहि मारेहु आजु बैरु सब लेउँ निबाही। जौ रन भूप भाजि नहि जाही आजु करउँ खलु कालहवाले। परेहु कठिन रावन के पाले सुनि दुर्बचन कालबस जाना। बिहँसि बचन कह कृपानिधाना सत्य सत्य सब तव प्रभुताई। जलपसि जनिदेखाउ मनुसाई

छंद—जनि जलपनाकरिसुजसु नासहिनीतिसुनहिकरहि छमा ।
संसार महँ पूरुष त्रिबिध पाटल-रसाल-पनस-समा ॥
एक सुमनप्रद एक सुमनफल एक फलइ केवल लागहीं ।
एककहहिं कहहिं करहिं अपरएककरहिं कहतनबागहीं ॥

दो०—रामबचन सुनि बिहँसिकह,मोहि सिखावत ग्यान ।
बयरु करत नहिं तब डरे, अब लागे प्रिय प्रान ॥९०॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर। कुलिससमान लाग छाड़ै सर नानाकार सिलीमुख धाये। दिसिअरुबिदिसिगगनमहिछाये अनलबान छाड़ेउ रघुबीरा। छन महुँ जरे निसाचर-तीरा छाड़ेसितीब्रसक्तिखिसिआई। बानसंग प्रभु फेरि पठाई कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पबारइ। बिनु प्रयास प्रभु काटिनिवारइ निफल होहि रावन सर कैसें। खल के सकल मनोरथ जैसें तब सतबान सारथी मारेसि। परेउ भूमि जय राम पुकारेसि

राम कृपा करि सूत उठावा। तब प्रभु परमक्रोध कहुँ पावा

छंद--भये क्रुद्ध जुद्धबिरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे।
कोदंडधुनि अतिचंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे॥
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे।
चिक्करहिं दिग्गजदसन गहिमहि देखिकौतुक सुरहँसे॥

दो०--तानेउ चाँप स्रवन लगि, छाँड़े बिसिख कराल।
राम-मारगन-गन चले, लहलहात जनु ब्याल॥९१॥

चले बान सपच्छजनु उरगा। प्रथमहि हतेउ सारथी तुरगा रथ बिभंजि हतिकेतुपताका। गर्जा अति अंतर बल थाका तुरतआनरथचढ़ि खिसिआना। अस्त्रसस्त्रछाँड़ेसिबिधिनाना बिफलहोहिसबउद्यम ता के। जिमिपरद्रोह-निरत-मनसाके तब रावन दस मूल चलावा। बाजिचारिमहिमारिगिरावा तुरग उठाइ कोपि रघुनायक। खैंचि सरासन छाड़े सायक रावन-सिर-सरोज-बन-चारी। चलिरघुबीरसिलीमुख धारी दस दस बान भाल दस मारे। निसरि गये चले रुधिरपनारे स्रवत रुधिर धायउबलवाना। प्रभुपुनि कृनधनु-सर-संधाना तीस तीर रघुबीर पवारे। भुजन्ह समेत सीस महि पारे काटतही पुनि भये नवीने। राम बहोरि भुजासिर छीने कटतझटितिपुनि नूतन भये। प्रभु बहु बार बाहु सिर हये पुनिपुनिप्रभुकाटतभुजसीमा। अतिकौतुकी कोसलाधीसा रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू। मानहुँ अमित केतु अरु राहू

छंद--जनु राहु केतु अनेक नभपथ स्रवत सोनित धावहीं।
रघुबीर-तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं॥
एक एक सर सिरनिकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं।
जनु कोपि दिनकर-कर-निकर जहँतहँ विधुंतुद पोहहीं॥

दो०—जिमिजिमिप्रभुहरतासुसिर,तिमितिमिहोहिं अपार ।
सेवत बिषय बिबर्ध जिमि, नित नित नूतन मार ॥९२॥

दसमुखदेखिसिरन्ह कै बाढी। बिमरा मरन भई रिस गाढ़ी गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी। धायउ दमहु मगासर तानी समरभूमि दसकंधर कोप्यो। बरषिबान रघुपति-रथतोप्यो दंड एक रथ देखि न परा। जनु निहार महँ दिनमनि दुरा हाहाकारसुरन्ह जब कीन्हा। तबप्रभुकोपिकार्मुकहिलीन्हा सरनिवारिरिपुके सिर काटे। तेदिसिबिदिसिगगनमहिपाटे काटे सिर नभमारग धावहिं। जयजयधुनिकरि भयउपजावहिं कहँलछिमनहनुमान कपीसा। कहँ रघुबीर कोसलाधीसा

छंद—कहँ राम कहि सिरनिकर धाये देखि मर्कट भजि चले ।
संधानि धनु रघुबंस-मनि हँसि सरन्ह सिर भेदे भले ॥
सिरमालिका गहि कालिका कर बृंद बृंदन्हि बहु मिलीं ।
करि रुधिरसरि मज्जन मनहुँ संग्रामबट पूजन चलीं ॥

दो०—पुनि दसकंठ क्रुद्ध ह्वै, छाँड़ी सक्ति प्रचंड ।
चली बिभीषन सनमुख, मनहुँ काल कर दंड ॥९३॥

आवतदेखि सक्ति खरधारा। प्रनतारतिहर बिरद सँभारा तुरत बिभीषन पाछे मेला। सनमुख राम सहेउ सो सेला लागि सक्तिमुरुछाकछु भई। प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई देखिबिभीषनप्रभुस्रमपायउ। गहिकरगदा क्रुद्ध होइ धायउ रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे। तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे सादर सिवकहँ सीस चढ़ाये। एक एक के कोटिन्ह पाये तेहिकारनखलअबलगिबाँचा। अब तवकालसीस पर नाँचा रामबिमुख सठ चह संपदा। अस कहिहनेसि माँझउर गदा

छंद—उर माँझ गदाप्रहार घोर कठोर लागत महि पर्‌यो ।
दसबदन सोनितस्रवत पुनि संभारि धायउ रिस भर्‌यो ॥
दोउ भिरे अतिबल मल्ल जुद्ध बिरुद्ध एक एकहि हनै ।
रघुबीर-बल-गर्बित बिभीषन घालि नहि ता कहँ गनै ॥

दो०—उमा बिभीषन रावनहिं, सनमुख चितव कि काउ ।
सिरत सो कालसमान अब, श्रीरघुबीर-प्रभाउ ॥९४॥

देखा स्रमितबिभीषन भारी । धायउ हनूमान गिरिधारी रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय माँझ तेहिमारेसि लाता ठाढ़ रहा अतिकंपित गाता । गयउ बिभीषनु जहँ जनत्राता पुनिरावनतेहि हतेउ प्रचारी । चला गगन कपि पूछ पसारी गहेसि पूछकपिसहितउड़ाना । पुनिफिरिभिरेउप्रबलहनुमाना लरतअकासजुगलसमजोधा । हनत एक एकहि करि क्रोधा सोहहिनभछलबलबहु करहीं । कज्जलगिरिसुमेरुजनु लरहीं बुधिबलनिसिचरपरइ न पारा । तब मारुतसुत प्रभु सँभारा

छंद—संभारि श्रीरघुबीर धीर प्रचारि कपि रावन हन्यौ ।
महिपर्‌त पुनिउठि लरतदेवन जुगलकहँ जयजय भन्यौ ॥
हनुमंत सकठ देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ।
रनमत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलमले ॥

दो०—तब रघुबीर प्रचारे, धाये कीस प्रचंड ।
कपिदल प्रबल देखि तेहि, कीन्ह प्रगट पाखंड ॥९५॥

अंतरधान भयउ छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका रघुपति-कटकभालुकपिजेते । जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते देखे कपिन्हअमित दससीसा । भागे भालुबिकल भट कीसा चलेबलीमुख धरहिं न धीरा । त्राहित्राहिलछिमन रघुबीरा

दहदिसिकोटिन्हधावहिंरावन। गर्जहिंघोर कठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई। जय कै आस तजहु अब भाई
सब सुर जिते एक दसकंधर। अब बहु भये तकहु गिरिकंदर
रहे बिरंचि संभु मुनि ग्यानी। तिन्ह जिन्हप्रभुमहिमाकछुजानी

छंद--जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे।
चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे॥
हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रनबाँकुरे।
मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपटभू भट अंकुरे॥

दो०--सुर बानर देखे बिकल, हँसे कोसलाधीस।
सजि सारंग एक सर, हते सकल दससीस॥९६॥

प्रभुछनमहुँमाया सब काटी। जिमिरबिउयेजाहिंतम फाटी
रावनु एकु देखि सुर हरषे। फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे। फिरे एक एकन्ह तब टेरे
प्रभुबलपाइ भालु कपि धाये। तरल तमकि संजुगमहि आये
अस्तुति करत देव तेहि देखे। भयउँ एक मैं इन्ह के लेखे
सठहु सदातुम्हमोरमरायल। असकहिकोपिगगनपथधाय॰
हाहाकार करत सुर भागे। खलहु जाहु कहँ मोरें आगे
बिकलदेखि सुर अंगद धावा। कूदिचरनगहिभूमि गिरावा

छंद--गहि भूमि पारयौ लात मारयौ बालिसुत प्रभु पहिं गयो।
संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो॥
करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधान सर बहु बरषई।
किये सकल भट घायल भयाकुल देखि निजबल हरषई॥

दो०--तब रघुपति रावन के, सीस भुजा सर चाप।
काटे बहुत बढ़े पुनि, जिमि तीरथ कर पाप॥९७॥

सिरभुजबाढ़िदेखिरिपु केरी। भालुकपिन्ह रिस भई घनेरी
मरतनमूढ़ कटेहु भुज सीसा। धाये कोपि भालु भट कीसा
बालितनयमारुतिनल नीला। बानर राज दुबिद बलसीला
बिटपमहीधरकरहिं प्रहारा। सोइगिरितरुगहिकपिन्हसो मारा
एक नखन्हरिपुबपुष बिदारी। भागिचलहिएकलातन्ह मारी
तबनलनीलसिरन्हचढ़ि गये। नखन्ह लिलार बिदारत भये
रुधिरबिलोकिसकोपमुरारी। तिन्हहिंधरनकहुँभुजा पसारी
गहेनजाहिकरन्हपर फिरहीं। जनुजुगमधुपकमलबन चरही
कोपिकूदिदोउधरेसि बहोरी। महिपटकतभजे भुजा मरोरी
पुनिसकोपदस धनुकरलीन्हे। सरन्हमारिघायल कपि कीन्हे
हनुमदादिमुरुछितकरिबंदर। पाइ प्रदोष हरष दसकंधर
मुरुछितदेखिसकलकपिबीरा। जामवंत धायउ रनधीरा
सग भालु भूधर तरु धारी। मारन लगे प्रचारि प्रचारी
भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना। गहिपदमहिपटकइभट नाना
देखिभालुपति निज-दल-घाता। कोपिमाँझउर मारेसि लाता

छंद–उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ तें महि परा।
गहि भालु बीसहु करमनहुँ कमलन्ह बसेनिसिमधुकरा।
मुरुछितबिलोकिबहोरिपदहतिभालुपति प्रभुपहिंगयो।
निसिजानि स्यंदन घालितेहितब सूतजतनु करतभयो॥

दो०–मुरुछा बिगत भालु कपि, सब आये प्रभु पास।
निसिचर सकल रावनहिं, घेरि रहे अतित्रास॥९८॥

मासपरायण, छब्बीसवाँ विस्राम

तेही निसि सीता पहिं जाई। त्रिजटा कहिसब कथा सुनाई
सिरभुजबाढ़िसुनतरिपुकेरी। सीता उर भइ त्रास घनेरी
मुखमलीन उपजी मन चिंता। त्रिजटासन बोली तब सीता

होइहिकाहकहसिकिन माता। केहिविधिमरिहिविस्व-दुख-दाता
रघुपति-सरसिरकटेहुनमरई। विधिविपरीतचरितसबकरई
मोरअभाग्य जिआवत ओही। जेहिहौंहरिपद-कमलबिछोही
जेहिकृतकपट कनकमृगझूठा। अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा
जेहिविधिमोहिदुखदुसहसहाये। लछिमनकहँ कटु बचनकहाये
रघुपति-बिरहसबिपसरभारी। तकितकिमार वार बहु मारी
ऐसेहुदुखजो राखुमम प्राना। सोइविधिताहि जिआव न आना
बहुबिधिकरतिबिलापजानकी। करिकरिसुरति कृपानिधान की
कहत्रिजटा सुनु राजकुमारी। उर सर लागत मरइ सुरारी
प्रभु ता तें उर हतइ न तेही। एहि के हृदय बसति बैदेही

छंद–एहि के हृदय बस जानकी जानकी उर मम बास है।
मम उदर भुवन अनेक लागत बान सब कर नाम है॥
सुनि बचन हरष बिषादमनअतिदेखिपुनित्रिजटाकहा।
अबमरिहिरिपुएहिबिधिसुनहि सुंदरितजहिसंसयमहा॥

दो०–काटत सिरहोइहि बिकल,छुटि जाइहि तव ध्यान।
तब रावन कहँ हृदय महँ,मरिहहिं रामु सुजान॥९९॥

असकहिबहुतभाँति समुझाई। पुनित्रिजटा निजभवन सिधाई
रामसुभाउ सुमिरि बैदेही। उपजी बिरहव्यथा अति तेही
निसिहिससिहिनिंदतिबहुभाँती। जुगसम भई न राति सिराती
करतिबिलापमनहिमनभारी। रामबिरह जानकी दुखारी
जबअतिभयउबिरहउर दाहू। फरकेउ बाम नयन अरु बाहू
सगुनबिचारिधरीमन धीरा। अबमिलिहहिकृपालरघुबीरा
इहाँ अर्धनिसि रावन जागा। निजमारथिसनखीझन लागा
सठरनभूमि छड़ायसि मोही। धिगधिगअधममंदमति तोही
तेहिपदगहिबहुबिधिसमुझावा। भोरभयेरथ चढ़ि पुनि धावा

सुनि आगमन दसानन केरा। कपिदल खरभर भयउ घनेरा
जहँ तहँ भूधर बिटपउपारी। धाये कटकटाइ भट भारी

छंद–धाये जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा।
अति कोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा॥
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावन लियो।
चहुँदिसिचपेटन्हिमारिनखन्हिबिदारितनुब्याकुलकियो॥

दो०–देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार।
अंतरहित होइ निमिष महुँ, कृत माया बिस्तार॥१००॥

तोमरछंद–जब कीन्ह तेहि पाखंड। भये प्रगट जंतु प्रचंड॥
बेताल भूत पिसाच। कर धरे धनु नाराच॥
जोगिनि गहे करबाल। एक हाथ मनुजकपाल॥
करि सद्य सोनित पान। नाचहिंकरहिंबहुगान॥
धरु मारु बोलहिं घोर। रहिपूरि धुनि चहुँओर॥
मुख बाइधावहिं खान। तब लगे कीस परान॥
जहँ जाहि मर्कट भागि। तहँबरतदेखहि आगि॥
भये बिकल बानर भालु। पुनि लाग बरषै बालु॥
जहँतहँ थकितकरिकीस। गर्जेउ बहुरि दससीस॥
लछिमन कपीससमेत। भये सकल बीर अचेत॥
हा राम हा रघुनाथ। कहिसुभटमीजहिंहाथ॥
एहि बिधिसकलबलतोरि। तेहिकीन्हकपटबहोरि॥
प्रगटीसि बिपुल हनुमान। धाये गहे पाषान॥
तिन्ह राम घेरे जाइ। चहुँदिसिबरूथ बनाइ॥
मारहु धरहु जनि जाइ। कटकटहिं पूछ उठाइ॥
दह दिसि लँगूर बिराज। तेहि मध्य कोसलराज॥

छंद–तेहि मध्य कोसलराज सुंदर स्यामतन सोभा लही।
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही॥
प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बदत जयजयजयकरी।
रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महँ मायाहरी॥
माया बिगत कपि भालुहरषे बिटपगिरिगहि सबफिरे।
सरनिकर छाड़ेराम रावन-बाहु-सिर पुनि महि गिरे॥
श्रीराम-रावन समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं।
सतसेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं॥

दो०–ता कें गुनगन कछु कहे, जड़मति तुलसीदास।
निज-पौरुष-अनुसारजिमि, मसक उड़ाहिं अकास॥
काटे सिरभुज बारबहु, मरत न भट लंकेस।
प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्ध सुर, ब्याकुल देखि कलेस॥१०१॥

काटत बढ़हि सीससमुदाई। जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई मरइनरिपुस्रमभयउ बिसेखा। राम बिभीषनतन तब देखा उमा काल मरु जा की ईछा। सोइप्रभुजन कर प्रीतिपरीछा सुनु सर्बग्य चराचरनायक। प्रनतपालसुर-मुनि-सुख-दायक नाभीकुंड सुधा बस या कें। नाथजियत रावन बल ता कें सुनत बिभीषनबचनकृपाला। हरषि गहे कर बान कराला असुभ होन लागे तब नाना। रोवहिंबहु सृगाल खर स्वाना बोलहिं खगजग-आरति-हेतू। प्रगट भये नभ जहँ तहँ केतू दसदिसिदाहहोनअतिलागा। भयउपरब बिनु रबिउपरागा मंदोदरि उर कंपति भारी। प्रतिमास्रवहिनयनमग वारी

छंद–प्रतिमा स्रवहिं पबि पात नभ अतिबात बहु डोलतिमही।
बरषहिं बलाहक रुधिरकचरज असुभ अतिसकको कही॥

उतपातअमित बिलोकि नभ सुरबिकल बोलहिंजयजये।
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भये।

दो०—खैंचि सरासन स्रवन लगि, छाड़े सर एकतीस।
रघुनायक-सायक चले, मानहुँ काल फनीस॥१०२॥

सायक एक नाभिसर सोखा। अपरलगेसिरभुज करि रोखा लै सिर बाहु चले नाराचा। सिर-भुज-हीनरुंड महि नाचा धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा। तबप्रभुसरहतिकृत जुग खंडा गर्जेउ मरत घोररव भारी। कहाँ राम रन हतौं प्रचारी डोली भूमि गिरत दसकंधर। छुभितसिंधुसरिदिग्गज भूधर धरनि परेउदोउ खंड बढ़ाई। चापि भालु-मर्कट-समुदाई मंदोदरि आगे भुज सीसा। धरिसर चले जहाँ जगदीसा प्रबिसे सब निपंग महुँ जाई। देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई तासु तेज समान प्रभुआनन। हरषे देखि संभु चतुरानन जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा। जय रघुबीर प्रबल-भुज-दंडा बरषहि सुमन देव-मुनि-बृंदा। जय कृपाल जय जयतिमुकुंदा

छंद—जय कृपाकंद मुकुंद द्वंदहरन सरन-सुख-प्रद प्रभो।
खल-दलबिदारन परमकारन कारुनीक सदा बिभो॥
सुरसुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही।
संग्रामअंगन रामअंग अनंग बहु सोभा लही।
सिर जटामुकुट प्रसून बिचबिच अति मनोहर राजहीं।
जनुनीलगिरि पर तड़ितपटलसमेत उडुगन भ्राजहीं॥
भुजदंड सरकोदंड फेरत रुधिरकन तन अति बने।
जनु रायमुनी तमाल पर बैठीं बिपुल सुख आपने॥

दो०—कृपादृष्टिकरि बृष्टि प्रभु, अभय किये सुरबृंद।
भालु कीस सब हरषे, जयसुखधाम मुकुंद॥१०३॥

पतिसिर देखत मंदोदरी। मुरुछितबिकलधरनि खसिपरी
जुबतिबृंद रोवत उठि धाई। तेहि उठाइ रावन पहि आई
पतिगतिदेखिते करहि पुकारा। छूटे कच नहिं बपुष सँभारा
उरताड़नाकरहिंबिधि नाना। रोवत करहिं प्रताप बखाना
तवबलनाथडोलनित धरनी। तेजहीन पावक ससि तरनी
सेषकमठसहिसकहिं न भारा। सोननुभूमि परेउ भरि छारा
बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रनसनमुखधर काहु न धीरा
भुजबलजितेहुकालजमसाई। आजु परेहु अनाथ की नाई
जगतबिदिततुम्हारिप्रभुताई। सुतपरिजनबलबरनि न जाई
रामबिमुखअसहाल तुम्हारा। रहानकोउ कुल रोवनिहारा
तवबसबिधिप्रपंचसब नाथा। सभयदिसिपनित नावहिं माथा
अबतवसिरभुजजंबुक खाहीं। रामबिमुखयहअनुचित नाही
कालबिवसपतिकहानमाना। अग-जग-नाथुमनुजकरि जाना

छंद–जानेउ मनुजकरि दनुज-कानन-दहन-पावक हरि स्वयं।
जेहिनमतसिव ब्रह्मादि सुर पियभजेहु नहिंकरुनामयं॥
आजन्म तें पर-द्रोह-रत पापौघमय तव तनु अयं।
तुम्हहूँ दियो निजधाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं॥

दो०–अहहनाथ रघुनाथ सम, कृपासिंधु नहिं आन।
मुनिदुर्लभ जो परमगति, तोहि दीन्हि भगवान॥१०४॥

मंदोदरीबचन सुनि काना। सुरमुनि सिद्ध सबन्हिसुखमाना
अज महेस नारद सनकादी। जे मुनिबर परमारथबादी
भरिलोचनरघुपतिहिं निहारी। प्रेममगन सब भये सुखारी
रुदनकरत देखी सब नारी। गयउ बिभीषनमन दुख भारी
बंधुदसा बिलोकिदुखकीन्हा। राम अनुज कहँ आयसु दीन्हा
लछिमन तेहिबहुबिधिसमुझायो। बहुरिबिभीषनप्रभुपहिं आयो

कृपादृष्टि प्रभुताहिबिलोका। करहुक्रियापरिहरिसबसोका
कीन्हिक्रियाप्रभुआयसुमानी। विधिवतदेसकाल जिय जानी

दो०-मंदोदरी आदि सब, देइ तिलांजलि ताहि।
भवन गईं रघुपति गुन, गन बग्नत मन माहिं ॥१०५॥

आइबिभीषनपुनिसिरु नायो। कृपासिंधु तब अनुज बोलायो
तुम्हकपीस अंगद नल नीला। जामवत मारुति नयसीला
सबमिलिजाहुबिभीषनसाथा। सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा
पिताबचन मैं नगर न आवौं। आपुसरिसकपिअनुज पठावौं
तुरतचलेकपि सुनि प्रभुबचना। कीन्ही जाइतिलक कै रचना
सादर सिंहासन बैठारी। तिलकसारिअस्तुतिअनुसारी
जोरिपानि सबहीं सिर नाये। सहितबिभीषनप्रभु पहिं आये
तबरघुबीरबोलिकपि लीन्हे। कहिप्रियबचनसुखी सब कीन्हे

छंद-किये सुखी कहि बानी सुधासम बल तुम्हारेरिपुहयो।
पायो बिभीषनराजु तिहुँपुर जस तुम्हारो नितनयो ॥
मोहिसहितसुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जे गाइहैं।
संसारसिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥

दो०-प्रभुके बचनस्रवन सुनि, नहिं अघाहिं कपिपुंज।
बारबार सिर नावहीं, गहहिं सकल पदकंज ॥१०६

पुनिप्रप्रुबोलि लियउ हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना
समाचार जानकिहिंसुनावहु। तासुकुसललैतुम्हचलि आवहु
तब हनुमंत नगर महुँ आये। सुनिनिसिचरीनिसाचर धाये
बहुप्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही। जनकसुतादिखाइ पुनि दीन्ही
दूरिहि तें प्रनाम कपिकीन्हा। रघुपति-दूत जानकी चीन्हा
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता। कुसलअनुज-कपि-सेन-समेता
सबबिधि कुसलकोसलाधीसा। मातु समर जीतेउ दससीसा

अबिचलराजुबिभीषन पावा। सुनिकपिबचनहरषउर छावा

छंद—अतिहरष मनतनपुलक लोचन सजल कहपुनिपुनि रमा।
का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपिकिमपि नहिं बानीसमा॥
सुनु मातु मैं पायउँ अखिल-जग-राजु आजु न संसयं।
रन जीति रिपुदल बंधुगत पस्यामि राममनामयं॥

दो०—सुनुसुत सदगुन सकल तव, हृदय बसहु हनुमंत।
सानुकूल कोसलपति, रहहु समेत अनंत॥१०७॥

अबसोइजतनकरहुतुम्हताता। देखौं नयन स्याम मृदुगाता तब हनुमान राम पहिं जाई। जनकसुता कै कुसल सुनाई सुनि संदेस भानु-कुल-भूषन। बोलि लियेजुबराज बिभीषन मारुतसुत के संग सिधावहु। सादर जनक सुतहिं लै आवहु तुरतहिंसकलगये जहँ सीता। सेवहिंसब निसिचरी बिनीता बेगिबिभीषनतिन्हहिंसिखावा। सादरतिन्हसीतहिं अन्हवावा बहु प्रकार भूषन पहिराये। सिबिकारुचिरसाजिपुनि ल्याये ता पर हरषि चढ़ी बैदेही। सुमिरि राम सुखधाम सनेही बेतपानि रच्छक चहुँ पासा। चले सकल मन परम हुलासा देखन भालु कीस सब आये। रच्छक कोपि निवारन धाये कह रघुबीरकहामम मानहु। सीतहिं सखा पयादें आनहु देखहिं कपि जननी की नाईं। बिहँसि कहा रघुनाथ गुसाईं सुनिप्रभुबचनभालुकपिहरषे। नभतें सुरन्ह सुमन बहु बरषे सीता प्रथम अनल महुँराखी। प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी

दो०—तेहि कारन करुनानिधि, कहे कछुक दुर्बाद।
सुनत जातुधानी सब, लागीं करै बिषाद॥१०८॥

प्रभुकेबचनसीस धरि सीता। बोली मन-क्रम-बचन-पुनीता लछिमन होहु धरम कै नेगी। पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी

सुनि लछिमन सीताकैबानी। बिरह-बिबेक-धरम-जुति-सानी
लोचन सजलजोरि करदोऊ। प्रभुसनकछुकहिसकत न ओऊ
देखि रामरुख लछिमन धाये। पावक प्रगटि काठ बहु लाये
पावक प्रबल देखि बैदेही। हृदय हरष कछु भय नहितेही
जौमनबचक्रममउर माही। तजि रघुबीर आन गति नाहीं
तौ कृसानुसबकै गति जाना। मो कहँ होहु श्रीखंड समाना

छंद—श्रीखंड-सम पावक प्रबेस कियो सुमिरि प्रभुमैथिली।
जय कोसलेस महेस-बंदित-चरन रति अतिनिर्मली।
प्रतिबिंब अरु लौकिककलंक प्रचंड पावक महुँ जरे।
प्रभुचरित काहु न लखे सुर नभ सिद्ध मुनि देखहिं खरे॥
धरि रूपपावकपानिगहि श्रीसत्यस्रुतिजग बिदितजो।
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहिं समर्पी आनि सो।
सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अतिसोभा भली।
नवनील-नीरज निकट मानहुँ कनक-पंकज की कली।

दो०—बरषहिं सुमन हरषि सुर, बाजहिं गगन निसान।
गावहिं किन्नर सुरबधू, नाचहिं चढ़ी बिमान॥
श्री-जानकी-समेत प्रभु, सोभा अमित अपार।
देखत हरषे भालु कपि, जय रघुपति सुखसार॥१०९॥

तबरघुपति-अनुसासन पाई। मातलि चलेउ चरनसिरु नाई
आये देव सदा स्वारथी। बचन कहहिं जनु परमारथी
दीनबंधु दयाल रघुराया। देव कीन्ह देवन्ह पर दाया
बिस्व-द्रोह-रतयहखलकामी। निजअघगयउ कुमारगगामी
तुम्ह सम रूप ब्रह्मअबिनासी। सदा एक रस सहज उदासी
अकलअगुनअघअनघअनामय। अजितअमोघसक्तिकरुनामय

मीन कमठ सूकर नरहरी। बामन परसुराम बपु धरी
जबजबनाथसुरन्हदुख पावा। नानातनु धरि तुम्हहि नसावा
रावन पापमूल सुरद्रोही। काम-लोभ-मदरत अतिकोही
सोउकृपालतवधामसिधावा। यह हमरे मन बिसमय आवा
हम देवता परम अधिकारी। स्वारथरततवभगति बिसारी
भवप्रवाह संतत हम परे। अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे
दो०—करि बिनती सुर सिद्धसब, रहे जहँ तहँ कर जोरि।
अतिसय प्रेम सरोज-भव, अस्तुति करत बहोरि ॥११०॥
छंद तोटक—जयरामसदासुखधामहरे रघुनायकसायक-चापधरे।
भव-बारन-दारन सिंह प्रभो। गुनसागर नागर नाथ बिभो।
तन काम अनेक अनूप छबी। गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी॥
जसु पावन रावन नाग महा। खगनाथजथाकरि कोप गहा।
जनरंजन भंजन सोक भयं। गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं॥
अवतार उदार अपारगुनं। महि-भार-बिभंजन ग्यानघनं।
अज ब्यापकमेकमनादि सदा। करुनाकर राम नमामि मुदा॥
रघु-बंस-बिभूषन दूषनहा। कृत भूप बिभीषन दीन रहा।
गुन-ग्यान-निधानअमान अजं। नितरामनमामिबिभुं बिरजं॥
भुज-दंड-प्रचंड-प्रताप-बलं। खल-बृंद-निकंद-महा-कुसलं।
बिनु कारन दीनदयाल हितं। छबि धामनमामिरमासहितं॥
भवतारन कारन काजपरं। मन-संभव-दारुन-दोष-हरं।
सर चाप मनोहर त्रोनधरं। जल-जारुन-लोचन भूपबरं॥
सुखमंदिर सुंदर श्रीरमनं। मद मार मुधा-ममता-समनं।
अनवद्य अखंड न गोचर गो। सबरूप सदा सब होइ न सो॥
इत बेद बदंति न दंतकथा। रबिआतपभिन्न न भिन्नजथा।
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए। निरखंत तवानन सादर जे॥

धिगजीवन देव सरीर हरे। तवभक्तिबिना भव भूलि परे।
अब दीनदयाल दया करिये। मति मोरि बिभेदकरी हरिये॥
जेहि तें बिपरीत क्रिया करिये। दुखसोसुखमानि सुखी चरिये।
खलखंडन मंडन रम्य छमा। पद-पंक-जसेवित संभु उमा॥
नृपनायक दे बरदानमिदं। चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं।
दो०—बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अति गात।
सोभा सिंधु बिलोकत, लोचन नहीं अघात॥१११॥

तेहि अवसर दसरथ तहँआये। तनयबिलोकिनयन जल छाये
अनुजसहितप्रभु बंदन कीन्हा। आसिर्बाद पिता तब दीन्हा
तात सकल तव पुन्यप्रभाऊ। जीतेउँ अजय निसा-चर-राऊ
सुनिसुतबचनप्रीतिअतिबाढ़ी। नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना। चितइपितहिंदीन्हेउदृढ़ग्याना
ता तें उमामोच्छ नहि पावा। दसरथ भेदभगति मन लावा
सगुनोपासक मोच्छ न लेही। तिन्हकहँरामुभगति निजदेहीं
बार बार करिप्रभुहिप्रनामा। दसरथ हरषि गये सुरधामा
दो०—अनुज-जानकी-सहित प्रभु, कुसल कोसलाधीस।
सोभा देखि हरषि मन, अस्तुति कर सुरईस॥११२॥

छंद तोमर—जय राम सोभाधाम। दायक प्रनत बिस्राम॥
धृत त्रोन बर सर चाप। भुज दंड प्रबल प्रताप॥
जय दूषनारि खरारि। मर्दन-निसा-चर-धारि॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भये देव सकलसनाथ॥
जय हरन धरनाभार। महिमा उदार अपार॥
जय रावनारि कृपाल। कियेजातुधानबिहाल॥
लंकेस अति बल गर्ब। किये बस्य सुर गंधर्ब॥

मुनि सिद्ध खग नर नाग। हठिपंथ सबके लाग॥
पर-द्रोह-रत अतिदुष्ट। पायो सो फलपापिष्ट॥
अब सुनहु दीनदयाल। राजीव-नयन-विसाल॥
मोहिरहाअतिअभिमान। नहिं कोउमोहिसमान॥
अब देखि प्रभु-पद-कंज। गत मानप्रद दुखपुंज॥
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव। अव्यक्तजेहिस्रुतिगाव॥
मोहि भाव कोसलभूप। श्रीराम सगुनसरूप॥
बैदेहि-अनुज-समेत। मम हृदय करहुनिकेत॥
मोहि जानिय निजदास। दे भगति रमानिवास॥

छंद—दे भक्तिरमानिवास त्रासहरन सरन-सुख-दायकं।
सुखधाम राम नमामि काम अनेकछबि रघुनायकं॥
सुर-बृंद-रंजन द्वंदभंजन मनुजतनु अतुलितबलं।
ब्रह्मादि-संकर-सेव्य राम नमामि करुनाकोमलं॥

दो०—अब करि कृपा बिलोकि मोहि, आयसु देहु कृपाल।
काह करौं सुनि प्रिय बचन, बोले दीनदयाल॥११२॥

सुनु सुरपतिकपि भालु हमारे। परे भूमि निसिचरन्ह जे मारे
ममहितलागि तजेइन्ह प्राना। सकल जियाउ सुरेस सुजाना
सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी। अतिअगाधजानहिमुनिग्यानी
प्रभु सकत्रिभुवनमारिजियाई। केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई
सुधाबरषिकपि भालुजियाये। हरषि उठे सब प्रभु पहि आये
सुधा बृष्टि भइ दुहुँदल ऊपर। जियेभालुकपि नहिरजनीचर
रामाकार भये तिन्ह के मन। मुक्त भये छूटे भवबंधन
सुरअंसकसबकपिअरु रीछा। जिये सकल रघुपति की ईछा
रामसरिसकोदीन-हितकारी। कीन्हे मुक्त निसाचर-झारी

खल मलधामकामरतरावन। गति पाई जो मुनिबर पावन

दो०—सुमन बरषि सब सुर चले, चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान।
देखि सुअवसर राम पहिं, आये संभु सुजान॥
परमप्रीति कर जोरि जुग, नलिननयन भरि बारि।
पुलकिततन गदगदगिरा, बिनयकरत त्रिपुरारि॥११४॥

छंद—मामभिरक्षयरघुकुल-नायक। धृत-बर-चापरुचिर-कर-सायक
मोह महा घनपटल प्रभंजय। संसय-बिपिन-अनल सुररंजन
सगुन अगुन गुनमंदिर सुंदर। भ्रम-तम-प्रबल-प्रताप दिवाकर
काम-क्रोध-मद-गज-पंचानन। बसहु निरंतर जन-मन-कानन
बिषय मनोरथ-पुंज-कंज-बन। प्रबलतुषार उदार पार मन
भव-बारिधि-मंदर परमं दर। बारय तारय संसृति दुस्तर
स्यामगात राजीवबिलोचन। दीनबंधु प्रनतारतिमोचन
अनुज-जानकी-सहित निरंतर। बसहु राम नृप मम उर अंतर
मुनिरंजन महि-मंडल-मंडन। तुलसि-दास-प्रभु त्रासबिखंडन

दो०—नाथ जबहिं कोसलपुरी, होइहि तिलकु तुम्हार।
कृपासिंधु मैं आउब, देखन चरित उदार॥११५॥

करिबिनतीजब संभु सिधाये। तब प्रभु निकट बिभीषनआये
नाइचरनसिर कह मृदुबानी। बिनय सुनहु प्रभु सारँगपानी
सकुलसदन प्रभु रावनमारा। पावनजसु त्रिभुवन बिस्तारा
दीन मलीन हीनमति जाती। मोपर कृपा कीन्हि बहु भाँती
अब जनगृह पुनीत प्रभु कीजै। मज्जनकरिय समरस्रमछीजै
देखि कोस मंदिर संपदा। देहु कृपाल कपिन्ह कहँ मुदा
सबबिधिनाथमोहिअपनाइय। पुनि मोहिसहित अवधपुरजाइय
सुनत बचन मृदु दीनदयाला। सजलभये दोउ नयनबिसाला

दो०—तोर कोस गृह मोर सब, सत्य बचन सुनु भ्रात ।
दसा भरत सुमिरत मोहि, निमिष कल्पसम जात ॥
तापस बेष गात कृस, जपत निरंतर मोहि ।
देखौं बेगि सो जतन करु, सखा निहोरउँ तोहि ॥
बीते अवधि जाउँ जौं, जियत न पावउँ बीर ।
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु, पुनि पुनि पुलक सरीर ॥
करेहु कल्प भरि राज तुम्ह, मोहि सुमिरेहु मन माहिं ।
पुनि मम धाम पाइहहु, जहाँ संत सब जाहिं ॥११६॥

सुनत बिभीषन बचन रामके । हरषि गहे पद कृपाधाम के
बानर भालु सकल हरषाने । गहिप्रभुपद गुन बिमलबखाने
बहुरिबिभीषनभवनसिधावा । मनि-गन-बसनबिमानभरावा
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा । हँसिकरि कृपासिंधुतबभाखा
चढ़िबिमानसुनुसखा बिभीषन । गगन जाइ बरषहु पट भूषन
नभपरजाइ बिभीषन तबही । बरषि दिये मनि अंबर सबही
जोइजोइमनभवाइमोइलेही । मनिमुख मेलिडारिकपिदेही
हँसे राम श्री-अनुज-समेता । परमकौतुकी कृपानिकेता

दो०—मुनि जेहि ध्यान न पावहिं, नेति नेति कह बेद ।
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन, करत अनेक बिनोद ॥
उमा जोग जप दान तप, नाना ब्रत मख नेम ।
रामकृपा नहिं करहिं तसि, जसि निस्केवल प्रेम ॥११७॥

चौ०-भालुकपिन्हपटभूषनपाये। पहिरिपहिरिरघुपतिपहि आये
नानाजिनिसदेखिप्रभुकीसा । पुनि पुनिहँसत कोसलाधीसा
चितइसबन्हपरकीन्हीदाया । बोले मृदुल बचन रघुराया
तुम्हरे बल मैं रावन मारा । तिलकबिभीषनकहुँपुनि सारा

निज-निज गृहअबतुम्हसबजाहू। सुमिरेहुमोहिडरपेहुजनिकाहू
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर। जोरि पानि बोले सब सादर
प्रभुजोइकहहुतुम्हहिसबसोहा। हमरे होत बचन सुनि मोहा
दीन जानिकपिकिये सनाथा। तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा
सुनिप्रभुबचनलाजहममरहीं। मसककतहुँखगपति-हितकरहीं
देखि रामरुख बानर रीछा। प्रेममगन नहिं गृह कै ईछा

दो०–प्रभुप्रेरित कपि भालु सब, रामरूप उर राखि।
हरष बिषाद सहित चले, बिनयबिबिधबिधिभाषि॥
कपिपति नील रीछपति, अंगद नल हनुमान।
सहित बिभिषन अपर जे, जूथप कपि बलवान॥
कहि न सकहिं कछुप्रेमबस, भरिभरिलोचनबारि।
सनमुख चितवहिं रामतन, नयननिमेष निवारि॥११८।

चौ०-अतिसय प्रीति देखिरघुराई। लीन्हे सकल बिमान चढाई।
मनमहुँबिप्रचरनसिरु नावा। उत्तरदिसिहिंबिमान चलावा
चलतबिमान कोलाहलहोई। जय रघुबीर कहहिं सब कोई
सिंहासनु अतिउच्च मनोहर। श्रीसमेत प्रभु बैठे ता पर
राजत रामसहित भामिनी। मेरुसृंग जनु घनु दामिनी
रुचिरबिमानचलेउअतिआतुर। कीन्ही सुमनबृष्टि हरषे सुर
परम-सुख-दचलित्रिबिधबयारी। सागर सर सरि निर्मलबारी
सगुन होहिं सुदरचहुँपासा। मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा
कह रघुबीर देखु रन सीता। लछिमन इहाँ हतेउ इँद्रजीता
हनूमान अंगद के मारे। रन महि परे निसाचर भारे
कुंभकरन रावन दोउ भाई। इहाँ हते सुर-मुनि-दुखदाई

दो०–इहाँ सेतु बाँधेउँ अरु, थापेउँ सिव सुखधाम।
सीतासहित कृपानिधि, संभुहि कीन्ह प्रनाम॥

जहँ जहँ करुनासिंधुबन, कीन्ह बास बिस्राम ।
सकल देखाये जानकिहिं, कहे सबन्हि के नाम ॥११९॥

चौ०-सपदिबिमानतहाँचलिआवा । दडकबन जहँ परम सुहावा कुभजादि मुनिनायक नाना । गये राम सब के अस्थाना सकलरिषिन्हसनपाइअसीसा। चित्रकूट आयउ जगदीसा तहँ करिमुनिन्हकेरसंतोखा । चला बिमान तहाँ ते चोखा बहुरि रामजानकिहिदेखाई ।जमुना कलि-मलहरनि सुहाई पुनि देख सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रनाम करु सीता तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । देखत जनम-कोटिअघभागा देखु परमपावनि पुनि बेनी । हरनिसोक हरिलोक-निसेनी पुनिदेखुअवधपुरीअतिपावनि।त्रिबिध-तापभवरोगनसावनि

दो०-सीतासहित अवध कहँ, कीन्हकृपाल प्रनाम ।
सजल नयनतन पुलकित, पुनि पुनि हरषत राम ॥
बहुरि त्रिबेनी आइ प्रभु, हर्षित मज्जनु कीन्ह ।
कपिन्हसहितबिप्रन्हकहँ, दानबिबिधबिधिदीन्ह ॥१२०॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटुरूप अवधपुर जाई भरतहिकुसलहमारिसुनायहु। समाचार लै तुम्ह चलिआयहु तुरत पवनसुत गवनतभयऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहि गयऊ नाना बिधि मुनिपूजाकीन्ही । अस्तुतिकरिपुनिआसिष दीन्ही मुनिपदबदिजुगल करजोरी । चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी इहाँ निषाद सुना हरि आये । नाव नाव कहँ लोग बोलाये सुरसरिनाँघिजानजब आवा । उतरेउ तट प्रभुआयसु पावा तब सीता पूजी सुरसरी । बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी दीन्हि असीसहरषिमन गगा । सुदरि तव अहिवात अभंगा सुनत गुहा धायेउ प्रेमाकुल । आयउ निकट परम-सुख-संकुल

प्रभुहि सहितबिलोकिबैदेही। परेउ अवनितनसुधिनहिं तेही
प्रीति परमबिलोकिरघुराई। हरषि उठाइ लियो उर लाई

छंद–लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राय रमापती।
बैठारि परमसमीप बूझी कुसल सो कर बीनती॥
अबकुसलपदपंकज बिलोकिबिरंचि-संकर-सेव्य जे।
सुखधाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते॥
सब भाँतिअधमनिषादसोहरिभरतज्योंउरलाइयो।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोहबसबिसराइयो॥
यह रावनारिचरित्र पावन राम-पद-रति-प्रदसदा।
कामादिहर बिग्यानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा।

दो०–समर बिजय रघुबीर के, चरित जे सुनहिं सुजान।
बिजय बिबेकबिभूतिनित,तिन्हहिदेहि भगवान॥
यह कलिकाल मलायतन, मनकरि देखु बिचार।
श्रीरघुनाथ नाम तजि, नाहिन आन अधार॥१२१॥

मासपरायण, सत्ताईसवाँ विश्राम

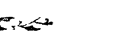

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानसम्पादनो नाम
षष्ठः सोपानः समाप्तः।

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामचरितमानस

उत्तरकाण्ड

श्लोकाः

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥१॥
कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ॥२॥
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥३॥

दो०—रहा एक दिन अवधि कर, अति आरत पुरलोग ।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर, कृसतन रामबियोग ॥
सगुन होहिं सुंदर सकल, मन प्रसन्न सब केर ।
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँ फेर ॥
कौसल्यादि मातु सब, मन अनंद अस होइ ।
आयउ प्रभु सिय-अनुज-युत कहन चहत अब कोइ ॥
भरत-नयन-भुज दच्छिन, फरकत बारहिं बार ।
जानि सगुन मन हरष अति, लागे करन बिचार ॥१॥

रहेउएकदिन अवधिअधारा। समुझत मनदुख भयउअपारा
कारनकवन नाथ नहिं आये। जानिकुटिलकिधौं मोहिबिसराये
अहह धन्यलछिमनबड़भागी। राम - पदारबिंदु - अनुरागी
कपटीकुटिलमोहिप्रभु चीन्हा। ता तें नाथ संग नहिं लीन्हा
जौं करनीसमुझहिंप्रभुमोरी। नहिंनिस्तार कलपसत कोरी
जनअवगुनप्रभुमान न काऊ। दीनबंधु अतिमृदुल सुभाऊ
मोरे जिय भरोस दृढ सोई। मिलिहहिं राम सगुनसुभ होई
बीतेअवधि रहहिं जौ प्राना। अधम कवनजग मोहि समाना

दो०—राम-बिरह-सागर महँ, भरत मगन मन होत।
बिप्ररूप धरि पवनसुत, आइ गयउ जनु पोत॥
बैठे देखि कुसासन, जटामुकुट कृसगात।
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात॥१॥

देखत हनूमान अति हरषेउ। पुलकगात लोचनजल बरषेउ
मनमहँबहुतभाँतिसुख मानी। बोलेउ स्रवन-सुधा-सम बानी
जासुबिरहसोचहु दिन राती। रटहु निरंतर गुन-गन-पाँती
रघु-कुल-तिलक-सु-जन-सुख-दाता। आयउ कुसल देव-मुनि-त्राता
रिपुरनजीतिसुजससुरगावत। सीता अनुज सहित प्रभुआवत
सुनत बचन बिसरे सब दूखा। तृषावंत जिमि पाइ पियूषा
को तुम्ह तात कहाँ तें आये। मोहि परम प्रिय बचन सुनाये
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना। नाम मोर सुनु कृपानिधाना
दीनबंधु रघुपति कर किंकर। सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर
मिलतप्रेमनहि हृदय समाता। नयनस्रवतजलपुलकित गाता
कपि तव दरससकलदुखबीते। मिले आजु मोहि राम पिरीते
बार बार बूझी कुसलाता। तो कहँ देउँ काह सुनु भ्राता
एहि संदेससरिस जग माहीं। करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं

नाहिन तात उरिन मैं तोही। अब प्रभुचरित सुनावहु मोही
तब हनुमंत नाइ पद माथा। कहेसकलरघु-पति-गुन-गाथा
कहुकपिबहुँ कृपाल गुसाई। सुमिरहि मोहि दास की नाई

छंद—हिजदासज्योंरघु-बंस-भूषनकबहुँमम सुमिरन कऱ्यो।
सुनिभरतबचनाबिनीतअतिकपिपुलकितनचग्नन्हिपऱ्यो॥
रघुबीरनिजमुखजासुगुनगनकहतअग-जग-नाथ जो।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सद-गुन-सिंधु सो॥

दो०—राम-प्रान-प्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात।
पुनि पुनि मिलतभरतसुनि, हरष न हृदय समात॥

सो०—भरतचग्न सिरु नाइ, तुरित गयउ कपि राम पहिं।
कही कुसल सब जाइ, हरषि चले प्रभु जान चढ़ि॥२॥

हरषि भरतकोसलपुर आये। समाचार सब गुरुहिं सुनाये
पुनि मंदिर महुँ बात जनाई। आवत नगर कुसल रघुराई
सुनत सकल जननीउठि धाई। कहिप्रभुकुसलभरत समुझाई
समाचार पुरबासिन्ह पाये। नर अरु नारि हरषि सब धाये
दधि दुर्बा रोचन फल फूला। नव तुलसीदल मंगल मूला
भरि भरि हेमथार भामिनी। गावत चली सिंधुर गामिनी
जोजैसेहितैसेहि उठि धावहिं। बाल बृद्ध कहुँ संग न लावहिं
एक एकन्ह कहुँ बूझहिं भाई। तुम्ह देखे दयाल रघुराई
अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी
बहइ सुहावनत्रिबिधसमीरा। भइ सरजू अति-निर्मलनीरा

दो०—हरषित गुरु परिजन अनुज, भू-सुर-बृंद-समेत।
चलेभरत अतिप्रेम मन, सनमुख कृपानिकेत॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन बिमान।
देखि मधुर सुर हरषित, करहिं सुमंगल गान॥

राकासमि रघुपति पुर, सिंधु देखि हरषान।
बढ़ेउ कोलाहलु करत जनु, नारि-तरंग-समान ॥३॥

इहाँ भानु-कुल-कमल-दिवा-कर। कपिन्ह देखावत नगर मनोहर
सुनु कपीस अगद लंकेसा। पावन पुरी रुचिर यह देसा
जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद-पुरान-बिदित जगजाना
अवधमर्म्मसप्रियमोहिनसोऊ। यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ
जनमभूमि ममपुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजूपावनि
जा मज्जनते बिनहि प्रयासा। मम समीप नर पावहिबासा
अतिप्रिय मोहि इहाँके बासी। मम धामदा पुरी सुखरासी
हरषे सबकपिसुनिप्रभुबानी। धन्य अवध जो रामबखानी

दोहा—आवति देखि लोग सब, कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ, उतरेउ भूमि बिमान॥
उतरि कहेउप्रभु पुष्पकहिं, तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो, हरष बिरहु अति ताहु॥ ४॥

आये भरत संग सब लोगा। कृसतनश्रीरघुबीर बियोगा
बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक। देखे प्रभु महिधरि धनुसायक
धाइ धरे गुरु-चरन-सरोरुह। अनुजसहितअति-पुलकतनोरुह
भेंटि कुसल बूझी मुनिराया। हमरे कुसल तुम्हारिहिदाया
सकलद्विजन्हमिलिनायउमाथा। धरम-धुरंधर रघुकुलनाथा
गहेभरत पुनि प्रभु-पद-पंकज। नमतजिन्हहिसुरमुनि संकरअज
परे भूमि नहि उठत उठाये। बर करि कृपासिंधु उरलाये
स्यामलगात रोम भये ठाढ़े। नव-राजीव-नयन जल बाढ़े

छंद—राजीवलोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी।
अतिप्रेम हृदयलगाइ अनुजहिं मिले प्रभु त्रिभुवनधनी॥

प्रभु मिलत अनुजहिं सोह मो पहिजाति नहिं उपमाकही।
जनुप्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुखमा लही ॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहिं बचन बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुख बचनमनतें भिन्नजान जो पावई॥
अब कुसल कोसलनाथ आरतजानि जन दरसन दियो।
बूड़त बिरहबारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो॥

दोहा–पुनि प्रभु हरषित सत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ।
लछिमन भरत मिले तब, परम प्रेम दोउ भाइ ॥५॥

भरतानुज लछिमन पुनिभेटे। दुसह बिरहसंभव दुख मेटे सीताचरन भरत सिरु नावा। अनुज समेत परमसुख पावा प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी। जनितबियोगबिपतिसबनासी प्रेमातुर सब लोग निहारी। कौतुक कीन्ह कृपालखरारी अमित रूप प्रगटेतेहि काला। जथाजोग मिलेसबहि कृपाला कृपादृष्टिरघुबीर बिलोकी। किये सकल नर नारि बिसोकी छनमहुँ सबहि मिलेभगवाना। उमा मरम यह काहु न जाना एहिबिधिसबहिसुखीकरिरामा। आगे चले सील-गुन-धामा कौसल्यादि मातु सब धाईं। निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई

छंद–जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गईं।
दिनअंत पुरु रुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं॥
अतिप्रेम प्रभु सब मातु भेंटी बचन मृदु बहु बिधि कहे।
गइ बिषम बिपतिबियोगभव तिन्हहरष सुखअगनितलहे॥

दो०–भेंटेउ तनय सुमित्रा, राम-चरन-रति जानि।
रामहिं मिलत कैकई, हृदय बहुत सकुचानि॥

लछिमन सब मातन्ह मिलि, हरषे आसिष पाइ ।
कैकेई कहँ पुनि मिले, मन कर छोभ न जाइ ॥ ६ ॥

सासुन्ह सबन्ह मिली बैदेही । चरनन्हिलागि हरषअतितेही
देहि असीस बूझि कुसलाता । होहु अचलतुम्हार अहिवाता
सब रघुपति-मुख-कमल बिलोकहि । मंगलजानि नयनजल रोकहि
कनकथार आरती उतारहि । बार बार प्रभुगात निहारहि
नानाभाँति निछावरिकरहीं । परमानंद हरष उर भरहीं
कौसल्यापुनिपुनि रघुबीरहि । चितवतिकृपासिंधु रनधीरहि
हृदयबिचारतिबारहि बारा । कवन भाँति लंकापति मारा
अतिसुकुमार जुगुलमेरेबारे । निसिचर सुभट महाबल भारे

दो०—लछिमन अरु सीतासहित, प्रभुहिं बिलोकति मात ।
परमानंद-मगन-मन, पुनि पुनि पुलकितगात ॥७॥

लंकापति कपीस नलनीला । जामवंत अंगद सुभसीला
हनुमदादि सब बानरबीरा । धरे मनोहर मनुजसरीरा
भरत सनेह सील ब्रत नेमा । सादर सब बरनहिं अतिप्रेमा
देखि नगरबासिन्ह कै रीती । सकल सराहहिंप्रभु-पद-प्रीती
पुनिरघुपतिसबसखाबोलाये । मुनिपदलागहु सकल सिखाये
गुरु बसिष्ठ कुल पूज्य हमारे । इन्ह की कृपा दनुज रन मारे
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे । भये समरसागर कहँ बेरे
ममहितलागिजनम इन्हहारे । भरतहुँतें मोहिअधिक पियारे
सुनि प्रभुबचन मगन सबभये । निमिषनिमिषउपजत सुखनये

दो०—कौसल्या के चरनन्हि, पुनि तिन्ह नायउ माथ ।
आसिष दीन्ही हरषि तुम्ह, प्रिय मम जिय रघुनाथ ॥
सुमनबृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकंद ।
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं, नगर नारि-नर-बृंद ॥८॥

कंचनकलस बिचित्र सँवारे। सबहिंधरे सजि निजनिजद्वारे
बदनवार पताका केतू। सबन्हि बनाये मंगलहेतू
बीथी सकल सुगंध सिंचाई। गजमनि रचि बहु चौकपुराई
नाना भाँति सुमंगल साजे। हरषि नगर निसानबहु बाजे
जहँतहँनारिनिछावरि करहीं। देहिं असीस हरष उर भरहीं
कंचनथार आरती नाना। जुवती सजे करहिं सुभ गाना
करहिं आरती आरतिहर कै। रघुकुल-कमल-बिपिन-दिनकरके
पुरसोभा संपति कल्याना। निगम सेष सारदा बखाना
तेउयहचरित देखिठगि रहहीं। उमातासुगुननरकिमि कहहीं

दो०—नारि कुमुदिनी अवध सर, रघुपतिबिरह दिनेस।
अस्त भये बिगसत भईं, निरखि राम राकेस॥
होंहि सगुन सुभ बिबिधबिधि, बाजहिं गगन निसान।
पुर-नर-नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान॥९॥

प्रभु जानी कैकई लजानी। प्रथम तासु गृह गये भवानी
ताहिप्रबोध बहुतसुख दीन्हा। पुनिनिजभवनगवँनहरिकीन्हा
कृपासिंधु जब मंदिर गये। पुर-नर-नारि सुखी सब भये
गुरुबसिष्ठ द्विजलिये बोलाई। आजु सुघरी सुदिन सुभदाई
सबद्विजदेहुहरषि अनुसासन। रामचन्द्र बैठहि सिंहासन
मुनि बसिष्ठ के बचन सुहाये। सुनत सकलबिप्रन्हअति भाये
कहहिंबचनमृदु बिप्र अनेका। जगअभिराम रामअभिषेका
अब मुनिबरबिलंबुनहिंकीजै। महाराज कहुँ तिलक करीजै

दो०—तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन, सुनत चलेउ हरषाइ।
रथ अनेक बहु बाजि गज, तुरत सँवारेउ जाइ॥
जहँ तहँ धावन पठइ पुनि, मंगल द्रब्य मँगाइ।
हरष समेत बसिष्ठपद, पुनि सिरु नायेउ आइ॥१०॥

अवधपुरीअतिरुचिर बनाई। देवन्ह सुमनबृष्टि झरि लाई
राम कहा सेवकन्ह बोलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई
सुनत बचन जहँनहँ जनधाये। सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये
पुनिकरुनानिधिभरत हँकारे। निज कर राम जटा निरुवारे
अन्हवाये प्रभु तीनिउँ भाई। भगतबछल कृपाल रघुराई
भरतभाग्यप्रभु-कोमल-ताई। सेष कोटि सत सकहिं न गाई
पुनि निजजटा राम बिबराये। गुरु अनुसासन माँगि नहाये
करि मज्जन प्रभुभूषन साजे। अंग अनंग कोटि छबि लाजे

दो०—सासुन्ह सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ।
दिब्य बसन बर भूषन, अँग अँग सजे बनाइ॥
राम-बाम-दिसि सोभित, रमारूप गुनखानि।
देखि मातु सब हरषीं, जनम सुफल निज जानि॥
सुनु खगेस तेहि अवसर, ब्रह्मा सिव मुनिबृंद।
चढ़ि बिमान आये सब, सुर देखन सुखकंद॥११॥

प्रभुबिलोकिमुनिमन अनुरागा। तुरत दिब्य सिंहासन माँगा
रबिसमतेजसोबरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई
जनक-सुता-समेत रघुराई। पेखि प्रहरषे मुनिसमुदाई
बेदमंत्र तब द्विजन्ह उचारे। नभमुरमुनिजयजयति पुकारे
प्रथमतिलकबसिष्ठमुनिकीन्हा। पुनिसबबिप्रन्हआयसु दीन्हा
सुतबलोकि हरषीं महतारी। बार बार आरती उतारी
बिप्रन्हदानबिबिधबिधिदीन्हे। जाचकसकलअजाचक कीन्हे
सिंहासनपर त्रि-भुवन-साईं। देखि सुरन्ह दुदुभी बजाईं

छंद—नभ दुंदुभी बाजहिं बिपुल गंधर्ब किन्नर गावहीं।
नाचहिं अपछराबृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं॥

भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमदादि समेत ते।
गहे छत्र चामर ब्यजन धनु असि चर्म सक्ति बिराजते॥
श्रीसहित दिन-कर-बंस-भूषन काम बहु छबि सोहई।
नव-अंबु-धर-बर गात अंबर पीत मुनिमन मोहई॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे।
अंभोजनयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंत जे॥

दो०—वह सोभा समाज सुख, कहत न बनै खगेस।
बरनै सारद सेष स्रुति, सो रस जान महेस॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि,गये सुर निज निज धाम।
बंदिबेष धरि बेद तब, आये जहँ श्रीराम॥
प्रभु सर्बग्य कीन्ह अति, आदर कृपानिधान।
लखेउ न काहू मरमु कछु, लगे करन गुनगान॥१२॥

छंद—जय सगुन निर्गुनरूप रूपअनूप भूप-सिरोमने।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुजबल हने॥
अवतार नर संसारभार बिभंजि दारुनदुख दहे।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्तसक्ति नमामहे॥
तव बिषम मायाबस सुरासुर नाग नर अग जग हरे।
भवपंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुनन्हि भरे॥
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिध दुख ते निर्बहे।
भव-खेद-छेदन-दच्छ हम कहँ रच्छ राम नमामहे॥
जे ग्यान-मान-बिमत्त तव भवहरनि भगति न आदरी।
ते पाइ सुर-दुर्लभ-पदादपि परत हम देखत हरी॥

बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे।
जपि नाम तव बिनु स्रम तरहिं भवनाथ सोइ समरामहे॥
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतनी तरी।
नखनिर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक्य-पावन सुरसरी॥
ध्वज-कुलिस-अंकुस-कंज-जुतबन फिरत कंटककिनि कहे।
पद-कंज-द्वंद मुकुंद रमा रमेस नित्य भजामहे॥
अव्यक्त-मूल-मनादि तरुत्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंचबीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहिआस्रितरहे।
पल्लवत फूलत नव ललित संसारबिटप नमामहे॥
जे ब्रह्म अजमद्वैत-मनु-भव-गम्य मन पर ध्यावहीं।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं॥
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर माँगहीं।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं॥

दो०—सब के देखत बेदन्ह, बिनती कीन्हि उदार।
अंतरधान भये पुनि, गये ब्रह्मआगार॥
बैनतेय सुनु संभु तब, आये जहँ रघुबीर॥
बिनय करत गदगद गिरा, पूरित पुलक सरीर॥१३॥

तोमरछंद—जय राम रमा रमनं समनं। भव-ताप-भयाकुल पाहि जनं
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत माँगत पाहि प्रभो॥
दस-सीस-बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा-महि-भूरि-रुजा॥
रजनी-चर-बृंद-पतंग रहे। सर-पावक-तेज प्रचंड दहे॥
महि-मंडल-मंडन चारुतरं। धृत-सायकचाप-निषंग-बरं॥

मद मोह महा ममता रजनी। तमपुंज दिवाकर-तेज-अनी ॥
मनजात किरात निपात किये। मृग लोग कुभोग सरेन हिये ॥
हति नाथ अनाथन्हि पाहि हरे। बिषयाबन पाँवर भूलि परे ॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हये। भवदंघ्रिनिरादर के फल ये ॥
भवसिंधु अगाध परे नर ते। पद-पंकज-प्रेम न जे करते ॥
अतिदीन मलीन दुखी नितहीं। जिनके पदपंकज प्रीति नहीं ॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह के। प्रियसंतअनंतसदा तिन्ह के ॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा। तिन्हके सम बैभव वा बिपदा ॥
एहि तें तव सेवक होत मुदा। मुनित्यागतजोगभरोस सदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिये। पदपंकज सेवित सुद्ध हिये ॥
सम मानि निरादर आदरहीं। सबसंत सुखी बिचरंति मही ॥
मुनि-मानस-पंकज-भृंग भजे। रघुबीर महा-रन-धीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भवरोग महामद मान अरी ॥
गुनसील कृपापरमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंदघनं। महिपालबिलोकय दीनजनं ॥

दो०—बार बार बर माँगउँ, हरषि देहु श्रीरंग।
पद-सरोज अनपायनी, भगति सदा सतसंग ॥
बरनि उमापति रामगुन, हरषि गये कैलास!
तब प्रभु कपिन्ह दिवाये, सब बिधि सुखप्रद बास।

सुनुखगपतियह कथा पावनी। त्रिबिध ताप भव-भय-दावनी
महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनतलहहिंनरबिरतिबिबेका
जे सकामनरसुनहिंजेगावहिं। सुख संपति नानाबिधिपावहिं
सुरदुर्लभसुखकरि जग माहीं। अंतकाल रघुपति-पुर जाहीं

सुनहिबिमुक्तबिरतअरुबिषई। लहहि भगति गति संपति नई
खगपति राम कथा मै बरनी। स्व-मति-बिलासत्रास-दुख-हरनी
बिरतिबिबेकभगतिदृढ़करनी। मोह नदी कहँ सुदर तरनी
नित नव मंगल कोसलपुरी। हरषित रहहिंलोग सब कुरी
नित नइ प्रीतिराम-पद-पंकज। सब के जिन्हहिं नमत सिव मुनिअज
मगन बहु प्रकार पहिराये। द्विजन्ह दान नाना बिधि पाये

दो०—ब्रह्मानंदमगन कपि, सब के प्रभुपद प्रीति।
जात न जाने दिवस तिन्ह, गये मास षट बीति ॥१५॥

बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाही। जिमि परद्रोहसत मन माहीं
तबरघुपतिसबसखा बोलाये। आइ सबन्हि सादर सिरु नाये
परम प्रीति समीप बैठारे। भरत सुखद मृदु बचन उचारे
तुम्हअतिकीन्हिमोरिसेवकाई। मुखपर केहि बिधिकरौ बड़ाई
तातेमोहितुम्हअतिप्रियलागे। ममहितलागिभवनसुखत्यागे
अनुज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही
सबममप्रियनहितुम्हहिंसमाना। मृषा न कहौ मोर यह बाना
सब के प्रिय सेवक ये नीति। मोरे अधिक दास पर प्रीती

दो०—अब गृह जाहु सखा सब, भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करेहु अतिप्रेम ॥१६॥

सुनिप्रभु बचनमगन सबभये। को हम कहाँ बिसरि तन गये
एकटक रहे जोरि कर आगे। सकहि न कछकहि अतिअनुरागे
परमप्रेम तिन्हकर प्रभु देखा। कहाबिबिधबिधिग्यानबिसेखा
प्रभुसनमुखकछु कहइनपारहिं। पुनिपुनि चरन सरोज निहारहिं
तब प्रभु भूषन बसन मँगाये। नाना रंग अनूप सुहाये
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये। बसन भरत निज हाथ बनाये
प्रभुप्रेरित लछिमन पहिराये। लंकापति रघुपति मन भाये

अगद बैठि रहा नहि डोला। प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला

दो०—जामवंत नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ।
हिय धरि रामरूप सब, चले नाइ पद माथ॥
तब अंगद उठि नाइ सिरु, सजलनयन कर जोरि।
अतिबिनीत बोलेउ बचन, मनहुँ प्रेमरस बोरि॥१७॥

सुनु सर्वग्य कृपा-सुख-सिंधो। दीन-दया-कर आरतबंधो
मरती बेर नाथ मोहिबाली। गयउ तुम्हारेहि कोछे घाली
अ-सरन-सरन बिरदसंभारी। मोहिजनितजहु भगत-हित-कारी
मोरे तुम्हप्रभु गुरुपितु माता। जाउँकहाँ तजि पद जलजाता
तुम्हइँ बिचारिकहहुनरनाहा। प्रभुतजिभवन काजुममकाहा
बालक ग्यान-बुद्धि-बल-हीना। राखहु सरन जानि जन दीना
नीचिटहलगृह कै सब करिहौं। पद-पकजबिलोकिभवतरिहौं
असकहिचरनपरेउ प्रभुपाही। अबजनि नाथ कहहु गृहजाही

दो०—अंगदबचन बिनीत सुनि, रघुपति करुनासींवँ।
प्रभु उठाइ उर लायेउ, सजल नयनराजीव॥
निज उरमाल बसन मनि, बालितनय पहिराइ।
बिदा कीन्ह भगवान तब, बहु प्रकार समुझाइ॥१८॥

भरत-अनुज-सौमित्र-समेता। पठवन चले भगत कृतचेता
अंगदहृदय प्रेम नहिं थोरा। फिरिफिरिचितवरामकी ओरा
बार बार कर दडप्रनामा। मन अस रहन कहहिं मोहिरामा
रामबिलोकनिबोलनि चलनी। सुमिरिसुमिरि सोचतहँसिमिलनी
प्रभुरुखदेखिबिनयबहु भाखी। चलेउ हृदय पद-पकज राखी
अतिआदरसब कपि पहुँचाये। भाइन्ह सहितभरतपुनि आये
तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भाँति बिनय कीन्ही हनुमाना
दिन दस करि रघुपति-पद-सेवा। पुनि तव चरन देखिहौं देवा

पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपाआगारा
असकहिकपिसब चले तुरंता। अंगद कहइ सुनहु हनुमंता

दो०—कहेहु दंडवत प्रभु सन, तुम्हहिं कहौं कर जोरि।
बार बार रघुनायकहिं, सुरति करायेहु मोरि॥
अस कहि चलेउ बालिसुत, फिरि आयेउ हनुमंत।
तासु प्रीति प्रभु सन कही, मगन भये भगवंत॥
कुलिसहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि।
चित खगेस अस राम कर, समुझि परै कहु काहि॥१९॥

पुनिकृपाललियो बोलि निपादा। दीन्हे भूषन बसन प्रसादा
जाहुभवनममसुमिरन करेहू। मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहू
तुम्हममसखाभरतसम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता
बचनसुनतउपजासुख भारी। परेउ चरन भरिलोचन बारी
चरननलिन उर धरि गृहआवा। प्रभुसुभाउ परिजनन्हिसुनावा
रघुपतिचरित देखिपुरबासी। पुनिपुनिकहहिं धन्यसुखरासी
राम राज बैठे त्रैलोका। हरषित भये गये सब सोका
बयरु न कर काहू सन कोई। रामप्रताप बिषमता खोई

दो०—बरनास्रम निज निज धरम, निरत बेदपथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुख, नहि भय सोक न रोग॥२२॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहि काहुहि ब्यापा
सबनर करहिपरसपर प्रीती। चलहिंस्वधर्मनिरतस्रुतिनीती
चारिहु चरन धरम जगमाहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं
राम-भगति-रत सब नरनारी। सकलपरमगतिकेअधिकारी
अल्प मृत्यु नहि कवनिउँपीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा
नहिं दरिद्र कोउदुखी न दीना। नहिंकोउअबुधनलच्छनहीना

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुरसब गुनी
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपटसयानी

दो०—रामराज नभगेस सुनु, सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन, कृत दुख काहुहि नाहिं ॥२१॥

भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला
भुवन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू
सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता घनेरी
सो महिमा खगेसजिन्ह जानी। फिरियेहिचरिततिन्हहुँरतिमानी
सोउ जानेकर फल यह लीला। कहहिंमहामुनिबरदम सीला
रामराज कर सुख संपदा। बरनि न सकइफनीस सारदा
सब उदार सब परउपकारी। बिप्र-चरन-सेवक नरनारी
एक-नारि-ब्रत-रत सब झारी। ते मनबचक्रमपति-हितकारी

दो०—दंड जतिन्ह कर भेद जहँ, नर्त्तक नृत्यसमाज।
जितहु मनहिं अस सुनिय जग, रामचंद्र के राज॥२२॥

फूलहिंफरहि सदातरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन
खगमृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परसपर प्रीति बढ़ाई
कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभयचरहिंबनकरहिं अनंदा
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा
लता बिटप माँगे मधु चवहीं। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं
ससंपन्न सदा रह धरनी। त्रेता भइ कृत जुग कै करनी
प्रगटीगिरिन्हबिबिधमनिखानी। जगदातमा भूप जग जानी
सरितासकलबहहिं बरबारी। सीतलअमल स्वादुसुखकारी
सागर निज मरजादा रहहीं। डारहिंरतनतटन्हि नर लहहीं
सरसिज-संकुलसकलतड़ागा। अतिप्रसन्नदस-दिसा-बिभागा

दो०—बिधु महि पूर मयूखन्हि, रबि तप जेतनेहिं काज।
माँगे बारिद देहिं जल, रामचंद्र के राज॥ २३॥

कोटिन्ह बाजिमेधप्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे
स्रुति-पथ-पालकधरम-धुरंधर। गुनातीत अरु भोगपुरंदर
पतिअनुकूल सदा रह सीता। सोभाखानि सुसील बिनीता
जानति कृपासिंधु-प्रभुताई। सेवति चरनकमल मन लाई
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी। बिपुलसकल सेवाबिधि गुनी
निजकर गृहपरिचरजाकरई। रामचंद्र-आयसु अनुसरई
जेहिबिधिकृपासिंधुसुख मानइ। सोइकर श्री सेवाबिधिजानइ
कौसल्यादि सासु गृह माही। सेवइ सबन्हि मान मद नाही
उमा-रमा-ब्रह्मादि-बंदिता। जगदंबा संततमनिंदिता

दो०—जासु कृपाकटाच्छ सुर, चाहत चितवन सोइ।
राम-पदारबिंद-रति, करति सुभावहिं खोइ॥२४॥

सेवहि सानुकूल सब भाई। राम-चरन-रति अतिअधिकाई
प्रभु-मुख-कमलबिलोकतरहहीं। कबहुँ कृपाल हमहिकछु कहही
रामकरहिभ्रातन्हपर प्रीती। नानाभाँति सिखावहि नीती
हरषित रहहि नगरके लोगा। करहिंसकल सुर दुर्लभ भोगा
अहनिसिबिधिहि मनावत रहही। श्रीरघुबीर-चरन-रति चहहीं
दुइ सुत सुंदर सीता जाये। लवकुस बेद पुरानन्हि गाये
दोउ बिजई बिनई गुनमंदिर। हरि-प्रतिबिंबमनहुँ अतिसुंदर
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे। भये रूप गुन सील घनेरे

दो०—ग्यान-गिरा-गो-ऽतीत अज, माया-मन-गुन-पार।
सोइ सच्चिदानंदघन, कर नरचरित उदार॥२५॥

प्रातकाल सरजू करि मज्जन। बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन
बेद पुरान बसिष्ठ बखानहि। सुनहिंरामजद्यपिसब जानहिं
अनुजन्हसंजुत भोजन करहीं। देखि सकलजननी सुख भरहीं
भरत सत्रुहन दूनौं भाई। सहित पवनसुत उपवन जाई

बूझहिं बैठि राम-गुन-गाहा। कह हनुमान सुमति अवगाहा
सुनतबिमलगुनअतिसुख पावहिं। बहुरिबहुरिकरिबिनय कहावहिं
सब के गृह गृह होहि पुराना। रामचरित पावनबिधि नाना
नरअरुनारि राम-गुन-गावहि। करहिदिवसनिसिजात न जानहिं

दो०—अवध-पुरी-बासिन्ह कर, सुख संपदा समाज।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं, जहँ नृप राम बिराज ॥२६॥

नारदादि सनकादि मुनीसा। दरसन लागि कोसलाधीसा
दिनप्रतिसकलअजोध्याआवहिं। देखिनगरबिराग बिसरावहि
जातरूप-मनि-रचितअटारी। नाना रंग रुचिर गच ढारी
पुरचहुँ पास कोटि अतिसुंदर। रचे कँगूरा रंग रंग बर
नवग्रह निकर अनीक बनाई। जनु घेरी अमरावति आई
महिबहुरंगरचितगच काँचा। जोबिलोकिमुनिबरमन राँचा
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत। कलस मनहुँ रवि-ससि-दुति निंदत
बहुमनिरचितझरोखाभ्राजहिं। गृह गृह प्रति मनिदीप बिराजहिं

छंद—मनिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी बिद्रुम रची।
मनिखंभभीति बिरंचिबिरची कनकमनि मरकतखची ॥
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे।
प्रतिद्वारद्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे ॥

दो०—चारु चित्रसाला गृह, गृह प्रति लिखे बनाइ।
रामचरित जे निरख मुनि, ते मन लेहि चोराइ ॥२७॥

सुमनबाटिका सबहि लगाई। बिबिधभाँतिकरिजतन बनाई
लतालालितबहु जाति सुहाई। फूलहि सदा बसंत कि नाई
गुंजतमधुकर मुखर मनोहर। मारुत त्रिबिध सदा बह सुंदर
नानाखगबालकन्हि जिआये। बोलत मधुर उड़ात सुहाये
मोर हंस सारस पारावत। भवनन्हिपरसोभा अतिपावत

जहँतहँदेखहिंनिज परिछाहीं। बहु विधि कूजहिं नृत्य कराही
सुकसारिकापढावहि बालक। कहहु राम रघुपति जनपालक
राजदुआरसकल बिधि चारू। बीथी चौहट रुचिर बजारू

छंद–बाजार चारु न बनइ बरनत बस्तु बिनु गथ पाइये।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइये॥
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते।
सब सुखीसबसचरितसुंदरनारिनर सिसु जरठ जे॥

दो०–उत्तर दिसि सरजू बह, निर्मलजल गंभीर।
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं तीर॥२८॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा। जहँ जल पिअहिं बाजि-गज-ठाटा
पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना
राजघाटसबबिधि सुंदर बर। मज्जहितहाँ बरन चारिउ नर
तीर तीर देवन्ह के मंदिर। चहुँदिसिजिन्ह के उपबनसुंदर
कहुँ कहुँ सरितातीर उदासी। बसहिग्यानरत मुनि संन्यासी
तीर तीर तुलसिका सुहाई। बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई
पुरसोभा कछु बरनि न जाई। बाहिर नगर परम रुचिराई
देखतपुरीअखिल अघ भागा। बन उपबन बापिका तड़ागा

छंद–बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं।
सोपानसुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं
आराम रम्य पिकादि-खग-रव जनु पथिक हंकारहीं।

दो०–रमानाथ जहँ राजा, सो पुर बरनि कि जाइ।
अनिमादिक-सुख-संपदा, रही अवध सब छाइ॥२९।

जहँ तहँ नर रघुपति-गुन गावहिं। बैठि परसपर इहै सिखावहि

भजहु प्रनत-प्रति-पालक रामहि। सोभासील-रूप-गुन-धामहि
जलजबिलोचन स्यामल गातहिं। पलक नयन इव सेवकत्रातहिं
धृत-सर-रुचिर-चाँप-तूनीरहि। संत-कंज-बनरबि-रन-धीरहि
कालकरालब्यालखगराजहि। नमतरामअकाम ममता जहिं
लोभ-मोह-मृग-जूथ-किरातहिं। मनसिज-करि-हरिजन-सुख-दातहिं
संसय-सोक-निबिड़-तम-भानुहिं। दनुज-गहन-घन-दहन-कृसानुहिं
जनक-सुता-समेत-रघुबीरहि। कस न भजहुभंजनभवभीरहि
बहु-बासना-मसक-हिम-रासिहि। सदाएकरस अजअबिनासिहि
मुनिरंजन भंजन महिभारहि। तुलसिदास के प्रभुहिउदारहि

दो०—एहि बिधि नगर-नारि-नर, करहिं राम-गुन-गान।
सानुकूल सब पर रहहिं, संतत कृपानिधान ॥३०॥

जब तें रामप्रताप खगेसा। उदितभयेउअतिप्रबलदिनेसा
पूरि प्रकास रहेउतिहुँ लोका। बहुतेन्हसुखबहुतेन्हमन सोका
जिन्हहिंसोकते कहौं बखानी। प्रथम अबिद्या निसा नसानी
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने। काम-क्रोध-कैरव सकुचाने
बिबिध-कर्म-गुन-काल-सुभाऊ। ए चकोर सुख लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा। इन्हकरहुनर न कवनिहुँ ओरा
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना। ए पंकज बिकसे बिधि नाना
सुख संतोष बिराग बिबेका। बिगत सोक ए कोक अनेका

दो०—यह प्रतापरबि जा के, उर जब करै प्रकास।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे, कहे ते पावहिं नास ॥३१॥

भ्रातन्हसहितरामएक बारा। संग परमप्रिय पवनकुमारा
सुंदर उपबन देखन गये। सब तरु कुसुमित पल्लव नये
जानि समयसनकादिकआये। तेजपुंज गुनसील सुहाये
ब्रह्मानंद सदा लयलीना। देखत बालक बहुकालीना

रूप धरे जनु चारिउ बेदा। समदरसी मुनि बिगतबिभेदा
आसाबसनब्यसनयहतिन्हही। रघुपति-चरितहोइतहँ सुनही
तहाँ रहे सनकादि भवानी। जहँघटसंभव मुनिबर ग्यानी
रामकथामुनिबहुबिधि बरनी। ग्यान-जोनि-पावकजिमि अरनी

दो०—देखि राम मुनि आवत, हरषि दंडवत कीन्ह।
स्वागत पूछि पीतपट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥३२॥

कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई। सहितपवनसुतसुख अधिकाई
मुनिरघुपति-छबिअतुलबिलोकी। भये मगन मन सके न रोकी
स्यामलगात सरोरुह-लोचन। सुंदरतामंदिर भवमोचन
एकटक रहेनिमेष न लावहि। प्रभु कर जोरे सीस नवावहि
तिन्हकै दसा देखि रघुबीरा। स्रवत नयन जल पुलक सरीरा
कर गहिप्रभुमुनिबर बैठारे। परम मनोहर बचन उचारे
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा। तुम्हरे दरस जाहिं अघ सीसा
बड़े भाग पाइय सतसंगा। बिनहिं प्रयास होइ भवभंगा

दो०—संतसंग अपवर्ग कर, कामी भव कर पंथ।
कहहिं संत कबि कोबिद, स्रुति पुरान सदग्रंथ ॥३३॥

सुनिप्रभुबचन हरषि मुनिचारी। पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी।
जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुनामय
जय निर्गुनजयजयगुनसागर। सुखमंदिर सुंदर अति आगर
जय इंदिरारमन जय भूधर। अनुपमअज अनादि सोभाकर
ग्याननिधानअमान मानप्रद। पावन सुजस पुरान बेद बद
तग्य कृतग्य अग्यताभजन। नाम अनेक अनाम निरंजन
सर्ब सर्बगत सर्बउरालय। बससिसदाहम कहँ परिपालय
द्वंद बिपति भवफंदबिभंजय। हृदिबसि राम काममद गजय

दो०—परमानंद कृपायतन, मन-परि-पूरन काम।
प्रेम भगति अनपायनी, देहु हमहिं श्रीराम ३४॥

देहु भगति रघुपति अति पावनि। त्रि-बिधि-ताप-भव-दाप-नसावनि
प्रनत काम सुर धेनु कलपतरु। होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु
भव-बारिधि-कुंभज रघुनायक। सेवक सुलभ-सकल-सुख- दायक
मन-संभव-दारुन-दुख दारय। दीनबंधु समता बिस्तारय
आस-त्रास-इरिषादि-निवारक। बिनय-बिबेक-बिरति-बिस्तारक
भूप-मौलि-मनिमंडन धरनी। देहि भगति संसृति-सरि-तरनी
मुनि-मन-मानस-हंस निरंतर। चरनकमल बंदित अज सकर
रघुकुल-केतु सेतु स्रुतिरच्छक। काल-कर्म-सुभाव-गुन- भच्छक
तारन तरन हरन सब दूषन। तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन-भूषन

दो०—बार बार अस्तुति करि, प्रेम सहित सिरु नाइ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे, अतिअभीष्ट बर पाइ ॥३५॥

सनकादिकबिधिलोकसिधाये। भ्रातन्ह रामचरन सिरु नाये
पूछतप्रभुहि सकलसकुचाही। चितवहि सब मारुतसुत पाही
सुनीचहहिंप्रभु मुख कै बानी। जो सुनि होइ सकल-भ्रम-हानी
अंतरजामी प्रभु सब जाना। बूझत कहहु काह हनुमाना
जोरि पानि कह तब हनुमंता। सुनहु दीनदयाल भगवंता
नाथ भरतकछु पूछन चहहीं। प्रश्नकरत मन सकुचत अहहीं
तुम्हजानहुकपि मोर सुभाऊ। भरतहिमोहिकछु अंतरकाऊ
सुनिप्रभुबचनभरतगहेचरना। सुनहु नाथ प्रनतारतिहरना

दो०—नाथ न मोहि संदेह कछु, सपनेहुँ सोक न मोह।
केवल कृपा तुम्हारिही, कृपा-नंद-संदोह ॥३६॥

करौ कृपानिधि एक ढिठाई। मैं सेवक तुम्ह जन-सुखदाई
संतन कै महिमा रघुराई। बहुबिधि बेद पुरानन्हि गाई
श्रीमुखतुम्हपुनिकीन्हि बड़ाई। तिन्ह परप्रभुहिंप्रीतिअधिकाई
सुनाचहौंप्रभुतिन्हकरलच्छन। कृपासिंधु गुन ग्यानबिचच्छन

संत असंत भेद बिलगाई। प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई
सतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता। अगनितस्रुतिपुरान बिख्याता
संत असंतन्ह कै असि करनी। जिमि कुठार चंदन आचरनी
काटै परसु मलय सुनु भाई। निजगुन देइ सुगंध बसाई

दो०—ता तें सुरसीसन्ह चढ़त, जगबल्लभ श्रीखंड।
अनल दाहि पीटत घनहि, परसुबदन यह दंड ॥३७॥

बिषय अलपट सीलगुनाकर। परदुख दुख सुख सुख देखे पर
समअभूतरिपुबिमदबिरागी। लोभामरष हरष भय त्यागी
कोमलचितदीनन्हपर दाया। मनबचक्रममममभगति अमाया
सबहिमानप्रद आपु अमानी। भरत प्रानसम मम तें प्रानी
बिगतकाममम नामपरायन। सातिबिरतिबिनतीमुदितायन
सीतलता सरलता मइत्री। द्विज-प्रद-प्रीति धरमजनयित्री
ये सबलच्छनबसहिजासुउर। जानहु तात सत संतत फुर
समदमनियमनीतिनहिडोलहिं। परुष बचन कबहूँ नहिंबोलहि

दो०—निंदा अस्तुति उभय सम, ममता मम पदकंज।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय, गुनमंदिर सुखपुंज ॥३८॥

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ। भूलेहु संगति करिय ल काऊ
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई। जिमिकपिलहि घालै हरहाई
खलन्हहृदयअतितापबिसेखी। जरहिं सदा परसंपति देखी
जहँ कहुँ निंदा सुनहि पराई। हरषहि मनहुँ परी निधिपाई
काम-क्रोध-मदलोभ-परायन। निर्दय कपटी कुटिलमलायन
बयरु अकारन सब काहू सों। जो कर हित अनहिततताहूसों
झूठै लेना झूठै देना। झूठै भोजन झूठ चबेना
बोलहि मधुरबचनजिमिमोरा। खाहिं महाअहि हृदय कठोरा

दोहा—परद्रोही पर-दार-रत, परधन परअपवाद।
ते नर पाँवर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥३९॥

लोभै ओढन लोभै डासन । सिस्नोदर पर जमपुरत्रासन
काहू कै जौ सुनहिं बड़ाई । स्वास लेहि जनु जूड़ी आई
जब काहू कै देखहिं बिपती । सुखी भये मानहु जगनृपती
स्वारथरत परिवारबिरोधी । लंपट काम लोभ अतिक्रोधी
मातुपिता गुरु बिप्र न मानहिं । आपु गये अरुघालहि आनहिं
करहिं मोहबस द्रोह परावा । संत संग हरिकथा न भावा
अवगुन-सिंधुमंदमति कामी । बेदबिदूषक पर-धन-स्वामी
विप्रद्रोह सुरद्रोह बिसेखा । दंभ कपट जिय धरे सुबेषा

दोहा–ऐसे अधम मनुज खल, कृतजुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक बृंद बहु, होइहहिं कलिजुग माहिं ।।४०।।

परहित सरिस धर्म नहिंभाई । परपीड़ा सम नहिं अधमाई
निरनय सकलपुरान बेदकर । कहेउँतात जानहिंकोबिदनर
नर सरीर धरि जे परपीरा । करहिंतेसहहिं महाभवभीरा
करहिं मोहबस नर अघनाना । स्वारथरत परलोक नसाना
कालरूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता । सुभअरुअसुभकरम-फलदाता
अस बिचारि जे परम सयाने । भजहिं मोहिसंसृति दुख जाने
त्यागहिंकर्मसुभा-सुभदायक । भजहिंमोहिसुरनर-मुनिनायक
संत असंतन के गुन भाखे । ते न परहिं भवजिन्हलखिराखे

दो०–सुनहु तात मायाकृत, गुन अरु दोष अनेक ।
गुन यह उभय न देखियहिं, देखिय सो अबिबेक ।।४१।।

श्रीमुख-बचन-सुनत सबभाई । हरषे प्रेम न हृदय समाई
करहिबिनयअतिबारहिंबारा । हनूमान हिय हरष अपारा
पुनि रघुपतिनिजमंदिर गये । एहिबिधिचरित करत नित नये
बार बार नारदमुनिआवहि । चरित पुनित राम के गावहि
नितनवचरितदेखिमुनिजाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाही

सुनिबिरंचिअतिसयसुखमानहिं। पुनिपुनि तात करहु गुनगानहिं
सनकादिकनारदहिसराहहिं। जद्यपिब्रह्मनिरतमुनिआहहिं
मुनिगुनगानसमाधिबिसारी। सादर सुनहि परमअधिकारी

दो०—जीवनमुक्त ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजि ध्यान।
जे हरिकथा न करहिंरति, तिन्ह के हिय पाषान ॥४२॥

एक बार रघुनाथ बोलाये। गुरु द्विज पुरबासी सब आये
बैठेसदसिअनुजमुनि सज्जन। बोले बचन भगत-भय-भंजन
सुनहुसकलपुरजनममबानी। कहौ न कछु ममताउर आनी
नहिअनीतिनहिंकछुप्रभुताई। सुनहुकरहु जौ तुम्हहि सुहाई
सोइसेवकप्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई
जौंअनीति कछु भाषउँ भाई। तौमोहिबरजहु भय बिसराई
बड़े भाग मानुषतनु पावा। सुरदुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा
साधनधाम मोच्छकर द्वारा। पाइ न जेहि परलोक सँवारा

दो०—सो परत्र दुख पावइ, सिरु धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि, मिथ्या दोष लगाइ ॥४३॥

एहितनकरफलविषयनभाई। स्वरगउ स्वल्प अंत दुखदाई
नरतनु पाइ बिषय मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं
ताहिकबहुँ भल कहै न कोई। गुंजा गहै परसमनि खोई
आकर चारि लच्छ चौरासी। जोनिभ्रमतयहजिवअबिनासी
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा
कबहुँक करि करुनानरदेही। देत ईस बिनु हेतु सनेही
नरतनु भवबारिधि कहुँ बेरो। सनमुख मरुत अनुग्रह मेरो
करनधार सदगुरु दृढ़ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा

दो०—जो न तरै भवसागर, नर समाज अस पाइ।
सो कृत निंदक मंदमति, आतम-हन-गति-जाइ ॥४४॥

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू । मुनि ममबचन हृदय दृढ़ गहहू
सुलभसुखद मारग यह भाई । भगतिमोरिपुरान स्रुति गाई
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका । साधनकठिन न मन कहँ टेका
करत कष्ट बहु पावै कोऊ । भगतिहीनमोहिप्रियनहिसोऊ
भगतिसुतंत्रसकल-सुख-खानी । बिनु सतसग न पावहि प्रानी
पुन्यपुजबिनु मिलहिंन संता । सतसंगति संसृति कर अंता
पुन्य एकजग महँ नहि दूजा । मन क्रम बचन विप्र-पद-पूजा
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा । जो तजि कपट करै द्विज सेवा

दो०—अउरउ एक गुपुत मत, सबहिं कहहुँ कर जोरि ।
संकरभजन बिना नर, भगति न पावै मोरि ॥४५॥

कहहुभगतिपथकवनप्रयासा । जोग न मख जप तप उपवासा
सरल सुभावनमन कुटिलाई । जथालाभ संतोष सदाई
मोर दास कहाइ नर आसा । करै त कहहु कहा बिस्वासा
बहुत कहौं का कथा बड़ाई । एहि आचरन बस्य मैं भाई
बयरु न बिग्रहआस न त्रासा । सुखमयताहि सदा सब आसा
अनारंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । तृनसम बिषय स्वर्ग अपबर्गा
भगतिपच्छहठ नहिं सठताई । दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई

दो०—मम गुनग्राम नाम रत, गत-ममता-मद-मोह ।
ता कर सुख सोइ जानइ, परानंदसंदोह ॥४६॥

सुनतसुधासमबचन राम के । गहे सबन्हि पद कृपाधाम के
जननिजनक गुरु बधु हमारें । कृपानिधान प्रान ते प्यारें
तनुधनुधाम राम हितकारी । सबबिधि तुम्ह प्रनतारतिहारी
अससिखतुम्हबिनुदेइनकोऊ । मातु पिता स्वारथरत अोऊ
हेतुरहित जग जुग उपकारी । तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी

स्वारथमीतसकल जगमाही । सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं
सब के बचन प्रेमरससाने । मुनि रघुनाथ हृदय हरषाने
निज गृह गये सुआयसु पाई । बरनत प्रभु बतकही सुहाई

दो०—उमा अवधबासी नर, नारि कृतारथ रूप ।
ब्रह्म सच्चिदानंद घन, रघुनायक जहँ भूप ॥४७॥

एक बार बसिष्ठ मुनि आये । जहाँ राम सुखधाम सुहाये
अतिआदर रघुनायककीन्हा । पद पखारि चरनोदक लीन्हा
रामसुनहुमुनिकह कर जोरी । कृपासिंधु बिनती कछु मोरी
देखि देखिआचरन तुम्हारा । होत मोह मम हृदय अपारा
महिमाअमितबेदनहि जाना । मैं केहि भाँति कहौ भगवाना
उपरोहिती कर्म अतिमंदा । बेद पुरान स्मृति कर निंदा
जब न लेउँमै तब बिधि मोही । कहा लाभ आगे सुत तोही
परमातमा ब्रह्म नररूपा । होइहि रघुकुल-भूषन भूपा

दो०—तब मैं हृदय बिचारा, जोग जग्य ब्रत दान ।
जा कहँ करिय सो पाइहौं, धर्म न एहि सम आन ॥४८॥

जपतपनियमजोगनिज धर्मा । स्रुतिसंभव नाना सुभ कर्मा
ग्यानदया दम तीरथ मज्जन । जहँलगिधरमकहतस्रुतिसज्जन
आगम निगम पुरान अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका
तवपद-पंकज प्रीतिनिरंतर । सबसाधन कर यह फलु सुंदर
छूटै मल कि मलहि के धोये । धृतकिपावकोउबारि बिलोये
प्रेमभगतिजल बिनु रघुराई । अभि-अंतर-मलकबहुँन जाई
सोइसर्बग्य तग्य सोइपंडित । सोइगुनगृह बिग्यान अखंडित
दच्छसकल-लच्छन-जुतसोई । जा के पद-सरोज रति होई

दो०—नाथ एक बर मागउँ, राम कृपा करि देहु ।
जनम जनम प्रभु-पद-कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ॥४९॥

असकहिमुनिबसिष्ठगृहआये । कृपासिधु के मन अति भाये
हनूमान भरतादिकभ्राता । संग लिये सेवक-सुख-दाता
पुनि कृपाल पुर बाहर गये । गज रथ तुरग मँगावत भये
देखिकृपा करि सकल सराहे । दियेउचितजिन्हजिन्हजेइ चाहे
हरनसकलस्रमप्रभुस्रम पाई । गये जहाँ सीतल अवँराई
भरत दीन्हनिजबसन डसाई । बैठे प्रभु सेवहि सब भाई
मारुतसुत तब मारुत करई । पुलक बपुष लोचन जल भरई
हनुमान समान बड़ भागी । नहिकोउ राम-चरन-अनुरागी
गिरिजाजासु प्रीति सेवकाई । बार बार प्रभु निज मुख गाई

दो०—तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल बीन ।
गावन लागे राम-कल-कीरति सदा नवीन ॥५०॥

मामवलोकय पंकज-लोचन । कृपाविलोकनि सोचविमोचन
नील-तामरस-स्यामकामअरि । हृदय-कंज-मकरंद-मधुप हरि
जातुधान-बरूथ-बल- भंजन । मुनि-सज्जन-रंजन अघगंजन
भूसुरससि नव बृंद बलाहक । अ-सरन-सरन दीन-जन-गाहक
भुजबलबिपुलभारमहिखंडित । खर-दूषन-बिराध-बध पंडित
रावनारि सुखरूप भूपबर । जय दसरथ-कुल-कुमुद-सुधाकर
सुजसपुरानबिदितनिगमागम । गावत सुर-मुनि-सत-समागम
कारुनीकब्यलीक-मद-खंडन । सवबिधिकुसल कोसलामंडन
कलि-मल-मथन-नाममममताहन। तुलसी-दास-प्रभु पाहि प्रनतजन

दो०—प्रेमसहित मुनि नारद, बरनि राम-गुन-ग्राम ।
सोभासिधु हृदय धरि, गये जहाँ बिधिधाम ॥५१॥

गिरिजासुनहुबिसदयहकथा । मैं सब कही मोरि मति जथा
रामचरित सतकोटिअपारा । स्रुति सारदा न बरनइ पारा
राम अनंत अनंतगुनानी । जनम कर्म अनंत नामानी

जलसीकरमहिरजगनिजाही । रघुपति-चरित न बरनि सिराहीं
बिमलकथाहरि-पद-दायिनी । भगतिहोइसुनि अनपायिनी
उमा कहेउँ सब कथा सुहाई । जो भुसुंडि खगपतिहिसुनाई
कछुक रामगुनकहेउँबखानी । अबकाकहौसो कहहु भवानी
सुनिसुभकथा उमा हरषानी । बोली अतिबिनीत मृदुबानी
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउँ रामगुनभव-भय-हारी

दो०—तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ रामप्रताप प्रभु, चिदानंदसंदोह ॥
नाथ तवानन ससि स्रवत, कथा सुधा रघुबीर ।
स्रवनपुटन्हि मन पान करि, नहिं अघात मतिधीर ॥५२॥

रामचरित जे सुनत अघाहीं । रस बिसेष जाना तिन्हनाही
जीवन मुक्त महामुनि जेऊ । हरिगुन सुनहिं निरंतर तेऊ
भवसागरचहपार जो पावा । रामकथा ता कहँ दृढ़ नावा
बिषइन्हकहँपुनिहरि-गुन-ग्रामा। स्रवनसुखद अरु मन अभिरामा
स्रवनवंत अस को जगमाही । जाहिनरघुपति-चरित सुहाहीं
तेजड़जीव निजात्मक-घाती । जिन्हहिंनरघुपति-कथा सुहाती
हरि-चरित्र-मानसतुम्हगावा । सुनिमैंनाथअमितसुख पावा
तुम्ह जो कही यहकथासुहाई । कागभुसुंडि गरुड़ प्रति गाई

दो०—बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़, रामचरित अतिनेह ।
बायसतन रघुपति-भगति, मोहि परम संदेह ॥५३॥

नरसहस्र महुँ सुनहु पुरारी । कोउएकहोइ धर्म-ब्रत-धारी
धर्मसील कोटिक महँ कोई । बिषयबिमुखबिरागरत होई
कोटि-बिरक्त-मध्यस्रुति कहई । सम्यकग्यानसकृतकोउ लहई
ग्यानवंत कोटिक महुँ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ
तिन्हसहस्रमहुँसबसुखखानी । दुर्लभ ब्रह्मलीन बिग्यानी

धर्मसील बिरक्त अरु ग्यानी । जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी
सब तें सो दुर्लभ सुरराया । राम-भगति-रत गत-मद-माया
सो हरिभगतिकागकिमिपाई । बिस्वनाथमोहिकहहुबुझाई

दो०—रामपरायन ग्यानरत, गुनागार मतिधीर ।
नाथ कहहु केहि कारन, पायेउ कागसरीर ॥ ५४ ॥

यह प्रभुचरितपवित्रसुहावा । कहहु कृपालकाग कहँ पावा
तुम्हकेहिभाँतिसुनामदनारी । कहहुमोहिअतिकौतुक भारी
गरुड़ महाग्यानी गुनरासी । हरिसेवकअतिनिकटनिवासी
तेहिकेहि हेतुकागसन जाई । सुनी कथामुनिनिकर बिहाई
कहहुकवनबिधिभा संबादा । दोउहरिभगत कागउरगादा
गौरिगिरा सुनिसरलसुहाई । बोले सिव सादर सुख पाई
धन्यसती पावनिमति तोरी । रघु-पति-चरनप्रीति नहिंथोरी
सुनहुपरम पुनीत इतिहासा । जोसुनिसकल लोकभ्रमनासा
उपजे रामचरन बिस्वासा । भवनिधितरनर बिनहिं प्रयासा

दो०—ऐसिअ प्रस्न बिहंगपति, कीन्ह काग सन जाइ ।
सो सब सादर कहिहउँ, सुनहु उमा मन लाइ ॥५५॥

मैं जिमिकथासुनी भवमोचनि । सोप्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
प्रथम दच्छगृहतवअवतारा । सती नाम तब रहा तुम्हारा
दच्छजग्य जब भा अपमाना । तुम्हअतिक्रोधतजे तब प्राना
ममअनुचरन्हकीन्हमखभंगा । जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा
तब अति सोच भयेउमनमोरें । दुखी भयउँ बियोग प्रिय तोरें
सुंदर बनगिरि सरिततड़ागा । कौतुक देखत फिरेउँ बिरागा
गिरि सुमेरु उत्तर दिसि दूरी । नील सैल एक सुंदर भूरी
तासु कनकमय सिखर सुहाये । चारि चारु मोरे मन भाये
तिन्ह पर एकएक बिटप बिसाला । बट पीपर पाकरी रसाला

सैलोपरि सर सुंदर सोहा । मनिसोपान देखि मन मोहा
दो०—सीतल अमर मधुर जल, जलज बिपुल बहुरंग ।
कूजत कलरव हंसगन, गुंजत मंजुल भृंग ॥५६॥
तेहिगिरिरुचिरबसैखग सोई । तासु नास कलपात न होई
मायाकृत गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अबिबेका
रहे ब्यापि समस्त जग माही । तेहिगिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं
तहँबसिहरिहिभजैजिमि कागा । सो सुनु उमा सहितअनुरागा
पीपर तरु तर ध्यानजो धरई । जाप जग्य पाकरि तर करई
आमछाहँ कर मानस पूजा ।तजिहरिभजन काजनहिंदूजा
बर तर कह हरि-कथा-प्रसंगा । आवहि सुनहिं अनेक बिहगा
रामचरित बिचित्र बिधाना । प्रेम सहित कर सादर गाना
सुनहिं सकलमति बिमल मराला । बसहि निरंतर जो तेहिताला
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनंद बिसेखा
दो०—तब कछु काल मरालतनु, धरि तहँ कीन्ह निवास ।
सादर सुनि रघु-पति-गुन, पुनि आयउँ कैलास ॥५७॥
गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । मैं जेहि समयगयउँखग पासा
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू ।गयउ काग पहिं खग-कुल-केतू
जब रघुनाथ कीन्ह रनक्रीड़ा । समुझतचरितहोतमोहिब्रीडा
इंद्रजीत कर आपु बँधायो । तब नारद मुनि गरुड़पठायो
बंधन काटि गयउ उरगादा । उपजा हृदय प्रचंड बिषादा
प्रभुबंधन समुझत बहुभाँती । करत बिचार उरगआराती
ब्यापक ब्रह्मबिरज बागीसा । माया-मोह-पार परमीसा
सो अवतार सुनेउँ जगमाहीं । देखेउँसो प्रभाव कछु नाही
दो०—भवबंधन तें छूटहिं, नर जप जा कर नाम ।
खर्ब निसाचर बाँधेउ, नागपास सोइ राम ॥५८॥

नाना भाँतिमनहिंसमुझावा । प्रकट न ग्यानहृदयभ्रमछावा
खेदखिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयउमोहबस तुम्हरिहिनाई
व्याकुल गयउदेवरिषि पाही । कहेसिजोसंसयनिजमनमाँही
सुनिनारदहिलागिअतिदाया । सुनु खग प्रबलराम कै माया
जोग्यानिन्हकरचित अपहरई । बरिआई बिमोह मन करई
जेहि बहु बार नचावामोही । सोइ व्यापी बिहंगपतितोही
महामोह उपजा उर तोरे । मिटिहि न बेगिकहेखगमोरे
चतुरानन पहि जाहु खगेसा । सोइ करेहु जो देहि निदेसा

दो०—अस कहि चले देवरिषि, करत राम गुन गान ।
हरि-माया-बल बरनत, पुनि पुनि परम सुजान ॥५९॥

तबखगपतिबिरंचिपहिगयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ
सुनिबिरंचिरामहिंसिरुनावा । समुझिप्रतापप्रेम उर छावा
मनमहुँ करै बिचार बिधाता । मायाबस कबिकोबिदग्याता
हरिमायाकरअमित प्रभावा । बिपुलबारजेहिमोहिनचावा
अग-जग-मयसबममउपराजा। नहिआचरजमोह खग राजा
तब बोले बिधि गिरा सुहाई । जान महेस रामप्रभुताई
बैनतेय संकर पहिं जाहू । तात अनत पूछहु जनि काहू
तहँ होइहि तव संसय हानी । चलेउबिहंगसुनतबिधिबानी

दो०—परमातुर बिहंगपति, आयउ तब मो पास ।
जात रहेउँ कुबेरगृह, रहिहु उमा कैलास ॥६०॥

तेहिममपदसादर सिरुनावा । पुनि आपन संदेह सुनावा
सुनिताकरिबिनीतमृदुबानी । प्रेम सहित मै कहेउँ भवानी
मिलेहु गरुड़मारग महँमोही । कवन भाँति समुझावौ तोही
तबहि होइ सब संसय भंगा । जब बहुकाल करियसतसंगा
सुनियतहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई

जेहिमहुँआदिमध्यअवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य रामभगवाना
नितहरिकथा होतिजहँभाई । पठवौं तहाँ सुनहु तुम्ह जाई
जाइहि सुनत सकल संदेहा । रामचरन होइहि अतिनेहा

दो०—बिनु सतसङ्ग न हरिकथा, तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गये बिनु रामपद, होइ न दृढ़ अनुराग ॥६१॥

मिलहिनरघुपतिबिनुअनुरागा । किये जोगजप ग्यान बिरागा
उत्तरदिसि सुंदर गिरिनीला । तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला
राम-भगति-पथपरमप्रबीना । ग्यानी गुनगृह बहु कालीना
रामकथा सो कहइ निरंतर । सादरसुनहिबिबिधबिहंगबर
जाइ सुनहुतहँहरिगुन भूरी । होइहि मोह-जनित दुखदूरी
मैं जबतेहि सब कहाबुझाई । चलेउ हरषि ममपदसिरुनाई
ता ते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपा मरमु मैं पावा
होइहिकीन्हकबहुँ अभिमाना । सो खोवइ चह कृपानिधाना
कछु तेहि तेपुनिमैंनहि राखा । समुझइ खग खगहीकैभाखा
प्रभुमाया बलवंत भवानी । जाहि नमोहकवनअसग्यानी

दो०—ग्यानी भगत सिरोमनि, त्रिभुवन-पति कर जान ।
ताहि मोह माया नर, पावँर करहिं गुमान ॥

मासपारायण, आठईसवाँ विश्राम

सिव बिरंचि कहँ मोहै, को है बपुरा आन ।
अस जिय जानि भजहिं मुनि, मायापति भगवान ॥६२॥

गयउ गरुड़ जहँ बसै भुसुंडी । मतिअकुंठ हरिभगति अखंडी
देखिसयल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सब गयऊ
करितड़ाग मज्जन जलपाना । बट तर गयउ हृदय हरषाना
बृद्ध बृद्ध बिहग तहँ आये । सुनै राम के चरित सुहाये
कथाअरंभ करै सोइ चाहा । तेही समय गयउ खगनाहा

आवतदेखि सकल खगराजा। हरषेउ बायस सहित समाजा
अतिआदरखगपति कर कीन्हा। स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा
करि पूजा समेत अनुरागा। मधुर बचन तब बोलेउकागा

दो०—नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दरसन खगराज।
आयसु देहु सो करौं अब, प्रभु आयहु केहि काज॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदुबचन खगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुख कीन्हि महेस॥६३॥

सुनहुतात जेहिकारनआयउँ। सोसब भयउ दरस तव पायउँ
देखिपरम पावनतव आस्रम। गयउ मोह संसय नाना भ्रम
अबश्रीराम-कथाअति पावनि। सदा सुखद दुख-पुंज नसावनि
सादर तात सुनावहु मोही। बार बार बिनवौं प्रभु तोही
पुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता। सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता
भयउ तासुमनपरम उछाहा। लाग कहै रघुपति-गुन-गाहा
प्रथमहिअति अनुराग भवानी। राम-चरित-सरकहेसिबखानी
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु-अवतार-कथा पुनिगाई। तबसिसुचरितकहेसिमनलाई

दो०—बालचरित कहि बिबिधबिधि, मन महुँ परमउछाह।
रिषिआगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर-बिबाह॥६४॥

बहुरि राम-अभिषेक-प्रसंगा। पुनि नृपबचन राज-रस-भंगा
पुरबासिन्हकरबिरहबिषादा। कहेसि राम-लछिमन-संबादा
बिपिनगवन केवटअनुरागा। सुरसरिउतरि निवासप्रयागा
बालमीकि-प्रभु-मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बस भगवाना
सचिवागवँननगर नृपमरना। भरतागवँन प्रेम बहु बरना
करि नृपक्रिया संग पुरबासी। भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी
पुनिरघुपति बहुबिधि समुझाये। लेइ पादुका अवधपुर आये

भरतरहनि सुरपति-सुत-करनी। प्रभुअरुअत्रि भेंट पुनि बरनी

दो०—कहि बिराध बध जेहि बिधि, देह तजी सरभंग।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभु अगस्ति सतसंग ॥६५॥

कहि दंडक बन पावनताई। गीधमइत्री पुनि तेहि गाई
पुनिप्रभु पंचबटीकृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह कै त्रासा
पुनिलछिमन उपदेस अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्ह कुरूपा
खर-दूषन-बधबहुरिबखाना। जिमिसबमरमु दसानन जाना
दसकंधर-मारीच- बतकही। जेहिबिधिभईसोसब तेहिकही
पुनिमाया सीता कर हरना। श्रीरघुबीर-बिरह कछु बरना
पुनिप्रभुगीधक्रिया जिमिकीन्हीं। बधिकबंधसबरिहिगतिदीन्ही
बहुरिबिरहबरनत रघुबीरा। जेहि बिधि गये सरोबरतीरा

दो०—प्रभु-नारद-संबाद कहि, मारुत-मिलन-प्रसंग।
पुनि सुग्रीवमिताई, बालिप्रान कर भंग॥
कपिहि तिलक करि प्रभुकृत, सैल प्रबरषन बास।
बरनत बरषा सरद कर, रामरोष कपित्रास ॥६६॥

जेहिबिधिकपिपति कीसपठाये। सीताखोजन सकल सिधाय
बिवरप्रवेसकीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा। नाँघत भयउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा। पुनिसीतहिधीरजु जिमिदीन्हा
बन उजारि रावनहि प्रबोधी। पुरदहिनाँघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई। बैदेही कै कुसल सुनाई
सेनसमेत जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारि-निधि-तीरा
मिलाबिभीषनजेहिबिधिआई। सागरनिग्रह कथा सुनाई

दो०—सेतु बाँधि कपिसेन जिमि, उतरी सागरपार।
गयउ बसीठी बीरबर, जेहि बिधि बालिकुमार॥

निसिचर-कीस-लराई, बरनेसि बिबिध प्रकार ।
कुम्भकरन घननाद कर, बल - पौरुष - संहार ॥६७॥

निसिचरनिकरमरनबिधिनाना । रघुपतिरावन-समर-बखाना
रावनबध मंदोदरि सोका । राजबिभीषन देब असोका
सीता-रघुपति-मिलनबहोरी ।सुरन्हकीन्हिअस्तुतिकरजोरी
पुनिपुष्पकचढ़िकपिन्हसमेता । अवधचले प्रभु कृपानिकेता
जेहिबिधिरामनगरनिजआये । बायस बिमद चरितसबगाये
कहेसि बहोरि रामअभिषेका । पुर बरनत नृपनीति अनेका
कथा समस्त भुसुंडि बखानी । जो मैं तुम्ह सन कही भवानी
सुनि सब रामकथा खगनाहा । कहतबचन मन परमउछाहा

सो०—गयउ मोर संदेह, सुनेउँ सकल रघुपति-चरित ।
भयउ राम-पद-नेह, तव प्रसाद बायसतिलक ॥
मोहि भयउ अति मोह, प्रभुबंधन रनमहुँ निरखि ।
चिदानंद संदोह, राम बिकल कारन कवन ॥६८॥

देखिचरितअतिनरअनुसारी । भयउ हृदय मम संसय भारी
सोइभ्रम अबहित करि मैं जाना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना
जो अतिआतप ब्याकुलहोई । तरुछाया सुख जानइ सोई
जौंनहिं होतमोहअति मोही । मिलतेउँ तातकवनबिधितोही
सुनतेउँकिमिहरिकथासुहाई । अतिबिचित्रबहुबिधितुम्हगाई
निगमागम पुरानमत एहा । कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा
संतबिसुद्ध मिलहिं परि तेही । चितवहिं राम कृपा करिजेही
रामकृपा तव दरसन भयऊ । तव प्रसाद सब संसय गयऊ

दो०—सुनि बिहंगपति बानी, सहित बिनय अनुराग ।
पुलक गात लोचन सजल, मन हरषेउ अति काग ॥

स्राता सुमति सुसील सुचि, कथा रसिक हरिदास ।
पाइ उमा अतिगोप्य अति, सज्जन करहिं प्रकास ॥६९॥

बोलेउ कागभुसुडि बहोरी । नभगनाथ पर प्रीति न थोरी
सबबिधि नाथ पूज्यतुम्हमेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे
तुम्हहिं न संसयमोह न माया । मो परनाथ कीन्हि तुम्ह दाया
पठइमोहमिस खगपति तोही । रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही
तुम्हनिज मोहकहाखगसाईं । सो नहि कछु आचरज गोसाईं
नारदभव बिरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमबादी
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा । केहिकर हृदय क्रोध नहिंदाहा

दो०—ग्यानी तापस सूर कबि, कोबिद गुनआगार ।
केहि कै लोभ बिडंबना, कीन्हि न एहिं संसार ॥
श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि ।
मृग-लोचनि-लोचन सर, को अस लाग न जाहि ॥७०॥

गुन कृतसन्यपात नहिं केही । कोउ न मानमद तजेउनिबेही
जोबनज्वरकेहिनहिबलकावा । ममताकेहिकरजसु न नसावा
मच्छर काहिकलंक न लावा । काहिन सोक समीर डोलावा
चितासाँपनि को नहिं खाया । को जग जाहि न ब्यापीमाया
कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लागघुनकोअसधीरा
सुत बित लोक ईषना तीनी । केहिकैमतिइन्हकृत न मलीनी
यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अमित को बरनै पारा
सिव चतुरानन जाहि डेराही । अपर जीव केहि लेखे माही

दो०—ब्यापि रहेउ संसार महुँ, मायाकटक प्रचंड ।
सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाखंड ॥

सो दासी रघुबीर कै, समुझे मिथ्या सोपि ।
छूट न राम कृपा बिनु, नाथ कहौं पद रोपि ॥ ७१ ॥

जो माया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखिकाहुनपावा सोइप्रभुभ्रूबिलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा सोइ सच्चिदानंदघन रामा । अज बिग्यानरूप बलधामा ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता । अखिलअमोघसक्तिभगवंता अगुन अदभ्र गिरागोतीता । सबदरसी अनवद्य अजीता निर्मल निराकार निर्मोहा । नित्य निरंजन सुखसंदोहा प्रकृतिपार प्रभुसबउरबासी । ब्रह्मनिरीहबिरज अबिनासी इहाँ मोह कर कारन नाहीं । रबिसनमुखतमकबहुँकिजाहीं

दो०—भगत हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप ।
किये चरित पावन परम, प्राकृत-नर-अनुरूप ॥
जथा अनेक बेष धरि, नृत्य करइ नट कोइ ।
सोइ सोइ भाव देखावइ, आपुन होइ न सोइ ॥७२॥

असि रघुपति-लीलाउरगारी । दनुजबिमोहनिजनसुखकारी जेमतिमलिनबिषय बस कामी । प्रभुपरमोहधरहिइमिस्वामी नयनदोष जा कहँ जब होई । पीतबरनससिकहँकह सोई । जबजेहिदिसिभ्रमहोइखगेसा । सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोहबस आपुहि लेखा बालकभ्रमहिं न भ्रमहिंगृहादी । कहहि परस्पर मिथ्याबादी हरि बिषैक अस मोह बिहगा । सपनेहुँ नहि अग्यान-प्रसंगा मायाबस मतिमंद अभागी । हृदयजवनिकाबहुबिधिलागी ते सठ हठबस संसय करही । निज अग्यानरामपर धरही

दो०—काम-क्रोध-मद-लोभ-रत, गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ़ परे तमकूप ॥

निर्गुनरूप सुलभ अति, सगुन न जानहिं कोइ।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनिमन भ्रम होइ॥७३॥

सुनु खगेस रघुपति-प्रभुताई। कहौं जथामति कथा सुहाई
जेहिबिधिमोहभयउप्रभुमोही। सो सब कथा सुनावौं तोहीं
राम-कृपा-भाजन तुम्ह ताता। हरि-गुनप्रीतिमोहि सुखदाता
तातें नहिं कछुतुम्हहि दुरावौं। परम रहस्य मनोहर गावौं
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखहिंकाऊ
समृतमूल सूलप्रद नाना। सकल-सोकदायकअभिमाना
ता तें करहिं कृपानिधि दूरी। सेवक पर ममता अतिभूरी
जिमिसिसुतनव्रनहोइगोसाईं। मातु चिरावकठिनकी नाईं

दो०—जदपि प्रथम दुख पावइ, रोवइ बाल अधीर।
व्याधि-नास-हित जननी, गनत न सो सिसुपीर॥
तिमि रघुपतिनिजदास कर, हरहिंमानहितलागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कस न भजसि भ्रमत्यागि॥७४॥

रामकृपा आपनि जड़ताई। कहौं खगेस सुनहु मन लाई
जबजब राममनुजतनु धरही। भक्त हेतु लीला बहु करहीं
तब तव अवधपुरी मैं जाऊँ। बालचरित बिलोकि हरषाऊँ
जनममहोत्सव देखौं जाई। बरष पाँच तहँ रहौं लोभाई
इष्टदेव मम बालक रामा। सोभा बपुष कोटि-सत-कामा
निजप्रभुबदननिहारिनिहारी। लोचन सुफल करौं उरगारी
लघुबायसबपु धरि हरिसंगा। देखौं बालचरित बहुरंगा

दो०—लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उड़ाउँ।
जूठनि परइ अजिर महुँ, सोइ उठाइ करि खाउँ॥
एक बार अतिसय सब, चरित किये रघुबीर।
सुमिरत प्रभुलीला सोइ, पुलकित भयउ सरीर॥७५॥

कहइभुसुडिसुनहु खगनायक। रामचरितसेवक-सुख-दायक
नृप मंदिर सुंदर सब भाँती। खचितकनकमनिनानाजाती
बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई। जहँ खेलहिं नित चारिउभाई
बालबिनोद करत रघुराई। बिचरतअजिरजननि-सुख-दाई
मरकतमृदुल कलेवर स्यामा। अंगअंग प्रति छवि बहुकामा
नव-राजीव-अरुन मृदुचरना। पदजरुचिरनखससि-दुति-हरना
ललितअंककुलिसादिकचारी। नूपुर चारु मधुर-रव-कारी
चारुपुरट-मनि-रचितबनाई। कटिकिंकिनि कलमुखरसुहाई

दो०—रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गंभीर।
उर आयत भ्राजत बिबिध, बालबिभूषन बीर ॥७६॥

अरुन पानिनखकरजमनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर
कंध बालकेहरि दर ग्रीवाँ। चारुचिबुकआननछबिसींवाँ
कलबल बचन अधर अरुनारे। दुइदुइ दसन बिसद बर बारे
ललित कपोल मनोहर नासा। सकलसुखदससि-कर-सम-हाँसा
नील-कंज-लोचन भवमोचन। भ्राजतभालतिलकगोरोचन
बिकटभृकुटिसम स्रवनसुहाये। कुंचित कचमेचक छबिछाये
पीत झीनि झिगुली तन सोही। किलकनिचितवनि भावतिमोही
रूपरासि नृप-अजिर-बिहारी। नाचहिनिजप्रतिबिंबनिहारी
मोहिसनकरहिबिबिधबिधिक्रीड़ा। बरनतचरितहोति मोहिब्रीड़ा
किलकतमोहिधरनजबधावहि। चलउँभागितबपूपदेखावहिं

दो०—आवत निकट हसहि प्रभु, भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितइ पराहिं॥
प्राकृत सिसु इव लीला, देखि भयउ मोहि मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानंदसंदोह ॥ ७७ ॥

एतनामन आनत खगराया। रघुपति-प्रेरित ब्यापी माया

सोमाया न दुखदमोहिकाही। आन जीव इव संसृति नाहीं नाथ इहाँ कछु कारन आना। सुनहु सो सावधान हरिजाना ग्यान अखंड एक सीतावर। मायाबस्य जीव सचराचर जौं सबके रह ग्यान एकरस। ईश्वर जीवहिं भेद कहहु कस मायाबस्य जीव अभिमानी। ईसबस्य माया गुनखानी परबस जीव स्वबस भगवंता। जीव अनेक एक श्रीकंता मृषा भेद जद्यपि कृत माया। बिनुहरिजाइ न कोटिउपाया

दो०—रामचंद्र के भजन बिनु, जो चह पद निर्बान।
ग्यानवंत अपि सो नर, पसु बिनु पूछ बिखान॥
राकापति षोडस उअहि, तारा-गन-समुदाइ।
सकल गिरिन्ह दव लाइय, बिनु रबि राति न जाइ॥७८॥

ऐसेहिबिनु हरिभजनखगेसा। मिटै न जीवन्ह केर कलेसा हरिसेवकहि न ब्यापअबिद्या। प्रभुप्रेरित ब्यापइ तेहि बिद्या ता तें नास न होइ दास कर। भेद भगति बाढ़इ बिहंगबर भ्रमतें चकित राममोहिदेखा। बिहँसे सो सुनु चरित बिसेखा तेहि कौतुककर मरम न काहू। जाना अनुज न मातुपिता हू जानुपानि धाये मोहि धरना। स्यामलगात अरुन-कर-चरना तब मैं भागि चलेउँ उरगारी। राम गहन कहँ भुजा पसारी जिमिजिमिदूरिउड़ाउँ अकासा। तहँहरिभुजदेखउँ निजपासा

दो०—ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं, चितयउँ पाछ उड़ात।
जुग अंगुल कर बीच सब, राममुजहिं मोहिं तात॥
सप्तावरन भेद करि, जहाँ लगे गति मोरि।
गयउँ तहाँ प्रभु भुजनिरखि, ब्याकुलभयउँबहोरि॥७९॥

मूदेउँ नयनत्रसित जब भयऊँ। पुनि चितवत कोसलपुरगयऊँ मोहिबिलोकि राम मुसुकाहीं। बिहँसततुरत गयउँ मुखमाहीं

उदर माँझ सुनु अंड-ज-राया। देखेउँ बहु ब्रह्मांडनिकाया
अतिबिचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एक तें एका
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा। अगनित उडुगन रबि रजनीसा
अगनित लोकपाल जमकाला। अगनित भूधर भूमि बिसाला
सागरसरिसर बिपिनअपारा। नाना भाँति सृष्टिबिस्तारा
सुरमुनि सिद्धनाग नर किन्नर। चारि प्रकार जीव सचराचर

दो०—जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनहूँ न समाइ।
सो सबअद्भुत देखेउँ, बरनि कवनि बिधि जाइ॥
एक एक ब्रह्मांड महुँ, रहेउँ बरष सत एक।
एहि बिधि देखत फिरेउँ मैं, अंडकटाह अनेक॥८०॥

लोकलोकप्रतिभिन्न बिधाता। भिन्नबिष्णुसिवमनु दिसित्राता
नर गंधर्ब भूत बैताला। किन्नरनिसिचरपसुखगब्याला
देव-दनुज-गन नाना जाती। सकलजीव तहँ आनहिं भाँती
महिसरिसागरसरगिरिनाना। सब प्रपंच तहँआनहिंआना
अडकोस प्रतिप्रतिनिजरूपा। देखेउँ जिनिस अनेक अनूप
अवधपुरी प्रतिभुवननिहारी। सरजू भिन्न भिन्न नर नारी
दशरथ कौसल्या सुनु ताता। बिबिधरूपभरतादिकभ्राता
प्रतिब्रह्माड रामअवतारा। देखेउँ बालबिनोद उदारा

दो०—भिन्न भिन्न मैं दीख सब, अतिबिचित्र हरिजान।
अगनित भुवनफिरेउँप्रभु, रामु न देखेउँ आन॥
सोइ सिसुपन सोइ सोभा, सोइ कृपाल रघुबर।
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोह सरीर॥८१॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका। बीते मनहुँ कलपसत एका
फिरतफिरतनिजआस्रमआयउँ। तहँ पुनिरहिकछुकालगवायउँ
निज-प्रभु-जनमअवधसुनिषायउँ। निर्भरप्रेमहरषिउठिधायउँ

देखेउँ जनममहोत्सव जाई । जेहि बिधिप्रथमकहामैं गाई
रामउदर देखेउँ जग नाना । देखत बनै न जाइ बखाना
तहँ पुनि देखेउँराम सुजाना । मायापति कृपाल भगवाना
करौ बिचार बहोरि बहोरी । मोहकलिलब्यापितमतिमोरी
उभय घरीमहुँ मैं सबदेखा । भयउस्रमितमनमोहबिसेखा

दो०--देखि कृपालबिकल मोहि, बिहँस तब रघुबीर ।
बिहँसतही मुख बाहेर, आयउँ सुनु मतिधीर ॥
सोइ लरिकाई मो सन, करन लगे पुनि राम ।
कोटि भाँति समुझावउँ, मन न लहै बिस्राम ॥८२॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देहदसा बिसराई
धरनिपरेउँमुखआव न बाता । त्राहि त्राहि आरत-जन-त्राता
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । निज-माया-प्रभुता तब रोकी
करसरोजप्रभुममसिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेउ
कीन्ह राम मोहि बिगत-बिमोहा । सेवकसुखद कृपासंदोहा
प्रभुताप्रथमबिचारिबिचारी । मनमहुँ होइ हरष अति भारी
भक्तबछलता प्रभु कै देखी । उपजीमम उर प्रीति बिसेखी
सजलनयनपुलकितकरजोरी । कीन्हेउँ बहु बिधि बिनय बहोरी

दो०--सुनि सप्रेम मम बानी, देखि दीन निजदास ।
बचन सुखद गंभीर मृदु, बोले रमानिवास ॥
कागभुसुंडी माँगु बर, अति प्रसन्न मोहि जानि ।
अनिमादिकसिधिअपरऋधि,मोच्छसकलसुखखानि ८३

ग्यान बिबेकबिरतिबिग्यान । सुरदुर्लभ गुन जे जग जाना
आजु देउँ तव संसय नाहीं । माँगु जो तोहि भाव मनमाहीं
सुनिप्रभुबचनअधिकअनुरागेउँ । मनअनुमान करन तब लागेउँ
प्रभु कह देन सकलसुखसही । भगति आपनी देन न कही

भगतिहीनगुनसब सुख ऐसें । लवन बिना बहु व्यंजन जैसें
भजनहीन सुख कवने काजा । असबिचारिबोलेउँखगराजा
जौं प्रभु होइ प्रसन्न बरदेहू । मोपर करहु कृपा अरु नेहू
मन भावतबरमाँगउँस्वामी । तुम्ह उदारउर-अंतरजामी

दो०—अबिरल भगति बिसुद्ध तव, स्रुति पुरान जो गाव ।
जेहि खोजत जोगीस मुनि, प्रभुप्रसाद कोउ पाव ॥
भगत-कलप-तरु प्रनतहित, कृपासिंधु सुखधाम ।
सोइ निजभगति मोहि प्रभु,देहु दया करि राम॥८४॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक। बोले बचन परम-सुखदायक
सुनुबायस तें सहजसयाना । काहे न माँगसि अस बरदाना
सबसुखखानिभगतितैमाँगी। नहिंजगकोउतोहिसम बड़भागी
जोमुनिकोटिजतननहिंलहहीं । जेजप-जोग-अनल तन दहही
रीझेउँ देखि तोरिचतुराई । माँगेहु भगतिमोहिअति भाई
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे । सबसुभगुनबसिहहि उर तोरें
भगतिग्यानविग्यानबिरागा। जोग चरित्र रहस्य-बिभागा
जानव तैं सबही कर भेदा । ममप्रसाद नहि साधन खेदा

दो०—मायासंभव भ्रम सकल, अब न ब्यापिहहिं तोहि ।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज, अगुन गुनाकर मोहि ॥
मोहि भगतप्रिय संतत, अस बिचारि सुनु काग ।
काय बचन मन मम पद,करेसु अचल अनुराग ॥८५॥

अबसुनुपरमबिमलममबानी। सत्य सुगमनिगमादिबखानी
निजसिद्धात सुनावौं तोही । सुनिमनधरुसबतजिभजुमोही
मम मायासंभव परिवारा । जीव चराचरबिबिधप्रकारा
सबममप्रियसबममउपजाये । सबतेंअधिकमनुज मोहिभाये
तिन्हमहुँद्विजद्विजमहुँस्रुतिधारी । तिन्हमहुँ निगम-धर्म-अनुसारी

तिन्हमहुँप्रियबिरक्तपुनिग्यानी। ग्यानिहूँते अतिप्रियबिग्यानी
तिन्हतेंपुनिमोहिप्रियनिजदासा । जेहिगतिमोरि न दूसरि आसा
पुनिपुनिसत्यकहौतोहिपाहीं । मोहिसेवकसमप्रिय कोउ नाहीं
भगतिहीनबिरंचि किनहोई । सबजीवहुसमप्रिय मोहिसोई
भगतिवंतअतिनीचउ प्रानी । मोहिप्रानप्रियअस मम बानी

दो०—सुचि सुसील सेवक सुमति, प्रिय कहु काहि न लाग ।
स्रुति पुरान कह नीति असि, सावधान सुनु काग ॥८६॥

एक पिताके बिपुल कुमारा । होहिं पृथकगुन सील अचारा
कोउपंडितकोउतापसग्याता । कोउधनवंत सूर कोउ दाता
कोउ सर्बग्य धर्मरत कोई । सबपर प्रीतिपितहि सम होई
कोउ पितुभगतबचनमनकर्मा । सपनेहु जान न दूसर धर्मा
सोसुतप्रियपितुप्रानसमाना । जद्यपिसोसब भाँति अयाना
एहिबिधिजीव चराचरजेते । त्रिजग देव नर असुर समेते
अखिलबिस्वयहमम उपजाया । सबपर मोहि बराबरि दाया
तिन्हमहुँजोपरिहरि मदमाया । भजइमोहिमनबच अरु काया

दो०—पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ ।
भगति भाव भजि कपट तजि,मोहि परम प्रिय सोइ ॥

सो०—सत्य कहउँ खग तोहि,सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।
अस बिचारि भजु मोहि,परिहरि आस भरोस सब ॥८७॥

कबहूँ कालनब्यापिहितोही । सुमिरिस्वरूप निरंतर मोही
प्रभुबचनामृत सुनि न अघाऊँ । तन पुलकित मन अति हरषाऊँ
सोसुखजानै मन अरुकाना । नहिंरसना पहि जाइ बखाना
प्रभु-सोभा-सुखजानहिं नयना । कहिकिमिसकहिंतिन्हहिंनहिंबयना
बहुबिधिमोहि प्रबोधि सुखदेई । लगे करन सिसुकौतुक तेई
सजलनयनकछुमुखकरिरूखा । चितइमातु लागी अति भूखा

देखि मातु आतुर उठि धाई । कहि मृदु बचन लिये उरलाई
गोद राखि करबि पयपाना । रघु-बर-चरितललितकरगाना

सो०—जेहि सुख लागि पुरारि, असुभ-बेष-कृत सिव सुखद ।
अवधपुरी नरनारि, तेहि सुख महुँ संतत मगन ॥
सोई सुख लवलेस, जिन्ह बारक सपनेहु लहेउ ।
तेहि नहिं गनहिं खगेस, ब्रह्मसुखहिंसज्जनसुमति ॥८८॥

मैं पुनि अवधरहेउँ कछुकाला । देखेउँ बालबिनोद रसाला
रामप्रसाद भगति बर पायउँ । प्रभुपद बंदि निजाश्रम आयउँ
तब तें मोहि न ब्यापी माया । जब तें रघुनायक अपनाया
यह सब गुप्त चरित मैं गावा । हरिमाया जिमिमोहिनचावा
निजअनुभवअब कहउँखगेसा । बिनु हरिभजननजाहिकलेसा
रामकृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ रामप्रभुताई
जाने बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिंप्रीती
प्रीति बिना नहि भगति दृढ़ाई । जिमि खगपतिजलकैचिकनाई

सो०—बिनु गुरु होइ कि ग्यान, ग्यान कि होइ बिराग बिनु ।
गावहिं बेद पुरान, सुख कि लहहिं हरिभगति बिनु ॥
को बिस्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिनु ।
चलइ कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि मरिय ८९

बिनु संतोष न काम नसाहीं । काम अछत सुखसपनेहुँ नाहीं
रामभजनबिनुमिटहि कि कामा । थलबिहीनतरुकबहुँकिजामा
बिनुबिग्यानकिसमता आवइ । कोअवकासकिनभबिनुपावइ
श्रद्धा बिना धरम नहि होई । बिनुमहि गंध कि पावइ कोई
बिनु तपतेज कि करबिस्तारा । जल बिनु रसकिहोइसंसारा
सील कि मिलबिनुबुधसेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूपगुसाई
निजसुख बिनुमनहोइकिथीरा । परसकि होइ बिहीनसमीरा

कवनिउसिद्धिकिबिनु बिस्वासा । बिनु हरिभजननभव-भय-नास

दो०—बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, जीवन लह बिस्राम ।।

सो०—अस बिचारि मतिधीर, तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुबीर, करुनाकर सुंदर सुखद ।।९०।

निज-मति-सरिसनाथमैं गाई । प्रभु-प्रताप-महिमा खगराई
कहेउँनकछुकरिजुगुतिबिसेखी। यहसब मैं निजनयनन्हिदेखी
महिमा नाम रूप गुनगाथा । सकल अमित अनंतरघुनाथा
निज-निज-मति मुनिहरिगुनगावहिं । निगम सेषसिवपार न पावहिं
तुम्हहिंआदिखगमसकप्रजंता । नभ उड़ाहिंनहिं पावहिंअंता
तिमि रघु-पति-महिमा अवगाहा । तातकबहुकोउ पावकि थाहा
रामकाम-सत-कोटि-सुभग-तन । दुर्गा-कोटि-अमित अरिमर्दन
सक्र-कोटि-सत-सरिस बिलासा । नभ-सत-कोटि-अमितअवकासा

दो०—मरुत-कोटि-सत-बिपुल बल, रबि-सत-कोटि प्रकास ।
ससि-सत-कोटि सो सीतल, समन सकल-भव-त्रास ।।
काल-कोटि-सत-सरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूम-केतु-सत-कोटि-सम, दुराधर्ष भगवंत ।।९१।।

प्रभु अगाधसत-कोटि-पताला । समन-कोटि-सत-सरिस कराला
तीरथ-अमित-कोटि-सम पावन । नाम अखिल-अघ-पुंज-नसावन
हिम-गिरि-कोटि अचलरघुबीरा । सिंधु-कोटि-सत-सम गंभीरा
काम-धेनु-सत-कोटि-समाना । सकल-काम-दायक भगवाना
सारद-कोटि-अमित चतुराई । बिधि-सत-कोटि सृष्टिनिपुनाई
बिष्णु-कोटि-समपालनकरता। रुद्र-कोटि-सत-सम संहरता
धनदकोटिसतसम धनवाना । माया कोटि प्रपंचनिधाना
भार धरन सत-कोटि-अहीसा। निरवधिनिरुपमप्रभु जगदीसा

छंद—निरुपम न उपमा आन रामसमान निगमागम कहे ॥
जिमि कोटि-सत-खद्योत-सम रविकहत अतिलघुता लहे ।
एहिभाँतिनिजनिजमति बिलासमुनीसहरिहिबखानहीं ॥
प्रभु भावगाहक अतिकृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ॥

दो०—राम अमित-गुन-सागर, थाह कि पावइ कोइ ।
संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ, तुम्हहिं सुनायउँ सोइ ॥

सो०—भावबस्य भगवान, सुखनिधान करुनाभवन ।
तजि ममता मद मान, भजिय सदा सीतापतिहिं ॥९२॥

सुनि भुसुडि के बचन सुहाये । हरषित खगपति पंखफुलाये
नयननीर मन अतिहरषाना । श्री-रघु-बर-प्रताप उरआना
पाछिलमोहसमुझिपछिताना। ब्रह्मअनादिमनुजकरि माना
पुनिपुनिकाग चरनसिरुनावा। जानि रामसम प्रेम बढ़ावा
गुरुबिनुभवनिधितरइन कोई। जौं बिरंचि-संकर-सम होई
संसय सर्प ग्रसेउमोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहुब्राता
तब सरूप गारुडि रघुनायक । मोहिजिआयेउजनसुखदायक
तव प्रसाद मम मोह नसाना । रामरहस्य अनूपम जाना

दो०—ताहि प्रसंसि बिबिधविधि, सीस नाइ कर जोरि ।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु, बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥
प्रभु अपने अबिबेक तें, बूझउँ स्वामी तोहि ।
कृपासिंधु सादर कहहु, जानि दास निज मोहि ॥९३॥

तुम्ह सर्बग्य तग्य तमपारा । सुमति सुसीलसरलआचारा
ग्यान-बिरतबिग्याननिवासा । रघुनायक के तुम्ह प्रियदासा
कारन कवन देह यह पाई । तातसकलमोहि कहउबुझाई
रामचरित-सरसुंदर स्वामी । पायउ कहाँ कहहु नभगामी

नाथ सुना मैं अस सिव पाही । महाप्रलयहु नास तव नाहीं
मुधा बचननहि ईश्वरकहई । सो मोरे मन संसय अहई
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकलजग कालकलेवा
अंडकटाह अमित लयकारी । काल सदा दुरतिक्रम भारी

सो०—तुम्हहि न ब्यापत काल, अतिकराल कारनकवन ।
मोहि सो कहहु कृपाल, ग्यानप्रभाउ कि जोगबल ॥

दो०—प्रभु तव आस्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग ।
कारन कवन सो नाथ सब, कहहु सहित अनुराग ॥९४॥

गरुड़गिरासुनि हरषेउ कागा । बोलेउ उमा सहितअनुरागा
धन्य धन्यतव मति उरगारी । प्रश्नतुम्हारमोहि अतिप्यारी
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई । बहुतजनमकीसुधिमोहिआई
अब निज कथाकहउँमैं गाई । तात सुनहु सादर मन लाई
जपतपव्रतमख समदमदाना । बिरतिबिबेक जोग बिग्याना
सबकरफल रघुपतिपद प्रेमा । तेहि बिनु कोउ न पावइछेमा
एहि तन रामभगति मैं पाई । ता तें मोहि ममता अधिकाई
जेहि तें कछु निजस्वारथहोई । तेहि पर ममता करसबकोई

सो०—पन्नगारि असि नीति, स्रुतिसंमत सज्जन कहहिं ।
अतिनीचहु सन प्रीति, करिय जानि-निज-परम-हित ॥

पाट कीट तें होइ, तेहि ते पाटंबर रुचिर ।
कृमि पालइ सब कोइ, परम अपावन प्रान सम ॥९५॥

स्वारथ साँच जीव कहुँ एहा । मन क्रम बचन राम पद नेहा
सोइपावनसोइसुभग सरीरा । जो तनु पाइ भजियरघुबीरा
रामबिमुखलहिबिधिसमदेही। कबिकोबिद न प्रसंसहि तेही
रामभगतिएहितन उरजामी । ता तें मोहि परमप्रिय स्वामी
तजउँनतनुनिजइच्छामरना । तनुबिनु बेद भजन नहिं बरना

प्रथम मोह मोहि बहुत बिगोवा। रामबिमुखसुखकबहुँ न सोवा
नाना जनम करम पुनिनाना। किये जोग जप मख तप दाना
कवन जोनिजनमेउँजहँनाहीं। मैं खगेसभ्रमिभ्रमि जगमाहीं
देखेउँ सब करि करम गुसाईं। सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं
सुधिमोहिनाथजनमबहुकेरी। सिवप्रसाद मति मोह न घेरी

दो०—प्रथम जनम के चरित अब, कहउँ सुनहु बिहँगेस।
सुनि प्रभु-पद-रति उपजै, जातें मिटहिं कलेस॥
पूरब कल्प एक प्रभु, जुग कलजुग मलमूल।
नर अरु नारि अ-धर्म-रत, सकलनिगम प्रतिकूल॥९६॥

तेहिकलिजुग कोसलपुरजाई। जनमत भयउँ सूद्र तनु पाई
सिवसेवकमनक्रम अरु बानी। आन देव निंदक अभिमानी
घन-मदमत्त-परम बाचाला। उग्रबुद्धि उर दंभ बिसाला
जदपिरहेउँ रघु-पति-रजधानी। तदपि न कछुमहिमातबजानी
अब जाना मैं अवधप्रभावा। निगमागम पुरान अस गावा
कवनेहु जनमअवध बसजोई। रामपरायन सो पर होई
अवधप्रभाव जानि तबप्रानी। जब उर बसहिंराम धनुपानी
सोकलिकाल कठिनउरगारी। पापपरायन सब नरनारी

दो०—कलिमल ग्रसे धर्म सब, लुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्ह निज मति कल्पिकरि, प्रगट किये बहु पंथ॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ग्यानानिधि, कहउँ कछुक कलि धर्म॥९६॥

बरनधरमनहिआस्रम चारी। स्रुति-बिरोध-रतसबनरनारी
द्विजस्रुतिबेचकभूपप्रजासन। कोउनहिंमान निगम-अनुसासन
मारगसोइजाकहँ जोइभावा। पंडित सोइ जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई। ता कहँ संत कहहिं सबकोई

सोइसयान जोपर-धन-हारी। जो कर दंभ सो बड़ आचारी
जो कह झूठ मसखरी जाना। कलिजुग सोइ गुनवंतबखाना
निराचारजोस्रुति पथत्यागी। कलिजुग सोइ ग्यानी बैरागी
जाके नख अरु जटा बिसाला। सोइतापसप्रसिद्ध कलिकाला

दोहा–असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे खाहिं।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर, पूज्य ते कलिजुगमाहिं॥

सोरठा–जे अपकारीचार, तिन्ह कर गौरव मान्य बहु।
मनक्रम बचन लबार, ते बकता कलिकाल महुँ॥९८॥

नारिबिबसनरसकलगोसाईं। नाचहि नटमरकट की नाईं
सूद्रद्विजन्ह उपदेसहि ग्याना। मेलि जनेऊ लेहि कुदाना
सबनर काम-लोभ-रतक्रोधी। बेद-बिप्र-गुरु-संत-बिरोधी
गुनमंदिर सुंदर पति त्यागी। भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषनहीना। बिधवन्ह के सृंगार नवीना
गुरुसिषबधिर अंधकर लेखा। एक न सुनहि एक नहिं देखा
हरइसिष्यधन सोक न हरई। सो गुरु घोर नरक महुँ परई
मातुपिताबालकन्हबोलावहि। उदरभरइसोइ धर्मसिखावहिं

दोहा–ब्रह्मग्यान बिनुनारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौड़ी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र-गुरु-घात॥
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन, हम तुम्ह तें कछु घाटि।
जानइ ब्रह्मसो बिप्रबर, आँखि देखावहिंडाँटि॥९९॥

परतिय लंपट कपट सयाने। मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ग्यानी नर। देखेउँ मैं चरित्र कलिजुग कर
आपु गये अरु औरनि घालहिं। जो कहुँसतमारगप्रतिपालहिं
कल्पकल्पभरिएकएक नरका। परहिंजेदूखहिस्रुतिकरि तरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा। स्वपचकिरातकोल कलवारा

नारि मुई घर संपति नासी। मूँड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन पाँव पुजावहिं। उभयलोकनिजहाथनसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषलीस्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रत दाना। बैठि सरासन करहिं पुराना
सबनरकल्पितकरहिंअचारा। जाइ न बरनि अनीतिअपारा

दो०—भये बरनसंकर सकल, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुख, भय रुज सोक बियोग॥
स्रुतिसंमत हरि-भक्ति-पथ, संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिं नर मोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक॥१००॥

तो.छं.-बहुदामसँवारहिंधामजती। बिषया हरि लीन गई बरती
तपसो धनवंत दरिद्रगृही। कलिकौतुकतातनजात कही
कुलवंतनिकारहिंनारि सती। गृहआनहिंचेरि निबेरि गती
सुतमानहिंमातुपितातबलौं। अबला नहिं डीठ परी जबलौं
ससुरारिपियारिलगीजब तें। रिपुरूप कुटुंब भये तब तें
नृप पापपरायन धर्म नहीं। करिदंड बिडंबप्रजा नितहीं
धनवंत कुलीन मलीन अपी। द्विजचिह्नजनेउ उघार तपी
नहिंमानपुरानन्हबेदहिं जो। हरिसेवक संत सही कलि सो
कबिबृंदउदार दुनी न सुनी। गुन-दूषन-ब्रात न कोपि गुनी
कलिबारहिंबार दुकाल परै। बिनुअन्नदुखी सब लोग मरै

दो०—सुनु खगेस कलि कपटहठ, दंभ द्वेष पाखंड।
मान मोह मारादि मद, ब्यापि रहे ब्रह्मंड॥
तामस धर्म करहिं सब, जप तप मख ब्रत दान।
देव न बरषहिं धरनि पर, बये न जामहिं धान॥१०१॥

तोटक—अबलाकचभूषनभूरि छुधा। धनहीन दुखी ममता बहुधा
सुखचाहहिं मूढ़ न धर्मरता। मतिथोरिकठोरिन कोमलता
नरपीड़ितरोगनभोग कहीं। अभिमान बिरोध अकारनहीं
लघु जीवन संवत पंचदसा। कलपांत न नास गुमान असा
कलिकालबिहालकियेमनुजा। नहिंमानतकोउअनुजा तनुजा
नहिंदोषबिचार न सीतलता। सब जातिकुजातिभये मँगता
इरषा परुखाच्छर लोलुपता। भरिपूरि रहीममता बिगता
सबलोग बियोगबिसोकहये। बरनाश्रम धर्म बिचार गये
दमदान दयानहिं जानपनी। जड़ता पर-बंचनताति-घनी
तनपोषक नारि नरा सगरे। परनिंदक ते जग मों बगरे

दोहा—सुन ब्यालारि कराल कलि, मल अवगुन आगार।
गुनउ बहुत कलिजुग कर, बिनु प्रयास निस्तार॥
कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग।
जो गतिहोइ सो कलिहरि, नामतें पावहिं लोग॥१०२॥

कृतजुग सब जोगी बिग्यानी। करिहरिध्यानतरहिंभवप्रानी
त्रेता बिबिधजग्य नर करहीं। प्रभुहिसमर्पिकरम भव तरहीं
द्वापरकरिरघु-पति-पद-पूजा। नरभव तरहिं उपाय न दूजा
कलिजुग केवलहरि-गुन-गाहा। गावत नर पावहिं भवथाहा
कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना। एक अधार राम-गुन-गाना
सबभरोसतजि जोभजरामहि। प्रेमसमेत गाव गुनग्रामहि
सोइ भवतर कछु संसय नाहीं। नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं
कलि कर एक पुनीत प्रतापा। मानस पुन्य होइ नहिं पापा

दो०—कलि-जुग-सम जुग आन नहिं, जो नर कर बिस्वास।
गाइ राम-गुन-गन बिमल, भव तर बिनहिं प्रयास॥

प्रगट चारि पद धर्म के, कलि महुँ एक प्रधान ।
जेन केन बिधि दीन्हे, दान करइ कल्यान ॥१०३॥

नित जुग होहिं धर्म सब केरे। हृदय राम माया के प्रेरे सिद्ध सत्व समता बिग्याना। कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना सत्व बहुत रज कछुरतिकर्मा। सबबिधि सुख त्रेता कर धर्मा बहुरजसत्वस्वल्पकछुतामस। द्वापर धर्म हरष भव मानस तामस बहुत रजोगुन थोरा। कलिप्रभावबिरोधचहुँ ओरा बुध जुगधर्म जानि मनमाहीं। तजि अधर्म रति धर्म कराहीं काल धर्म नहि ब्यापहिं तेही। रघुपति-चरन-प्रीतिरति जेही नटकृतकपटबिकट खगराया। नटसेवकहिं न ब्यापइ माया

दो०—हरि-माया-कृत दोष गुन, बिनु हरिभजन न जाहिं ।
भजिय रामसबकामतजि, असबिचारिमन माहिं ॥
तेहि कलिकाल बरष बहु, बसेउँ अवध बिहगेस ।
परेउ दुकाल बिपतिबस, तब मैं गयउँ बिदेस ॥१०४॥

गयेउँ उजेनी सुनु उरगारी। दीन मलीन दरिद्र दुखारी गये काल कछु संपति पाई। तहँ पुनि करौं संभु सेवकाई बिप्र एक बैदिक सिवपूजा। करै सदा तेहि काज न दूजा परमसाधु परमारथबिंदक। संभुउपासक नहि हरि निंदक तेहि सेवउँ मैं कपटसमेता। द्विजदयालअति नीतिनिकेता बाहिजनम्र देखिमोहि साईं। बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं संभुमंत्र मोहिद्विजबरदीन्हा। सुभउपदेसबिबिधबिधि कीन्हा जपउँ मंत्र सिवमंदिर जाई। हृदयदंभ अहमिति अधिकाई

दो०—मैं खल मल संकुल मति, नीच जाति बस मोह ।
हरिजन द्विज देखे जरउँ, करउँबिष्णु कर द्रोह ॥

सो०—गुरु नितमोहिप्रबोध, दुखित देखि आचरन मम ।
मोहि उपजै अतिक्रोध, दंभिहि नीति कि भावई ॥१०५

एकबार गुरु लीन्ह बोलाई । मोहि नीति बहुभाँति सिखाई
सिवसेवा कै सुत फल सोई । अबिरल-भगति राम पद होई
रामहिभजहितातसिवधाता । नर पावँर कै केतिक बाता
जासुचरनअजसिव अनुरागी ।तासुद्रोह सुख चहसि अभागी
हर कहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ ।सुनिखगनाथ हृदय मम-दहेऊ
अधम जाति मैं बिद्या पाये । भयउँ जथाअहि दूध पिआये
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुरु कर द्रोह करौं दिन राती
अतिदयालगुरुस्वल्प न क्रोधा । पुनिपुनिमोहिसिखाव सुबोधा
जेहि ते नीच बड़ाई पावा । सोप्रथमहिहठि ताहि नसावा
धूम अनलसंभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घनपदवी पाई
रज मग परी निरादर रहई । सब कर पगप्रहार नित सहई
मरुत उड़ाइ प्रथम तेहि भरई । नृपकिरीट पुनि नयनन्ह परई
सुनुखगखगपतिसमुझिप्रसंगा। बुधनहिंकरहिअधमकरसंगा
कबिकोबिदगावहिअसिनीती ।खलसनकलहनभलनहिप्रीती
उदासीन नित रहिय गोसाई । खलपरिहरियस्वानकी नाईं
मै खल हृदय कपट कुटिलाई ।गुरुहितकहहिं न मोहिसुहाई

दो०—एक बार हरिमंदिर, जपत रहेउँ सिवनाम ।
गुरु आयउ अभिमानतें,उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥
गुरु दयाल नहिं कछु कहेउ, उर न रोस लवलेस ।
अतिअघ गुरुअपमानता, सहि नहिं सके महेस ॥१०६॥

मंदिर माँझ भई नभबानी । रे हतभाग्य अग्य अभिमानी
जद्यपितवगुरुके नहि क्रोधा । अतिकृपालचितसम्यक बोधा
तदपि साप सठ देइहौ तोही । नीतिबिरोध सुहाइ न मोही
जौनहिदंड करौ खल तोरा । भ्रष्ट होइ स्रुतिमारग मोरा
जे सठगुरुसन इरषाकरहीं । रौरव नरक कोटिजुग परहीं
त्रिजगजोनिपुनिधरहिसरीरा । अयुत जनम भरिपावहि पीरा

बैठिरहेसि अजगर इव पापी। सर्प होहि खलमल मतिब्यापी
महा-बिटप-कोटर महुँ जाई। रहु अधमाधम अधगति पाई

दोहा—हाहाकार कीन्ह गुरु, दारुन सुनि सिवस्राप।
कंपित मोहि बिलोकि अति, उर उपजा परिताप॥
करि दंडवत सप्रेम द्विज, सिव सनमुख कर जोरि।
बिनय करत गदगद गिरा, समुझि घोरगति मोरि॥१०७

नमामीशमीशान निर्वाणरूपम्। विभुव्यापकंब्रह्म वेदस्वरूपम्॥
अजंनिर्गुणं निर्विकल्पंनिरीहम्। चिदाकाशमाकाशवासंभजेऽहम्
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयम्। गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्
करालंमहाकालकालं कृपालम्। गुणागारसंसारपारं नतोऽहम्
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरम्। मनोभूत कोटिप्रभाश्रीशरीरम्
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा। लसद्भालबालेन्दुकण्ठेभुजङ्गा
चलत्कुण्डलंशुभ्रनेत्रंविशालम्। प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम्
मृगाधीशचर्म्माम्बरंमुण्डमालम्। प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम्। अखण्डंअजंभानुकोटिप्रकाशम्
त्रयःशूलनिर्मूलनंशूलपाणिम्। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्
कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददातापुरारी
चिदानन्दसन्दोहमोहापकारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी
नयावद्उमानाथपादारविन्दम्। भजन्तीह लोकेपरे वा नराणाम्
नतावत्सुखंशान्तिसन्तापनाशम्। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्
न.जानामियोगं जपं नैवपूजाम्।नतोऽहंसदासर्वदाशम्भुतुभ्यम्
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम्। प्रभोपाहिआपन्नमामीशशम्भो

श्लोक— रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

दोहा–सुनि बिनती सर्बग्य सिव, देखि बिप्र अनुरागु ।
मंदिर नभ बानी भई, द्विजबर अब बर माँगु ॥
जौं प्रसन्न प्रभु मो पर, नाथ दीन पर नेहु ।
निज पद-पद्म-भगति दृढ़, पुनि दूसर बर देहु ॥
तव मायाबस जीव जड़, संतत फिरहिं भुलान ।
तेहि पर क्रोध न करिय प्रभु, कृपासिंधु भगवान ॥
संकर दीनदयाल अब, एहि पर होहु कृपाल ।
सापअनुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरही काल ॥१०८

एहि कर होइ परम कल्याना । सोइ करहु अब कृपा निधाना
बिप्रगिरा सुनि पर-हित-सानी । एवमस्तु इति भइ नभवानी
जदपि कीन्ह यह दारुन पापा । मैं पुनि दीन्ह कोप करिसापा
तदपि तुम्हार साधुता देखी । करिहउँ एहिपर कृपा बिसेखी
छमासील जे पर उपकारी । ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी
मोरसाप द्विजब्यर्थ नजाइहि । जनमसहस्र अवसि यह पाइहि
जनमत मरत दुसह दुख होई । एहि स्वल्पउनहिंब्यापहिसोई
कवनेहुजनममिटहिनहिग्याना । सुनहि सूद्र मम बचन प्रमाना
रघुपति-पुरीजनमतव भयऊ । पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ
पुरीप्रभाव अनुग्रह मोरें । रामभगति उपजिहिउरतोरें
सुनु ममबचन सत्य अतिभाई । हरितोषक ब्रत द्विजसेवकाई
अबजनिकरिहिबिप्रअपमाना । जानेसु संत अनंत समाना
इंद्रकुलिस मम सूल बिसाला । कालदंड हरिचक्र कराला
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई । बिप्र-द्रोह-पावक सो जरई
अस बिबेक राखेहु मन माहीं । तुम्हकहँजग दुर्लभ कछुनाहीं
अउरौ एक आसिषा मोरी । अ-प्रति-हत गतिहोइहितोरी

दोहा–सुनि सिवबचन हरषि गुरु, एवमस्तु इति भाखि ।
मोहि प्रबोधि गयउ गृह, संभु चरन उर राखि ॥

प्रेरित काल बिंध गिरि, जाइ भयउँ मैं ब्याल ।
पुनि प्रयास बिनु सो तनु, तजेउँ गये कछु काल ॥
जोइ तन धरउँ तजउँ पुनि, अनायास हरिजान ।
जिमि नूतन पट पहिरै, नर परिहरै पुरान ॥
सिव राखी स्रुतिनीति अरु, मैं नहिं पाव कलेस ।
एहिबिधि धरेउँ बिबिधतनु, ग्यान न गयउखगेस॥१०९॥

त्रिजग देवनर जो तनु धरऊँ। तहँ तहँरामभजन अनुसरऊँ एक सूलमोहि बिसर न काऊ। गुरु कर-कोमल सील सुभाऊ धरमदेह मैं द्विज कै पाई। सुरदुर्लभ पुरान स्रुति गाई खेलौं तहाँ बालकन्ह मीला। करौं सकल रघुनायक लीला प्रौढ़ भये मोहि पिता पढ़ावा। समुझउँसुनउँगुनउँनहिभावा मन तें सकल बासना भागी। केवल रामचरन लय लागी कहु खगेसअस कवन अभागी। खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी प्रेममगनमोहि कछु न सुहाई। हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई भये कालबस जब पितु माता। मैं बन गयउँ भजन जनत्राता जहँजहँबिपिनमुनीस्वरपावउँ। आस्रम जाइ जाइसिरुनावउँ बूझउँतिन्हहिराम-गुन-गाहा। कहहिसुनउँहरषित खगनाहा सुनतफिरउँहरिगुनअनुबादा। अ-ब्याहत-गति संभुप्रसादा छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी। एक लालसा उर अतिबाढ़ी राम-चरन-बारिज जब देखौं। तबनिज जनम सुफलकरिलेखौं जेहि पूछहुँसोइमुनिअसकहई। ईस्वर सर्ब-भूत-मय अहई निर्गुनमत नहि मोहि सुहाई। सगुन ब्रह्मरतिउर अधिकाई

दोहा—गुरु के बचन सुरति करि, रामचरन मन लाग ।
रघुपति-जस गावत फिरउँ, छन छन नव अनुराग ॥
मेरुसिखर बटछाया, मुनि लोमस आसीन ।

देखि चरन सिरु नायउँ, बचन कहेउँ अतिदीन ॥
सुनि मम बचन बिनीत मृदु, मुनि कृपाल खगराज ।
मोहि सादर पूछत भये, द्विज आयउ केहि काज ॥
तब मैं कहा कृपानिधि, तुम्ह सर्बग्य सुजान ।
सगुन ब्रह्म आराधना, मोहि कहहु भगवान ॥११०॥

तबमुनीसरघुपति-गुन-गाथा। कहे कछुक सादर खगनाथा ब्रह्म-ग्यान-रतिमुनिबिग्यानी। मोहि परम अधिकारीजानी लागे करन ब्रह्म उपदेसा। अज अद्वैत अगुन हृदयेसा अकल अनीह अनाम अरूपा। अनु-भव-गम्य अखंड अनूपा मनगोतीत अमल अबिनासी। निबिकार निरवधि सुखरासी सो तैं ताहि तोहि नहि भेदा। बारि बीच इव गावहिं बेदा बिबिधभाँतिमुनिमोहिसमुझावा। निर्गुनमतममहृदय न आवा पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा। सगुन उपासन कहहु मुनीसा राम-भगति-जलममममनमीना। किमिबिलगाइ मुनीसप्रबीना मो उपदेस करहु करि दाया। निज नयनन देखेउँ रघुराया भरिलोचनबिलोकिअवधेसा। तब सुनिहौं निर्गुन उपदेसा मुनिपुनिकहिहरिकथाअनूपा। खंडि सगुनमत निर्गुनरूपा तब मैं निर्गुनमति करि दूरी। सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा। मुनितन भये क्रोध के चीन्हा सुनु प्रभु बहुत अवग्या किये। उपज क्रोध ग्यानहु के हिये अति संघरषन जौं कर कोई। अनल प्रगट चंदन तें होई

दो०—बारंबार सकोप मुनि, करै निरूपन ग्यान ।
मैं अपने मन बैठि तब, करउँ बिबिध अनुमान ॥
द्वैत बुद्धि बिनु क्रोध किमि, द्वैत कि बिनु अग्यान ।
मायाबस परिछिन्न जड़, जीव कि ईससमान ॥१११॥

कबहुँकिदुखसबकरहिततोके। तेहि कि दरिद्रपरसमनिजाके
परद्रोही कि होई निःसंका। कामी पुनि कि रहै अकलंका
बंस किरहद्विजअनहितकीन्हे। कर्मकि होंहि स्वरूपहिंचीन्हे
काहू सुमतिकिखलसँगजामी। सुभगतिपावकिपर-त्रिय-गामी
भवकिपरहिपरमातमबिंदक। सुखी किहोहिंकबहुँपरनिंदक
राज कि रहइ नीतिबिनुजाने। अघकिरहइहरिचरितबखाने
पावन जस कि पुन्यबिनुहोई। बिनु अघ अजसकिपावइकोई
लाभ किकछुहरि-भगतिसमाना। जेहि गावहिं स्रुति संतपुराना
हानि किजगएहिसमकछुभाई। भजिय न रामहि नरतनुपाई
अघकिपिसुनतासमकछुआना। धर्म कि दयासरिसहरिजाना॥
एहिबिधिअमितजुगुतिमनगुनऊँ। मुनि उपदेस न सादर सुनऊँ
पुनिपुनि सगुन-पच्छ मैं रोपा। तब मुनि बोले बचनसकोपा
मूढ़ परम सिखदेउँनमानसि। उत्तर प्रतिउत्तरबहु आनसि
सत्यबचनबिस्वास न करही। बायस इव सबही तें डरही
सठस्वपच्छतवहृदयबिसाला। सपदि होहु पच्छी चंडाला
लीन्ह साप मैं सीस चढाई। नहि कछु भय न दीनताआई

दो०—तुरतभयउँ मैं काग तब, पुनि मुनिपद सिरु नाइ।
सुमिरिरामरघु-बंस-मनि, हरषित चलेउँ उड़ाइ॥
उमा जे राम-चरन-रत, बि-गत-काम-मद-क्रोध।
निज प्रभुमयदेखहिंजगत, केहि सनकरहिंबिरोध॥

सुनुखगेसनहिकछुरिषिदूषन। उरप्रेरक रघु-बंस-बिभूषन
कृपासिंधुमुनिमतिकरिभोरी। लीन्ही प्रेम परीछा मोरी
मनबचक्रममोहिनिजजनजाना। मुनि मतिपुनिफेरीभगवाना
रिषिमम सहनसीलता देखी। राम-चरन-बिस्वास बिसेखी
अतिबिसमयपुनिपुनिपछिताई। सादरमुनिमोहिलीन्हबोलाई
ममपरितोषबिबिधबिधि कीन्हा। हरषित राममंत्र तब दीन्हा

बालकरूप राम कर ध्याना। कहेउमोहिमुनिकृपानिधाना
सुंदर सुखद मोहि अतिभावा। सो प्रथमहिंमैंतुम्हहिं सुनावा
मुनिमोहिकछुककालतहँराखा। राम-चरित-मानसतबभाखा
सादर मोहि यह कथासुनाई। पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई
रामचरित सर गुप्त सुहावा। संभुप्रसाद तात मैं पावा
तोहिनिजभगतरामकर जानी। ता तें मैं सब कहेउँ बखानी
रामभगति जिन्हकेउरनाहीं। कबहुँनतातकहियतिन्हपाहीं
मुनिमोहिबिबिधभाँतिसमुझावा। मैं सप्रेम मुनिपद सिरु नावा
निज-कर-कमलपरसिममसीसा। हरषितआसिषदीन्हिमुनीसा
रामभगति अबिरल उरतोरे। बसहु सदा प्रसाद अब मोरे

दो०—सदा रामप्रिय होहु तुम्ह, सुभ गुन-भवन अमान।
कामरूप इच्छामरन, ग्यान-बिराग-निधान॥
जेहि आस्रमतुम्हबसबपुनि, सुमिरत श्रीभगवंत।
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या, जोजन एक प्रजंत॥११३॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ। कछुदुखतुम्हहिं न ब्यापिहि काऊ
रामरहस्यललितबिधिनाना। गुप्त प्रगट इतिहास पुराना
बिनुस्रमतुम्हजानबसबसोऊ। नित नवनेह रामपद होऊ
जो इच्छा करिहहुमन माहीं। हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
सुनिमुनिआसिषसुनु मतिधीरा। ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा
एवमस्तुतब बच मुनि ग्यानी। यहममभगतकरममन बानी
सुनिनभगिराहरषमोहिभयऊ। प्रेम मगन सब संसय गयऊ
करि बिनती मुनिआयसुपाई। पदसरोजपुनिपुनि सिरुनाई
हरषसहितएहिआस्रमआयउँ। प्रभुप्रसाद दुर्लभ बर पायउँ
इहाँ बसत मोहिं सुनुखगईसा। बीते कलप सात अरु बीसा
करौंसदा रघुपति-गुन-गाना। सादर सुनहिं बिहंग सुजाना
जब जब अवधपुरी रघुबीरा। धरहिभगतहितमनुजसरीरा

तब तब जाइ रामपुर रहऊँ। सिसुलीलाबिलोकिसुखलहऊँ
पुनिउर राखिराम सिसुरूपा। निजआस्रम आवउँखगभूपा
कथासकलमैं तुम्हहि सुनाई। कागदेह जेहि कारन पाई
कहेउँतात सबप्रस्न तुम्हारी। राम-भगति-महिमा अतिभारी

दो०—ता तें यह तन मोहि प्रिय, भयउ राम-पद-नेह।
निज-प्रभु-दरसन पायउँ, गयउ सकल संदेह॥

मासपरायण, उन्तीसवाँ विश्राम

भगति पच्छ हठ करि रहेउँ, दीन्हि महा-रिषि-साप।
मुनिदुर्लभ बरपायउँ, देखहु भजनप्रताप॥ ११४॥

जेअसि भगतिजानि परिहरहीं। केवल ग्यानहेतु स्रम करहीं
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी। खोजतआकफिरहिंपय लागी
सुनुखगेस हरिभगतिबिहाई। जे सुख चाहहिं आन उपाई
ते सठ महा सिन्धुबिनुतरनी। पैरि पार चाहहिं जड़ करनी
सुनि भुसुंडिके बचन भवानी। बोलेउ गरुड़ हरषि मृदुबानी
तव प्रसादप्रभु ममउरमाहीं। संसय-सोक-मोह-भ्रम नाही
सुनेउँपुनीत राम-गुन-ग्रामा। तुम्हरी कृपा लहेउँ बिस्रामा
एक बात प्रभु पूछउँ तोही। कहउबुझाइ कृपानिधि मोही
कहहिं संत मुनिबेद पुराना। नहिकछु दुर्लभ ग्यान समाना
सोइमुनितुम्हसनकहेउगोसाई। नहिआदरेहुभगति की नाईं
ग्यानहिंभगतिहिंअंतर केता। सकल कहउ प्रभु कृपानिकेता
सुनिउरगारिबचनसुखमाना। सादर बोलेउ काग सुजाना
भगतिहिग्यानहिंनहिकछुभेदा। उभय हरहि भवसंभव खेदा
नाथमुनीसकहहि कछुअंतर। सावधानसोउ सुनु बिहंगबर
ग्यान बिरागजोग बिग्याना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना
पुरुष प्रतापप्रबल सबभाँती। अबलाअबल सहज जड़ जाती॥

दो०—पुरुष त्यागि सक नारिहि, जो बिरक्त मतिधीर ।
न तु कामी जो बिषयबस, बिमुख जो पद रघुबीर ॥
सो०—सो मुनि ग्याननिधान, मृगनयनी बिधुमुख निरखि ।
बिबसहोइ हरिजान, नारि बिस्व माया प्रगट ॥११५॥

इहाँ न पच्छपात कछु राखौं । बेद-पुरान-संत-मत भाखौं
मोह न नारि नारि के रूपा । पन्नागारि यह रीति अनूपा
मायाभगतिसुनहु तुम्ह दोऊ । नारिबर्ग जानहि सब कोऊ
पुनिरघुबीरहिभगतिपियारी । माया खलु नर्त्तकी बिचारी
भगतिहि सानुकूल रघुराया । तातेंतेहिडरपति अति माया
रामभगति निरुपमनिरुपाधी । बसइजासु उर सदा अबाधी
तेहि बिलोकि माया सकुचाई । करिनसकै कछु निज प्रभुताई
अस बिचारिजेमुनि बिग्यानी । जाचहिंभगतिसकल-सुख-खानी

दो०—यह रहस्य रघुनाथ कर, बेगि न जानै कोइ ।
जो जानै रघुपति-कृपा, सपनेहुँ मोह न होइ ॥
अउरौ ग्यान भगति कर, भेद सुनहु सुप्रबीन ।
जो सुनि होइ राम पद, प्रीति सदा अबिछीन ॥११६॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी । समुझत बनै न जाइ बखानी
ईस्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुखरासी
सो मायाबस भयउ गोसाई । बँधेउ कीर मरकट की नाईं
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई । जदपि मृषा छूटत कठिनई
तब तें जीव भयउ संसारी । छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी
स्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूटनअधिकअधिक अरुझाई
जीव हृदय तम मोह बिसेखी । ग्रंथिछूटिकिमि परइ न देखी
अस सजोग ईस जब करई । तबहुँ कदाचित सो निरुअरई
सात्विक स्रद्धा धेनु सुहाई । जो हरिकृपा हृदय बसि आई

जपतपब्रतजमनियम अपारा। जेस्रुति कह सुभ धर्म अचारा
तेइ तृन हरित चरइ जबगाई। भाव बच्छ सिसु धेनु पेन्हाई
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा। निर्मल मन अहीर निजदासा
परम-धरम-मयपयदुहि भाई। अवटइ अनल अकाम बनाई
तोष मरुत तब छमा जुड़ावइ। धृतिसम जावन देइ जमावइ
मुदितामथइ बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी
तब मथिकाढ़ि लेइ नवनीता। बिमलबिराग सुपरम पुनीता

दो०—जोग अगिनि करि प्रगट तब, कर्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ग्यान घृत, ममता मल जरि जाइ॥
तब बिग्यानरूपिनी, बुद्धि बिसद घृत पाइ।
चित्त दिआ भरि धरै दृढ़, समता दिअटि बनाइ॥
तीनि अवस्था तीनि गुन, तेहि कपास तें काढ़ि।
तूल तुरीय सँवारि पुनि, बाती करै सुगाढ़ि॥
सो०—एहि बिधि लेसै दीप, तेज रासि बिग्यानमय।
जातहिं जासु समीप, जरहिं मदादिक सलभ सब॥११७॥

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परमप्रचंडा
आतम-अनुभव-सुखसुप्रकासा। तब भवमूल भेदभ्रम नासा
प्रबल अबिद्या कर परिवारा। मोहआदि तममिटइअपारा
तब सोइ बुद्धिपाइ उँजियारा। उरगृह बैठि ग्रंथि निरुवारा
छोरन ग्रंथि पाव जौं कोई। तौ यह जीव कृतारथ होई
छोरत ग्रंथि जानि खगराया। बिघन अनेक करै तब माया
रिद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई। बुद्धिहि लोभ देखावहिं आई
कलबलछलकरिजाइ समीपा। अंचल बात बुझावहिं दीपा
होइ बुद्धि जो परम सयाने। तिन्हतनुचितवनअनहितजाने
जौतेहिबिघन बुद्धिनहिंबाधी। तौबहोरि सुर करहि उपाधी

इंद्री द्वार झरोखा नाना। तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना
आवत देखहिबिषयबयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी
जबसो प्रभंजन उरगृह जाई। तबहि दीप बिग्यान बुझाई
ग्रंथि न छूटिमिटा सोप्रकासा। बुद्धिबिकल भइबिषयबतासा
इद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यानसुहाई। बिषयभोग पर प्रीति सदाई
बिषय समीरबुद्धिकृत भोरी। तेहिबिधिदीप को बारबहोरी

दो०—तब फिरि जीव बिबिधि बिधि, पावइ संसृत क्लेस।
हरि माया अति दुस्तर, तरि न जाइ बिहगेस॥
कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन बिबेक।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं, पुनि प्रत्यूह अनेक॥११८॥

ग्यान पंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहिं बारा
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई
अतिदुर्लभ कैवल्यपरम पद। संत पुरान निगम आगम बद
रामभजतसोइमुक्तिगोसाई। अनइच्छित आवइ बरिआई
जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई
तथा मोच्छसुख सुनु खगराई। रहिनसकैहरि भगतिबिहाई
असबिचारि हरिभगतसयाने। मुक्तिनिरादरभगतिलोभाने
भगतिकरतबिनुजतनप्रयासा। संसृति मूल अबिद्या नासा
भोजनकरियतृप्तिहितलागी। जिमिसोअसनपचवइजठरागी
असिहरिभगतिसुगमसुखदाई। को अस मूढ़ न जाहि सुहाई

दो०—सेवक सेब्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।
भजहु राम-पद-पंक-ज, अस सिद्धांत बिचारि॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य।
अस समरथ रघुनायकहिं, भजहिं जीव ते धन्य॥११९॥

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई। सुनहु भगति मनिकै प्रभुताई

रामभगति चिंतामनि सुंदर । बसइ गरुड़ जाके उरअंतर
परमप्रकास रूप दिन राती । नहिंकछुचहियदियाघृतबाती
मोह दरिद्र निकट नहिआवा । लोभ बात नहिं ताहिबुझावा
अचलअबिद्या तममिटिजाई । हारहि सकल सलभ समुदाई
खलकामादिनिकटनहिंजाहीं । बसइ भगति जा के उरमाहीं
गरलसुधासम अरिहित होई । तेहिमनिबिनुसुख पावनकोई
व्यापहिमानस रोग न भारी । जिन्हकेबस सब जीवदुखारी
राम-भगति-मनिउरबसजाके। दुख-लव-लेस न सपनेहुँ ताके
चतुरसिरोमनितेइजगमाहीं । जे मनि लागि सुजतनकराहीं
सोमनिजदपि प्रगटजगअहई । रामकृपाबिनु नहिंकोउलहई
सुगम उपाइ पाइबे केरे । नर हतभाग्य देहिं भटभेरे
पावन पर्बत बेद पुराना । रामकथा रुचिराकर नाना
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ग्यानबिराग नयन उरगारी
भावसहित खोजइ जो प्रानी । पावभगतिमनिसबसुखखानी
मोरे मन प्रभुअस बिस्वासा । रामतेंअधिक राम कर दासा
राम सिंधु घन सज्जन धीरा । चंदन तरु हरि संत समीरा
सबकरफलहरिभगतिसुहाई । सो बिनु संत न काहू पाई
असबिचारिजोइकरमतसंगा। रामभगतितेहि सुलभबिहंगा

दो०—ब्रह्म पयोनिधि मंदर, ग्यान संत सुर आहि ।
कथा सुधा मथि काढ़इ, भगति मधुरता जाहि ॥
बिरति चर्म असि ग्यान मद, लोभ मोह रिपु मारि ।
जय पाइय सो हरिभगति. देखु खगेस बिचारि ॥१२०॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जो कृपाल मोहि ऊपरभाऊ
नाथ मोहि निज सेवकजानी । सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा । सब तें दुर्लभ कवन सरीरा
बड़दुखकवनकवन सुखभारी । सोउ संछेपहि कहहु बिचारी

संतअसंत मरमु तुम्ह जानहु । तिन्हकरसहज सुभावबखानहु
कवनपुन्यस्रुतिबिदितबिसाला । कहहु कवनअघ परमकृपाला
मानसरोग कहहु समुझाई । तुम्ह सर्बग्य कृपा अधिकाई
तात सुनहु सादर अतिप्रीति । मैं संछेप कहउँ यह नीती
नरतनसमनहिंकवनिउदेही । जीव चराचर जाचत जेही
नरक-सर्ग-अपबर्ग–निसेनी । ग्यान-बिराग-भगति-सुखदेनी
सोतनुधरिहरिभजहि न जे नर । होहिं बिषयरत मंद मंदतर
काँचकिरिचबदलेजिमिलेही । कर तें डारि परसमनि देहीं
नहिं दरिद्रसम दुखजगमाहीं । संत-मिलन-समसुखकहुँनाहीं
परउपकार बचनमन काया । संत सहज सुभाव खगराया
संत सहहिदुख परहितलागी । पर-दुख-हेतु असंत अभागी
भूरज-तरु-सम संत कृपाला । परहितनितसहबिपतिबिसाला
सन इव खल परबंधन करई । कालकढ़ाइबिपति सहिमरई
खलबिनुस्वारथपरअपकारी । अहि मूषकइव सुनु उरगारी
परसंपदा बिनासि नसाहीं ।जिमिससिहतिहिमउपल बिलाहीं
दुष्टहृदय जग आरत हेतू । जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू
संतउदय संतत सुखकारी । बिस्वसुखदजिमि इंदु तमारी
परमधरमस्रुतिबिदितअहींसा । पर-निंदा-सम अघ नगिरीसा
हरि-गुरु-निंदक दादुर होई । जनम सहस्र पाव तन सोई
द्विजनिंदकबहुनरकभोगकरि । जग जनमइ बायससरीर धरि
सुर-स्रुतिनिंदकजे अभिमानी । रौरव नरक परहिं ते प्रानी
होहि उलूक संत-निंदा-रत । मोहनिसा प्रिय ग्यानभानुमत
सब कै निंदा जे जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं
सुनहु तात अब मानसरोगा । जेहि ते दुख पावहिंसब लोगा
मोहसकलब्याधिन कर मूला । तेहि ते पुनि उपजे बहु सूला
काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा

प्रीति करहि जौ तीनिउ भाई। उपजै सन्निपात दुखदाई
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना
ममता दादु कंडु इरषाई। हरष बिषाद गरह बहुताई
पर सुख देखि जरनि सोइछई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई
अहंकार अतिदुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नहरुआ
तृस्ना उदरबृद्धि अतिभारी। त्रिबिध ईषना तरुन तिजारी
जुगबिधिज्वरमत्सरअबिबेका। कहँलगि कहौ कुरोग अनेका

दो०—एक ब्याधिबस नर मरहिं, ए असाध्य बहु ब्याधि।
पीड़हिं संतत जीव कहँ, सो किमि लहै समाधि ॥
नेम धर्म आचार तप, ग्यान जग्य जप दान।
भेषज पुनि कोटिक नहीं, रोग जाहिं हरिजान ॥१२१॥

एहिबिधिसकलजीवजड़रोगी। सोकहरषभय प्रीति बियोगी
मानसरोग कछुक मैं गाये।होहि सबके लखि बिरलइ पाये
जाने तें छीजहि कछु पापी। नास न पावहि जनपरितापी
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे। मुनिहु हृदय का नर बापुरे
रामकृपा नासहिं सब रोगा। जो एहि भाँति बनइ संजोगा
सदगुरु बेदबचन बिस्वासा। संजम यह न बिषय कै आसा
रघुपति-भगतिसजीवनमूरी। अनूपान स्रद्धा मति पूरी
एहिबिधिभलेहिसोरोगनसाहीं। नाहिंत जतन कोटि नहिजाही
जानियतबमनबिरुजगोसाईं। जब उर बलबिराग अधिकाई
सुमति छुधा बाढ़इ नित नई। बिषय आस दुर्बलता गई
बिमलग्यानजलजबसोनहाई। तब रह रामभगति उर छाई
सिवअजसुकसनकादिकनारद। जे मुनिब्रह्म-बिचार-बिसारद
सब कर मत खगनायक एहा। करिय राम-पद-पंकज नेहा
स्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं। रघुपति-भगतिबिनासुखनाहीं
कमठपीठि जामहि बरुबारा। बंध्यासुत बरु काहुहि मारा

फूलहिनभवरुवहुबिधिफूला। जीव न लहसुखहरि-प्रतिकूला
तृषाजाइ बरुमृग-जल-पाना। बरु जामहिं-ससससबिखाना
अधकारबरु रबिहि नसावइ। रामबिमुखन जीव सुख पावइ
हिम ते अनल प्रगट बरु होई। बिमुख राम सुख पाव न कोई

दो०—बारि मथे घृत होइ बरु, सिकता तें बरु तेल।
बिनु हरिभजन न भव तरहिं, यह सिद्धान्त अपेल॥
मसकहि करइ बिरंचि प्रभु, अजहि मसक तें हीन।
अस बिचारि तजि संसय, रामहिं भजहिं प्रबीन॥१२२॥

नगस्वरूपिणी—**विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे।**
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते॥

कहेउँ नाथहरिचरित अनूपा। ब्याससमासम्वमति-अनुरूपा
स्रुतिसिद्धान्त इहै उरगारी। राम भजियसवकाम बिसारी
प्रभुरघुपतितजिसेइअ काही। मो से सठ पर ममता जाही
तुम्ह बिग्यानरूप नहिं मोहा। नाथ कीन्ह मोपर अति छोहा
पूछेहु रामकथा अतिपावनि। सुक-सनकादि-संभु-मन-भावनि
सतसंगति दुर्लभ संसारा। निमिष दंड भरि एकउ बारा
देखुगरुड़निजहृदय बिचारी। मैं रघु-बीर-भजन-अधिकारी
सकुनाधम सबभाँति अपावन।प्रभुमोहिकीन्हबिदित जगपावन

दो०—आजु धन्य मैं धन्य अति, जद्यपि सबबिधि हीन।
निजजन जानि राम मोहि, संतसमागम दीन्ह॥
नाथ जथामति भाषेउँ, राखेउँ नहिं कछु गोइ।
चरितसिंधु रघुबीर के, थाह कि पावइ कोइ॥१२३॥

सुमिरि रामके गुनगन नाना। पुनिपुनिहरष भुसुंडि सुजाना
महिमा निगम नेति करिगाई। अतुलित बल प्रताप प्रभुताई
सिव-अज-पूज्य-चरनरघुराई। मो पर कृपा परम मृदुलाई

अससुभावकहुँसुनउँ न देखउँ। केहिखगेस रघुपतिसमलेखउँ
साधक सिद्ध बिमुक्तउदासी। कबि कोबिद कृतग्य संन्यासी
जोगी सूर सुतापस ग्यानी। धर्मनिरत पंडित बिग्यानी
तरहिं न बिनुसेये मम स्वामी। राम नमामि नमामि नमामी
सरन गये मो से अघरासी। होहि सुद्ध नमामि अबिनासी

दो०—जासु नाम भवभेषज, हरन ताप-त्रय-सूल।
सो कृपालु मोहि तोहि पर, सदा रहहु अनुकूल॥
सुनि भुसुंडि के बचन सुभ, देखि रामपद नेह।
बोलेउ प्रेमसहित गिरा, गरुड़ बि-गत-संदेह॥१२४॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी। सुनि रघु-बीर-भगति-रस-सानी
रामचरन नूतन रति भई। मायाजनित बिपति सब गई
मोहजलधिबोहिततुम्हभयऊ। मोकहँनाथबिबिधसुखदयऊ
मो पर होइ न प्रतिउपकारा। बंदउँ तव पद बारहि बारा
पूरनकाम रामअनुरागी। तुम्हसमतात न कोउबड़भागी
संतबिटप सरितागिरिधरनी। परहित हेतु सबन्हि कै करनी
संतहृदय नवनीत-समाना। कहा कबिन्ह पै कहइ न जाना
निजपरिताप द्रवै नवनीता। परदुख द्रवहिं सुसंत पुनीता
जीवनजनमसुफलममभयऊ। तव प्रसाद ससय सब गयऊ
जानेहुसदामोहिनिजकिंकर। पुनि पुनि उमा कहइ बिहगवर

दो०—तासु चरन सिरु नाइ करि, प्रेमसहित मतिधीर।
गयउ गरुड़ बैकुंठ तब, हृदय राखि रघुबीर॥
गिरिजा संत-समागम-सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरि कृपा न होइ सो, गावहिं बेद पुरान॥१२५॥

कहेउँ परमपुनीत इतिहासा। सुनत स्रवन छूटहि भवपासा
प्रनत-कलप-तरु करुनापुंजा। उपजइ प्रीतिराम-पद-कंजा
मन बच कर्म जनित अघजाई। सुनहिं जे कथास्रवन मनलाई

तीर्थाटन साधनसमुदाई । जोग बिराग ग्याननिपुनाई
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । संजम दम जपतप मख नाना
भूतदया द्विज-गुरु-सेवकाई । बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई
जहँ लगि साधन बेद बखानी । सबकरफलहरिभगतिभवानी
सो रघुनाथ-भगतिस्रुतिगाई । रामकृपा काहू एक पाई

दो०—मुनिदुर्लभहरिभगति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि बिस्वास ॥१२६॥

सोइ सर्बग्य सोई गुनग्याता । सोइ महिमंडित पंडित दाता
धर्मपरायन सोइ कुलत्राता । रामचरन जाकर मन राता
नीतिनिपुनसोइ परमसयाना । स्रुतिसिद्धांत नीकतेहिजाना
सो कबि कोबिद सो रनधीरा । जो छल छाँड़ि भजै रघुबीरा
धन्य सुदेस जहाँ सुरसरी । धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी
धन्य सो भूप नीति जोकरई । धन्यसोद्विजनिजधर्म न टरई
सोधनधन्य प्रथमगतिजाकी । धन्य पुन्यरत मतिसोइपाकी
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । धन्यजनमद्विजभगतिअभंगा

दो०—सो कुल धन्य उमा सुनु, जगतपूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुबीर-परायन, जेहि नर उपज बिनीत ॥१२७॥

मति-अनु-रूप कथा मैं भाखी । जद्यपि प्रथम गुप्तकरिराखी
तवमनप्रीति देखि अधिकाई । तब मैं रघुपति-कथा सुनाई
यह न कहियसठहींहठसीलहि । जोमनलाइ न सुनहरिलीलहि
कहिय न लोभिहिक्रोधिहिकामिहि । जो न भजै सचराचरस्वामिहि
द्विजद्रोहिहि न सुनाइयकबहूँ । सुर-पति-सरिसहोइनृपतबहूँ
रामकथा के ते अधिकारी । जिन्हकेसतसंगति अतिप्यारी
गुरु-पद-प्रीति नीति रतजेई । द्विजसेवक अधिकारी तेई
ता कहँ यह बिसेष सुखदाई । जाहि प्रानप्रिय श्री रघुराई